A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 365 Subject

Name of MSS बिहारी सतसई टीका, कवित्त

Author

Period Folios 217

Script Devnagiri Source Prithipal Singh

Missing Folios

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative



CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

Hindi Ms.
8 H1
B594
365

बिहारी सतसई टीका ; गंगाधर टीकाकार
२१८ पत्रसंख्या ल० ग० १४ पं० ३० पृ०

ह०लि०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

365

No 2

ਗੰਗਾਦਤ ਕ੍ਰਿਤ
ਕਬਿਤਾ ਭਾਖਾ

Samvat 1869

Behari Satsai
Teeka
Ganga Datt

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

A. no. 1
365
विहा.
२

ॐश्रीगणेशायनमः॥अथबिहारीकृतसतसयाकोविगत [illegible]
कवित्तभाषालिख्यते॥मूलदोहा॥मेरीभवबाधाहरौराधानागरिसोय॥जात
नकीझांईपरेश्यामहरितदुतिहोय॥

टीका॥ यहमंगलाचरनहै॥महाराधाजूकीस्तुतिग्रंथकर्त्ताकविकरतहै॥
महांराधाश्रोरहूहै॥ यातेजातनकीझांईपरेतेश्यामहरितदुतिहोइ॥ या
पदतेश्रीवृषभानसुताकीप्रतीतिभई॥१॥

सवैया॥ जाकीप्रभाअवलोकतहीतिहुंलोककीसुंदरतागहिवारी॥ कृष्ण
कहेसरसीरुहनैनीकोनाममहामुदमंगलकारी॥ जातनकीझलकेंझल
केहरिवादुतिश्यामकीहोतनिहारी॥ श्रीवृषभानकुमारिकृपाकैसुराधा
हरोभवबाधाहमारी॥

टीका॥ कविकोवचन॥ सोराधानामश्रीकृष्णकोनामहै॥ सोमेरीभवक
हियेसंसार॥ ताकीबाधाकहियेपीडाताकोहरौ॥ कहियेदूरिकरौ॥ इसकोय
हमतलबहैकीमेरोमोक्षकरौ॥ अथवामेरीकहियेममतायहीसंसारमेंब
डोव्यथाहै॥ ताकोदूरिकरौ॥ जाश्रीकृष्णदेहकीझांईकहियेप्रतिबिंब॥ तां
केपरेतेश्यामकहियेपाप॥ तेहरनकहियेदूरिहोतहै॥ औरदुतिकहियेकां
तिसोईहोतिहै॥ अथवानागरिकहियेचतुर॥ राधिकामेरीसंसारकीपीरकोह
रौ॥ जाराधिकाकेदेहकेप्रतिबिंबकेपरे॥ श्यामश्रीकृष्णकोनामहै॥ ऐसा
हरिसोभाकोप्राप्तहोतहै॥ इसकोयहमतलबहै॥ किप्रियरोश्यामरंगमि
लिकैहरोरंगहोतहै॥ अथवाराधाकहियेंआराधाजोहै॥ औरनागरक
हियेअजरः॥ अमरजोहै॥ सोभवकहियेमहादेव सोमेरीपीरकोहरौ॥ क
हियेअजरः॥ अमरजोहै॥
नामहादेवकीझांईपरेते॥ श्यामवृषकोनामहै॥ ऐसाहरितदुतिकोप्राप्तहो
तहै॥ अथवाजातनताकहियेवडीवेदनाताकीझीरकहियेंछायासोपरे
कहियेंदूरिहोतिहै॥ औरपापदूरिहोतिऔरकांतिहोतिहै॥ [illegible]

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यामैंदेवरतिभावध्वनिविषमालंकारस्लेषाभासहै॥अथविषमालंकारश्ला
ष्लेषकोलछन॥कारनकोरंगऔरहीकारजऔरेरंगयहविषमालंका
रकोतीयोभेदसविसेस॥एकशब्दकैअर्थजहं॥भासतआइअनेक॥श्ला
ष्लेषसोंकहतहैं॥जिनकेबुद्धिविवेक॥अथसाधारननायकावर्ननं॥

दोहा॥लहलहातितननकनई॥लफिलगलोलचिजाई॥लगैंलांक
लोयनभरी॥लोयनलेतिलगाई॥यहनायकाकेजरकीसोभासखीनायकसों
कहतहै॥सखीसखीसोंकहै॥२॥

कवित्त॥लकलकेतनमैलहलहातितरुनईनाकोनईअरुनईरहीछबि
छाइकै॥कंचनकेभारभारचपिलगलौलफतिचलतिगयंदगतिघाह
जसभाईकै॥कहैकविकेसवनखसिखलौलुनाईभरीमनोंमहामोहनीनैं
देहधरिआईकै॥सखीमलहरनअनिचारिकोमरुआकुऐसेलगैलांकवा
रिलेतिलोइनलगाईकै॥२॥

टीका॥सखीकोवचनसखीप्रति॥तनकहियेंदेहतामैंतरुनाईकहियेंज्वानी
सोलहलहानिकहियेचमकतिहै॥औरहलगाकहियेंछबीलाकीग्यांई।
लफलफाइकैमचिजातिहै॥लांककमरिकोनामहै॥सोजाकोलगो
है॥इसकोयहमतलवहै॥कोकमरऔनिपनरीहै॥लोइनकहियेसुंदर
ताःतासोंभरीहै॥औरलोइनकहियेनेत्रनिकोंलगाइलेतिहै॥लछना
करिकैइसकोयहमतलवहै॥कीसबकेनेत्रनिकोंदेषिवेकोनांउकरति
है॥अथवानाइकाकोतनकहियेदेहसोईतरुकहियेवेलकोवृक्षसोल
हलहानिकहियेफलसमलातुहै॥देहकेपाछेंतनईकहियेपतवीनहैवेल
केपछनईकहियेनम्रहै॥नाइकाकोदेहलगाकहियेडारि॥ताकेस
मानलफलफाइकैलचकिजातिहै॥वेनकोवृक्षलगनिकेभारसों

2

लखकतहै ॥ नायकाकोपछ्कमरपनहीहै ॥ बैनहूहकेपछलोकमान
निकोनामहै ॥ नेजमेलागेहै ॥ २ ॥

उक्तिनायकुकीस्वनिभावउपमालंकारकोमलाहृत्रिअफलोयनक्त
गाइयाफदमैलच्छनाहै ॥ नेत्रलक्ष्णं ॥ उपमाअरुउपमेय ॥ साधारनवा
चकहोइ ॥ एचारयौंपूर्इएजिहंाहरनउपमाहोइ ॥ जहरुलमानुप्रासमैं ॥
गुनमाधुर्यप्रकाश ॥ निहंाकोमलाहृत्रिहै ॥ वरननबुद्धिविलास ॥ कार ॥

मूल:दोहा ॥ ननभूषनअंजनहृगन ॥ पगनमहावररंग ॥ नहिंसोभा
कोसाजयह ॥ कहिवेईकोअंग ॥
यहनायकाकेअंगनकीस्वभावकसोभासखीकहितिहै:॥ जोनायकासखीसैं
कहै:सोरूपगर्विताहोइ:॥ विछित्रहावहूहोइ:॥

कवित्त:॥ मृहजअरुननगुलफनितेंउठनिछ्टातिनकेनिकटकहाजाव
ककोरंगुहै ॥ गातनकीगुराईआगैंकंचनकेआभूषनफीकेसेपरनरं
चसोभाकोनसंकुहै ॥ अंजनमहूआंजेविननेंनकजरारेलागेंखंजनम
नेकनिकोहानुमनुभंगुहै ॥ सोतनुसिंगारकछुसोभाकोनसाजिय
नसाजियनुजानियहीवानहैंकोअंगुहै ॥

टीका:॥ सखीकोवचनसखीप्रती ॥ अथवासखीकोवचननायकाप्रती ॥
अथवासखीकोवचननायकप्रती ॥ ननकहियेसरीर:तामेंभूषन
कहियेगहनों:औरहगकहियेनेत्र ॥ तिनविषेंअंजनकहियेकाजर ॥ र
औरपगकहियेचरन ॥ तिनविषेंमहावरकहियेलाखकोरसताकोरं
ग ॥ यहसवसाजसोभाकोनाहीहै ॥ कहिवेकोनायकाकेअंगसोभा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कोधारनवारोहै॥ अथवातनमैंभूषनकहियेगहनैतेनहीं॥ महावरनही
लगायौ॥ काहेतेयहसबसोभाकेकरनवारेनाहीहै॥ अंगविषैएसव
वसोजुहनैमाजहैं॥ कोनायकाकेअंगहूतनवस्तविनुहीसोभायमानहै
मिलितअलंकार॥ ३॥

जोसषीकोवचनहोइतौनायकसोंसुनिअंग॥ जोनायकाकोतेहूपरा
विनाजोनाइककोउक्तिहोयतोगुनकथन॥ ऐसोवक्रवोधअहै॥ मिलि
तअलंकार॥ जहांएकवस्तुमैंभेदनलहै तिहिंथलकविजनमिलितकहै॥
॥ मिलितअलंकार ३

मूलःदोहाः॥ पंचरंगरंगवेंदीषरीःउठिउमगिमुहजोति॥ पहिरेंचीरचि
नौटियाःचटकचौगुनीहोति॥४॥

याहुनायकाके लिलाटवेंदीकीसोभाचटकचौगुनीहोतिहैः॥ सोहेंदरमुष
जोतिकीउमगचिनोटियाचीरपंचरंगवेंदीहै॥४॥

कवित्तः॥ ललितलिलारलसैपचरंगवैदीषरीउमिउमिउठतिअमंदमुष
जोतिहै॥ षंजननसेअंजनसहितअनियारेनैनअधरअरुनगोरेगोरेंकापो
लतिहै॥ गहैलषिवेकोछविसोहैचेरगहैकुचलचकनकरिप्रुतिमतिर
सभोतिहै॥ तहिरेसरूपननपहिरेचिनोटीचीरचौगुनोनिकाईकीचट
कचाकहोतिहै॥४॥

टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ अथवानायकप्रतीपचरंगकीजोवें
दी॥ तासौमुषजोतिकहियेसोभाषरीकहियेआछीउमगिउठतिहै॥
चिनोटीकहियेंपियरोकपरा॥ ताकेपहिरेतेचटककहियेसोभासौचो
गुनीहोतिहै॥ स्वभावोक्तिअलंकार॥ ५॥

जोसषीकोउक्तिहोइनाइकसोंतोरुचिउपजावतहै॥ जोनाइकको
उक्तिहोइतोगुनकथन॥ स्वभावोक्तिअलंकारकोमलालहुत्रिहैजं।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बिहा.
३

3

हष्ट्यात्रुमासमै ॥ गुनमाधुर्यप्रकाश ॥ मिठो कोमलाहृष्ट्रि हृद्व बनत
बुद्धिविलास ॥ ४ ॥

मूल ॥ दोहा ॥ तीजपरब सौंतिन सजे भूषन बसन सरीर ॥ सबै मरगजे मुहक
री उहै मरगजें चीर ॥ ५ ॥

यह नायका प्रेमगर्विता ॥ मरगजें चीर तें सौतन को गर्व भयो ॥ तातें सिंगार करन ही कौ मौं
सो सखी सखी सौं कहै ॥ ५

कवित्त ॥ सौतिन कुलसि गुन गोरी के परब साधि भूषन बसन बहु भांतिन सु
धारे हैं ॥ तिलक तन वार वेंदी वेसरि तिरीना सा ज्सिं अंजन सौं आंजे चारु लो
चन अन्यारे हैं ॥ कुल प्रान प्यारे के रिझाइवे को हौडी होड़ा चपल कटाक्ष
हाउ भाइन सौं हारे हैं ॥ उह्यौ पक राति रति मरगजे चीर हो सौ सब ही के
नीके मुह फीके करि डारे हैं ॥ ५

टीका ॥ सखी को वचन सखी प्रती ॥ तीजपरब सावन के महीना की तीज को
नाम है ॥ ता के उत सब कौं सौतिन सरीर विषैं भूषन कहिये गहने और वस्
त्र जे कहियें पहिरे ॥ वही मरगजे चीर कहियें मलीन कपरा वाही नायका
नें वै सौतें मरगजे मुख कीनी ॥ और कहूं स ठौर सुरतांत व्यंग ज्ञानिये ॥ ५
अनुभाव करि ईर्षा
उक्ति सखी की सुरतांत व्यंगि सपत्नी निकैं वैवु वर्नना ॥
संचारी व्यंगि ॥ सो असंलक्ष्यक्रम व्यंगि ध्वनि है ॥ असंगत अलंकार ॥ कार
न औरै ठौर रहै ॥ कारिजु औरै ठौर ॥ और काज आरंभीये ॥ औरै कीजै ठौर ॥
और वार ही को जीये ॥ और वार को काम ॥ तीन असंगति को कहत ॥ भेद
लक विमलि धाम ॥ असंगति अलंकार ॥ ५ ॥

मूल ॥ दोहा ॥ बेंदी भाल तमोर मुख सीस सिलसिले बार ॥ दृग आंजें राजें
खरी साजें सहज सिंगार ॥ ६ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यहनायकाकीसहजकीसोभासषीकहतिहै:नायकासेंसषीसोनाइकसेंसषी
कोवचननायकसों ॥९ ॥

कवित्त॥ वेंदीछुविछाजतिहैललितलिलारपरनीकोनवजोवनकोजो
तिनिरषतिहै॥ झिलमिलेसामसटकारेसकुमारबारनिरषिसिवार
पानीसरवनिसरतिहै॥ स्वलपत्रधरघनिग्रहननमोलभरेषंजनसेनें
ननुमेंग्रंजनभरतिहै॥ सहजसिंगारपहोराजनग्रपारदुतिसोतिन
कीग्राषिनमेंछारसोपरतिहै॥९

टीका॥ सषीकोवचनसषीसोंग्रथवानाइकसों॥ भालजोहैलिलार
तामेंवेंदीदइहै॥ तमोरजोहैपांनतेमुषमेंषाएहैं॥ सीसजोमाथोता
मेंसिलमिलेकहियेफुलेलकेभीजेबारजोहैंकेस॥ ग्रारहगजोनेत्र
गसोंग्रांजेकहियेकाजरसेंजगतनकिपहै॥ यहगहनेसिंगारसोजि
करि॥ ठाहीकेहवरीराजेकहियेंसोभायमानहोतिहै॥ ग्रथवाषरी
कहैसोभायमानहोतिहै॥९

सषीकोउक्तिनाइकसेंाहोइतोहचितउपमाजावैहै॥ जोनाइककोउ
क्तिहैतोगुनकथनहोवक्ताकोउक्तिनेग्रंगिहै॥ स्वभावोक्तिग्रलंका
र॥ जाकोजैसोंरूपगुन॥ वरननवाहीरीति॥ तासोंजानस्वभावक
विभाषतहैकरिप्रीति॥ स्वभावोक्तिग्रलंकार॥ ९॥

मूल॥ दोहा॥ बालछबीलीतियनिमें:वैठीग्रापुछिपाइ॥ ग्ररगटही
कोंनसमी:परगटहोतिलषाइ॥७

यहनाइकाकीहीपतिसषीनाइकसेंानिवेदनुकरतिहैनायकहूकहैतोसंभवे॥

कवित्त॥ लोनेंनननवारिवनवारीमेंांनिहारीप्यारीपुभिरहीवाकोउजरा

विहा
४

ईमेरेमननमें॥ कहैकविदूलहसीललितलुनाईलूषैमेरेजांनदामनी
दुरीहैजाइघनमें॥ छविसोंछबीलीगहनारिनकोसहू चलैवैठीआपु
अंगनिदुराइतियगनमें॥ अरगटहोतिपरगटपहदीपकलौंजोति
जगामगिरहीआषिलभवनमें॥७

टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ अथवानायकप्रती॥ छबीलीक
हियेंसुंदरजोवालकहियेंनायकासोतियनमेंवैठीहै॥ सोनायका
कान्हसकेसमानप्रगटदिषाईदेतिहै॥७

उक्तिसषीकीनाइककोंनायकावतावेहइवोधभ्यंगहै॥ उत्प्रेक्षा
लंकार॥ जहकोउनिसंभावना॥ बस्तहेतुफलमधि॥ तीनभांति
उत्प्रेक्षावरननसुमतिप्रसिद्ध॥उपमाअलंकार॥७॥

मूल॥दोहा॥ कनदीवासोंप्रेमस्वरः वहुघुरहुथीजानि॥ रूपरहचवैं
हिलरयोः मांगनसबजगआन॥८

यहप्रस्याविकहमनेंकौनीनिसरपावैंयस्वअधिकभयोःकविकोउक्तिजा
निये॥८

कवित्त॥ सुंदरसुराईसकुमारिससिवदनीकोसोभाकीनिकाईकविक
हैतोवषानिकै॥ ननद जिठानीसासुनिरषीसहातिसवैअनिहीसग
नियाकेरहेवेसवानिकै॥ ससुरेनेंसरकाविचारिसुषमानिहियेंकन
लेकेंसोप्योवहघुरहुथीजानिकै॥ कहैकविदूलहवाकेरूपअवलोकि
वेकोलोभलगिमागनजगलालगयोआनिकै॥८

टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ अथवाकविकोवचन॥ ससुरेनेंव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रूकोयुरहयोकहियेंछोटेहायनवारीजानिवैकनदीवोकहियेंभीष
डारवेनेंसोपौ॥ताबहूकेरूपकोरहचटोकहियेंदेषनो॥ताकेवासनेंमि
गनेसंसारमेंगनआकुलगयो॥रूपनकीरूपनताकहियेंनायकाके
अतिरूपकोआश्रमनिधानिनरहानहै॥८

कविकोउक्तिरूपनकोरूपनताबाकोपुत्रवधूरूपवर्णनहै॥अरयहवाति
मेंविषमालंकार॥आनरंगकेकारनतेंजहकारजआनरंगहैजाइ॥उद्य
मकीजैनलोजंगनिकैं॥तातैंहोइबुरोफलआइ॥अनमिलनेंकोसंग
होइ॥जहांजंगनिलीजीयेचित्रवलाइ॥अलंकारयहविषमतीनविध
मै॥मनकोदीनोंसमझाइ॥विषमालंकार॥५॥

मूल॥दोहा॥लिषनवैठिजाकीसवी॥गहिगहिगरवगरूर॥भएनकेते
जगतमवे॥चतुरचितेरेकूर॥५

यहनाइका॥कीनिकाईसषीनायकसौंकहतिहै॥औरप्रगटकरतिहै॥कीवाकी
देषनसौंकभावहोतहै॥जोवाकीअधिकाईयेंतोऊसंभवै॥यातेंचितेरनपैंवाकौचि
त्रनाहीबन्यौ॥५

कवित्त॥रूपकोअवधियेसीओपनबनाईविधिजाकेलषिवेकोंलालदेष
तमनाइवौ॥ताकीसोभालिषवेकोंवैठननरंगआनहोमनमोहनकहून
सचुनाइवौ॥येसीविधिआइआइकुचककनाइगएचतुरचितेरेतिनकेके
हालेंगिनाइवौ॥हमप्रानप्यारेवहचित्रनीकेविचित्रगनिकाहूपैनव
न्योवाकेचित्रकोबनाइवौ॥९

टीका॥सषीकोवचनसषीप्रती॥अथवानायकप्रती॥नाइकाकेरूप
कीउक्तनिकरिकचित्रपजावतिहै॥चतुरकहियेंप्रवीन॥चितेरेकहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वि॰ ५ 5

ये चित्र के बनन वारे ॥ तेगाहर कहिये अभमानी ॥ इनको जह मनलव है ॥ को
भले लिषनवारे ॥ गरव अभिमान ताको गहिकै ॥ लिषने को बैठिकै ॥१
केते हूर कहिये सूरषन हीभए ॥ इनको यह मतलव है ॥ को नाइका को
चित्र नहीं लिष्यो गयो ॥ रूप देषि कै चितेरनि के हाथनि को कंपभयो ॥ यह
धुनी को अरथ है ॥ ९

जो सषी को उक्ति सषी प्रति होय तो लछ नि नायक सौं होइ तो ह्रनवजो नाइ
का को उक्ति होइ तो गुन कथन वक्र बोध व्यंग्य । अलद कम धनि है पं
काकु व्यंगि ॥ तेमध्यम काव्य है ॥ सूद्ध वक्रोक्ति अलंकार ॥ और वातन मैं
और रहौ ॥ अरथ करै जेह जानि ॥ श्लेष सुद्ध है भांतिकौ ॥ वक्रोक कति उरस्त्रा
नि ॥ सुध वक्रोक्ति अलंकार ॥ ४ ॥

मूल ॥ दोहा ॥ तोपर वारों उरवसी ॥ सुन राधिके सुजान ॥ तू मोहन के उरवसी
है उरवसी समान ॥ १०

यह नायका स्वाधीनपतिका सषी को वचन नाइका सैं ॥

कवित्त ॥ रूप को उज्यारी वृषभान की दुलारी राधे तेरी पनिकाई हेरि सौं
तिसव हारी है ॥ तेरे गुन गाइवे कौं तेरे इरि काइवे कौं तेरी प्रीति ही कौं प्रन
गह्यौ गिरधारी है ॥ तेरो नाम रटै ध्यान तेरो ई हिये मैं धरै तेरे रससवस उनि
गाई है विसारी है ॥ तू ही उरवसी है के उरवसी मोहन के तेरी छवि पर को
टि उरवसी वारी है ॥ १०

टीका ॥ सषी को वचन नाइका प्रती ॥ सुजान कहिये प्रवीन ॥ राधिका सं
वोधन है ॥ तू स्रीनि नायक के उर कहिये हृदय ॥ तामैं जो नाइका वसी है
ताको तेरे ऊपरि वारि डारौं ॥ तू मोहन के उर विषें वसी है ॥ उरवसी कहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यैंधुकधुकीताकोवैरोवरी ॥ इसकोयहमतलबहै ॥ कीजैसेंधुकधुकीहृद
यमेंरहतीहै ॥ अथवाउरवसीकहियेंअपसरा ॥ ताकीवैरोवरिमोहन
केहृदयमेंवसीहै ॥ इसकहेनावतिसोंमानुषनितरोतहै ॥ १०

हतीकीउक्तिनायकासोनाइकाकीस्तुतिकरैहै ॥ वोधअवंगिप्रतीपअरुह
यमककौस्वरूप ॥ उपमेयकोउपमानतें ॥ आदरजहांनहिंहोइ ॥ उपमा
नकोउपमेयतें ॥ आदरजहांअवलोइ ॥ उपमेयकेसमहैनहीउपमान
कोजिहिंठौरकैकरैउपमानतें ॥ उपमेयकविसिरमौर ॥ उपमेयचाहनि
हारवरनैव्यर्थकैउपमानएपांचभेदप्रतीपकेग्रंथनगिनैपरिमान ॥
जमकाअलंकार ॥ १० ॥

मूल ॥ दोहा ॥ सोहतसारीसेतमें ॥ कनकवरनतनवाल ॥ सारदवारदवीज
री ॥ भारदकीजनिलाल ॥ ११ ॥

यहनाइकाकीगुराईधोतीकीसोभासखीनायकसौंकहतिहै ॥ जातिवर्ननहैदोइ ॥

कवित्त ॥ कंचनवर्नतनवनकअनूपमानोंरूपकीअवधिमनमथकीर
सालहै ॥ एकसारीसेतमेंअनेकविटैनवलमानोंदसमंडलीमेंचंपक
कीमालहै ॥ सरदघटानमध्यदामिनीलसतिमानोंक्षीरसिंधुमध्य
वडवानलकीज्वालहै ॥ सरसारीस्वेतमेंसुधानिधिकीकलाकिधों ।
संकरकेअंकलसैपारवतीवालहै ॥ ११ ॥

टीका ॥ सखीकोवचननायकप्रती ॥ वालकहियेंनायका ॥ ताकेकन
ककहियेंसुवर्न ॥ तैसेतनकहियेसरीर ॥ तैसेसारीकहियेंओढनी
तामेंसोहतिहै ॥ लालसंवोधनहै ॥ नाइकाकेसरीरतेसरदकहियेंस
रदरितकेवादरकहियेंमेघ ॥ तामेंविजुरीकीभांतिकहियेंकांतिसो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रदकी जतहै ॥११॥ मतिराम अलंकार ॥ सषी की उक्ति नाइका प्रति सख्य नि
षत्ती पत्र लख्यो तिनाकों संकर पुनरुक्तवदाभास मैं संस्कृत के
वल विभावली नैं प्रमाण को तिहै अनप्रास उपजे यतें सहस्र नैं उप
मान तीजो भेद प्रतीप को वरनन तत्त्वक विहजान भाले नंग पुनरु
क्त सो पै पुनरुक्त न होइ पुनरुक्त वदाभास सह्यक हनका विन्न दीय अव
लोइ के उपमान उपमेय के हैं अनेक इक भाइ न्द्रलय योग तज्ञाको निरूः
इ जो भेद गिनाइ ११

मूल दोहा ॥ रहौ लहू है लाल लैः लषि वह बाल अनूप ॥ कितौ मिठास
दयो दई इतै सलोनै रूप ॥१२

यह नाइकाको रूप सषी नायकसौं निवेदन करति है ॥ सलोनें रूपमें मिठास यह
अद्भुत है ॥२

कवित्त ॥ जैसी जहां चाहिये तितै सी नहां वली विधिहूं पै षुन अधरके न्याइ व
नि आई है ॥ सुघद सुहाई नापैं वरनी वनाई जा रहू नैं जाकी तिलसमतानपा
ई है ॥ वाल छवि छाई तामें और अधिकाई दई यालुनाई माफि पाई कितनी ।
मिठाई है ॥ सुंदर कन्हाई हो तो निरषि विकाई वह रूपकी निकाई मानों देह
धरि आई है ॥१२॥

टीका ॥ सषी को वचन नायक प्रती ॥ लाल संबोधन है ॥ हों कहियेमें ॥ व
ह अनूपक हियें सुंदर जो वालक ॥ हियें नाइका ॥ ताकों लषि कहियें देषि कें
लहू कहियें वसौ है रहौ ॥ दई विधाता को नाम है ॥ तिसने इतनें सलोनें
रूपमें कितनो मिठास स्वाद दयो ॥ इस कहनाव तिसो रुचि उपजावति है ॥
विरोधाभास अलंकार ॥ इनी को उपपत्ति में सलुति करति है नायका कौ
उद्योत गुण बोधय कोंग अंचल दाक मधु निस्फाह विरोधाभास सग्य ।

लंकार जिहिं थलप्रभूविरोधहै अर्थमांकनविरोधसहूविरो
धाभासकहिजोहीयेअवोध ॥२२

[illegible] ॥विरोधाभासअलंकार॥

मूल॥दोहा॥वारोंवलिनाहगनपर: अलिषंजनम्रगमीन॥ आधीडीठी
चितोनिजिन: कीयेलालआधीन॥२॥
यहनाइकाकेनेत्रनुकीअधषुलीचितवनिदेषिनायककुअधीनभयौ:सोसषीनाइ
कासेंकहतीहै॥२३॥

कवित्त॥कारेरूपकारेरतनारेअनियारेसोहैंसहजसुधारेमनमथमन
वारेहैं॥लाजकेभरारेभारेचपलनिहारेतारेसांचेढ़रेप्यारेरूपकेउज्या
रेहैं॥आधीचितवनहीमेंअधीनकिएतेंहरिदोनेंसेवसीकरवैलोनेपनि
हारेहैं॥कमलकुरंगमीनषंजनभंवरहूषभानकीकुवरितेरेनैननुपे
वारेहैं॥२३॥

टीका॥सषीकोवचननाइकाप्रती॥वलीनाइकाकोसंवोधनहै॥तेरेनेत्र
निकेऊपरअलीकहियेभ्रमर॥षंजनकहियेमिसोला॥म्रगकहियेह
रणी॥मीनकहियेमछरीइनसवकोंवारिडारें॥जिननाइकानेआधी
डीठिचितोनिकहियेकटाछकीदृष्टि॥तासोंलालकहियेनायक॥सो
आधीनकहियेवसकियो॥२३॥प्रतिपनतुल्यजोमिलापुनहकनपदीभ
वकोसंकर:अलंकार॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

[illegible] ॥ व्यतिरेकअलंकार॥ १॥

मूल॥ दोहा॥ छिनक छबीली बाल वह: जो लौं नहि बतराइ॥ ऊष मयूष पियूष की: तौ लौं भूष न जाइ॥ २७॥

यह नायका की वानी की मधुराई सषी नायक सौं कहति है॥ २४॥

सवैया॥ जाकी सुनैं धुनि बीनु कहा गहि लाज पीको बनु भाग नि है॥ सोभ हु निकै कवि कुल कहै मनि को मन मानु अनुराग नि है जो लौं छबी लें न मसों वह बाल न बात नु पावत है॥ तौ लौं मयूष पियूष को ऊष को भूषन कै संहू भाग नि है॥ २४॥

टीका॥ सषी वचन सषी प्रती॥ अथवा नायक प्रती॥ अथवा नाइका को वचन सषी प्रती॥ छबीली कहिये सुंदर॥ बाल कहिये नाइका॥ सो वह जो लौं नहीं बतराइ कहिये बोलति है॥ तौ लौं ऊष कहिये गन्ना॥ मयूष कहिये मीठा॥ पियूष कहिये अमृत॥ इन को भूष कहिये क्षुधा मान होजाति है॥ इस को यह मतलब है॥ कौ नाइका को बोलनो इन सबन तें अधिक मीठो है॥ २४॥ व्यतिरेकअलंकार॥ दूती की उक्ति नाइक सों सषनि करति है नाइका को मिलाइवे के लीयें व्यतिरेकालंकार को म

[illegible] उपमान तें जिहां अधिक उपमेय तिहां भाषत व्यतिरेक ... जानिप ... कविपंडित आधेय जहं वृत्तानुप्रास मैं गुन माधुर्य प्रकाश तिहां कोमल वृत्ति है जानिए ... उपमान तें जिहां अधिक उपमेय तिहां भाषत व्यतिरेक है कवि पंडित आधेय जहं ... प्रास मैं गुन माधुर्य प्रकाश तिहां कोमला वृत्ति है ववनत वृद्धि विलास को मलाह त्रिलक्षणं

२४

मूल॥दोहा॥ नैंमोहनमनगाडिरह्यौ॥ गाढीगडनिगुवालि॥ उठैसदानटसा लसी॥ सौतिनकेउरसाल॥२५॥

यहनछकास्वाधीनपतिकासषीकोवचननाइकासौं॥२५॥

सवैया॥ पीनघरीकरपानुसौंपेटुकठोरउठैकुचकोकिलवैंनी॥ कंठुसौं कंठुकलाधरसौंमुषकोभकराहुतुकीअतिपैंनी॥ नैंमनमोहनकेमन ग्वालिरहीगडिकेलिकलासुषदैंनी॥ सौतिनकेउरसालसदानटसा लज्यौंसालतिहैमृगनैंनी॥२५॥

टीका॥ सषीकोवचननायकाप्रती॥ गुवालिसंबोधनहै॥ मोहनक हियेश्रीकृस्न॥ नैंनाकेमनमैंगाढीगडनीसौगडिरही॥ नटसाल कहियेअटसालसौतिनकेउरकहियेहृदयतामैंसालिकहियेभेदि उठैहै॥२५॥ असंगतिअलंकार॥ सषीकोस्तुकरतिहैगडीरहीग्वाल बनाहै॥ असंलक्षक्रमध्वनिहैअसंगतिअलंकार॥ कारजकौरहैंऔरमैं कारनऔरहिठौर॥ औरकाजआरंभिये॥ औरैकीजैहोर॥ औरठौरहीकी जिये॥ औरठौरकोकाम॥ तीनअसंगतिजौंकहतभेदसुकविमति धाम॥२५॥

॥ असंगतिअलंकार ॥

मूल॥दोहा॥ बेदैकहावतआपुकों॥ गहवेगोपीनाथ॥ तोबदिहौंराषिहौ॥ हाथनिलषिमनहाथ॥२६॥

यहनाइकाकेहाथनकीसोभासषीनायकसौंकहतिहै॥२६॥

सवैया॥ चाहकहौबेरिनकीछविपैरदहोनिरजोपद्मकीरननाई॥ कोकिक

बि॰ ८

रीनिंहूंतैं मुषरी अगरी नु भरी अति को मललताई ॥ राषिहौं हाथन वेली के हाथ लषैं मन मोद विहार चलताई ॥ रूप सयानन कों अपनैं मनमान मती कंधरै गलहाई ॥ २६ ॥

टीका ॥ सषीको वचन नायक प्रती ॥ गोपीनाथ संबोधन है ॥ तो कहिये नव जवन मनायका के हाथनि कों देषि कै अपनें मन कों अपनें हाथ राषोगे ॥ इसकों जद मनलव है कीन मदेषतही वस होयेंगे ॥ २६ ॥

दूतीकी उक्ति नाइका की स्तुति करि नायक कों मिलायो चाहति है ॥ संभावना लाटा नुप्रासकी संसृष्टि है ॥ ज्यों ये त्यों या यो हा तिहे ॥ यह कहना वतिभाइ ॥ तहां कहत संभावना भिन्न भाव कछु होइ ॥ सोलाटानुप्रास है ॥ कहत सयाने लोइ ॥ २६ ॥

सत्य ॥ दोहा ॥ तेरहि हेतुं हौं सषी लिषें चढि न अटा वलि वाल ॥ विनु हौं ऊगे ससि समझि दैहैं अरघु अकाल ॥ २७ ॥

यह सिक्षा सषी नाइका सैंा कहती है ॥ मुषसोभाकी अधिकाई ॥ २७ ॥

सवैया ॥ तोंहि अटा चढि हौं मसिदेषन तें सजनी रहि आंगन हीतिन ॥ तो मुष ओरें किसी कवनी वनिता सब देषति हूं उदो छिन हौं छिन ॥ कैयो उनके व्रतभंग देषि उछाह भरी सब दे हिगी अर्घु मयंक उदै विन ॥ कैरै अवहाइ गोपान कुमानें कह्यो किन ॥ २७ ॥

टीका ॥ सषीको वचन नायका प्रती ॥ सषी संबोधन है ॥ तेरे ऊपर में बलि कहियें बलिहारी हैं ॥ तूं अटा क हियै महल्ल के ऊपर मति चढै ॥ तेरे चढतें विनही उदय भए चंद्रमा को समझि कैं अकाल कहियें अ

समयमैं औरनाइकाचंद्रमाकोअर्घदेहिगी॥ इसकोइहमनललवहै॥ की
तेरेमुखकोचंद्रमाकरहूरैंगी॥२७॥पर्यायोक्तिअलंकार॥नाइकाप्रतिस
षीकीउक्तिवंगिसौंसलतिकरतिहै॥पर्यायोक्तिअलंकार॥पर्यायोक्ति
प्रकारहै॥कछुरचनासौंबात॥मिसकरिकाजकीजियेजैसैंचि
त्रसुजान॥२७॥
[illegible] पर्यायोक्तिअलंकार॥२७॥

मूल॥दोहा॥दियोअर्घ नीचैंचलैः संकटुभानैंजाइ॥ सचितीहैंओरस
वैःससिहिंविलोकैआइ॥२८॥
यहसषीनाइकासौंकहतीहैः सिखावनप्रसौंभावीअभिवार्ई॥२८॥

सवैया॥एजिनिसाकरआजुदियोअबनीचैंचलैअवलिसंकटुभानैं॥ औरनन
कौडुचिनाईमिटैजिनसाधिउपासमनोरथठानैं॥ इंदुउनैइननोम्रपचंद्र
तेवंदकिनेचितसोचितमानैं॥ वेअपहन्ननएरेकरैंजेरहीचकिआचरजै
उरआनैं॥२८॥

टीका॥सषीकोवचननाइकाप्रती॥अर्घुचंद्रमाकोंदयौ॥महलकेऊप
रतेनीचेकोंउतरिचलै॥जायकैसंकरकौंभानैं॥औरसबनायकाचंद्र
माकोंसचितहैकैदेषैं॥२८॥पर्यायोक्तिअलंकार॥नायकाप्रतिसषी
कीउक्तिवंगिसौंसलुतिकरतिहै॥पर्यायोक्तिः पर्यायोक्तिप्रकारहै॥क
छुरचनासौंबातमिसकरिकाजकीजीयेजैसैंचित्रसुजान॥२८॥
[illegible]
[illegible] पर्यायोक्तिअलंकार॥२८॥

मूल॥दोहा॥हेरीलाईसुननकौः कहिगोरीमुसकात॥ थोरीथोरीसकुच
सौंः भोरीभोरीबात॥२९॥

बिहा०
२

यह प्रौढा नाइका नाइक की बातनु पै रीझी है सो सखी सों कहती है॥१९॥

सवैया॥ जा दिन तें वह स्याम मरो नैंन मिले मन सकाइ गयो है॥ ता दिन तें कवि हास कहै मन वा हरि के हाथु बिकाइ गयो है॥ छोरी सी लाज गई रस बोरी भोरी सी बात सुनाइ गयो है॥ कानन कों अब बैवनि या सुनिबे हरि को ढोरी लगाइ गयो है॥१९॥

टीका॥ सखी को वचन सखी प्रती॥ अथवा नाइक प्रती॥ गोरी कहिये नाइका॥ सो मुसिकान कहिये मंद हास करिकै॥ थोरी थोरी लाज करिकै॥ भोरी भोरी बात कहि कै सुनबे की ढोरी लाई है॥ इस को यह मन लग्यो है॥ कौ नाइका की बातनि सुनिबे को चाउ बाढत है॥१९॥ सुभावोक्ति अलंकार॥ नायका की सखी की उक्ति सखी सों नाइका सु यथा सुभावोक्ति अलंकार है का नु प्रास जातें जैसो रूप गुन बरनन ता ही रीति॥ तासों जानि सुभाव कबि भाषत है करि प्रीति॥ जहां वीच पद है पद मधुर सम मन ताप्रा इ मह है का नु प्रास है॥ कहन सु कवि समुदायः॥१९॥

मूल॥ दोहा॥ नाक चढै सी बी करै जितै छबीली छैल॥ फिरि फिरि भूलि उहै गहै प्यौ ककरीली गैल॥२०॥

यह जानि करि न सखी को वचन सखी सों॥२०॥

सवैया॥ सखि जान चलै हठ कै री रचि पग छुइ राह नें पाइ नु रंग गहै रे॥ वह प्यारे को रीझि रिझाइन प्यारी को मो पैं न बैंन कहे बखानि परै॥ अनि ना नुक छैल छबीली तिया जित नाक सकोरि कै सी बी करै॥ कवि हास कहै इह्वि चाइ गै पा तिन जानि कै प्रीतम पाउं धरै॥२०॥

टीका॥ सखी को वचन सखी सों॥ छबीली कहिये सुंदर॥ छैल कहिये नाइ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

का॥ सो जिसमाहमें नायकानाकचहावनहै॥ औरसखीबीसदनिकोकर
तिहै॥ वोकहियेनायकसो फिरिफिरि विकैमलिकेवहिककरीलीक
हियेकककनवारी॥ गैलकहियेराहकोंलेजावनहै॥२०॥ पञ्जोयेपक्रिम्र
केकारहै॥ ३ क्रि सषीकीसषीसोंरसाभास॥ असंलसनकमधुनिवां
तिपथयेयोक्रिः पर्ध्योमृक्रि एकावहै॥ मजुवचवसोभावन॥ निमक
पिकारिज्ञकीहीयेजैसेचित्रबहोन॥२०॥
[illegible]
नहजमकाल्नेकारहै॥ [illegible]॥२॥

मूल।दोहा॥ नेकउहीनजुदीकरीः हरषिजुदीनममाल॥ उरतेंवासहु
टैनहीं: वासछुटैहलाल॥२१॥

यहपर्वाअनुरागहैः नाइकाकीप्रीतिसषीनाइकसोंकहतिहैः॥ किंतुम्हारी
मालासोंयेसेंहितमानतिहै सोतुमसोंकहावनीहै॥२१॥

सवैया॥ जादिनवाहिअलीनहूं देषनरीकि हियेंहितमानकैभारी॥
अपनेंहीनेंउतारिदईतुमसफूलकीमालविसालविहारी॥ तादिन
तेंवहवारिफिवारिकोंप्राननहूंतेंलगीअतिप्यारी॥ वासगईकुम्हि
लाइगईयेकरीननऊउरतेंछिनन्यारी॥२१॥

टीका॥ सषीकोवचननायकप्रती॥ लालसंबोधनहै॥ जोतुमसमालह
रषिकहियेआनंदितहैकैकहियेदई॥ सोमालानेंतुउहींनाइकानेंजु
दीनहींकरी॥ इसकोयहमतलबहै॥ कि तुम्हारीप्रीतिकरिकेमालायै
हियेहीरही॥ वासकहियेसुगंधताकेछुटेहुंकहियेदूरभएतेउरकहिये
छातीनातेंमालाकोवासकहियेराषेतोंसोनहीछुट्यौ॥ इसकोयह
मतलबहैकीमालासुगंधहीनभईतऊभीनाउतारी॥२१॥ नमसकाअलं
कार॥ विरोधाभासकोसंकर॥ हलीकोअफ्रिनाइकसोंनाइकाकोअन

रागप्रगटतिहेजमकालंकार ॥ जिहिंध्यलपाहुविरोधहै ॥ अर्थमें
उनविरोधपाहुविरोधाभासकहि ॥ जोनोहियेपवोधजहांवही
पहपुनिपरस्पर्थ ॥ औरहीकेउतहजमकालंकारहै भाषितपंडि
तलोग ॥ २१ ॥

मूल ॥ दोहा ॥ वढतिनिकसिकुचकोररुचि: कढतगोरभुजमूल ॥ मनु
लुटिगौलोरनिचढत: चोटतउचटनफूल ॥ २२ ॥

यहनायकाकीलोटैंकीसोभानायककहतहै ॥ २२ ॥

सवैया ॥ वनआजलखीवृषभानसुताजगिजोतिरहीचहुंकुंजनकी ॥
छिंडुरीचितमैंउकसाइभुजावरचोटनिउन्नतफूलनकी ॥ वढतीकढ
तैंकुचकोरनुकीरुचिवारुप्रभाभुजमूलनकी ॥ लुटिगौमनुलोट
विलोकनहीछविमोहनकेसेंहूमूलनकी ॥ २२ ॥

टीका ॥ नायककीउक्ति सषीप्रती ॥ अथवासषीप्रती ॥ अथवासषी
सषीसोंकेहतिहै ॥ कुचनिकेकोरकहियेकिनारे ॥ तिनकीरुचिक
हियेसोभा ॥ सोवढतिकढ़ैनिकसतिहै ॥ ऊंचेजोफूलतिनकेचोटनक
हैंचुनन ॥ लोटनिकेचढनुकहियेमिटन ॥ मनुलूटिगयोइहांलछना
कोअर्थहै ॥ कोमनवसह्वैगयो ॥ २२ ॥ जातिवर्णनंअलंकार ॥ उक्तिना
यककीस्वनिसंचारीवचनअनुभावुस्मृतिसंचारीमननकथनहुसा
करिहर्षानुरागअसंलक्षक्रमध्वनिव्यंगि जातिवर्णनअलंकार
जाकोजैसोरूपगुन ॥ वरननवाहीरीति ॥ तासोंजातसुभावहै ॥
भाषतहैंकविप्रीति ॥ २२ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ जातिवर्ण
नंअलंकार ॥ २२ ॥

मूल ॥ दोहा ॥ चलननललितश्रमस्वेदकनः कलितनललितमुषचैन ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वनविहाररस्याकीनहनिःषरेषकापनेन॥२३॥

यहवनविहारनाइकाकीसोभानायककीग्रासक्तिसषीसषीसोंकहतिहै॥२३॥

कवित्त॥हषमाकलितनकहनीईवीगुराईमांऊउमगिप्रकासुग्रहनाईकेस
हाएहै॥नेईनेईललितश्रमसेदकनफलकजवामराजोतिकेसमहन
रसाएहै॥केहैकविहरलदेषिरहेअनिमिषहैकैचलननवैगोंहपगिगुमेरी
फद्याएहै॥विपनविहाररसलाकीरजवालवाकोथकिनप्रभानषरेलोच
नथकाएहै॥२३॥

टीका॥सषीकोवचनसषीसें॥अथवानायककोवचनसषीसें॥अथवास
षासें॥ललितकहियेसुंदरश्रमकहियेथकाहट॥तासेंस्वेदकहियेप
सीनाकेबुंदते॥कलितकहियेसुंदरसुषेनहोचलनहै॥इसकोयहम
तलवहै॥कोपसीनाकेबुंदमहदपेंपुरिरहेहैं॥वनविहारविषेंथको॥जो
ननिकहियेनाइका॥तादेषनवारेकेनेत्रथरेथकाएहै॥इसकोयहम
तलवहै॥कीदेषिवेकोचाउमिटतुनहीहै॥२३॥विभावनाअलंकारः॥
जहिनाइककीसाक्षात्दर्शनवचनअनुभावतेंसंलदवमधनिकारि॥अनु
रागव्यापि॥नेत्रनकोथकाइवोलछिताकहै॥विभावनाअनुप्रासालंकार
कीसंसृष्टि॥कारनकहियेकारिजहोइकेकारिजकारनकोउपजावै॥कार
नहोइअकारनतेंविअ्ररतकारनकाजवनावै॥केथतिवाथकहोमहको
हेतहोतयहीरससोन्नवढावै॥हेतुतेकाजविरुद्धविलोकिवुधेसहैभांति
विभावनागावै॥२३॥

मूल॥दोहा॥लैचुभकीचलिजाततितजितजलकेलिअधीर॥कीजलकेस
रनीरसेः॥तिनतिनकेसरनीर॥२४॥

यहजलकेलिसषीकोवचनसषीसें॥२४॥

सवैया॥मोहनसोंजलकेलिरचीवृषभानसुतामहिनरंगमेंबोरी॥हलक
हैवकविनाकछुविचारलिकासकोवारोंकरेकरजोरी॥चूभकलैनाहसैंज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लहूं चलिके तित ही जित न्हानि कि सोरी ॥ [illegible] ॥ के सखि के ज
लके सरिके सरिनीर करै तित ही नित गोरी ॥ २४ ॥

टीका ॥ सखी को वचन सखी सों ॥ अधीरा कहिये नाइका सो जित कहिये
जहां जलकेलि कहिये जलक्रीडा ॥ तित तहां चुभकी कहिये डुबकी
लैजा तिहै ॥ तहां ताके सरी कहिये नदी ॥ ताको नीर कहिये पानी सो
कीजतु है ॥ २४ ॥ उपमालंकार ॥ जो उक्ति नाइक की है सो सखनि सें चा
हे ॥ वचन अनुभाव गन कथन दशा तें अनुराग अंचल दृग मध
नि करि धुनि तैं है ॥ धर्म लुप्तोपमालंकार ॥ छेकानुप्रास जहां बीच
पर देपरें ॥ अच्छर समता आइ ॥ तह छेकानुप्रास है ॥ कहत पंडि
त समुदाय ॥ २४ ॥

सल्पा दोहा ॥ हे रि हिंडोरे गगन तें परी परी सी टूटि ॥ धरी धाय पिय बीच
हीं करी खरी रस लूटि ॥ २५ ॥

यह नाइका मुग्धा है हिंडोरे तें नाइक को देखि कें लाज के अधिकाते भाजिबे कों
भई सह टिपरी सखी को वचन सखी सों ॥ २५ ॥

सवैया ॥ गोल छबीली सखीन के संग बनी फूल नि रंग हिंडोरें ॥ बालकी छूत
री बाहु कसंभि सुगंध सनी दृग के मन गोरें ॥ नंदलला लखि ऊंचे तें टूटि प
री ज्यों परी अति लाजनि होरें ॥ प्रान पिआरे नें बीच हीं धाय करी रस लूटि
लई भरि कोरें ॥ २५ ॥

टीका ॥ सखी को वचन सखी सों ॥ परी अपसरा को नाम है ॥ ऐसी नाइका
नाइक को देखि कहिये देखि के ॥ हिंडोरा कहिये फूला ॥ सो गगन कहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ऐसेंआकाससैंहूटिपरीकहियेगिरिपरी ॥ पियकहियेनाइकनिसनैंथाइ
कहियैठौरिकै ॥ नाइकापरीकहियेपकरिकैघरीलहरिकरी ॥ इसकोयह
मनलवहै ॥ कीनायकनैंसंभोगकियो ॥ उपमारूपकाअलंकार ॥ २५ ॥ उक्ति
सषीकोसषीसौंअसंलक्षक्रमध्वनिहै ॥ येभावकीव्यक्तिलक्षिहोतासो
हैउपमाहभासनिहैं उतकंठाहआलिंगनकोभासतिहैं ॥ जोउतकंठ
ताहहलोकाहएकमनक्रियाछिदंधादेनुलछिनाकहतिहैं तिनहविप
त्निकोमिलनउपमारूपकजमकालंकारकोसंकरअनुप्राससोंसंसृष्टि
हैउपमानरुउपमेयमैंभेदपरेनलषाइलासोंरूपकवकहुनुहैसकलएकविसमु
राय मता बीचपद देपो ॥ २५ ॥

मूल ॥ दोहा ॥ वरजैंहूनोहठचहैःनासकुचैनसकोइ ॥ हूटतिकटिकोचीम
चकिःलचकिलचकिवचिजाइ ॥ २६ ॥

यहवर्षासमयहिंडोरेकीसोभाषधीनायकसौंकहतीहै सषीकोवचनसषीसों ॥

कवित्त ॥ फूलिवेकोचमकोलगैपाहैइनदैयासनिमेंझाडिसवठौरउहीआरठ
हरातिहै ॥ वरजियोज्यौंज्यौंत्यौंत्यौंमाननिनएकओकहठकैचढतिसकुच
तिनसकातिहै ॥ गातनकीनहुधिनसहारउरअंचलकोहारकविलुलित
पिंडुरीनठहरातिहै ॥ मचैंडूंहूंओरकैहिंडोरेकीमचकवकहुहूटतिसीलच
किलचकिवचिजातिहै ॥ २६ ॥

टीका ॥ सषीकोवचनसषीसों ॥ वरजैकहियेमनैंकरैतेहूनैंहठसोंफूलापर
चढतीहै ॥ नाइकानहीसकुचतिहै ॥ नहीडरतिहै ॥ नाइकाकरकहियेक
मरिसोफूलासोंलचकिलचकिकेवचिजातीहै ॥ स्वभावोक्तिअलंकार ॥ २६ ॥
उक्तिसषीकोसषीसोंकेवलआलंवनहोतेंरसध्वनितहैलुभ्रमोत्पादालं
कारवीप्साहुहैजहकोजतिसंभावना ॥ चलहैनुफलमधितीनभांतिउ
भेदालंकारननहतिप्रमोहू ॥ एकपाहचहुवारजहआतिआदरतेहोइअं
षनकोमनदेषिकवि ॥ कहैजुविप्रसासोइ ॥ २८ ॥

मूलदोहा॥ पिय बिछुरन को दुसह दुष: हरष ति जानि प्यौसार॥ दुरजोधन लौं देषियै तजत प्रान इहि बार॥२७॥

यह प्रस्ता विकल्प षंड षंडे दोऊ एकत्र कवी की उक्ति नायका भेद में सखी को वचन सखी सौं॥

सवैया॥ नेह लग्यौ मन भावन सौं वसिवौ ससुरारि को जी में सुहानौं॥ नेह ने को ऊ आयौ चलावन ता छिन में सुनि जो अकुलानौं॥ प्यौ बिछुरे दुष होत महां सुष नायक को चित सोच समानौं॥ प्रान को पंकज भौंति यकौ संपु ल्यो कछु कंवल कछू कुमिलानौं॥२७॥

टीका॥ सखी को वचन सखी सौं॥ पिय कहिये नायक ता के बिछुरन को दुसह कहिये सह्यौ न जाय ऐसौ दुष है॥ प्यौसार माइके को नाम है॥ ता को जान हरष कहिये आनंद है॥ नाइका तिहवार कहिये तिस समें॥ दुरजोधन लौं प्रान तजान कहिये छोड़त न देषियत है॥ इस को यह मन लव है॥ कौ दुरजोधन को दुष सुष एक ठे भयतन व मरन भयो है॥ तैसें मरन होत है॥ उपमा अलंकार॥ सखी की उक्ति सखी सौं नाइका के भाव संधि उपमालंकार॥ उपमा अरु उपमेय साधारन वाचक होइ॥ ए चारौं पद एप जिहां ह्वै तब उपमा सोइ॥२७॥

मूलदोहा॥ ज्यौं ज्यौं पावक लपट सी: तिय हिय सौं लपटाइ॥ त्यौं त्यौं छुटी गुलाब सौं: छतियां आनि सियराइ॥२८॥

यहनाइकाकीसोंआलसखीसोंकहतिहै ॥

सवैया ॥ पावककीलपटैंसीमनोज्योंज्योंदेषतरीफरहेनरनारी ॥ त्यांत्यांब
रीअतिसीनललालागतप्यारीहियैलपटैडुबरारी ॥ झलकहैनिरषीयह
रीलकछूउलटीविधनाविधकारी ॥ राधिकाअंगअनूपमहैजिहदेषत
हीवसहोयोविहारी ॥ २८ ॥

टीका ॥ नायककोवचनसषीसों ॥ पावककहियेआगिताकीलपरसो
कहियेनाइकासोज्योंज्योंकहैजैसेंजैसें ॥ हियकहियेहृदयतासोंलपटा
वतिहै ॥ त्यांत्यांकहैतैसेंतैसेंगुलाबकीछिरकिछातीसोंसियरातिहै ॥ इ
सकोयहमतलबहै ॥ कीतैसेंउसनाइकासोंलपटेछातीसियरीहो
तिहै ॥ विभावनाकोसंकराल्लंकार ॥ २८ ॥ उक्तिनाइककीस्मरतिसंचारी ॥ गु
नकथनदशावचनअनुभावतैं ॥ अनुरागाश्रितिविभावनालंकार ॥ का
रननांहिधेंकारिजहोइके ॥ कामजकारनकोउपजावै ॥ कारिजहोइअ
कारननैंकिअकारनकारिजकाजवनावेके प्रतिबाधककहेतहूकार
जहोतयहोरससोनुवहावैहैतुनैकाजविरुद्धविलोकिबुधैसठेभां
तिविभावनागावै ॥ २८ ॥

मूलःदोहा ॥ फफूलाहारहियेंलसैसनकीवेंदीभाल ॥ राधतिषेतबरीब
री:बरेउराजनबाल ॥ २९ ॥

यहज्ञातिवर्ननहैनाइकाकोवचनसषीप्रती ॥

सवैया ॥ पातनेरोलांककठोरषरेकुचगोरिअगेठिलनाईभरीहै ॥ मेचकपोति
षरेवडरेहगओठनमेंअरुनाईधरीहै ॥ हारहियेंफफूलाकोलसैविंदु
लीसनकीपपुरीकीकरीहै ॥ राधतिषेतबरीबझनागरिजोवनजो
तिबरीनिरषीहै ॥ २९ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विल॰
२३ 13

टीका ॥ सषीकोउक्ति सषीसैं ॥ अथवा नाइककोउ सषीसैं ॥ अथवा सषा
प्रती ॥ बालकहियेनाइका ॥ सोषरीषरीकहियेठाढीठाढी ॥ षरेकहिये
ऊचेउरोजकहैं कुच ॥ तिनसें षेनकीरषवारीकरतिहै ॥ कुफुलाकहिये
नयानाकोफूलसतुहै ॥ सनकी वेंदीभालकहियेलिलारतामेंसोह
तिहै ॥ अथवानाइकाषरेकहियेठाढेजेपुरुष तिनकोंकुचनिसेंषेनरा
षतिहै ॥ इसकोयहमनलवहैकीदेषनवारिनकोमारिडारतिहै ॥ २९ ॥ जा
तिवर्ननअलंकार ॥ अथ ग्रामवधूवर्णनं ॥ २९ ॥ जो हलीकीउक्ति होइ तो नाइ
काकेसंकेतनमेंपहुचीनाइकसोंसूचितकरतिहै ॥ जोनाइककीउक्ति होइ तो
स्मृतिसंचारीगुनकथनतें पूर्वानुरागअंगिजातिवर्णनरापतिनाको
षालंकारहै ॥ ग्रामीणवधूकोवर्णन ॥ जातिस्वभावस्वयोलक्षणं ॥ जा
कोजैसोरूपगुनवरननताहीरीति ॥ तासोंजातस्वभावकहै ॥ भाषत
हैकरिप्रीति ॥ २९ ॥
मूल दोहा ॥ गोरीगदकारीपरैः हंसतकपोलनिगाड ॥ कैसीलसतिगवा
रिकेः सुनकिरवाकोआड ॥ ३० ॥
यह जातिवर्णन ः नाइककीउक्ति सषिप्रतिकैसषाप्रती ॥
सवैया ॥ मोहनहै अलवेलीनवेलीकितीककितीउपमालवनावत ॥ गो
रीलसैगदकारीपरैहसतैंजुकपोलनगाडउठावत ॥ नीकीवनीजिय
कीसुधभूलतिआडकरीसुनकीछविपावत ॥ कुलकहैजुविलोकैनि
सैनरगर्वटरैफलनैकनपावत ॥ ३० ॥
टीका ॥ नायककीउक्ति सषीप्रतीकैसषाप्रती ॥ गोरीकहियेनाइका ॥ ता
केकपोलनिविषैंहसतविरियांमोटीगाडिपरतिहै ॥ औरगवारिकहिये
ग्रामवधू ॥ ताकेसुनकिरवीकहियेसुनपटीलताकीआडकहियेवें
दीसोकैसीसोहतिहै ॥ जातिवर्ननअलंकार ॥ ३० ॥ सषीकीउक्तिआश्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

र्षसंचारीकरिसषीसौं स्मृतिसंचारीतें गुनकथनकरि ॥ पूर्वानुरा
गमैंनाइककेवचनहू पश्रनुभावहै ॥ जातिवर्मनः ॥ जाकोजैसोरूह
पगुनः ॥ ३० ॥

मूल: दोहा: ॥ गडिकुटुंबकीभीरमैं: रहिवैठीदैपीठि ॥ तऊ पलकपरिजा
नि उन: सलजहसौंहीडीठि ॥ ३१ ॥
यहनाइकाकेप्रेमकीनिकाईग्रहचितैवेकीचतुराईनाइककहतहै: नाइकाय
परकीयाहै: ॥ ३१ ॥

सवैया ॥ प्यारीप्रवीनमहूनेहसनीनषतेसिषलौंसुषकीनिधिन्योंहीं ॥ कैसें
हूमोउरतेंनटरैजुचुभीचितचाहितिनैहतिन्योंहीं ॥ वैठीवधूगुरुनारिनि
मेंतऊनारिनवाइषरीसकचोंहीं ॥ लाजपढीपलपैकतऊपरिजाति
उतैवहडीठिहसौंहीं ॥ ३१ ॥

टीका: ॥ सषीकोवचनसषीसौं ॥ कुटुंबकीभीरमैंगाडिकहैंघेरीहै ॥ इस
नेलाजकरिनायककौजद्यपिपीठदैकेवैठीहै ॥ तऊपलककहियेछि
नकमैंसलजकहियेलाजसहित ॥ हसौंहीकहियेहासीसहितजोदीठि
कहियेदृष्टिउनकहियेनाइककीओरपरीजातीहै ॥ विभावनाअलंकार ॥
उक्तिसषीकीसषीसौं विभावकीव्यक्ति तैंस्वकीयहूपरकीयनको
भासतुनाहीं ॥ यातेंसाधारणनाइकावर्णनमैंलिषीहर्षसंचारीक
टाक्षविक्षेपअनुभावतैंशृंगारव्यंगिविभावनालंकार ॥ कारजनाहि
एकारजहोइकै कारजकारनउपजावै ॥ कारजहोइअकारननैं किअ
इरनकारजकाजवनावै ॥ कैप्रतिबाधकहोतहुकारजहोतयहार

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बिहा: २७ 14

सखीनोनुवदावै ॥ देतनैनेंकारजविरुद्दविलोकिवुधेसठैभांतिविभावनागावै ॥ ३१ ॥

मूल: दोहा: ॥ गदरानेंतननगोरटीः पअनआडलिलार ॥ हूयौदेइठिलाइहगः करैगमारिसुमारि ॥ ३२ ॥

यहजातिवर्ननमेंनायकाकीसोभानाइकसखीसोंकहतहै ॥

कवित्त: ॥ सोभाकेभरनभरीरूपकेसराचेहरीविनहूसिंगारछविक॰ लीनपरतिहै ॥ ललितलुनाईसनेंगदरानेंगातनमेंसरसतरुनाईआनि भरीआभरतिहै ॥ वटरारेवदनपैऐपनकीसोहैआडनैंसीयेचिवुकगाउ मनकोहरतिहै ॥ सहजसुभाइइठलाइकैगवारिगोरीहयौदैचलाइनै नचाइलचकरतिहै ॥ ३२

टीका: ॥ नाइकाकोवचनसखीप्रती ॥ गोरटीकहियेनाइका ॥ ताकेतन कहियेसरीरतेगदरानेंकहियेमोटेहैं ॥ पपनकीआडकहियेटीका॰ सोहै ॥ गवारिकहियेग्रामवधू ॥ सोइठादैकहियेहूडपनासोंहगकहे नेत्रतिनकोंसमारिकैदेंविलासकरतिहै ॥ अथवासुमारिकहेकामके नकावतिहै ॥ जातिवर्ननअलंकार ॥ ३२ ॥ सूरतिसंचारीगुनकथनद॰ सातेंएवालगततैनायककैवचनरूपअनुभावहै ॥ जातिवर्ननः जाकोजैसोरूपगुनवरननवाहीरीति ॥ तासोंजा

मूल: दोहा: ॥ ज्यौंचुरकीत्यौंकरचलैः ज्यौंकरत्यौंहीनार ॥ छविसौंग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निमीलेचलै:चातुरकाननिहार॥३३॥
यहज्ञातिवर्णनंहेनायककौवचनसखीसौंकविहकीउक्तिहोइ॥
सवैया॥जैसेंकचतैंयांहीचलैचुटकीउचरैभुजमूलवटीछबिभारी॥चातुरलाल
हैकौमोरनिग्रीवकौहेरितिजीनैटरैनहिटारी॥भौंहउचेंनिरछेकरिलोचन
लेतिकियौंगतिहपउज्यारी॥पातुरमानौंमनोजमहीपकीचातुरकानन
हारिनिहारी॥३३॥

टीका॥सषीकौवचनअथवानायककौवचनसषीप्रती॥जैसैंचुटकीहाथ
कीचलतीहैतैसैंहीहाथचलतहै॥औरजैसेंहाथचलतहैतैसेंनारीकरि
येगुटीचलतीहै॥चातुरजोप्रवीनकाननहारीसोइछबिसोमानौंगतिलेच
लनिहै॥अथजातिवर्णनं:लक्षणोऽलोह्यअलंकार॥३३॥

मूल:दोहा:॥औरहंदेहंडीजिनधरै:जिनतंलेहितनारि॥नीकौहछीकौछ
वै:येसेंहीवरनिनारि॥यहनाइकायेंनाइकरीकोहैसोनाइकअथवासखी
सखीसोंकहै॥३४॥

सवैया:॥रूपकीरासिवनीनवनागरजानिरषैरतिरूंभलज्ञानी॥हूलसक
हैनषतेंसिषलौंमनौंरूपकीहारहरीविधिसानी॥येरीदहेंडीधरैमतनंजि
नछीकेतेआपउआरसियानी॥तोपरसेंअतिनीकोलगेमानतेंऔसेंरहीमन
यौंठहरानी॥३४॥

विरा॰
२२ 15

टीका॥ सखीकोवचनग्रथवानायककोवचनसखीप्रती॥ अरे है संबोधनहै॥ तूद
हेंडीछबीकेपरमतिधर॥ ओरछबीकेपरतेमतिउनाकतेरेहुवैनेछबीकोनीकौ
लागतुहै॥ तातेंतूयेसेंछबीकोपकरेंहोरहु॥ नारीसंबोधनहै॥ यें थवा छबी
कनेंबुरोहोतहै॥ इसकोयहअर्थहैकीछबीकबुरीहोतहै॥ तातेंछिनमा
त्रछबीकोपकरेंहोरहु॥ पर्जायोक्तिअलंकार॥ २४॥

मूल॥ दोहा॥ रटकीधोईधोवती॥ चटकीलीमुषजोति॥ दिपतिरसोईकोव
गरः॥ जगरमगरद्युतिहोति॥ २५॥

यहुजातिवर्ननहै सखीनाइकाकेरूपकीनिकाईनाइकसोंनिरूपनककरतिहै॥

कवित्त॥ बैठीआपरसहूजननागरिसरसवेषदेषिमनमोहनकोसुधिबुधिडग
री॥ हूलसप्रानप्यारेकीउहाईरीझहाईवेसतेसीदईविधिनेंसकेलिसोभा
सगरी॥ दमकेवदनजोतिविसदवरनधोतीपहिरेंलसतिसोंनिरूपनगुन
अगरी॥ है रह्यौ प्रकासुअतिजगरमगरतिहिवरनरसोइकेअपारजोति
वगरी॥ २५॥

टीका॥ सखीकोउक्तिसखीप्रती॥ रटकीकहियेंततकालकीयेंतीधोईहै॥ औ
रमुषकीजोतिचटकभरीहै॥ येसीनाइकासोभासोंरसोईकेघरमेंजगम
गातिहै॥ जातिवर्ननअलंकार॥ २५॥ अथनषसिषवर्ननं॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूलः॥ दोहाः॥ सहजसुचिकनस्यामरुचिःसुचिसुगंधसुकुमार॥ गनतन
मनपथअपथलषिःविथुरेसुथरेवार॥ ३६॥
यहनाइकाकेकेसनकीसोभापैनायकआसक्तहैःनाइकासैंकहतुहैअथवा
सषीसषीसैंकहतीहै॥

सवैया॥ निंदतहैमैंपुंजप्रभाजिनकीछुविहेरिसिलीसुषहारे॥ स्यामसुगं
धसुचिकनकेबलसोभनसुंदरलोललछारे॥ मैंनमनोअपनेकरकेमु
षतूलकेचोरबनाइसवारे॥ देषतहीमनधाकिरहेरौनवनागरिकेसुथरे
छुतिवारे॥ ३६॥

टीका॥ देषनवारेकेवचनसेहृजकहैविनातेलडारेसुचिकनकहैचीक
नेंहैं॥ अरुस्यामजिनकीरुचिकहियेंक्रांतिहै॥ सुचिकहियेउज्जलुपवि
त्रहैंऔरसुगंधिसेंभरेहैं॥ औरसुकुमारकहैनरमहैं॥ विथुरेकहियेषु
लेसुथरेकहियोआछेजेबारतिनकोंदेषिकेदेषनवारेकोमनुमारगअ
मारगनतहीदेषनुहै॥ दीपकालंकार॥ ३६॥

मूलः दोहा ॥ वेई कर ब्यौरनि वहै ब्यौरो कौन विचार ॥ जिनही उरझ्यो मो हियो ।
तिनही सुरझे बार ॥ ३२ ॥
यह नायक की सखि नाइका को हाथ न पैहै बार ब्यौरत देखि नाइका सखी सों कहत है ॥

सवैया ॥ पानिल सै सरसी रुह से तिनऊ पर सोहत भौंर भए हैं ॥ केलपरी ।
सी खरी सुथरी अंगुरीन मैं चंद प्रभा नख छए हैं ॥ वेई हैं हाथ वहै चलि बौ क
हियामैं बिना न कहा धौ ठए हैं ॥ मेरो हियो जिन सों उरझ्यो तिन ब्यौरनि
हौ सुरझे कच ए हैं ॥ ३२ ॥

टीका ॥ उन्नि नाइका की सखी प्रती कें सखा प्रती ॥ वेई हाथ हैं और वही ब्यौरी बा
हे यह ब्यौरो कहियेत पाउत सो ॥ कौन विचार सो कौन विचार भयो है ॥ जि ।
न सों मेरो हियो उरझ्यो है ॥ तिन सों बार सुरझे है ॥ अथवा जिन बारन सों मे
रो मन उरझ्यो है ते बार सुरझे नहीं ॥ विभावना अलंकार ॥ ३२ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूलः दोहा ॥ छुटेछुटावैजगतनतेः सटकारेसुकुमार ॥ मनुबांधेवैनीबधेःनी
लछबीलेबार ॥ ३८ ॥
यहमुग्धाकावेवाबनवीसोभाचेनायककोमनुरीजोहैःसुनाइकासोंकहतुहैः ॥
अथवासषीसोंकहतुहैःकविहूकीउक्तिहै ॥

सवैया: ॥ सोहतहैसुकुमारमहांउपमाकोसिवारनलागततेरे ॥ मेचकलांवे
सुगंधलछारेनिहारतनेनफिरेननफेरे ॥ छुटेछुटावतहैजगतेइनकेकछु।
कौंनिकहैंनेसदेरे ॥ नीरजनेनीकहाकहियेमनुबांधतवेनींबंधेकचतेरे ॥ ३८

टीका: ॥ सषीकोवचनसषीसों ॥ फुलसटकारेकहैंलांवेसुकुमारकहैंकोम
लजेबार ॥ तेजगतकहियेसंसारतातेछुटावैहै ॥ इसकोयहमतलवहै ॥।
कीजिनपुरुषबारदेषेहै ॥ तेसंसारकेकामतेरहितभए ॥ वैनीमेंबांधेनी।
लकहियेस्यामछबीलेकहैंसुंदर ॥ तेमनकौंबांधिलेतेहैं ॥ लछनाकरिम
नकोवसकरतेहैंश्रेवकहियेंमनाकोअर्थहोतहै ॥ विभावनाअलंकार ३८

मूलः दोहा ॥ कुटिलअलकछुटिपरतमुषःवढिगोइतोउदोत ॥ वंकवका
रीदेतज्योंःदामरुपैयाहोत ॥ ३९ ॥
यहनायकाकुलटालिलाटसृंगारहैःसोसषीनायकसोंकहतुहैःनाइकानाइकासो
कहतुहैःयादोहाकेवासवांकिसंभवेः ॥

कवित्त: ॥ जगिमगिरहीमुषचंदकीअमंदद्युतिचांदनीनिहारतीहोतिऐसा

विह०
२

17

ठौ ज्ञाम धाम तें ॥ ताहीं रहै देसहा छैं सकल सिंगार साज न्याइ बसकी मैं च
न स्याम हू जवाम तें ॥ हलस प्रान प्यारे की सौं ताहीं यह छूटत ही कुटिल अल
क सो भाल हू अभिराम तें ॥ पतेमान बढि गयो उमगि उदोत वंक दिपत वे ब
कारी ज्यौं गहपै या होत दाम तें ॥ ३९ ॥

टीका ॥ उपमा सखी को वचन सखी सौं ॥ कुटिल कहिये टेही जो अलक
जुलफ ताको मुष पै परत ॥ मुषको इतनौ उदोत कहै उदय बढि गयो ॥ जै
सें टेही वकारी दयेतें दाम रुपैया होत है ॥ उपमा अलंकार ॥ ३९ ॥

मूल दोहा ॥ कच समेटि कर भुज उलटि षए सीस पट डारि ॥ काकौ मन
मन बांधन न यै जूरा बांधनि हारि ॥ ४० ॥

यह जूरो बांधन नायका नायक नैं देषी है सो सषी सषी सौं कहती है जाति वर्नन
हेतु ॥

कवित्त ॥ नैंनन हैं न सैंनन कै सेवांन षरसौं न धरे आनन की ओप कहूं जैसी
चंद रह रेकी ॥ कनक लता सी भुज उरज उतंग गोरे षुली षुभी कंचुकी स
वजरंग हरे की ॥ कहै कवि हरि लमर कोली चाह चितवनी चटकी र
ली चूनरी चटक चोषे चूरे की ॥ सीस पटु डारि भुज उलटि समेटि कच कौं
न मन बांधे वाकी बांधनी सी जूरे की ॥ ४० ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

टीका:॥ उक्ति है मनवारे की सषी प्रती अथ सषा अनी॥ कर कहिये हाथ तासौं कच कहिये केस तिनकों समेटि कहिये एकठे करिवै॥ भुजानि कों उलटिवै षण क हैं कों थे तिन पर पट कहैं वस्त्र॥ ताकों डारिवौ इ सब रावाधनवारी को मन वांधो नही॥ इस को यह मतलव है की सब को मन वस कीनो॥ युक्तोक्ति अलंकार॥ मानिवनीतं॥ ४०॥

मूल:॥ दोहा:॥ तिय मुष लषि हीराजरी: वेंदी वढ्यौ विनोद॥ सुत सनेह मानौ लियो: विधु पूरन वुध गोद॥ ४१॥

यह नाइका के भाल हीराजरी वेंदी की सोभा है: सषी नाइका सौं कहै नाइका सषी सौं कहै:॥

कवित्त:॥ कनक वरन तन जरा रमगा रहे तन ओप को उजास भौं तें आस पास कीन्हों है॥ सकल सवे लि रूप विरचि रची विरंच विलषीन कठिन उरोज जग पीनों है॥ ललित लिलार पर हीरा की ललित वेंदी कहै कवि हूलसा देषि मनु टेक भीनों है॥ मेरे जान मोद करि अधिक सनेह भरी पूरन मयंक अंक रविंक्र वुधि लीनों है॥ ४२॥

टीका॥ सषी को वचन सषी प्रती॥ तिय के मुष विषे हीराजरी जो वेंदी॥ ताको देषि कै आनंद कहिये विनोद वढ्यो है॥ मानौं पूरन चंद्रमा नें पुत्र कों प्रीति करि गोद में लीनों है॥ हीरा की वेंदी वुध जानियें मुष चंद्रमा जानियें

बिहा. २८ 18

उत्प्रेक्षाअलंकार ॥ ४१ ॥

मूल: दोहा ॥ नीको लसत लिलार पर: टीको जरत जराइ ॥ छबिहि बढावत रवि मनौ: ससि मंडल मैं आइ ॥ ४२ ॥

यह लिलार पै टीको है ताकी उपमा सखी नायक सौं कहै है कवि की उक्ति है ॥

सवैया: ॥ जोबन जोति जगामग होति सिंगार प्रभा सरसावत है ॥ रीझ रहे लखि लाल के लोचन मो दृग हियें भरि आवत है ॥ सोहत टीको जराइ जरो तिय भाल महां छबि छाजत है ॥ मानहु चंद के मंडल में दिननायक सोभ बढावत है ॥ [illegible]

टीका: ॥ सखी की उक्ति सखी सौं अथवा कवि को वचन ॥ जराउ सौं जरयो जो टीको लिलार पर सो नीको सोभायमान होत है ॥ सो मानो रवि कहिये सूर्य सो चंद्रमा को मंडल मैं आइ कै छबि कौं बढावत है ॥ इति प्रेक्षाअलंकार ॥ ४२ ॥

मूल: दोहा: ॥ सबै सुहाए ई लगैं: बसै सुहाए ठाम ॥ गोरे मुह बेंदी लसै: अरुन पीत सित स्याम ॥ ४३ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यहस्यामकोमिलिआछीठौरकोप्रभाउजुआइआपहीसुआछोहीलगै ः॥

सवैया॥नीकेकैसंगअनीकौउनीकोलगैयहबातपतछनिहारी॥ठौरसु
हायेंबसैमसुहापलगैसबहीउमोछबिभारी॥कैसेंबढावतिमोउहियें
नवनागरिकेमुषआइमेंगारी॥गोरेलिलारलसैंबिंदुलीसितरातोह
रीपियरीअरुकारी॥४३॥

टीका॥सषीकोवचनसषीसोंमुहापकहियेभलेठौम॥तामेंसभैभलो
लागतहै॥जैसेंगोरेमुषमेंलालपीरीस्वेतस्यामरेषवैंदीसोभायमानहो
तिहै॥अथवास्यामसंबोधनहै॥दृष्टांतअलंकार॥४३॥

मूलःदोहा॥कहतसबैवैंदीदियें आंकुदसगुनोहोत॥तियलिलारवैंदीदि
यें अगनितबढतउदोत॥४४॥

यहवैंदीकेदियतेंमुषकीसोभाअधिकहोतीहैसषीनाइकासोंकहतीहै ः॥

कवित्त॥जोवनसौंमिलजगमगातिअपारजोतिमुहामुनिहूकोदेषेंमन
रहमोहतहै॥कहैकविहरिलालबिधुजनसोंछाइरह्योसरसिंगारबरस
तमुहासोहतहै॥सबकोऊयेसेंहीकहतमहिमंडलमैंवैंदीकोदियेतें
आंकुदसगनोहोतहै॥वहीनवनागरिकेललितलिलारपरवैंदीके
दियेजेवाढ्योअगनितउदोतहै॥४४॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बिहा. १९ 19

टीका॥ कविकी उक्ति सखु संसार यह कहत है बेंदीके दपतें श्रांखु हमगुनो होत
है॥ तिय जो नाइका ताके लिलार में बेंदीके दपतें श्रगनित कहैं श्रसंख्य उ
दोत बढत है॥ व्यतिरेकालंकार॥ ४४॥

सुखः दोहा॥ भाल लाल बेंदी दियें छुटें बार छवि देन॥ गह्यौ राहु अति आ
हकरि मनु ससि सूर समेत॥ ४५॥
यह सिषनष में नाइका के लिलार बेंदी श्रलकन की सोभा है सो सखी नाइका सों
कवि हू की उक्ति है॥

सवैया॥ नवनागरि के मुख चंद की चारु प्रभा सरसी कहतें सरसी॥ श्रहनार
न स्याम सुदेस सिरोरुह छूटि छवैं श्रति श्रोपलसी॥ मनौं श्रानि के है अतिः
श्राह के राहनेपकनहीं दोउ भानससी॥ ४५॥ पुनि बेंदी बिराजनि भालमें लाल बिलो
कनि काहि करे न बसी॥

टीका॥ सखी की उक्ति सखी प्रती श्रथवा कवि को वचन श्रथवा देषन वा
रे को वचन॥ भाल कहिये लिलार ता में बेंदी दई है ता पे छुटे बार ये सो छवि
देत है॥ सो मानौं राहनें श्रति हीम निकरि कैं सूर्य चंद्रमा पकरे हैं॥ उ
त्प्रेक्षालंकार॥ ४५॥

मूल:दोहा:॥ मिलि चंदन बेंदी रही: गोरे मुह न लषाइ॥ ज्यों ज्यों मद लाली चढ़ै: त्यों त्यों उघरति जाइ॥ ४६॥

यह मदपान समय नायका की सोभा नायक सषी सों कहै॥ ४६॥

सवैया:॥ कछु आछु लषी मदपान समैं ललना की प्रभा जियतें न टरै॥ कवि रूसक है वल कै ललके मनमोहन को हसि अंक भरै॥ दुति चंदन की विंदुली किरही मिलि गोरे लिलार न जानि परै॥ अरुनाई चहै मद की मुष ज्यों ही ज्यों त्यों ही त्यों जो निवरी उघरै॥ ४६॥

टीका:॥ सषी को वचन सषी सों चंदन की जो वेंदी गोरे मुष में मिलि रही है॥ सो दिषाई नहीं देति है जैसें जैसें मद की लाली चढ़ती है तैसें तैसें उघरति जाती है॥ मदपान वर्नन॥ उन्मीलिता अलंकार॥ ४६॥

मूल:दोहा:॥ भाल लाल वैंदी ललित: आषत रहे विराजि॥ इंदु कला कुज में वसी: मनो राहु भय भाजि॥ ५१॥

यह सिंगार समैं नाइका के लिलार वेंदी अछत न की सोभा है: सषी नायक सों कहती है कवि हू की उक्ति हो इ:॥

कवित्त:॥ उदय समें मैं राका चंद सो वदनु तै सी नई तरुनाई की उमग गोरे रंग में॥ कंचन किनारी वारी का करेजी सारी ना में देषि छवि भारी करुनाए नी है अनंग में॥ भाल पर रोचन की विंदु छवि देनु ता पै अछित लसै ज्यों गंगा सरस्वती संगम में॥ जा समा नि तु मको सुधाकर की कला मानौं वसी

है निसकअघनीसुतकेअंगनमें ॥४७॥

टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रतीभालजोलिलारतामेंलालबेंदीदईहै॥ तामे
ललितकहैं सुंदरअछतसोभायमानह्वैरहेहैं॥ मानोंचंद्रमाराहुकेभय
सोंभाजिकेंकुजजोमंगलतामेंवस्योहै॥ उत्प्रेक्षाअलंकार॥४७॥

मूलःदोहाः॥ पियतियसोंहसिकेकह्योःलष्यौदिठौनादीन॥ चंदमुषीमुष
चंदतेःभलौचंदसमकीन॥४८॥

यहदिठौनावर्ननंनायकुनाइकासौंकहैअथवासिंगारवती यहसषीसोंकहतिहै॥

सवैयाः॥ प्यारीकोचारुसिंगारुनिहारिहियेंपतिकेअतिमोदभर्योहै॥ चा
हिचषोडाकह्योमुसकाइसहोविधरूपसकेलिधर्योहै॥ जामुषको
अकलंकप्रभासकलंकमयंकघरोनिदर्योहै॥ सोमुषनेंवडिठौनादेया
जभलौयहचंदसमानकर्योहै॥

टीका॥ सषीकोवचनसषीसौंपियकहियेनायकतानेंदियोजोदिठौं
ना॥ ताकोदेषिकैनायकसौंहसिकैकह्योचंदमषीसंबोधनहै॥ तेरामु
षचंद्रमाकोभलोतोकोंचंद्रमाकेसमानमुषतोअरुचंद्रमातेंतेरोमुष
भलोहै॥ सोतेंचंद्रमाकेवरोवरकर्योहै॥ उपमाअलंकार॥४८॥

मूल दोहा ॥ लौंनें मुहु डीठि न लगै: यौं कहि दीनौं ईठि ॥ दूनी ह्वै लागन लगी: दियें दिठौंना डीठि ॥ ४९ ॥ नैं

यह डिठौना को वर्ननन नायकु नाइकासौं कहै: सषी सषीसौं कहै: नाइका सौं सषी कहै: नाइका सषीसौं कहै:॥

सवैया ॥ तो हि लषै रतिकी दुति लाजति राजति ओप सिंगार किएतें ॥ मोहन की बरनी न परै छबि मोहन न्याइ हीमो ललिएतें ॥ सुंदर आनन डीठि न लागै कह्यो अलि यों हितमान हिएतें ॥ तो मुष पै अब लागन लागी है दूनी है डीठि डिठौंना दिएतें ॥

टीका ॥ सषीकी उक्ति सषीसों सलौंनौ कहिये सुंदर जो मुष ॥ ताहि डीठ न लागै यैसें करिकै ईठि कहिये सषी ताने डिठौंना दयो ॥ ता डिठौंना के दएतें दूनी दिष्टि लागन लगी ॥ विषादनाम अलंकार ॥ ४९ ॥

मूल दोहा ॥ रस सिंगार मंजन किये: कंजन भंजन दैंन ॥ अंजन रंजन हू बिना: षंजन गंजन नैंन ॥ ५० ॥

यह नायका के नेत्रनु की सोभा सषी नायकसौं कहति है: नायका हू सौं कहै: नाइकु नाइकासौं कहै: यह सषीसौं कहै:॥

विल० २१

सवैया॥ कंजकुरंगनमानन्नुरंजनु पीमनरंजनहैअनियारे॥ षंजनमीननुकेमद गंजनअंजनहूबिनएकजरारे॥ लाजसमाजसुसीलरुसीरसरंगभरेविधिमेंनसुधारे॥ सूरसकहेउपमाकहियेतिययाजगमेंदृगतेरेउन्यारे॥५०॥

टीका॥ कविकोवचनमंजननामजोहैसिंगाररस॥ ताकेकरेकाजरदेरहेयेकंजकहैंकमलतिनकेभंजनकरनेवारेहैं॥ अंजनकहैंकाजरमाकोरंजनकहैपावनो॥ तारिनाषंजनकहियेमिमोलानाकोरंजनकहियेमारनेवारेहैं॥ अथवानेत्रमंजनकियेरससिंगारहैं॥ विभावनाअलंकारः॥५०॥

सषदोहा॥ जोगज्ञानसिषएसबैः मनेंमहांमउनिमेंन॥ चाहितपियअहैंतनाः काननसेवतनेंन॥५१॥

यहनाइकाकेनेत्रनकीसोभाअहतहनाईनायककोविलाहपियकीचाहसषीनायकसोंकहतीसषीसषीसोंकहैः॥

कवित॥ लीनोंउपदेसमहामनिमीनकेननकोजोगकलुकुसलनविमलवसंतहैं॥ ननमनमोहनसोंपकभयोचाहतहैकाननुकोसेवतज्ञानजोतिवंतहैं॥ हलप्रानप्यारेकीतुहाईजिकैदेषतहींविरहकलेसयहसकलइसंतहैं॥ मरलसुभाइउरमोंकधरेप्यारीतेरेनैंनमनमोहनकोंहरनमहंतहैं॥

टीका॥ सषीकोवचनसषीसोंमेंनकहियेकामदेव॥ सोईजोभयोवडोमहानिस्वर॥ तानेंमानोंनेत्रनिकोंसबैजोगकोगतिकहियेरहनिसोसिषाईहै॥ याहीतेनेत्रजोहैंनेपियकहियेनायकतासोंअहैंतताकहियेकला। ताकोंचाहिकैकाननिकोंसेवतहैं॥ इसकोयहरूपजोयहैकीजोवनको।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

आपनैंकाननिलैंांवडेभए॥ औरमुनिस्वरजाकोजोगकुरनेंसिषावतहैं॥
सोगुरहू पियकहियेईस्वरताकोमिलनेंकीचाहनाकरिकें॥ कांननकहिये
कनताकौसेवनकहिकरतहैं॥उतप्रेक्षारूपकसमासोअलंकार॥५१॥

मूलः दोहाः॥ साइकसममाइकनयनः रंगेत्रिविधरंगगात॥ झषोबिल
षिडुरिजातजललषिजलजातलजात॥५२॥
यहनाइकाकेनेत्रनकीसोभासषीनायकसौंकहतिहै: नायकुनायकासौंकहै:
अरुनायकुसषीसौंकहै:॥

सवैयाः॥ सायकसन्नायकहैनीषननरलहूगास्वेतस्यामअरुनत्रिविधरंगे
गातहैं॥ कहैकविहूलयाकेउरमेंभिदनजाहिसुधिनरहतिगातझूमि
घहनातिहै॥ एतेपरमोहैविषमविषदअंजनहैजाहीमेंविसेषविषाउर
सरसातहैं॥ सफरीविलोकिजलविलषिडुरतिमहाभटकतविपनलजा
तजलजातहैं॥५२॥

टीकाः॥ सषीकोवचनसषीसौंनेत्रसाइककहैंकामकेसेतिनकेसमानसा
इककहैंमानवीहैकोईन्नायकपाठकहतहैं॥ ताकोयहअर्थहैवांनकेस
मानन्नायककरनवारेहैं॥ इननेत्रनकोगातजोहरीसोतीनप्रकारकोअ
रुनासौंरंगेहै॥ इसकोयहअर्थहैजोनेत्रस्यामहैंऔरस्वेतहैंऔरडोरलि
सोंलालहै॥ झषकहियेमछरीसोविलषकैडुषीह्वैकेजलमेंछिपि
जातिहै॥ औरजलजातजोकमलतिनदेषिकेलज्यावंतहोतुहै॥ अथ
वामछरीविलषतिहैजलजातकहियेमोतीतेछिपतहै॥ सोतलषिक
हियेदेषिइसकोयहमतलवहैकीतीनरंगनेत्रनिकेहैंमोतीनेंवातें।

बिहा॰
२२ 22

हूरिकार॥ उपमाउतप्रेक्षा प्रीतीअलंकारकौसंकर॥ ५२॥

अथ दोहा:॥ षेलनसिषए अली भले: चतुर अहेरी मार॥ कांननचारीनैन
मृग: नागरनरनिसिकार॥ ५३॥

यहनाइका कुलटापरकिया है सषीकोवचननायकासौं: नागरनरनसिका
र या पदनैं वकृतनाइकानिकी प्रतीत भई॥

सवैया:॥ कांननचारीकहैंमैं इनै परदौरिकरै पुरमैं मृगआप॥ औलक्ष
भेदिअचूकमनैगुनआगरनागरमारिगिराए॥ घायलकौफिरिलेन
सुधौंनपलौंनपकेअनिकौंनकछाए॥ नीकेमनोजप्रवीनकैएलष
षेलनैंनैंनकुरंगसिषाए॥ ५३॥

टीका:॥ सषीकोवचन सषीप्रती: अथवानायकोवचनसषीप्रती॥ अली
सषीकौसंबोधनहै चतुरकहियेप्रवीनमारजोकामदेव॥ सोईभयौअहे
रीतानैंभलेषेलनसिषाएहै॥ कांननचारीकहियेकाननलौंबड़े॥ वन
केआषिरनवारेजोनेत्रतेईभएमृग॥ तेनागरकहियेचतुरजोनरतिन
कौभलेषेलनसिषाएहैं॥ रूपकश्लेषविभावअलंकार॥ ५३॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूल दोहा:॥ बरजीते सर मैंन के: ऐसे देषे मैंन॥ हरनी के नैंनानि तें हरनी
के ए नैंन॥५४॥

यह नाइका के नेत्रन की सोभा सषी नायक सौं कहति है:॥

कवित्त:॥ चेरे कीने षंजन कुमेरे कीने कंज पुंज उपमा कों नेरे अलि रंच
कल रौंन है॥ सोहत रसाप सरस ये साल सौ तिन के देषें मन हरत चित
चैंन है॥ चपल कटाछ बरजीतन मदन सर स्याम के निकट देषे वैसे नैंन मैंन
है॥ कामदेव वंदनी के त्रिषभांन नंदनी के हरनी के नैंननि तें हरनी के नैंन है॥

टीका:॥ सषी कौ वचन उक्ति नाइका प्रती वरनन कहिये अरु जो कामदेव के बा
नतिन ने त्रन जीते हैं॥ अथवा कामवान निजीते हैं इस अर्थ में अलंका
र को एकै जानवो॥ और इन नेत्रनि सों मैंना हौं देषे हैं हरी संवोधन है॥
हरनी के नेत्रनि सों ते रए नेत्रनी के हैं॥ जमकालंकार॥५४॥

मूल: दोहा:॥ संगति दोष लगै सबनि: कहि यत सांचे वैंन॥ कुटिल वंक भ्रु
संग है: कुटिल वंक गति नैंन॥५५॥

यह प्रसंग विक संगति दोष लागै या को ह्रष्टांत कवि की उक्त॥

सवैया॥ और तें जे से ई संग रहै जु गहै सुभली विधि वान वहीय॥ संगति
दोष लगै सभ कों विधि है यह आज अनादि सहीय॥ कुस्म कहै जग मैं
यह बात प्रतक्ष प्रवीन निरक्ष वहीय॥ वंक भ्रकुटिन कौ संग पाय
कै नैंनन हूं गति वंक गहीय॥

टीका:॥ सखी कौ वचन नाइका प्रती संगति कौ दोष सब काहू कौ लागतु है ॥ ए वचन सांचे कहतु हैं कुटिल नाइका कौं संबोधन है: इस संबोधन सों मान भें जिन होतु है॥ वंक कहियें टेढ़ी भ्रू जो है भौंहें तिनके साथ नेत्र गति टेढ़ी भई है॥ पुनरुक्तवदाभास अलंकार: अर्थांतरन्यास को संकर ॥ ५५ ॥

मूल: दोहा:॥ दृगन लगत बेधत हियहिं बिकल करत अंग आन॥ ए तेरे सब तें बिषम: ईछन तीछन बान॥ ५६॥
यह नाइका के नेत्र देखि नायक कौं बिकलता भई है: सो सखी नायका सौं कहति है अथवा नाइक नायका सौं कहतु है॥

सवैया:॥ भौंह कमान बिना जिह तें छुटि टेढ़े चलें इह ओर अनेरे॥ नैनन अनिअर चलत लगे हियें बेधन कौं ऊँह फिरें न फिके रे॥ औ रस वै अंग व्याकुल है सरसान बिथा चहलान चने रे॥ तीनि गहे सबतें विषमैं विषमै सर तीछन ईछन तेरे॥

टीका:॥ उक्ति देखन वारे की नाइका प्रती: ए तेरे ईछन कहैं नेत्र ते विषम कहैं उलटे तीछन कहैं पैनें बान हैं॥ काहे तें सो ई कहै है तहैं: नेत्रनि सौं नेरे नेत्र लागतु हैं॥ हियें कौ बेधतु हैं और अंगनि कौ व्याकुल करतु हैं॥ असंगति अलंकार॥ ५६ ॥

मूलः दोहा:॥ झूठे जानि न संग्रहै: मन मुष निकसे बैन॥ याही ते मानो कि
ये: बिधि बानन कों बैन॥५८॥ यह दोऊ नेत्रनि हूं मैं बान करत हैं: सो सषी स
षी सों कहती है: कबित्त निहूं रोई:॥

कबित्त:॥ इत ब्रजराज कौ कुमार को रस करासि: उत ब्रषभान की कुमा
री चरवानि कै॥ ढाहै हिन बाडे आप आपने अटान पर करन कटाछ मन
मथ की कलानि कै॥ बदन तें निकसें ते झूठे हैं न मेरें जान बैनन को सं
ग्रह कह्यौ न यह जानि कै॥ परम प्रवीन दोऊ याही तें परम परलोचनन
ही में बन रान मुष मानि कै॥

टीका:॥ सषी को वचन सषी प्रती: मन जो है सो मुष के निकसे जो बच
न तिन को झूठे जानि कें ग्रहन नाही करते हैं॥ सो मानौं विधि जो ब्रह्मा
तिस नें बान नि कों नेत्र किए हैं॥ तिस ते नेत्रन की निकसी वस्त्र झूठे न
होते तिहै॥ इस रौ यह है की जिन सें न करत देषो है सो कोंन है॥ उत्प्रेक्षा
अलंकार॥५९॥

बिहा·
५१

24

मूलः दोहाः ॥ फिरि फिरि दौरत देषियत ः निचले नेकु रहैं न ॥ ए कजरारे कौन
परः करत कजाकी नैन ॥ ५८ ॥ यह नायका परकिया कुलटा कौं नैंपै करत
कजाकी या नैं वहू न नायका नु प्रनीजा निसषी को वचन नायका सैं ॥

कवित्तः ॥ कोंनन के निकट निसंक है बिहार करैं काहू नैं न उरमियै मन हू
रिलैं नए ॥ नृपति मनोज के प्रबल असि वारु कहै घायल करनु उरधध
धकरैं नए ॥ छूट्यस्को अप्रोट गहे घात हेरि फेरि फेरि दौरत ही देषियति
निचले रहैं न ए ॥ चंचल ढरारे अनियारे कजरारे भारे कोंन पर करन
कजाकी नैरे नैंन ए ॥

टीकाः ॥ सषी को वचन नायका प्रती ः फेरि फेरि निचलकहै नीची ठौ
र दौरत देषियत हैं ॥ नेक दौर वेतें रहूत नना हीं हैं कजरारे केहैं काज्ज
रवंनए तेरे नेत्र कौंन के ऊपर कजाकी करतें हैं ॥ इसको यह अर्थ्था
त है कीजैसें कजाक नीची ठौरमें ॥ लूटिवेकों दौरत रहत हैं तैसें नेरे ने
त्रसैं न करत रहत हैं ॥ लुप्तोपमा अलंकार ॥ ५८ ॥

मूलः दोहाः ॥ सब अंग कर राषी सुघर ः नाइक नेह सिषाइ ॥ रसजुत
लेति अनंत गतिः पुतरी पातुरराइ ॥ यह नायका की पुतरीन की सोभा
अरु नेह की अधिकाई सषी नायक सैं कहति हैं ॥ ५९ ॥

सवैयाः ॥ चारु प्रभाल वैं जलु वैं मृदु पीन पटी पहिरैं सुथरी है ॥ नाइक ने
ह सिषाइ सबै रस भेद सधाइ प्रवीन करी है ॥ कुलकहे अति चाइन सैं
गति लेति मनों बहु भार भरी है ॥ लेति रिझाइ मनैं अवि चातुर पातुराइ

किधौंपुतरीहै॥

टीका:॥ सखीकोवचनसखीप्रती: ह्यांघरआहैचतुरनाइककहैंनाचको
सिखावनहारोसोइजोभयोहैनेह: तानेसबअंगकरिसिखाइराखीहै
॥पुतरीकहियेनेत्रनकीदीठा: सोईजोभईपातुररायकहियेवेस्या॥
सोरसज्ञनकहैरसभरीअनंतनगतिलेतीहै॥रूपकाअलंकार॥५४॥

मूल:दोहा:॥ यौंचलसीचलवनिचितै: भईओटअलसाइ॥ फिरिउझक
निकैमृगनयनि: दृगनिलगनियालाइ॥५५॥ यहनाइकाकीचितवनिदे
षिनाइकुकेचितमेंवसीहै: हनाइकसखीसोंकहतु: वैसेंसीफेरिफेरि।
चितैवेयहअभिलाषहै:॥

कवित्त:॥ षिरकीनिहारिनवनागरीनिहारइनठाढेवनवारिमनमथ
छविछाइकै॥ विहरीविलोकिससिवदनीलजाइकैह्वैचलीसीमतुभ
ईओटअलसाइकै॥ लगनिलगाइचितलैगईविहारीलालरह्योठग
कोसीसुरिम[illegible]नसुरझाइकै॥ उतचितवनुसबकाजविसराइकैह्वापि
रिअवलोकिवेकोआसउरलाइकै॥५५॥

टीका:॥ उक्तिउपपतिकोसखीप्रती: चितैकहियेदेषिअलसाइकहि
येआलसवंतह्वैकैनाइकाओटभई॥ सोमेरीचितौनिचितलेनिसी।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हैम्रगनैंनीकैहैम्रगकैसेजाकेनेत्रहै॥ सोकविउतकंठिवेकीलागमिला
इगई॥ इसकोयहअर्थहैकीकविउसकैनेभलीहैदेषै॥ उपमाअलंका
र॥ ६०॥

मूल: दोहा:॥ चमचमातचंचलनयन: बिचघूंघटपटझीन॥ मानोसुरस
रिताबिमल: जलउछलतजुगमीन॥ ६१॥ यहनाइकाकेनेत्रनकीसो
भासषीनाइककैसौंकहतिहै: नाइकहूनाइकासौंकहै: पुनिसषीसौंकहै:

कवित्त:॥ रूपकीरसालआजदेषीव्रजबालएककेतीसोभासनीवाके
सोनेंकेसरीरमें॥ रास्योनटरनबहुभाउमोहियेनेकौंहूं बैठीमुषहोय
गहलोगनकीभीरमें॥ कहैकबिकहलअतिचपलबिसालवाकेलो
चनजुगलरूपकझीनेंचीरमें॥ कैधौंनभमंडलतेउतरिपवित्रबिरषिअधीन
बिबिमीनउछलानमानोंसुरसरीनीरमें॥

टीका:॥ उक्तिउपपतिकीसषीप्रतीकैसषाप्रती: झीनकहियेमहीनघूं
घटपटकहियेवस्त्र: ताकेबीचमेंचंचलनेत्रचमकतेहैं॥ ताकीकवि
उत्प्रेक्षाकरतहै सुरसरीकहियेगंगा ताकेनिरमलजलमें॥ जुगक
हियेद्वैमीनकहियेमछरीतेउछलतिहैं॥ उत्प्रेक्षाअलंकार॥ ६२॥

मूलःदोहाः॥ फूलेफंदकनलेफरीः पलकटाछकरवार॥ करतवचावत
विवनयनःपाइकचाइहजार॥६१॥ यहदोऊकेनेत्रआपसमेंकटाछनकी
चोटैंकरतेहैंः औरनकौहिय[illegible]बतेहैंः सोसखीसखीसोंकहतीहैः॥
सवैयाः॥ अंजनअंजनकछेकछुनीसिषयेनवजोवननाइकहैं॥ फंदनफू
लेनिसंकगहैकरवालकटाछसहाइकहैं॥ औरकोंहालकरीपल
कैंलकरीपलकैंललकैअतिजोमनलाइकहैं॥ वियलोचनचोरच
वावतहैंतियनेंननकैमैंनकेपाइकहैं॥६२॥

टीकाः॥ उक्तिनायककीसखीप्रतीः पलजोपलकसोईफरीकहैंढाल
॥ कटाछसोईकरवालजनरवारनाकोंलैकैफूलेफांदतेहैं॥ यैसें
वियकेहैंदोऊनेत्रतेईपाइककहैंचाकर॥ सोहजारच्यायनकोंकरत
हैंऔरआपकोंवचावतहैं॥ रूपकाअलंकार॥६२॥

मूलःदोहाः॥ सारीझारीनीलकीः ओटअचूककचूकैंन॥ मोमनमृग
करवरगहैंः अहेअहेरीनैंन॥६३॥ इहनाइकाकेनेत्रदेषिनायककोमनु
हाथनाहीरहतुहैः सोसखीसखीसोंकहैः करवलकोअसंगाकरि॥ ॥
कवित्तः॥ चाइचहेजोवनकेवनमेंविहारकरैंकाहूकेनेराकेरहैंविक्रम
अकाथके॥ भृकुटीकुटिलचालअंजनअसितवासतरलकटाछगहैं
आजुधनसाथके॥ सारीनीजिझारीओटआवतअचानकहीकरतअ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चूकचोरतहैननाथके॥सोमनकुंसकौंपकरिलेतहूथाहूथीराधेते
रेनैंनपरहेरीमनमथके॥

टीका:॥नायककोवचननाइकाप्रती:अथवासषीप्रतीनीलीसारी
कहियेओढनीपैहरीहै॥ताकेओरअचूकजोनेत्रतेचूकतनहींहैं॥
अहैसंबोधनहैतेरेनेत्रजोसोईभयअहैरीवहेलिया॥मेरोमनजोसा
ईभयोमृगताकोबलकरिकैमाहिपकरोहै॥अलंकार॥६३॥

मूल:दोहा:॥यौंरैंअपकनीनकनि:गनीछनीसिरताज॥मनीधनीकेने
हकी:बनीछनीपटलाज॥६४॥यहनायकलछिताहैसषीकोवचनना
यकसों:नाइकाकोहितयासोंअधिकहै:सनेत्रनकीसोभाओरभईहै:या
पदतेंप्रेमगर्विताहूहेभू:॥

सवैया:॥केलिकलोलकेरंगमेंसुंदरिप्रीतमसंगमीरजनीहै॥नेहसनी
दरसामभईअरसानिप्रभासरसानिछनीहै॥औरहिसौंभईगंननिओ
पअनंननकीसिरमोरगनीहै॥काहूकेप्रेमकेसोहैअनीपटलाजमैं
चारुछनीसीबनीहै॥६४॥

टीका:॥सषीकोवचनसषीप्रती:कननिकाकाकहियेनेत्रनकीपुत
रिया॥तिनकीओरेंआपकीसोभाहैछनीसिरताजकहियेसिरदारग
नीहै॥धनीजोनायकताकोनेहजोप्रीतिताकीमनीप्रकासहैओरब
नीहै॥लाजकोजोपटतासोंछिपीहैअथवाइसनायकाकीआपक

हियेसोभासोंश्रौरें भईहै॥ कलीकहियेहीरासोंकनभरीहै॥ श्रोघनी कैहैं वोहुतनाइकातिनमेंसिरदारगनीहै॥ नायककेसनेहकोमनी जोश्रभिमानसोंहै॥ इनकोयहमतलवहैकीनायककीवोहुता प्यारीहैश्रोरलाजभरीहै॥ भेदकानिसयोग्निश्रलंकार॥ ८४ ॥ श्रथ नासिकावर्ननं॥

मूलःदोहाः॥ जटितनीलमनिजागमगतिःसीकसुहाईनाक॥ मानों श्रलीचंपककलीःवसिरसुलेनिनिसाक॥ ८५॥

कवित्तः॥ हरनमयंककेकिंश्रंकमेंलसतकीहुनेकनिरषनदोहरतचि तुचेतुहै॥ प्रफुलतपंकजपेंसोहेकरहुकिधोंजोतिकोसोमतुसुष सारमसुमेतुहै॥ नीलमनिजटितनवेलीतेरीनाकपरसीकयोंलस तिमहासोभाकोनिकेतुहै॥ मेरेजानमुकलितचंपककीकलिका पेवेठोश्रलीसावकनिसंकरसुलेतुहै॥ ८५॥

टीकाः॥ सषीकोवचनसषीप्रतीःनीलमनिसोंजरीजोसीकसोना कमेंसोहाईजगमगतिहै॥ सोमानोंश्रलीकहियेभोरासोचंपेकीक लीमेंवसिकैनिसंकरसुलेतहै॥ उत्प्रेक्षाश्रलंकार॥ ८५ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विला॰
२२ 27

मूल: दोहा:॥ वेधक अनियारे नयन: वेधत करत निषेधु॥ बरबट वे
धो मो हियौं: नैना साको वेधु॥ ६६॥ यह नाइका को मेह की सोभा सखी
नाइका सौं कहति है:॥

कवित्त:॥ अनियारे नैंन वर वेधन विराने मन करत अचरजु ऐनें सेह जस
भाइकै॥ तो हि निरखत वृषभान की कुमारि अदभुत की तरंग रहौ मेरे
उर छाइकै॥ बरबट वेधत है प्यारी तेरी नासिका कौ वेधु मनु रहै वेधौ
हरत न धराइकै॥ सोहै किधौं नेह की निकाई को निकेतु किधौं सु
षमधु करनें सखी रकौ ढ्रौं आइकै॥ ६६॥

टीका:॥ नाइक को वचन नाइका प्रती: वेधक कहिये वेधन वारे॥
और अनियारे कहे अनी दार ये से जो नेत्र ते वेधन निषेधु करते है॥
इसको यह मतलव है कि वेधने मैं महा विधि है॥ वरवट कहिये गा
ल ने रे नाक को वेधक है छिद्र इसो मेरे हियें को वेधन है॥ अथवा र
वट जो जोरावरी सो मेरे हृदे को वेधन है॥ ६६॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूलःदोहा॥ जदपिलौंगललितौतऊः तूंनपहिरइकआंक॥ सदासंक
वहियेरहैः रहैचढीसीनाक॥ ९७॥ यहनायकाकीनाकमेंलौंगहैः ता
तैंनाकचढीसीदिसतिहैसोसषीनायकसौंकहतिहैः॥ ९७॥

कवित्तः॥ कीधौंहैवदनछविदीपकोसोमेरजाकीजगारमगारजोति॰
ष्रनप्रकासिका॥ कीधौंकविकुलचारुचंपककीकलिकाहैसहज
सुगंधजातेनिकसतिसारिका॥ जद्यपिलवंगअमिललितनऊतूंजि
नपहिरियेप्यारीउरपनीउरदासिका॥ मानकेभरमभूलिमोहनवि
लोकिरहेम्रगनैनीनिरषिचढीसीतेरीनासिका॥ ९७॥

टीकाः॥ सषीकोवचनहैनाइककोवचनसषीप्रतीः जद्यपिलौंगसुंदर
हैतद्यपिएकआंकतूंमतिपैहें॥ लौंगकेपहिरेतेरीनाकसीचढीरहति॰
हैः॥ इसवानकोहमारेमनमेंडरहरहतुहै॥ इसकोयहमतलवहैकी
नाइकगुसैहै॥ ९७॥

लेषाअलंकार॥

अथश्रवनवर्ननं॥ मूलःदोहा॥ लसतसेतसारीढप्यौः तरलतरौंना॰
कांन॥ पर्यौमनोसुरसरिसलिलः रविप्रतिबिंबविहान॥ ९८॥
यहतरौंनावर्ननंसषीकोवचनअथवानायककोवचनकविहूकोउक्ति
कवित्तः॥ छबिसौंनिहारीवृषभांनकीकुमारीआजुसकलसिंगारसाजि

बन्यौ है सुठौनको॥ कहै कवि हरलाल चारु प्रभा की निकाई लषै गरब बि
लात सुरपुरबनिताको॥ सो हन सुदेस अति कीनी सेन सारी हरयौ आन
रलन तेरौ नाक फलक न बाके कान को॥ मेरे जानें देव नदी जल में फलम
लात पेषिये प्रगट प्रतिबिंब भोर भानु को॥ ९८॥

टीका॥ सखी को बचन सखी प्रती: सेन कहिये सुपेद सारी कहिये ओ
ढनी॥ तापै हरयौ कहिये हरयौ है नरल कहै चंचल तेरौ नाक है है हलु
सो कान में लसत है॥ सो सूर्य को प्रतिबिंब मानौ बिहान कहै प्रातः
काल विषें॥ सुरसरी जो गंगा ताके पानी में परो है॥ ९८॥

अन्य छाया अलंकार॥ ९८॥

मूल: दोहा:॥ लसै मुरासा तिय श्रवन: यों मुकतानु दुति पाइ॥ मानौ परस
कपोल के: रहे सेद कन छाइ॥ ९९॥

यह मोतिन को मुरासा नाइका के श्रवन में है: ताकी सोभा देषि सखी नाइका सों
कहति है: अथवा नाइका के कपोल न पै स्वेद कन देषि सखी नायक सों मुरासा
सो कहें न बरिबा के मोलछिना मानियें॥

कवित्त॥ आछन बनागरि की आगरी बिलोकी छबि देषि बेकों नैं नल
लचाइ ललकत है॥ कहै कवि हरलाल सब बांनि कुविलोकि ठगेरी रूप

गेनबैनेलसनपलकनहै॥ नकनीकेश्रवनअमोल मुकतापलकेक
रनाभरनमैंसोआभाछलकनहै॥ मैंरंजानैंपरसिकपोलइनहूंकेउ
रलैसोप्रभेउनैईछदलकनहै॥६५॥

टीका॥ सखीकोवचनसखीप्रती: सुरामाकहैंपीपरपनेनेप्रियकहैंनाइ
कानाकेश्रवनमेंमुकताजोमोती॥ तिनकीदुतिजोसोभानाकोंपाइ
कैयेसेसोभायमानहोतहैं॥ मानोकपोलकेपरमेसोंस्वेदजोपसी
नाताकेकनकैहैंछदनेछाइरहेहैं॥६५॥

उत्प्रेक्षाअलंकार॥६६॥

मूल: दोहा॥ सालतिहैनटसालसी: कैयोंहूंनिकसतनाहिं॥ मनमथने
मानोकसी: चुभीचुभीउरमाहिं॥७०॥
यहनाइकाकेकांनकोचुभीकीसोभानाइकसखीसोंकहतहै नाइकाहूंसोंकहै॥

सवैया॥ राधिकाप्यारीकेआननपैंछविनीतिहूंलोककोआनगुभीहै॥
मैंनिरखीजबतैंनबतैंमननिमेरिलुभायनहोईचुभीहै॥ रूपकेबारुधकां
नमेंवाकेविराजतओपअनूपचुभीहै॥ सालतिहैसुमनोजकेनेजा
कीनोकमनोंउरमांझचुभीहै॥७०॥

टीका॥ नाइककोवचनसखीप्रती: चुभीकहियेचुभीयातेंमनमथजो

बिहा·
२५ 39

कामदेवताकोनेजाकहियेवरछ्यानाकीनोकसोजियमेंचुभीकहियेग
डीहै॥ अथवाकामनेंमानोंकसीकहियेखेंचिकेलगायोहै॥ तेनरसा
लसीसालतिहियेमेंचुभदेतिहै वैसेंहीतिकसतिनाही॥७०॥

उपमाअलंकार॥ ७०॥अथकपोलवर्ननं॥

मूलः॥दोहाः॥ झीनेंपटमेंझिलमिलीःझलकतिओपअपार॥ सुरत
रुकीमनोंसिंधुमेंःलसतसपल्लवडार॥७१॥
यहनाइकाकीहमसलीनकोवर्ननं॥:

कवित्त॥ जाकेकरनभरनत्रिषकेदिवाकरसेनेंनइंदीवरनकीछवीस
रसातिहै॥ अधरसुधाधरसुधाधरसेवदनमेंकिलकतिललितकपो
लनकीकातिहै॥ अंतरललितझीनेंझलमलीकहैकविहुलसझ
लकतियेसीभातिहै॥ मेरेजानसागरमेंडारकल्पद्रुमकीपल्लवनस
हितप्रगटदरसातिहै॥७२॥

टीका॥ सखीकोवचनसखीप्रतीः सोझीनेंपटकहियेमहीनकपरा
तामेंझिलमिलीकहियेझिमलीपीरपनें॥ तिनकीअपारकहि
येतिसकोपारावारनही॥ ऐसीओपकहियेसोभासोझलकतिहै॥
सोमानोंसुंदरकहियेकल्पवृक्षनाकीपातनिसहितडारीसमुद्रमें
सोहतिहै॥७२॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

उपमाअलंकार॥७२॥

मूल:दोहा:॥नखनकनककपोलदुति:विचह्वैबीचबिकांन॥लालला-
लचमककनचुनी:चौंकाचौंध्रसमांन॥७२॥

यहनाइकाके नखनकीसोभासषीनाइकासौंकहैनायकसौंकहै:जोना
इकासषीसौंकहै:तोलुप्तोपमाहेइभ्रनलुप्तोपमा:॥

कवित्त:॥आजकौवनकवरवरनतनवननितेरीछविआजकौछटासी
उमगतिहै॥दमकतिसरससिंगारकौअपारआपजोवनकीजोतिज
गजोतिसीजगतिहै॥कनकतस्योननकीललितकपोलनकीदुतिमें
समोइगयोअदभुतसीगतिहै॥कलसंमानप्यारेकीसौंचारुचमक-
तिपनैलाललाललालचूनीचौंकाचौंधसीलगतिहै॥७२॥

टीका:॥सषीकोवचननायकसौं:नषिनकहियेनखेनतांकोकन
ककहियेसुवर्न॥सोकपोलकीकांतिसौंविचह्वैवीचगई॥इसको
यहमतलबहैकीसोनेकोरंगकपोलकेरंगसोंमिलिगयौ॥लाल
संबोधनहैलालरंगकीचुनीतेचौंकाककहियेदंतछत॥ताकेचिह्नस
मानचमकतेहै॥७२॥

मिलनउपमाअलंकार॥अथअधरवर्नन॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विहा॰ ३॰ 30

मूल॥ दोहा॥ वेसरमोतीदुतिझलक: परीअधरपरआइ॥ चूनोंहोइनचतुर तिय: क्योंपटपोंछ्योजाइ॥७३॥

यहनायकाकेओठपैसेउजलहै: जुमोतीकीझलकललाईमधस्वेतझ लकतिहै: सोयहचूनोंजानिपोंछतिहै: सषीयाकीभांतिहूंचकरतिहै: अथवामोतीकीझलकदेषिनिरधारिवेकोपोंछतिहै: ज्योंनाइकासषी सोंकहैलोरूपगर्विताहोइ सषीकोवचननाइकासौं:॥

सवैया:॥ आजुसिंगारबन्योंतियतेरोजगामगजोतिसमरुकरै॥ देषति आरसीवारहिवारहियौंहरिकोकहिवैंनहरै॥ वेसरिकेमुक्ताकी प्रभाअतिउजलआनिपरीअधरै॥ होइनचूनोंलग्योमृगलोचनीक्यों पटसौंअवपोंछिपरै॥७३॥

टीका:॥ सषीकोवचननाइकाप्रती: वेसरिकोजोमोतीताकीदुति कहियेसोभाताकीझलकसों॥ अधरकहियेनीचेकोओठतामेंपरीहै चतुरतियसंबोधनधै॥ चूनोंकहियेपटसोक्यैसेंपोंछोजातहै॥ इ सकोयहमतलबहैकीचूनोंकेभर्मसोंमोतीकेप्रतिबिंबकोक्योंपोंछतिहै॥७३॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अथ दसनवर्नेनं ॥

सखीदोहा ॥ नैंक हसौंहीं बानि तजि लख्यौ परतु मुख नीठि ॥ चौंका चमकनि चौंध मैं परति चौंधि सी दीठि ॥ १४ ॥ यह आका क्ष है सो जानि गुन सखी नाइका सो सिखा के प्रसंग मैं चौंका की चमक कौ चतुराई करैः अथवा नाइका कहै ना इकासौ कहै ताके वित्तः ॥ सीसफूल टूमकतु तिलकु झलमलतु जोति कौ समूह जगमगतु अमंद है ॥ भाल की चिलक चारु झलक कपोलनु की उमग्यो परतु अति हू तिनकौ न्हुतु है ॥ हाहा बलि नैकु मुसिकानि की निवारु बानि चकित है कै रहतु प्यारो नंदनंद है ॥ चौंका की चमक ही चषनु चकचौंधी होति चाहै आन परतु नीकै चारु मुखचंदु है ॥ १४ ॥

टीका ॥ सखी को वचन नाइका प्रतीः नैंकु हसौंहीं कहियै हसिवे की ॥ बानि कहियै सुभाउ ता कौं मति करै ॥ काहे तैं तेरौ मुख नीठि कहियै कष्ट सौं देष्यो परतु है ॥ तेरी चौंका कहियै दांत तिनके चमकनैं मैं दृष्टि कौ चकचौंधी लागतु है ॥ १४ ॥

बिह॰
३१ 31

मूल:॥दोहा:॥कुचगिरिचढिअतिथकितह्वै:गईदीठमुखचाड॥फिरनटरीपरि
येरही:परीचिबुककीगाड॥७५॥
यहअंगदेषनदेषनठोडीकीगाडमेंजाइपरीछहांतेंटरीनाहीसनाकतमची
मैं॥अथवासखीनायकसोंकहतिहै॥७५॥

सवैया:॥दीठनदीत्रिवलीनजिनीठिहमावलिकोंननतेंनिकरीहै॥पीनउरो
जपहारचढीअतिथाकिनउनकहाठहरीहै॥चाहिचलीमुखमंडलकी
छविवीचहिलैविधियैसीकरीहै॥ठोडीकोगाडमेंजाइपरीमुपरीयेप
रीननहांतेंटरीहै॥॥

टीका:॥सखीकोवचनअथवानायककोवचनसखीप्रती:कुचजोहैं
तेईभएगिरिकहियेपरवत॥जिनमेंचढिकैअतिथकिकैडीठिकहि
येदृष्टिमुखपैंचाडकहियेइछासोगई॥सोदृष्टिकेरिवैटरीनहींचिबु
ककहियेठोडीनाकीगाडमेंपरीकहियेपरीरही॥इसकोयहमतलवहै
कीठोडीकीगाडमेंतेदृष्टिनकसीनही॥७५

विषमाअलंकार॥

मूल:॥दोहा:॥ललितस्यामलीलाललन:वढीचिबुकछविदून॥मधु
छाक्योमधुकरपर्योः मनोगुलावप्रसून॥७६॥

यह नाइका की ठोड़ी पै लीला को सोभा सषी नाइक सो कहति है ॥

सवैया ॥ कुंकुम गारि कियो मनो देह मनोहर कुमार है गंधको भौंना ॥ रूप सुधा भरयो चंद सों आनन प्रीतम के मनको ललचौंना ॥ ठोड़ी की गाड़ में स्याम सबिंदु निहारत फूल थके मन गौंना ॥ कैं मधु पान गुलाब के फूल में मन्न पयौ मनो भौंर को छौंना ॥ ७६ ॥

टीका ॥ सषी को वचन नायक सों ॥ लालन नायक को संबोधन है ॥ ललित कहिये सुंदर स्याम मनो लीला नील को बिंदु ॥ ता सों चिबुक कहिये ठोड़ी ता की हू नीलो सोभा वाही है ॥ सो मानों मधु कहिये पुहुप रस ता सों छकौ मधुकर कहिये भौंरा ॥ सो गुलाब के फूल में पचौ है ॥ ७६ ॥

अनेकालंकार ॥ ७५ ॥

दोहा ॥ ज्यौं ठोड़ी गाड़ गहि नैन बटोही मारि ॥ चिलक चौंध में रूप ठग हासी फासी डारि ॥ ७७ ॥
यह ठोड़ी की गाड़ को वर्नन नाइका नायका सों कहै ॥ सषी नाइका सों कहै सषी सों कहै ॥ ७७ ॥

सवैया ॥ वे मनके वनके रूप फूल लहौ भकुटी गिरि श्रोर विचारै ॥ चाह लिलार सिंगार की चौंध में देत प्रचंड दगा न फिरारै ॥ फासि गरै मुसि

कानिकीपारिकैठोड़ीकीगाड़कुंबागदिडारै॥ प्यारीमहाठगुनैरोसरू
पस्यानजिनैंनवैरोहिनुमारै॥ ७७॥

टीका:॥ सषीकोवचनसषीप्रती: रूपजोहैसोईभयोठगुनातासीछिप
ककहियेचमक॥ सोईभईचौंधतामेंहांसीजोहैओरनेत्रनोमेंहैसोईमा
पवैरोहीकहियेराहगीर॥ तामारिकैठोड़ीकीगाड़मेंपकरिकैडारनेहैं

रूपकाप्रलंकार:॥ ७७॥

मूल:दोहा:॥ तोलषिमोमनजोलह्यौ: सोगतिकहीनजाति। ठोड़ी
गाड़गड़ोतऊ: उड़ैगोरहतुदिनराति॥ ७८॥

यहअद्भुतरसहेदृष्टान्तरागनायककोवचन[illegible]सों॥

कवित्त:॥ तेरेतनमराजैंवृषभानकीकुमरिजैसोसोऐसोछविपुंजतिहुंपुरमें
नहुनहै॥ तामेंऔभरअद्भुतरीतिअवरेषीमाहिहुमिरिहुमिरिछविचि
रजउमहनहै॥ एकवरसनातासौंमोपैकहनवनैंनकेंधौंहूं तोहिलषिमेरो
मनुजोगतिलहनहै॥ जद्यपिअगमअैंड़ीगैंड़ीगाड़गड़ोमनुतऊ
देषोआठोजामउड़ोईरहनहै॥ ७८॥

टीका:॥ नायककोवचननाइकाप्रती: तोकोंदेषिकेमेरेमनकीजोगति
कहियेनरहभईसोकहीनहीजानिहै॥ ठोड़ीकीगाड़मेंगड़ेरोजोमनु
सोदिनुरातिउड़ोरहनहै॥ ७८॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विभावनाअलंकारः॥७८॥अथअसंभववर्ननं॥

मूलदोहा॥अरुउदितहैमुदितमनःसुषमहासुषमाकीओर॥चितैरहत्न।
चहुंओरतेंःनिहचलचषनिचकोर॥७५॥
यहअसंभववर्ननंसषीनायकसोंकहैओरनाइकासोंकहैःनाइकसषीसोंकहैना।
इकासोंकहै॥

कवितः॥सुषकोसमूहवृषभांनकीकुवरितेरेमुषकोप्रकाससुजगाम।
गातअमंदहै॥जाहितेविलोकिवृविहरषितनंदलालहुहैभामरीभरतपि
ऐप्यासैनैदनंदहै॥योसहनिसाकोरहैविपिनवितानकहूदेषेंउमा।
गातअतिआनंदकोहंदुहै॥सकलविलासकब्राडिपकमासलागिर।
हैभोरजानेंकमलहेकोरजानेंचंदहै॥७५॥

टीका॥सषीकोवचनसषीप्रतीःकैनायकप्रतीसूरकहियेसूर्यतातेकेउद
यभएहै॥मुषकीउपमाकहियेसोभाताकीओरदेषिकै॥चकनिकोम
नमुदितकहियेआनंदितरहतहै॥निश्चलनेत्रनिसोंचकोरचहूंओर
तैंचितैरहतहै॥इसकोयहमतलवहैकीतेरेमुषकोचकोरचंद्रमा।
करिजानतहै॥७५॥

अोतिअलंकार॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बिहा.
३३

33

मूल: दोहा:॥ पत्रा ही तिथि पाइये ः वा घर के चहू पास ॥ नित प्रति पुन्यौई रहै ः
आनन ओप उजास ॥८॥
यह नाइका के प्रकास सखी नाइक सौं कहति है ः नायका है सखी सों कहै तो
स्मरन जानियें ॥८॥

कवित्त:॥ एते मान आनन की ओप को उजास रहै तहां आसपास अति चांद
नी बिहारि कै॥ तिथि निरधार करिवे कौं केते हू घर ही गनिवो लिहू कैं वेद्धर
हत विचारि कै॥ पत्रा खोलि देखि ता मै तिथि को वता के फिरि एतौ हाइक
हव हू को मुहि निहारि कै॥ कवहूं क पत्रा देखे कवहूं वदन प्रभा कहै न सकत
एक बात निरधारि कै ॥८॥

टीका:॥ सखी को वचन सखी प्रती ः वै नायक प्रती वा घर के चारो ओर ॥ तिथि
पत्री देखि कै जानि जाति है ॥ आनन कहिये मुख ता की ओप कहिये सोभा
ता को उज्यार कहिये प्रकास ॥ तासें नित प्रती पुन्यों ही बनी रहती है ॥८॥

परिसंख्या अलंकार ॥८॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूल॥दोहा॥ छिप्यो छबीलो मुख लसै नीले अंचल चीर॥ मनो कला-
निधि झलमलै कालिंद्री के नीर॥८१॥
यह नाइका के मुख को वर्नन सखी नाइक सों कहति है और नाइका हू सों कहति
है॥८१॥

कवित्त॥ भामती हारी को गई है होलैन गिरधर ताही देखि मेरो मन परयो छबि-
भीर में॥ हलधर नैन प्यारे नंदलाल की लुनाई है निज गात मग रवा के सोने से
सरीर में॥ खंजन भ्रमर बिंब कीर को प्रभा निदरि बदन दुराय बैठी झीने
नील चीर में॥ मेरे जान एरन कलान सों झलमलात सरद सुधानिधि
कालिंदी या के नीर में॥८१॥

टीका॥ सखी को वचन सखी प्रती के नायक को वचन सखी प्रती॥ नीले व-
स्त्र के अंचर में छिप्यो जो मुख सो लसै सोभायमान होत है॥ सो मानो कला-
निधि जो चंद्रमा सो कालिंदी जमुना ता के नीर में झलमलात है॥८१॥
अथ मुख अलंकार॥८१॥

मूल॥दोहा॥ मंगल बिंदु सुरंग मुख ससि केसरि आड गुरु॥ इक नारी ल-
हि संग रसमय किय लोचन जगत॥८२॥
यह सिंगार रस सखी सखी सों कहै कवित्त जिह होई॥

सवैया॥ मंगल बिंदु सुरंग बिराजत भाम निभाल महा छबि छायो॥ आनन

चंदकलापरिहरनकेमसिआइमनोंगुरुआयो॥ कमलकेहेइकनारिमें
आइमनोपरिहरनजोगलषायो॥ नैंनभरेरसकोवरषाकरिचेंनसें
मुहकियेंउमगायो॥

टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रतीः सुरंगजोहैलालविंदुसोईमंगल
हैः॥ औरमुषजोहैसोईचंद्रमाहैः एकनारीकहियेनाइका॥ औरना
इकाकोसंगपाइकैजगतकेलोचनरसमयकहियेश्रृंगाररसकी
हैं॥ इसकोइहमतलवहैकीमंगलचंद्रहह सपतिएकनाइमेंज
बआवतहैं॥ नवजलमयभूमीहोतिहै॥८२॥

रूपकाअलंकार॥

मूलःदोहा॥ जरीकोरगोरेवदनः वढीषरीछविदेष॥ लसतिमनों
विजुरीकियेंः सारदससिपरिवेष॥८३॥
यहनाइकाकेमुषपैंकिनारीकीसोभासषीनायकसोंकहतिहै॥

कवित्त॥ आजमेंनिहारीवृषभानकीदुलारीदुतिधारीअतिसकलसिं
गारनमाजिकै॥ जगमगजोननवजोवनकीदेषतहींरगनकोग
योदुषदंदुसवभाजिकै॥ ननसुषसारीतोपैकंचनकिनारीगोरेआ

नवके चहूं कोर फवी छवि छाजि कै ॥ केसरि की सुन्यो कै सुधानिधि।
कै आसपास मार रह्यो दामिनी कौ मंडल विराजि कै ॥ ८३ ॥

टीका ॥ सखी को वचन सखी सों । कै नाइका सों जरी की कोर सों गोरो रंग सो।
सुघता को धरी चढी जो छवि ता कों तू देष ॥ सो मानों सरद रितु को चंद्र
मा है ता में बिजुरी को मंडल कीयौ है ॥ ८३ ॥

उल्लासअलंकार ॥

मूल ॥ दोहा ॥ परि रह्यौ ही गोरी गरें । यों दोरी दुति लाल ॥ मनो परस फुल
कित भई । माल सिरी की माल ॥ ८४ ॥
यह नायक की माला के परस मों नाइका कों सात्विक भाव भयो है सखी ना
यक सों कहै ॥

कवित्त ॥ सौरभ सहित चुनि कै कुसुम चारु आप नैंक रुच मन मोहन बना
ही बनाइ ॥ मैं तो जाय दीनी उन लीनी अति आदर सों पहिरी हिये में प्रान
प्यारी हितु सरसाइ ॥ हेम प्रान प्यारे वाके गोरे गरें ता छवि उपजी।
नवल दुति रही ऐसी छवि छाइ ॥ मेरे जान लाल बोलसिरी को ललि।
त माल फुल कित भई वाके तन को परस पाइ ॥ ८४ ॥

टीका:॥ सखीकोवचननायकप्रती: लालसवेधनहै मोलसिरीकी
मालाकौंगोरीकरियेनाइका॥ तिसकोंगरेंपहिरतहैं ऐसीसोभाभ
ई॥ सोमानोतुम्हारेपरससोंपुलकितभई॥ कहेंसोरोमांचितभईहै
इसकोंयहमनलवहैकीमोलसिरीकीमालाकेपहिरे॥ तुम्हारेमि
लेकोसोसुखहूकौहै॥ ८४॥

उपमाअलंकार॥

मूल: दोहा:॥ बरीलसतिगोरेंगरें: धसतपानकीपीक॥ मनोगुलीवंद॰
लालकी: लाललालदुतिलीक॥ ८५॥
यहकंठवर्ननहै: सुकुमारमासखीनाइकसोंकहै: अथवानाइकासोंकहै॥

सवैया:॥ प्यारेमैंप्यारीतिहारीलखीनघतेंसिषलौंसुनिकाइभरीहै॥ के॰
मारिकीसुकुमारिमनोंछविपुंजसोंआपविरंचकरीहै॥ गोरीकेगोरेग
रेंमनमोहनिपीककीलीकधसीजुपरीहै॥ चारुगुलीवंदलालमनो
दुतिप्रीनकीलीकपरीहै॥

टीका:॥ सखीकोवचननाइकप्रती: गोरेगरेमेंपानकीपीकनिगल

नषरीसोभायमानहोतुहै॥ लालसंबोधनहैलालचूनीकोजोगली
वेंदनाकोलालजोकांतिताकीलीकहै॥ ८५॥

उत्प्रेक्षाअलंकार॥

अथहृदयवर्ननं॥मूलःदोहा॥ उरमानिककीउरवसीःउटतचटतदृगदाग
॥ फलकनुबाहिरभरिमनोःतियहियकोअनुराग॥ ८६॥
यहउरवसीकीसोभासषीसषीसोंकहतिहैःसषीनायकसोंयाकेअंतरके
अनुरागकीप्रबलताप्रगटकरतीहैःजोसषीनायकसोंकहैःतोतियपदसंबो
धननायकालहिमारहु॥

कवित्तः॥ आजुकीनिकाईआलीचरननमोपेंयहरूपकीतरंगनिअनंदव
रसायोहै॥ अंगअंगभूषननजोतिजगमगहोतितैसोतावनाउरतिरभा
हूलपायोहै॥ मानककीलसीउरवसीतियउरपरहेमगनुकोरागसव
देषननसायोहै॥ मेरेजानेंएरनदहैअंतरकोअनुरागहियोंभरिबाहिर
छलकिछविछायोहै॥ ८६॥

टीका॥कविकोवचनःउरकहियेछातीःतामेंमानककहियेलालताकीउ
रवसीकहियेधुकधुकी॥ ताकेउटतकहियेदेषतदृगकहियेनेत्रति
नकोदागकहियेदूषनेमिटतहैं॥ सोमानोतियकेहृदयकोअनुरागभ

वृहा· 36
८६

रिकैवाहिरफलकहतहै॥ ८६॥

उत्प्रेक्षाअलंकार॥

मूलः दोहाः॥ दुरतनकुचविचकंचुकीः चुपरीसादीसेत॥ कविआंकनं केअर्थलौः प्रगटदिषाईदेत॥ ८७॥

यहसंचुकीमेंकुचनकीसोभानाइकानाइकासोंकहैः सषीसोंकहैसषीनायकासोंकहै॥

कवित्त॥ कंचनवरनमनहरनअडोलगहवैसेगोरेसीसपरस्यामनाथरतहै॥ उन्नतकरेरेषरेचीकनेलूनाईभरेमदनवसकरसेमनकोहरतहै॥ येसेकुचजीनसेतकंचुकीतिलोछीमांऊप्यारीपहुरायेनदुरतउघरतहै॥ कहेकविकुलजैसेचककविनकेआंकनमेंअर्थउमगिदीठिप्रगटपरतहै॥ ८७॥

टीका॥ सषीकौवचनसषीसोंः चुपरीकहियेसुगंधसोभीजीसादीसेतकंचुकीमेआंगी॥ तामेंकुचछिपतनहींकविसुरनकेअछरनिकेआसलौप्रगटदिषाईदेतहै॥ इसकोयहमतलबहै॥ कीजैसेंकविस्वरनिकेअषरनिकेअर्थप्रगटहै॥ तैसेंनाइकाकेकुचआंगीमेंप्रगटहोतहै॥

उपमाअलंकार॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूलः॥दोहाः॥भईजुछबितनबसनमिलिःबरनिसकैसुनबैन॥
आंगओपआंगीदुरैःआंगीआंगदुरैन॥८८॥

यहनाइकाकीसोभासखीनायकसोंनिवेदनकरतिहै॥

सवैया॥हरिकंचनवेलिसीबालकीदेहकीदीपतिकोबरनैंकविहै॥
अरुनाहीमिलीदुतिकंचुकीसरअनूपमओपरहीफविहै॥कछुजा
निकहीनहीअंगप्रभाअरुचीरमिलेजुभईछविहै॥वहआंगीगईदबि
आंगकीओपमैंआंगुकहाअंगिसोदविहै॥

टीका॥सखीकोवचनकैंनायककोवचनसखीप्रतीःबरनकैंहैवस्त्र
तासोंमिलिकैतनकहैंसरीर॥ताकीजोछबिभईहैताकोवेनक
हियेवचननेबरनिसकतनही॥अंगसोभासोंआंगीछिपतिहै॥आंगी
सोंअंगनहीछिपतनहै॥८८॥

विभावनाअलंकार॥

बिह· 37
२०

अथकरवर्ननं॥मूलः॥दोहा॥गोरीअगुरीनबअरुन:छलास्यामछबि
देइ॥लहतनमकतिपलकयह:नैनत्रिबैनीसेइ॥८५॥
यहनाइकाकोछिगुनीअरुछलाकीसोभानाइककहतहै॥

सवैया॥कोवरीगोरीलसेछिगुनीअरुलालप्रभाम्रवकीछबदैनी॥लो॰
तापरस्यामछलाकीफबीछबिनैननकोलषिलागतिअैनी॥तोकरमाऊबि
चनसंतलहैरतिमुक्तिनिमेषघ्रूदेषतहोमरगनैनी॥
राजतिहैयहतीरथराजकीरीतित्रिबैनी॥

टीका॥गोरीअंगुरीहैस्यामछलाछबिदेतहै॥नैनएकछिनमात्रत्रि
बैनीकोसेइकैमुकतकीरतिकोपावतहै॥८५॥

रूपकाअलंकार॥

मूलःदोहा॥बापडेवडेछबिलाविछकि:छिगुनीछोरछुहैन॥रहेस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रंगरंगरंगनि उहींनहीं महदीनैन ॥ अथटीका ॥
नायककोवचनसषीप्रतिकेषाप्राप्रति ॥

सवैया: ॥ वाकीहुवीलीहुपालीकेओरहुपेकचिपुंजनहुदईनपहैं ॥
ताकीमहाहुविकैमदछाकिहुटेनअजैयौगडियैसेगएहैं ॥ कीउप
माकविकूलककेहुविप्रेमपयोधिनहीमोंछएहैं ॥ पविपलोचनवा
हिकेरंगमैंराचिकैमानोमहुरंगभयेहैं ॥

टीका ॥ यहनाइकामहदीकोवर्ननहैं टीकानायककोवचनसषीप्रतिकैस
षाप्रति ॥ अहजोनाइकाकौवचनसषीसोंहोईतोगुनकथनहोई ॥ व
हैहकिवैछाकहीएमद ॥ तासोंहुकेजोमेरेनेत्रमेंजोहीनीमेहदी ॥ ता
केसहरंगकहियेलालजोंरंगतासोंरंगोहै ॥ ५० ॥

अथउदरवर्ननम् ॥

मूल: दोहा ॥ करउचाइंछ्वैच्छकरतः उसरतनपटपऊरोटसहुषमोटेल्लरी
ललनः लषिललनाकीलोट ॥ ५१ ॥
यहनाइकाकीलोटकीसोभानाइकुसषीसोकहै ॥

सवैया:॥ जातिहुतीवालगलीमैंअकेलीसुआवतमोहनदेष्यौअगो
टैं॥ ज्यौंकियोघूंघटहाथउठाइकै त्यौंउसरीपटकीगुजरोटैं॥ सोछु
विमोपैंकहीनपरैकछुकोरविकीरसुठीहुषमोटैं॥ लालरहेअ
निमोदहियैंनवनागरिकौनिरषीजवलोटैं॥

टीका:॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ हाथऊंचेकरिकैघूंघटकोकर
तिहै॥ ओढनीकीगुजरोटसिमटिगई॥ तिसमैंलालनकहियेनायक
तातैंललनाजोनाइकाताकीउदरकीलोटैंकहियेत्रिवली॥ ताकोंदे
षिकैसुषकीमोटेपदलछनिकजानियें॥ इसकौयहमतलवहै॥ कौ
नायकमहासुषपायो॥ ५१॥

संवधातिसयोक्तिअलंकार॥

लः दोहा॥ लगिअनलागीसीजुविधिकरीषरीकटिछीन॥ कियेमनों
वैहीकसरकुचनि नितंवनिपीन॥ ५२॥
यहजोवनआपनेंनाइकाकेअंगवहिवढिभएसुसषीसषीसौंकहैहैं नाय
कसौंकहैकविकीउक्तिहै॥

कवित्त:॥ रूपमांचेहरेरचिपचिकैसुधारेविधिअंगअंगसकलसुदेसरस

भीनें हैं ॥ ताऐं नहनाई नें वनाई कछु औरें विधि पीन करे पीन अरु पी
न करे दीनें हैं ॥ छोलि छालि राषो अति सछम कै लोंकु ता हि लचक
न जानि कै जतन ऐसे कीनें हैं ॥ करि हा की जासनां की सेंधि के कसरि
मानें उरज नितंब अति पीन करि दीनें हैं ॥

टीका ॥ सषी को वचन सषी सें। कैं कवि को वचन ॥ विधि करि ये ब्रह्मा ति
ननें लगी अनलगी सी जो कटि ॥ सो पतरी करें है सो मानें कमरि को म
सलै कै ॥ कुच औरु नितंब इन दोनौं कों मोटे किए हैं ॥ ५२ ॥

उत्प्रेक्षालंकार ॥

स्व

अथ जंघवर्ननं ॥ मूल ॥ दोहा ॥ जंघ जुगल लोइन निरे ॥ करे षरे विधि मैं
न ॥ केलि नहन दुषदैन ए केलि करन सुषदैन ॥ ५३ ॥

सवैया ॥ कारे करेरे कुहू पकरी कर चौं समदै न प्रभा इनकी के ॥ सोह
न संदर पीन सबी अनमोहन है मन मोहन पी के ॥ केलि कलोल क
लानिधि धाम महा सुषदायक है कदली के ॥ तो जुग जंघ विरंच मनों
जवनायक रैन निरै लोइन ही के ॥

टीका ॥ मैंनकहीयेकामदेव ॥ सोब्रह्माभयोहै ॥ तानेंमानोदोनोउजे
द्योतेनिरेकहियेउज्जदे ॥ षरेअत्यंतलोइनकहेंसुंदरकारेहैं ॥ केलिनके
कहेंकेरातिनकोंदुषदेनवारेहैं ॥ औरकेलिकहेंक्रीडातामेंसुषदेन
वारेहैं ॥ ९३ ॥

उत्प्रेक्षानमकाअलंकारकोसंकर ॥

अथमरुवावर्नमे ॥ मूलः दोहाः ॥ रह्योढीठढाहसगहैंःससहरगयेन
सुर ॥ मरुयोनमनुमरुवानिचुभिःभौचूरनिचपिचूर ॥ ९४ ॥
यहमरुवानकीसोभामेंमनबुझ्योहैसुनायकसषीसोंकहैनायकामोंवाहै

सवैयाः ॥ प्रानपियारीकेपायनऊपरपुंजप्रभाकौपरैउमगेपोई ॥ दे
षतहीअतिरीझिकैचाइसोंजाइनहांमनमेरोलगेपोई ॥ सूरस्यो
अतिढाढससोंगहिहुलसकहेनइराइभगेपोई ॥ चूरभयोचपिचूरनजु
ढीठमरुवानतऊमरुवानपगेपोई ॥

टीकाः ॥ सषीकोवचनकेंनायककोवचनसषीप्रती ॥ ढीठकहिये
ढसरकहेंवीरयैमाजोमनुसोढाढसुकहेंहिम्मततताकोपकरे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सकौनहो ॥ सोमनुसुरवनिमैंचुभिकैचूरनिमैंदबिकैचूरकैहूंरहन
भयो ॥ इसकोयहमतलबहै ॥ किमनचूरनिमेंनहींनिकसै ॥ ५४ ॥

संबंधातिसयोक्तिअलंकार ॥

मूल:दोहा: ॥ कियहुंपायलचित्तचायलगि:बजिपायलतुअपाइ ॥ सुनि
सुनिसुनिसुनिमधुरधुनि:बौनलाललचाइ ॥ ५५ ॥

यहुंबांनीवर्णनं:नाइकाकोआसक्तिजानिसषीनायकासोंप्रीतिवढाव
तिबेवोकहतिहै ॥

कवित: ॥ गजगमिनितेरीहैरीलहूंनवहींतेंभयोतोपेंसुनिपाइलकोफन
कसुनाईरी ॥ नवहीतेंउरलागीसुनतीचटपटीजबतेंबिमिलिबेकोंलल
कबढैहेकझाईरी ॥ बीनकेसुरनहूंतेंमधुरसुरनधुनिकाछिकहूंतेरीउन
बांनीसुनिपाइरी ॥ काहेतेंनवाकेउरमदनमहाउठैयाहींतेंहोंकहन
नहरतोछिम्राईरी ॥

टीका: ॥ सषीकौवचननायकप्रती ॥ तेरेपायनमेंपायलबजिकेचितमें
चाउलगाइकेहायलकियोहै ॥ पायलकीमधुरकहियेमीठीधुनिक
हियेसबद ॥ ताकोफेरिफेरिकैसुनिसुनिलालकहियेनायकसोकैसेंन

होलललचातहै॥ इसकोयहमतलबहैकीपायलकीधुनिसुनिकें नायकबसकैरह्यौ॥५५॥

काव्यलिंगाअलंकार॥

लक्षदोहा॥ पगपगमगअगमनपरतिचरनअरुनदुतिझूलि॥ ठौर ठौरलषियतउठेदुपहरिआसेफूलि॥५६॥

यहनायकाकेचरननकीअरुनाईसषीनायकसोंकहैनाइकाहूसोंकहै॥

कवित्त॥ पलिकातेंउतरिप्रवीनप्यारीधामधरिचरननिमेंसहजहीचल तिजगतिहै॥ कहूंप्रानप्यारेयैसेकोंतिकनिहारेतबचरनअरुनदुति अतिउमगतिहै॥ जहांजहांयेंडीछबिपरतिअगेंडीअनितिनकौंफूल कजगाजेतिसीजगतिहै॥ तहांतहांफूलदुपहरियासेदेषियतकों नकौनमतिपेषैप्रेमसोंपगतिहै॥

टीका॥ सषीकोवचननायकप्रतीकेंसषीप्रती॥ पगपगविषेंचरनको अरुनकहेंलालदुतिकहेंसोभासोमारगमेंआगेंपरतिहै॥ ठौरठौरवि षेंसोदुपहरियासीफूलीदेषियतिहै॥५६॥

उपमाअलंकार॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूल दोहा॥ कोहरसीयेंडीनकी लालीदेषिसुभाइ॥ पांइमहावरदेंनकौं आपुभईवैपाइ॥५०॥

यहनाइकाकीयेंडीनुकीअरुनाईअरुसोभासषीनायकसोंकहतिहै सषीसोंकहै॥

कवित्त॥ कोहककहाहैवंधुजीवकोविलोवेपाचाहैलाजनुतेंकमलनुदिनफूलिफूलिकै॥ मानिकपवापैवाकेसेंपटनरह्योततनयेसीतुलितरुजउठतिफूलिफूलिकै॥ चाइनसैंपाइनमहावरलगाइवेकोंआइठकुरायनकेहिगअनफूलिकै॥ कहैकविसुसचाहचरननिहारतहैनाइनिविचारीगईसर्वसुधिभूलिकै॥

टीका॥ सषीकोवचनउक्तिसषीप्रतीकेंनाइकप्रतीकोहरसीजोयेंडीतिनकीसुभाविकलालीदेषिकैपांइविषेमहावरकोरंगकोऊदेइआपुहीपांइकोंदेषिविहोसभई॥ इसकोयहमतलवहैकिनायककोषवरनहीं॥५०॥

उपमाजमकाअलंकार॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूलः दोहा ॥ पाइ महावर दैन कौं: नाइन बैठी आइ ॥ फिरि फिरि जा
नि महावरी: येंड़ी मीड़ति जाइ ॥ ५८ ॥
यहु पाइन की सहज अरुनताई कौं अधिक कवि की उक्ति ॥

सवैया: ॥ पाइं महावर दैंन कौं नाइन चाइन सौं उमहै अति आई ॥ येंड़ी
न हौ ठकुरायन की करजा में भरी तिहूं लोक ललुनाई ॥ जानि महावरि
मीड़ति जैौ फिरि ज्यौं धोवति त्यौं सरसाति ललाई ॥ कोमलताई प्रभा
प्रभताइन बिलोकि सवै चेरी चतुराई ॥

टीका ॥ सखी को वचन सखी सों ॥ पाइन में महावर दीवे कों नायन
बैठी आइ ॥ सो नाइन फिरि फिरि येंड़ी कौ महावरि जानि कै मीड़ति
है ॥ ५८ ॥
अतिसयलंकार ॥

मूल:॥दोहा:॥ सोहतअग्रगठापाइकेः अनवटजसौजराइ॥ जीत्यौन रवनिद्युतिसहदविः परयौनरनिमनुपांइ॥ ५५॥

यहनायकाकौसिंगारकौआरंभहैः नखांनकोपकहौअनवटपहिरैयोहैना कीउपमासखीकहतिहै॥

सवैया:॥ प्यारीसिंगारसवारनहीवेअचानकआयोतहांदधदानी॥ १ जैंपाकुनीत्यांसुहोरहीनवनागरिनंदकिसोरकेरूपलुभानी॥ नीकौ जराउअनोटुलसैपगकेअगुठाउपमाहवषानी॥ पायंपस्यौहैमनौं रविआइकैनखकीरुरितसोंनासोंमानी॥

टीका:॥ सषीकोवचनसषीसों॥ जरायसोंजरयौजोअनोटनासोंपां इकेअगुठासोभायमानहोतहै॥ मानौनासौंनखनीकीसोभासोजितो जोतखकैसेंसूरजसोपाइनपरयौहै॥ एककअगुठाकेकहेनेपावतिके पलदोहाहलागेहैं॥ ५५॥

अलंकार॥

अथसुकुमारतावर्ननं॥ मूल:दोहा॥ भूषनभारसभारिहैः क्यौयाजरतन सुकुमार॥ सूधेपाइनधरपरतसोभाहीकेभार॥ ५६॥ यहनाइ काकीसुकुमारितासखीकौप्रयोजनयहहैःकीभूषनपहरनिविलंबुहो

विह॰ ८२ 42

लहैः यातैं वैशिष्यलो ॥

कवित्त ॥ बिरचौ बिरंचि तैं रोम अति सुकुमार तनु ओपो तिहूं लोक
कौ लुनाई कौ मसके लिहै ॥ कुसप्रानप्यारे की सों तेरीयह ड तिराषी
मेरे मनमोहनके नैननमें मेलिहै ॥ सोभा ही के भारसू धे पगन पर
नमगह है यांठौरल क तिलगर्ज्यौन वैलिहै ॥ हित हैं तो हित क कि
तूक तिहैं महाबक हिकै सें आभूषननकौ भारि भाकठे लिहै ॥

टीका ॥ सषीकौ वचनसषी प्रतीः कै नायक प्रती ॥ जिह नायका सु
कुमार कहिये कोमलतनजो सरीर ॥ तामें भूषन कहिये गहैं ने
॥ तिनके भारकों कैसें सह्यारिकै है ॥ सो भाही के भारसों धरकै
हिये मितातामें सूधे पायन हीं परत है ॥ ८० ॥

अस्युक्ति अलंकार ॥

मूलः दोहाः ॥ नजक धरत हरि हिय धरतः नाजक कमलावाल ॥ भ
जतभारभयभीतह्वैः घनचंदनवनमाल ॥ ८२ ॥
यह भगवानकी भक्ति वत्सलताकही अरुनाईक के हृदैमें घनाइकाव
सतिहै प्रानपतिकी अधिकाई है जो सषीनाइकको विरहु नाइकासों क
है ताकुं संभवै मानवतीके प्रसंगमें हु बनै ॥

सवैया:॥ निज भौन निके हरि नकों कमलापति सें नन चिन्ह चिन्हा
हु करै ॥ अति चंदन अंग लगावै न हों वकु फूलन कों न हि माल ध
रै ॥ अरु जो कवहूंक सिंगार सजै कवि फूलन ऊकलकै सें परै ॥ डू
ह सोच हि येंहू निरौ सरैं अति नाजक श्रीपति भार भरै ॥

टीका:॥ सखी को वचन सखी प्रती ॥ हरी जो श्रीकृस्न सो हि यें वि षें ना
जक कहैं महीन कमला जो लक्ष्मी वालक हि ये नाइ का ना को
धारन नाहीं ॥ क्यों जो यह कृता को धरत है चंदन जो कसर : चंदन औ
र वनमाल : इन तें भार के भय सें भजन हैं : इसको यह मनलव है
की लक्ष्मी के ऊपर भार पैरैगौ : अथवा नाजक जो लक्ष्मी ॥ सो
श्रीकृस्न को हिये पें राषि कें जकन हीं मानति है ॥ जो लक्ष्मी भार
के भय सें डरि कें कपूर चंदन वनमाल तें भाजति है ॥ इसको मय म
नलव है ॥ की लक्ष्मी इन वस्तुनि को वोझ नहीं सहि सकति है हि
य सें श्रीकृस्न को धारे वोझ नहीं मानती है : इसके है मावति सें अ
ति प्रेम धनि न हों तु है अथवा श्रीकृस्न नाजक लक्ष्मी सी जो वाल
कहैं नायका : ता कौं धारत जक नहीं मानत है ॥ १ ॥

उल्लासालंकार॥

मूल:दोहा:॥ छाले परिबे के डरनि: सकै न हाथ छुवाइ॥ झझकि
ति हियैं गुलाब कैं: झमाझ मैयत पाइ॥२॥
यह नाइका के चरनन की सुकुमारता सखी नाइका सों कहै है सखी सखी
सों कहै है॥

सवैया:॥ पौंन लगें अलि कंपको होत चलाचल कै सें बयारक
रै॥ फूल कहूं यह के सरि अंग लगै ये तो सों नित छाल्ह भरै॥ प्या
री के नाजक पाइ निहारि कै हाथ लगावन दासी डरै॥ धोवति हू
लगुलाब के लेपैन ऊझझकै मति छाले परै॥
टीका:॥ सखी को वचन सखी प्रती: छाले परिबे के भय सों सखी
हाथ छुवाइ नहीं सकति है॥ गुलाब को झमाझमावन पेरन: हि
यों झझकति है डरति है॥२॥ संबंधातिसयोक्ति अलंकार॥

मूल:दोहा॥ मैं वरजी कैं वार तूं: इत कत लेति करोट॥ पखुरी गड़ै गु
लाब की: परि है गात खरोट॥३॥ यह नाइका विश्रब्धनवोढा है नाइ
का के समीप है पै सयन में थिरता नाहीं त्यातें सखी डरु दिखाइ कैं: सयन क
रावति है सखी को वचन नाइका सों॥ सवैया:॥ मैं वरजी तूं अवार यहै न
हि मानति तूं सु कहा धों करैगी॥ लेति करोट करोट इतै मुरि कैं अ
रिवी उर कोंन्लों धरैगी॥ कोमल आपने अंग निहारन वै सु
कुमारि सु कैसें सहैगी॥ पांखुरी गातन गुलाब की ज्यौं गड़ी जै है

कहूंनोबरोटपरैंगी॥टीका॥नायककोवचननायकाप्रतीः॥मेंतो
कोंकैनीचारमनेंकरोउनकहियेउसअौरकनकहियेवौंकरोट
लेनिहै॥इसकोंहैनावतिसोंमाननीजानियें॥गुलाबकोपखुरी
गिरेनेंनेरीमानकहियेहैतामेंबरोटपरैंगी॥पर्यायोक्तिअलंकार

मूलःदोहा॥अरुनमनोहरहकरचरनःअगुरीअतिसुकुमार॥चुव
नमुहरासीअगुरमनोंःचपिविछियनकेभार॥४॥पदचरनांगुली
कीसोभाकविकीउक्तिदोहा॥कवित्तः॥मेंहगातिहैकलंहमनलहनव
लहमदयेंदनुकौगरबुगरनुहैकूलमानप्यारेचारुचरनतिहारेवा
केमलजममहजियलाजहियेधरतुहै॥अतिसुकुमारतहनीकोप
गअंगुरीनुऐसीअरुनाईकोउजाबुउचरतुहै॥मेरेजानपसेविछि
यानिकोअपारभारुताहिनेउसगिरेरगुनिचुसोपरतुहै॥टीका॥
सखीकोवचनसखीसों॥अरुनकहियेलाल॥सिरोरुहजोकमल
तैसेजेचरनतिनकीअतिकोमलजेअंगुरी॥तेविछियनकेभारसों
दविकेसुरंगरंगकीजोसोभाताकोमानोंचुभतीहै॥४॥उत्प्रेक्षाअ
लंकार॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूल॥दोहा॥ वरनुवाससुकुमारता॥ सवविधरहीसमाय॥ पषुरी
लगीगुलावकी॥ गातनजानीजाय॥५॥ यहनाइकाकेतनकीसु
बरनगंधजोवनकीसुकुमारताई॥ सुकुमारतासषीनायकसोंनिवेदनुकरतिहै
जोनाइकाकीजेसीपाषुरीमानिसषीनायकसौंकहैतोलछितादोह॥ ॥ऽ॥
सवैया॥ वीनतीफूलभरेउरफूलप्रभातसमैंसुषसेजतेंजागी॥ आ
योतहांमनमोहनप्यारेप्रभालषिरीझिरह्योअनुरागी॥ वैसोईरंग
सुगंधहूवैसियैवैसियैकोमलतावसपागी॥ कौनहूंभांतिसोंजा
निपरीनगुलावकीपांषुरीगातसोंलागी॥ऽ॥ टीका॥ सषीकोव
चनसषीसों॥ वरनकहैरंगवाससुजोसुगंध॥ सुकुमारताजोकोम
लता॥ एसवविधिसोसमाईकैहैमिलरही॥ गुलावकीपषुरीसरी
रमैंजानीनहीजानिहै॥ इसकोयहमतलवहै॥ कीजैसेगुलावु
कोरंगहै॥ तैसाईसरीरकोरंगहै॥ जैसाईगुलावुकोगंधुहै॥ तैसोसै
हीसरीरकोगंधुहै॥ जैसीगुलावमैंकोमलताहै॥ तैसीसरीरमैंको
मलताकहैंनवमाईहै॥५ मिलनअलंकार॥

मूल॥दोहा॥ पहिरतभूषनकनकके॥ कहिंआवतिइहिहेत॥ दरपन

कैसे मोरचे हू दिखाई देत ॥६॥ यहु नाइका के अंग की निकाई सखी
कहति है जो भूषनन कौं अनरस जानि नायका हूं ना इकासौं कहै सो व
तैन ॥ कवित्त ॥ जिन को तो गात जिन हू सौं कहियत तिहै ताते तो
सौं कहति छबीली प्रेम पागि कै ॥ तेरी समता को राति रंभा उरब
सी हूं न तेरे अनुराग पागी रही अनुरागि कै ॥ लो लै गोने रूप ता में
सौं के पगह नैंनं तक रत पदि रति इक अवहो देता गि कै ॥ नीके
नीके नजपर फीके फीके लागत हैं मोर चार होहू मानो अनुकरमे
लागि कै ॥ टीका ॥ सखी को वचन नायका प्रती ॥ तूं सौं ने के गह
नैं मति पहिरः मैं तो सो इक कारन कहती हौं ॥ पगहनें दर्पन ज्यों सी
सा ना के मोरचा से तेरी देह में दिखाई देत है ॥६॥ विषमालंकार ॥

[illegible]

लक्षन दोहा ॥ मानौं विधि नन अछछबि ः स्वच्छराषि वे काज ॥ ह
ग पग पौंछन कौं कियेः भूषन पाइन दाज ॥७॥ यहु नायका के न
न की छबि सखी नाइका सों कहत है ः अरु सखी को वचन सखी सों नायक
को वचन नाइका हू सों कहत है ः ॥ कवित्त ॥ तेरे ही तीन लोक की लुना
ई लूटि लई देषें रूप की निकाई नैंकु लाल ललचात हैं ॥ तेरी इति
आगें आली कंचन के गहनें फीके से लगत ये सें गात नछबि छ

ए हैं॥ डीठि के परसही तें मैले ह्वै न अंग ऐसी उज्जलता: लहन बिरं
चनें बनाए हैं॥ तिनकी निकाई स्वच्छ राषिबे कों हेतु ए तें अछूतिकों
मानों पग पैंजनी बनाए हैं॥ टीका॥ सषी को वचन सषी प्रती कें ना
यक प्रती॥ मानों विधि कहिये ब्रह्मा तिस ने तन कहिये देह॥ ना को
अछूत कहिये स्वच्छ जो छबि॥ ताके स्वच्छ राषनें के मतलब॥ हग कह
हिये नेत्र तेई जो भए चरन तिनके पोंछिबे कों भूषन कहिये गहनो
ने पायन दाज्ज कीनें हैं॥ १॥ उत्प्रेक्षालंकार॥

॥दोहा:॥ देषी सोन जुही फिरति: सोंन जुही से अंग॥ दुति लपट
नि पट सेत हूं: करति चनौटी रंग॥ ८॥ यह नायका के अंग की गुराई स
षी नायक सों निवेदन करति है॥ ॥ कवित्त:॥ सहज सिंगार दुति लस
ति अपार लषि मति है मन भावन उपमा अनंग की॥ अति ही कुमा
रया तें लचक न लोक भा कमहीन सकन बिबि उरज उतरंग की
॥ रूप की रसाल लाल देषी सोन बाल सोंन जुही सो जगमगात रंगु
जाके अंग की॥ चारु तन हाथ पट परिरन धन वारि तन दुति मिलि
हानि के सरि पारंग की॥॥॥ टीका॥ सषी को वचन सषी प्रती कें नाय
क प्रती:॥ सोंन जुही से जाके अंग हैं॥ ऐसी जो नायका फिरत है
सो मन मनाहो देषी॥ सो नायका अपनी सोभा की लपट निसों सेत प

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रचाकौ चंनो कहियेपीतरंगकोकरतिहै ॥ इसकोयहमतलबहै ॥ की
नायकाकोसोभासोंमिलिकैसैनकपराषियरोहैजानहै ॥ मिलित
अलंकार ॥ ८ ॥

मूल: दोहा: ॥ सहजसेतपचतोरियाः पहिरतिअतिछविहोति ॥ जल
चादरिकेदीपलैौंः जगमगातिननजोति ॥ ९ ॥ यहनायकाकेतनकी
दीपतिसषीनायकसोंकहतिहैः नायकासषीसोंकहैः तोहूवोअनुचार
जानियेंः जोनायकासषीसोंकहैतोहूपराविनाजानियें ॥ कवित्त: ॥ कन
कवरनतनवनकनवीचिवालवालमकेउरवीजआनंदकेवोति
है ॥ वाकेआगेऔरनकेगातकीनिकाईलागैमनिकेनिकरधरैल
गतिजोपेतिहै ॥ जवपहरतिपचतोरियाकीसारीनवतनकी
येंसहजजगमगातिजोतिहै ॥ कहैप्रानप्यारेहूविछाजविमल
जलचादरिकेदीपजिमपरगटहोतिहै ॥ टीका ॥ सषीकोवचनस
षीप्रतीः सहजसेतपचतोरियाजोकपराकोभेद ॥ ताकीओढनीके
पहिरेतेनायकाकोअतिसोभाहोतिहै ॥ जलचादरिकेवीचदीपकके
समानअंगकीजोतिकहियेंसोभासोजगमगातिहै ॥ ९ ॥ उपमाअ
लंकार ॥

मूलः दोहाः॥ हौंरीझीलखिरीझिहौः छबिहिछबीलेलालः॥ सोन
जुहीसीहोतिदुतिः मिलतमालतीमाल॥२०॥ यहगातवर्ननना
इकाकेअंगकीछबिसखीनायकासौंनिवेदनुकरतिहै॥ सवैयाः॥ नी
कीलसैवृषभालललीनवजोवनजोतिजगीअंगअंगनिहि॥ नोहिबि
लोकिललामनमेंरीतेभोइरह्योअनिरीझिनरंगनि॥ छैलुछबी
लेलखैंछबिरीझिहौकौमहिपैरसभाउकमेंगनि॥ मालतीमाल
नमैंदुतिसौंमिलीसोनजुहीकेप्रकासनिरंगनि॥ टीकाः॥ सखी
कोवचननायकप्रती॥ छबीलोनायकसंबोधनहै॥ मैंरीझीहौं
तुमहूतानायकाकीछबिदेषिकैरीझौगे॥ मालतीकहियेचंपेली
ताकीमालाः नायकाकेदेहकीसोभासौंमिलिकैसोनजुहीसी
होतिहै॥ इसकोयहमतलबहै॥ कीचंपेलीकीमालापियरीहो
गई॥२०॥ मिलितनामअलंकार॥

मूलःदोहाः॥ केसरिकैंसरिकिसकैः चंपककितनकअनूप॥ गा
तरूपलषिजातदुरिः जातरूपकोरूप॥२१॥ यहजातिवर्ननहै॥ सु
रूपकोअधिरचीविधिनावहूकमलकसौनकअैसीसुधारी॥ देष
नथीरहैनहिकैमेंहूनेंननकोंपरतछबिनिहारी॥ केसरकैंसम
नालहिवाकीसुचंपकजालबिहानदुधारी॥ गातलषैंछबिकं

वनजातनसुषेंनिरषीवृषभानदुलारी॥टीका:॥ सषीकोवचनस
षीप्रतीकैनायकप्रती॥ केसरिवैंाकहियेवैसेंसरिकहियेवो
वरिसकैं॥ अरुचंपाविजनेंभुंदरहे॥ जातरूपजोहेसुवर्नताको
रूपसरीरकोरूपदेषिकैछिपीजातहे॥२१॥ अनियाअलंकार॥

सत्रु:दोहा:॥ वाहिलषेंलोयनलगैं:कोनजुवतिकीजोति॥ जाके
तनकीछाहछिगजोंन्हछाहसीहोति॥२२॥ यहनायकाकीदीप
तिसषीनायकसोंनिवेदनुकरतिहे: अरुजोनाहूंसुसषीसोंकहेतोगु
नकथनहूंसंभवतुहे॥कवित्त:॥ आजुछुबिआगरीविलोकिव्रिज:
नागरीकेअंगअंगरूपकीतरंगउमगतिहे॥ हलप्रानप्यारेवरन
तनवनतिवैंाहूंजोवनकेरंगजगीजोतिसीजगतिहे॥ कोहेऐसी
औरतियसुरनरनागपुरवाकेआगेंजाजीइतिडिगनिषगतिहे
॥ जाकेलोंनैंतनकीललितपरछांहीलगेंसरदजुन्हाईपरछांहीं
सीलगतिहे॥टीका:॥ सषीकोवचनसषीप्रतीकेंनायकप्रती॥
वानायकाकेदेषतेनेत्रलागतहैं॥ सोवहकोनकीजुवतिताकी:
जोतिहे॥ जाकेदेहकीछायाकेसमीपजोंन्हचांदनीसोछांहसीहो
तिहे॥२२॥ उपमाअलंकार॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूलः दोहा ॥ कहि लहि कौंन सकै दुरी ः सौंन जुही मैं जाइ ॥ तन की
सहज सुवासना ः देती जौंन बताइ ॥ २३ ॥ इहां नायका के तन की दीप
ति अरु सहज सुगंध सखी सखी सौं कहति है ॥ सवैया ः ॥ बेलन बेबा
ग मिली चुनी बेल दुरी तिय सौंन चमेली मैं जाइ कै ॥ रंग मैं रंग रह्यौ
मिलि कै सु विहूं विधि रंच न हौन लषाइ कै ॥ भौरन की अवली च
ह्यां तें सुगंध के लोभ रही मंडराइ कै ॥ कौ लहतौ उहि कुंज मैं बा
हि जौ देती न अंग सुवास बताइ कै ॥ टीका ः ॥ सखी को वचन सखी प्र
ती कैं नायक प्रती ॥ सौंन जुही मैं जाइ कै छिपी जो नायका ॥ ता
के देह की सहज सुवास जो बताइ न देती है ॥ तौ कौंन कहतौ कौं
न देषतौ ॥ २३ ॥ उनमिलिता अलंकार ॥ २३ ॥

मूलः दोहा ॥ कहा कुसम कहा कौंमदी ः कितक आरसी जोति ॥
जा की उजराई लषै ः आष ऊजरी होति ॥ २४ ॥ यह नाइका की उजरा
ई सखी नायक सौं कहै नायका हूं सखी सौं कहै तौ संभवै ः गुन कथन हू होइ ॥
सवैया ः ॥ बाल बनी बरबानिक वै सदई विधि नै सियै सुंदरताई ॥ फू
लन की दुति नूलन हो विअनूल प्रभा अंगरागे अंगन छाई ॥ चैन की

चांदनीचाहकिनीअरुआरसीहूं इनीजोतिनपाई ।। न्याईहीऊजं
रीहोतिहैं औषिनिहारनिवाननकोउजराई ।।टीका:।। सषीकोव
चनसषीप्रती: कुसमकहियेफलसोकहतहै: ।। वोंमटीकहि
येचांदनीसोकहतहै: ।। औरआरसीकोसोभाकिननीहै ।। ज्ञाना
यकाकोउजलतादेषिऔपेउजलहोतीहै ।।२४।। प्रतीपाअलंकार ।।

मूल:दोहा:।। कंचनतनहनवरनवर: रह्यौरंगमिलिरंग ।। जानी
जातिसुवासहीं: केसरिलागीअंग ।।२५।। यहनायकाकेअंगकी
गुराईसषीनायकसौंकहतिहै: अथवालेचलिवेकीउतनाईलवाकहि
आगरागकौनिवारनुकरतिहै: कैंअनायजानिनाइकुनाइकासोंकहै
सवैया:।। जोकहुनैननमेंनकनीहुरतानिलहैरतिरूपनिकाई ।।
तापरजोबनजोतिजगैकविकोवरनैंछविकीसरसाई ।। रंगमेंरंग
समाइगयोजवकंचनसेंतनमेंहुसीलाई ।। आगहुगंधनिकोतिल
हैसरिकेसरिवासहुहोतिलषिपाई ।।टीका:।। सषीकोवचनस
षीप्रती: कंचनकहियेसुवर्नतैसोतनकहियेसरीर: ।। ताकोंनव
रकहियेश्रेष्टजोवरनताकेरंगसौंकेसरिकोरंगमिलिरह्यो: ।। सो
केसरिदेहमेंलगीसुगंधसोजानीजातिहै ।।२५।। उनमिलितात्र
लंकार ।।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूलः दोहाः॥ अंग अंगनग नगजगमगात: दीपसिषासी देह॥ दिया बढाये
हू रहै: बड़ौ उज्यारौ गेह॥२६॥ यह नाइकाकी देहकी सोभा सषी सषी
सौं कहै कौ नाइका सौं कहै॥ कबित्त:॥ दीपक सी लोई ऐसी हूस रीन की
ह्वै रही है गातिसु सोई माना मो फिनी लहति है॥ जड़ित जवाहर के अ
बन ललित अंग अंगनि मिलत जगा जोति सी जगति है॥ दीपक
बड़ो हू भयो देहको उजास है रहै बड़ोई प्रकास चकचोधी सी लगति
है॥ दीपक कौ दुति भारी भवन अषिल जाल रंध्रनि है गही को रफल
कफलति है॥ टीका:॥ सषीको वचन सषी प्रती कै नायक प्रती॥ दी
पसिषा ज्यो म साल तैसे अंग अंगनि गासे जगमगात है॥ दिया केह
टिके रहै घर विषै बड़ो उज्यारौ रहत है॥२६॥ एवं रूपा अलंकार:॥

मूलः॥दोहाः॥ है कर रमनि मैं रही: मिलित न दुति मुकता मालि॥
छिन छिन षरी विचछनी: लषति छुवाइ तिन आलि॥२७॥ यह नाइका
के अंगकी निकाई सषी नाइका सौं कहति है: सषी है सौं कहति है:॥ कबित्त:॥
कुंदन से गात जल जात से नयन जाकी दीपति जुन्हाई सी भवन मांझ
वै रही:॥ कंचन की चौकी पर बैठी परवाल साजे सकल सिंगार जो
तिजगमगा है रही॥ मोतिन की माल सजनी पहराई सो है तन दुति
मिलि जनु एरको सी है रही॥ एक आली चतुर जकी सी चकि रही ए
कु करि वे को निह चैन तिन्ह का हाथ लै रही॥ टीका:॥ सषीको वचन स
षी प्रती:॥ मोतिन की माला नायका के देह की सोभा:॥ सो मिलि कै

कसरकीमालासीह्वैगई ॥ छिनछिनविषैंसरीरवीचः छनकदियैं
प्रवीनजेआलीकहियेसषीः ॥ तेतिन्नकाछ्वाइदेषतिहैः ॥ इसको
यहमतलबहैः ॥ कीतिनकाकहरकेछ्वाएउठिआवतहै ॥ २७ ॥
भ्रांतिअलंकार ॥

मूल ॥ दोहा ॥ दीठिनपरतसमानदुतिः कनककनकसेगात ॥ भू
षनकरकरएसेलगतः परसपछानेजात ॥ २८ ॥ यहनाइकाकेअंग
कीदीपतिसषीनायकसेंाकहतिहैः नाइकहूसषीसेंाकहैतोसंभवै ॥
कवित्त ॥ आजुलालएकब्रिजबालमैंविलोकियतललितलुना
ईलषिलोचनसिरातहैः ॥ साजनिसिंगाररचिपचिकैप्रवीनआली
तिनहूकेचैनचितहेरतहिरातहैः ॥ करनिविचारनिरधारपैनहोत
कछूजैसोइकनकतैसेंवनककेगातहैः ॥ केवरेकरेरेकेविनानप
हिचानियतएकएकभूषनअनेकजानेंजातहै ॥ टीका ॥ सषीको
वचनसषीप्रतीःकैनायकप्रतीकैनायकाप्रतीः ॥ कनककेस
मानगातजाआरवीभनाकीदुतिकहैकांतिहैः ॥ येसोकनकजासे
नेंासोडीठमेंनाहींपरतुहैः ॥ सोनेकेभूषनजोगैंहनेंतेहाथकेछुवे
तेकसकहैंकठोरलागतुहैः ॥ तेपरससोंपहिचानेंजातहैंः ॥ इसको
यहमतलबहैकीदेहकोमलहैगैहनेकरेरेहैं ॥ २८ ॥ उनमिलताअ
लंकार ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूलःदोहाः॥ करतमलिनआछीछबिहिः हरतजुसहजविकास॥ अं
गरागअंगनिलग्यौः ज्यौंआरसीउसास॥ २५ ॥ यहनाइकाकेअंगमैंके
सरिलगीहैः नाइककोइननैंनोंहैःअंतराइसहालनाहीयातेंनायककोस·
षीनायकासौंकहतिहैः नाइकहैनायकासौंकहैतोसंभवै॥ सवैयाः॥
मैनकीमोहनीसीलषिआइहौमोहनरीफिरहैरसपागे॥ जोव
नहूपसुहागसुनीलषिसौतिनकेउरदाहनिदागे॥ ऊजरौला
गैनऔरकहूनबनागरितेरीमुराइकेआगे॥ केसरिलागेयों·
अंगलषातुज्यौंआरसीदीसेउसासकेलागे॥ टीकाः॥ सषीकोवच
नसषीप्रतीःकैंनायकप्रतीःकैंनायकाप्रतीःअंगराकहियेबुट
णासोआछीसोभाकोमैलोकरतुहैः॥ औरसहजकेप्रकास·
कोदूरिकरतुहैः॥ सोअंगरागआरसीविषेंउसासजोभाफःता
केसमानदेहकैंलग्योहैः॥ इसकोयहमतलबहैःकीजैसेंमुष
कीभापसैंआरसीमैलीहोतीहैः तैसेदेहअंगरागलगायेंमै·
लीहोतिहै॥ २५ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूलः दोहाः ॥ अंगांअंग प्रतिबिंब परिः दरपन मैं सब गात ॥ इक हे
निकहे चौकहे ः भूषन जानें जात ॥ २ ॥ यहनाइकाके अंग की उज
राई सषी नायक सौं कहै ः नायक नायका सौं कहै ः सो सब भांति संभ
वैः जो नायका सषी सौं कहै तो कह्य गवितां होइ ॥ कवित्तः ॥ बदन बि
लोकि ससि समता न लहै वौ हूं लोचन निहारे जल जात हूं लजा
तु है ॥ नारि वैन वेली न षमि षलैं लौनिकाई भरी वानी वि वित्र ल
षि लोचन सियरातु है ॥ हास मान प्यारे अति उज्जल लल सकनी
वैन वकरहे गात न महां सोभा सरसातु है ॥ अंगांअंग प्रतिबिंब परि
कै रूगोहे न रूप एक एक भूषन अनेक जानें जातु है ॥ टीकाः ॥ सषी
को वचन सषी प्रतीः अंगांअंग प्रतिबिंब परि दर्पन से सिगरे सरीर
मैं परिकैः इक है तिकहे चौकहे गे हनें जाने जातु है ः ॥ अलंकार ॥ २ ॥

मूलः दोहाः ॥ अंग अंग छवि की लपटः उपट निजाति अछेह ॥
षरी पातरी हू न ऊलगै भरी सी देह ॥ २१ ॥ यहनाइकाकी नात्तुकता
अरु दीपति सषी नायक सैं कहति है ः ॥ सवैयाः ॥ कंचन कुरंग कला
निधि कंचुकी सोभा सुभाइ हरी सी ॥ नान वनागरि की निसि चैा
सर है उनि नैन नमाक धरी सी ॥ अंग निअंग उमंग अछेह प्रभा
कीन रंग सुरंग धरी सी ॥ पातरी वाकी अगोटित रू छवि पुंजन

लागतिदेहभरीसी॥ टीका॥ सषीकोवचनसषीसें॥ अछेहक॰
हैअछयअंगः॥ अंगकीसोभाकीजोलपटैं तेउतानहोतीजा
तिहैः॥ तिनसेंनाइकाकोषरीपातरीजोदेहः सोभरीसीलाग
तिहै॥२२॥ उत्प्रेक्षाअलंकार॥

अथमुग्धाभेदः मूलः दोहा॥ छुटीनसिसुताकीझलककः झल॰
कैयोजोवनअंग॥ दीपतिदेहदुहूंनिमिलिः मनोताफतारंग॥२३
यहदोहवेसकोसंगमहैः सषीसोंकहतिहैः अथवानायकसोंसषीनि
वेदनकरतिहै॥ सवैया॥ बालिबहेबनितानकहैयेकहूकहै
नुसकानटरीहै॥ सषीचितौनिविलोकतिहैपरिलोललताखव
कजानिपरीहै॥ छुटीनहीसिसुताकीप्रभानवजोवनकीदुति
भाति धरीहै॥ संगदुहूंनवेताफतारंगदियेंतनकीदुतिरंगभ
है॥ टीका॥ सषीकोवचनउतिसषीप्रती॥ सिसुताकहियेबा॰
लअवस्थाताकीझलककछुटीनहीहै॥ इसकोयहमतलबहैः
किबालकलरकाईबनीहैः औरजोवनअंगमेंझलकयोहै॥ ल
रकाईजोबनइनदुहूंनिलिकेदेहयेसीदीपतिहै॥ मनोताफता
कपराकोरंगहै॥ इसकोयहमतलबहै॥ कीजैसेंताफताक
परामेंदोरंगमालूमहोत॥ तैसेनाइकाकीदेहमेंज्वानील॰
रकाईदोऊझलकतहै॥२३॥ उत्प्रेक्षाअलंकार॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूलः दोहाः ॥ नियनिष्ठिन कहन किसोरवयः पुन्यकाल समदांन ॥ ऐरे
पुन्यन पाइयेः वैस संधि संक्रोंन ॥२३॥ यह नाइकाकें लरकाई अरु तरु
नाई वैस की संधि है: सषी नायक सों कहति है: ॥ सवैया: ॥ उत लरज
रा सिन नैन वलौंन हि हसरी रा सिद्वावत है ॥ तवलौं वह अंतर
कौ समयो अतिउतम वैदु वतावत है ॥ इत हूं जब वैस किसोर दि
नेंस उहै वय अंवर आवत है ॥ सुक्र तिन्ह कर एरव पुन्यन तें विधि
संक्रम कौ छनु पावत है ॥ टीका: ॥ सषी को वचन सषी प्रती: १
कैं नायक प्रती: कें नायक को वचन सषी प्रती: कें सषा प्रती: ॥
तिय जो नायका सोई तिथि है ॥ औरतनकहन जो ज्वानी किसोरक १
हियेउमर ॥ एदोऊ समक है वरोवर पुन्यकाल है ॥ अथवा ये सो
नो पुन्यकालः ताको समदांन कहै एजतन नहीं है ॥ काहे तें पिछ
ले एरे पुन्यसों वैस संधि जो है: सोई संक्रमन भयो सो पाइयत है ॥
रूपकाअलंकार ॥२३॥

मूलः दोहाः॥ लाल अलोलिक लरकई: लषि लषि सषी सिहाति॥ आ
ज काल्हि मैं देषियति उरज कसोंहीं भांति॥ २४॥ यह दोहा नाइका के जो
वन अंकुरित है: सु सषी नायक सें कहति निवेदन करति है: नाइका अंकु
रित जोबना:॥ सवैया:॥ कैसी सुहाई लल लाल रकाइ में जोबन जोति:
लसौंहीं भई है:॥ बाल बिनोदनु तें उचटी है चिकाम कला सरसौंहीं भ
ई है:॥ बाहि बिलोकि सिहाति सषी बनियानि को बानि हसोंहीं भई:
है॥ आजु ही काल में बाल बधू की कछू छतियां उकसोंहीं भई है॥
टीका:॥ सषी को वचन नायका प्रती॥ लाल नायक को संबोधन है॥
नाइका की लरकाई कहिये बाल अवस्था ना को देषि देषि कै सषी:
सिहाति कैं है षुसी होति है॥ आजु काल्हि नाइका की उरज कैं छाती:
ना को उकसोंहीं भांति कहै उठना: सा देषियतु है:॥ इसको यह मतल
ब है:॥ की नायका की छाती है कै राज में उठनि है॥ २४॥ उत्प्रेक्षा अलं
कार॥

मूलः दोहाः॥ अपने अंग के जानि कै जोबन नृपति प्रवीन॥ स्तन मन
नैंन नितंब को: बड़ो इजाफो कीन॥ २५॥ यह नाइका नवजोबन भूषिता मु
ग्धा सषी को वचन सषी सों:॥ सवैया:॥ जोबन भूप महा परवीन विचछन:
नताई हरी न ठई है॥ राजलह्योन बलानन कौं कटि मनु को संपति:
लटि लई है॥ इरवियेसि मनु ना के सहाय कचानु रता चितु चाह भई

है॥ नैनउरोजनितंबनिकौ अपनेगनिकेबढिवारिटई है॥ टीका:॥
सषीकोवचनसषीप्रती: कैनायकप्रती:॥ जोवनजोहै सोईभयो
प्रवीनराजा:॥ तानैंस्तनकहैंकुचओरमनओरनैनओरनितंब:
इनकौंअपनेंअंगकेजाकेवपाकिएसबमेरेहैं:॥ इसतेंइनकोंव
डोईजापैवडीवहतिकरीहै:॥ इसकोयहमतलवहै:॥ कोजवानी
केआयेते: कुचओरनेत्रनितंबपवडेभएहैं:॥ २५॥ उत्प्रेक्षाअलंकार॥

मूल: दोहा:॥ देहदुलहियाकीवढै: ज्यौंज्यौंजोवनजोति॥ त्यौंत्यौंल
षिसौतेंसबै: वदनमलिनदुतिहोति॥ २६॥ यहनायकानवजोवनभू
षितानवोढाहै: याकोजोवनआवतुदेषिसौंतिनुकेमुहफीकेपरतुहै:॥
सवैया:॥ पंथनगोनगहैपदपंकजमत्तगयंदनहूषनलागे॥ सैनके
टैनेसेवैनभएतिनकेसमऊषमहूषनलागे॥ जोउरभानल
लीतनजोवनजोतिकेलछनभूषनलागे॥ त्यौंत्यौंविलोकि
भईमलनीदुतिसौंतिनुकेमुहदूषनलागे॥ टीका॥ सषीकोव
चनसषीप्रती:॥ दुलहियाकहियेनईव्याहीनाइका: ताकेदेहमें
जैसेंजैसेंजोवनकीजोतिवढतिहै:॥ तैसेंतैसेंसबसौतेंमलीन
मुषहोतीहैं:॥ इसकोयहमतलवहै:॥ कोइसकोजोवनआए
हमारेअघरनैरहैगा॥ २६॥ विभावनानिमयोक्तिअलंकार॥ २६॥

बिहा
५२ 52

अथज्ञातयौवना ॥ मूल: दोहा: ॥ भावकसौंउभरौंहोभयौ: कछुकपयो
भरुआइ ॥ सीपिहराकेमिसहियेंनिसदिनहेरतजाइ ॥ २० ॥ यहनाय
कामुग्धाग्यातजोवनाहै: सषीनायकसोंकहतिहै: सषीकोवचनसषीसों
सोंहै ॥ कवित्त: ॥ प्यारेनंदलालवहवालअलवेलीनवजोवनकीजो
तिदिनहैकनेंभरतिहै ॥ दंपतिचरित्रचित्रहुरिचितवनिलागीकाम
कोहानीकछुकाननधरतिहै ॥ रंचकउरोजनकीकोरउकसौंहौं
भईतेसकलजौंहाहीसीचितैनितहेरतिहै ॥ सवकीवचाइडिठिनि
ठ्यानीवारवारसीपिहारमिसकरिहेरिवेकरतिहै ॥ टीका ॥ सषी
कोवचनसषीप्रती: भावककहैंभाउमात्र: ॥ उभरौंकहियेउठौंहो
भयोहै ॥ औरवाकछुकभारीभयोहै: ऐसोजोहियोताकोसीपिके
हारकेमिससोंदिनरातिदेषतिरहतिहै ॥ अलंकार ॥ २० ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूल: दोहा: ॥ नवनागरितनुमुलकलहि: जोवनआमिलजोर ॥
घटितैंबढिबढिघटिकरी: रकमऔरकीऔर ॥ २८ ॥ यहनायकाकेत
नमेंजोवनुआयोहै: सुअंगघटिहैंतेबढिगएबढिहैंसुघटिगए: यहआमि
लकोअंमलमाकरिसखीसखीसोंकहतिहै: नाइकाहैसोंकहैतोसंभवे: ॥
कवित्त: ॥ सुवरनवेलीअलवेलीकोललिततनतनुराजनहुसुदेसगु
तिसोभासरसायोहै ॥ पायोहैसुकमछितिपालमीनकेतनकोजो
वनअवलतहाँआमिलहैआयोहै ॥ औरहीतेंऔररीतिरकमवनाइ
कीनीअमलजमायोसवहीकेमनभायोहै ॥ घटहीतेबढिकीनेंव
ढिलेघटायदीनेंकहैकविहूलयैसोचलनचलायोहै ॥ टीका ॥ स
खीकोवचनसखीप्रती: नवकहैनईनागरिकहैनाइका: ता
कोतनजोसरीर: सोईभयोमुलषकहैदेस ॥ ताकोलहिकहैपाइ
कै: जोवनजोहैसोईभयोजोरावरहाकीम ॥ तानेंछोटीरकमव
डियेजमाकरिऔरजहाँवडीजमाहै ॥ तहांथोरीजमाराषी ॥
इसकोयहमनलवहै: कीछोटेअंगवडेभए: वडेअंगछोटेभए ॥
लषकोअलंकार ॥ २८ ॥

मूल: दोहा: ॥ अरतेटरतनवरपरे: दईमरकमनुमेंन ॥ होडाहोडी
वढिचले: चितचतुराईनेंन ॥ २९ ॥ यहनाइकाकेजोवनआयोहै: र
सचतुराईअरुनेत्रवढनलागे: सखीसखीसोंकहतिहै: ॥ सवैया: ॥ नेंन

नवानहरीलबिचिन्ननचातुरिकोउसमगीअधिकाई॥चातुरिकी॰
अधिकाईलषीनवनैनहुओरगहोसरसाई॥हुलसकहैवरवांधीउ
हुनइतैपरचीससमनोजकोपाई॥होडीहेहोडाचलेवढिमानों॰
विलोचनओचितकोचतुराई॥टीका॥सषीकीउक्तिसषीसों॰
अरकहियेवडी॥नानेंटरतनहूहो॥वरनपरेकाहियेवलपरेहे॥मा
नोंकामनेंइनकोंसरकरहेंचौपटईहै॥सोयाहीनेचितओचतु
राईनेत्रनेंआपुसमेंमानोंहोडीहोडावहिचलेहै॥उत्प्रेक्षाअलंकार
२५॥

मूल॥दोहा॥गाढेहाढेकुचनिठिलि॰पियहियकोठहराई॥उकसों
हिहियनोहियें॰दईसवैउकसाई॥२६॥यहनायकाजवोढाहै॰नायक
कीयाहीसोंवहुतआसक्तहै॰सषीनायकसोंकहतिहै॥सवैया॥पीन
पयोधरभारधरेसेनियनोउरऊपरहैहेजवै॥कोवसिहैपियकेहियभाम
निसुंदरहूपअनूपनवै॥नेकविलोचनलोलनएनवजोवनजोतिजगी
नअवै॥नेउकसेउरजानन्हीपियकेहियतेंउकसाइसवै॥टीका॥स
षीकोवचनसषीप्रती॰कैनायकप्रती॥गाढेहाढेजेकुचतिनसों॰
औरनायकाठिलिकहियेतैंहरिकरी॥यातेंपियजोनायकताकेहियें
कोनुघहराई॥नायकाकोठाढोजोहियेयोतानेंनायककेहियेंतेंस
वनायकाउरिकरी॥इसकेअर्थमतलवहैकीनायकाकेकुचदेषि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कैनायककेहियेमें:औरनायकाकोईनहीठहरानिहै ॥ विभावना
अलंकार ॥ ३० ॥

मूलः दोहाः ॥ ज्यौंज्यौंजोवनजेठदिन:कुचमितिअतिअधिकाइ ॥ त्यौं
त्यौंछिनछिनकटिछपा:छीनपरतिनितजाइ ॥ ३१ ॥ यहनायकाअ
कहाजोवनाहै:दिनवातिकौंरूपकुहै:जैसेंकुचदिनवढतहै:तैसेंकटिरा
तिहै:सषीसषीसौंकहतिहै ॥ सवैया: ॥ बातनरूपकीरासिलसैतिकु
लोकमैऔरइतीकलहीकिन ॥ बानककेरमलूनाईविलोकिकैनो
रतिवारहीवारहिन्रतिन ॥ जोवनजेठहीआवनज्यौंज्यौंउरोजनु
कौपरमानवढैदिन ॥ त्यौंहीत्यौंरहैंनलगीकविहूलखिछपाकटिछी
नभरीछिनहीछिन ॥ ३१ ॥ टीका: ॥ सषीकोवचनसषीप्रतीकैंनाय
कप्रती ॥ जैसेंजैसेंजोवनकहैंनरूनअवस्थासोईभयोजेठमहीना:
तामेंदिनतेईभएकुच:तिनकीमितिवैहैंपरिमाए:सोअतिवडे
होतहै ॥ तैसेंतैसेंछिनछिनविषैं:कटिजोकमरिसोईछपाभईरा
ति: ॥ सोनितछीनपरतिजातिहै:इसकोयहअर्थहै:कीजोवनके
आएतें:कुचवढनलागे:कमरघटनलागी ॥ रूपकाअलंकार: ॥ ३१ ॥

मूल: दोहा:॥ मानौं मुह दिषरावनी: दुलहनि के अनुराग॥ सासस
दन: मनललनहूं: सौतिन दियो सुहागु॥३२॥ यह नायका नवोढा
याको जोबनु देषि नायकु याके बस भयो: अरु सौतिन को सुहागु इन ली
नों: सु सषी सषी सौं कहति है: ॥ कबित:॥ दुलहनि लोंने तन
वारि मानौं सोहै ऐसी जगर मगर होति भवन को भागु है॥ विधि
नें सुधारी गुन चातुरी की सीम जाके रूप आगें रति को रती कहू
न लागु है॥ मेरे जानें मुह दिवरावनी न कोंनें जानी आपु ही तें सौं
पि दीन्हों कीन्हौं अनुरागु है॥ सासु नें भवन दीनों प्यारे लाल म
न दीन्हों अरु सौति पनु दीन्हों सौतिनि सुहागु है॥ टीका:॥ सषी के
वचन सषी प्रती॥ मानौं दुलहनि की मुह दिषरावनी: प्रीति क
रि के सासु नें घर दयो॥ और नायक नें आपनो मनु दयो: और सौ
तिनु सुहाग दयो॥ उत्प्रेक्षा अलंकार:॥३२॥

मूल: दोहा:॥ निरषि नवोढा नारि तनु: छुटत लरिकाई लेसु॥ भौ प्या
रो प्रीतम तियनु: मानौं चलत विदेसु॥३३॥ यह नाइका नवोढा है:
याकौ जोबनु आवत देषि सौंतिन निरास होति है: सषी सषी सौं कहति है

सवैया॥ कुंदनदीपसीदेहकीदतिमैंनमनोनिज्ञमोहनिवालन॥ छूटि
टतसीहतनाइकछूनहनाईतरंगनरंगउछालन॥ बालवधूनन
जोवनआवनसोतिनकेननुहूलसोसालन॥ प्राननतैंप्रानि
प्यारीलगैपियतिमानोंवहूपरदेसकौचालन॥ टीका॥ सषीकोव
चनसषीप्रती॥ नवोढाजोनाइका॥ ताकेसरीरविषैलरकाईकेले
सकोछूटिबोदेषिकै॥ औरनायकनिकोप्रीतमजोनायकसोयेसोप्या
रोभयोहै॥ मानोंपरदेसकौंचलोहै॥ इसकोइहमतलबहै॥ कौपर
देसकोचलनपुहसवकुनप्यारोलागनहै॥ उत्प्रेक्षाअलंकारइतीसुप
॥३३॥

प्रथमध्या॥ मूल॥ दोहा॥ बालेकीबातैंचली॥ सुननसषिनकेटोल॥
गोपहूलोचनहसत॥ विहसतजानकपोल॥ ३४॥ यहनाइकामध्या॥
है॥ सषीकोवचनसषीसौं॥ सवैया॥ सोहैसषीनुसमाजमेंसुंदरिजा
हिलषैरतिरूपलजायै॥ एकहीबैससवैगुनआगरिचौंपरि
षेलुभलेवनिआयै॥ बालेकीबातचलीतवहींवैसुनीमुहसंग्रा
वरहीनोइरायै॥ नैननलाजकपोलमेंहासीदुहूंमिलिकैअतिरं
गदिषायै॥ टीका॥ सषीकोवचनसषीसौं॥ सषिनकेटोलामेंस
हरेकेजानेकीबातेंसुननायकाकेनेत्रहसतनहैं॥ कपोलविह
सतनहैं॥ विभावनाअलंकार॥ ३४॥

मूलः दोहाः॥ बाढ़तते उर उरज भरु: भरि तरुनई विकास॥ बोझनु सौतिन के हियें: आवत रूंध उसास॥ ३५॥ यह नायका नव जोवन भूषिता है: याकों देषि कै सौतिनु कें दुष होतु है: सषी नायक सों कहति है

सवैयाः॥ तो सी तुंहीं रमनी कमनीय भयो अति तो बसुध्यारी विहारी॥ वेस विलास जगी जु बनैं तन बतें यह अंग अनंग निहारी॥ बाढ़त रूं नवनागरि तो उर मैं उरजानतु को भरु भारी॥ ता भर सैं तिनु सास उसास निपी रहि सों हियें होत दुषारी॥ टीका:॥ सषी को बचन नायक प्रती॥ तेरे उर विषें कुचनि के भार: तरुनाई के प्रकास सैं भरिकै बाढ़तु है॥ कुचनि के बोझ सैं: सौतिनु के हियें की उसास संबंद होती जाति है॥ असंगति अलंकार॥ ३५ ॥

मूलः दोहाः॥ कहत नटत रीझत षिझत: मिलत षिलत लजिजात॥ भरे भौंन मैं करतु है: नैंननु हीं मैं बात॥ ३६॥ यह दोऊ भरे घर मैं

वानकवनहै: सोसषीसषीसोंकहतिहै:॥कवित्त॥ भर्योहै भवननऊपाव
ननभेदकोऊ उमहनदोऊयोंसनेहसनीछानहै॥ छिलनमिलनपु
निषिलनविलनरसकूलसनलसननसकाननमुसकानहै॥ हांक
रननाकरननरीऊनषिऊनहिनभीजननलजातननजिकानहै वि
कानहै॥ प्रेमपगेपरनप्रवीनप्यारेपीऊप्रियानेंमनुहींनिपुनक
रनसबबानहै॥टीका:॥ सषीकोवचनसषीसों॥ फेरिनटनकहैं
मुकरतहै: फेरिरीझतहै: गुस्साकरतहै: षिलकहैं पुसीहोतुहैं
मिलतहै: लजीजातलाजवांनहोतहैं: नायकनायकाभरेघर
मैंयैसीसबबातेंनैननिसोंसबकरतहै॥विभावनाअलंकार॥३८

मूल:दोहा:॥ करैचाहसोंचुटकिकैः षरेउठौहैंमैंन॥ लाजबायेनर
फरतःकरनपुदीसीनैंन॥३९॥ यहनाइकाकेनेत्रनकीसोभासषी
नाइकसोंकहै:मेत्रलाजअरुचाहनेंदोऊनकेवसपुदीसीकरतहै:॥
कवित्त:॥ नैननवनागरिकेतरलतुरंगअग्रछबिकीतरंगरंगनिक
रैंधरेधरे॥ मदनप्रवीनतिन्हैंफिरवैसधावतहैछूंछूटकीअगर
येसाकौंनिगुकरेकरे॥ कौहेंचाहआउगीसांचुरागिचपलहै
षरेईउडोहैनेंहीउमगभरेभरे॥ लाजबागवसकेतरफरानलाइ
भरेकरतपुदीसीपगधारतहरेहरे॥टीका:॥ सषीकोवचनस
षीसों: कैनायकासों॥ मैंनकहियेकामदेव:तानेचाहसोंकै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बिहा·
५६

56

हैं अपनी इछ्या सों छुटकी कैं ए नेत्र बरे उठां हैं कों रहे हैं ॥ सो लाज बो
द्वा ए नर फराने हैं ॥ सो मानों ष्टुदीसी करन हैं : इस कहना वनिर
सें : नेत्र निचोरा को धाम मिलत हैं ॥ ३७ ॥ उत्प्रेक्षा अलंकार ॥

मूल : दोहा : ॥ समर सम सम रस सकोच बस : बिबस न ठिकु ठहराइ ॥ फि
रि फिरि उझकति फिरि दुरति : दुरि दुरि उझकति आइ ॥ ३८ ॥ यह ना
इका मध्या है : लाज काम समान है : सषी सषी सों कहति है : ॥ सवैया :
आनन माझ बसी पिय मूरति नैंनन मांझ सकोच विवेकौ ॥ फां
कि झरोषा दुरै फिरि झांकै दुरै बहुरौ ठहरात न एकौ ॥ त्रास रह
नैं घर लोकनि को उत लाल लला च मोहन के लषिबे कौ ॥ लाज
औ काम के वाम दुवी च परी यों चलाचल हाल हियें कौ ॥ टीका :
सषी को वचन सषी सों : समर कहियें कामदेव : और सकोच क
हियें लाज : इन दोऊ के बस कहें अधीन है : या हीतें समरस कहि
यें लाज काम को बराबरि रहे है : अथवा जैसी उपपति को प्रती
ति है : फेरि फेरि उझकति कहें देषति है : फेरि फेरि दुरति कहें
छिपति है : छिपि छिपि कै फेरि देषति है ॥ ३८ ॥ जमक अलंका
र : ॥

मूल: दोहा:॥ सकुचि सरकि पिय निकट तैं: पुलकि कछुक तन तोरि॥
कर अंचर ता की ओट करि: जमुहानी मुह मोरि॥३५॥ यह सुरतांत
नाइका प्रौढा सखी को वचन सखी सौं॥ कवित्त:॥ केलि कला कुसल
कुरंग नैंनी पिक बैंनी जाको छवि पर: रति वारियै करोरि कै॥ सं
न मुष पागी अनुरागी पति संग जागी मैंन के विलासन सौं ले
ति चित चोरि कै॥ सरकि सकुच मन भावन के निकट तें कछुक
मुलकि अंग तोरि तनी तनतोरि कै॥ सोभा वह मो पै वरनी न जाति नव
षानी कर अंचर की ओट जमुहानी मुह मोरि कै॥ टीका:॥ स
षी को वचन सषी प्रती: सकुचि कहि ये लाज वंती:॥ ह्वै कै पिय के
समीप तैं: सरकि कहि ये चलि कै:॥ पुलकि कहि ये रोमांचित ह्वै
कै: कछु देह तोरि कै: अरु कर कहि ये हाथ:॥ ता सौं अंचर क
हि ये ओढनी कौं छोर ता की ओट करि कै: मुह फेरि कै जमुहा
नी है॥३५॥ सुभावोक्ति अलंकार॥ इति मध्या:॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विहा
१२
57

अथ प्रोहावर्नन ॥ मूल: दोहा: ॥ ज्यौं ज्यौं आवति निकट निसि त्यौं त्यौं षरी
उताल ॥ झमकि झमकि टहलें करै: लगी रहचटे बाल ॥ ४ ॥ इहु नाय
का प्रोहा है: सो सषी सषी सों कहति है ॥ सवैया: ॥ गौने भए दिन कै उभ
ए तियमैं प्रिय प्रेम की जोति सी जागी ॥ वासर ज्यौं ज्यौं घटै रावति नीठि वि
धी व सवै रस मैं अनुरागी ॥ आवत ज्यौं ज्यौं नजीक निसा तिय त्यौं
त्यौं उछाह हू उमंग न पागी ॥ सज्व रका जकरे गृह के रव नी रतिके ति
केलाह कलागी ॥ टीका: ॥ सषी को वचन सषी सों: ज्यौं ज्यौं राति नि
है आवति है ॥ त्यौं त्यौं नायका षरी कहैं अति उताल कहैं जितावी
सों झमकि झमकि घर की टहलें करति है: ॥ बाल जो नायका
ताकौ रहचटो कहैं देषनों: ॥ नायक के मिलवे को: अभिलाष
सो लागो है ॥ जातिवर्नन अलंकार ॥ सषी की उक्ति सषी सों ॥ रति
प्रिया प्रोहा जातिवर्नन ॥ अलंकार ॥ चपलता औ सुक संचारी ॥ ४
मूल: दोहा: ॥ झकि झकि झपकौं हैं पलनु: फिरि फिरि जिजु रिजम्हु:
हाइ ॥ जानि पियागम नींद मिस: दी सब सब सषी उठाइ ॥ ४२ ॥ य
ह नायका परकिया वासकसज्जा: सषी को वचन सषी सों क्रिया विदग्धा
संभवै ॥ सवैया: ॥ जानि सुमें पिय आवको चतुराई करी चितचा
वैं न बाइकै ॥ सेकर आधिक सूदि कै आंषि झकौ सी करी पल कैं च
पलाइ कै ॥ जो रिझु जानन तो रितिया अगिरानि षरी अरसाइ जंभा
इकै ॥ वैठी हुती हिग आइ अली सुदई सब झठम ही सों उठाइ कै ॥
॥ टीका: ॥ सषी को वचन सषी प्रती ॥ झपकौं हैं कहिये अधषुले जे
नेत्र पलक ॥ तिन सों झकि झकि कहैं झकि झकि कै के फिरि
जमुहाई लीवे: पिय को आगम जानि कै: नीद को मिसु सों सब सषी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

उठायदई ॥पर्य्यायोक्ति अलंकार॥ सषीकोउक्ति सषीसों॥ साधारण
सौंहाय्यवड़ि थ्याश्रीनंदकासंचारीवाइक सजाऊं कहि सकियै ॥
पर्यायोक्ति अलंकार॥ पर्यायोक्ति प्रकार है कछु रचनासौंबात॥ मिस
करिकारिजकी जीय॥ जैसे चित्रक हात॥४१॥मूलःदोहाः॥ भौंह
नित्रासनि मुषनि करनि आषनि मैं लपटानि॥ येचितहुइ बतिकर
इची आगें आवनिजानि॥४२॥यहु दूरनआरंभसमैंनाइकाकी चेष्टास
षीसषीसोंकहै नायकहु सषीसोंकहैः॥कवित्तः॥प्यारेपनिचारिरिह्योभौं
नमैंअकेलीजानि भौंहन चढाइकै सलोनीसतरातिहै॥ नैंननहू
सौंहहीडीठिराषतिनसौंहहीमुसकाईकैलजौंहौंअंगअंगठहरातिहै
भयौमन भायौज्यौंमुमेकमुषपायौ हियआनइवहायोउरनेक
नइरातिहै॥ फरकिछुटावैबाहिमिल्यो चाहैमनमाहिनाहीकरैया
हीमननीरैंनियरातिहै॥टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ भौंह
निसौंत्रासनिकहैडरावतिहै॥ औरमुहसौंनटनिकहैमुकरनिहै॥
औरअंषिनसौंलपटतिहै॥ अपनेकरजोहाथनाकोयेचितकहैचि
चिकैंछुडावतिहै॥ औरईचितकहियेवेचितसौंआगेंआवनिजानिहै॥
विभावनाअलंकारः॥उक्तिनाइककीसषीप्रतिरतिकोखिलप्रौढा॥ वि
भावनालंकार॥प्रतिबाधकके होनहूंकारजहरणहोइचौथेभेदवि
भावनाकोजाननसबलोग॥४२॥[illegible]॥अथअष्टनायकावर्ननं
प्रथमस्वाधीनपतिकाःमूलःदोहाः॥हुनितुईसवतोलसैंःरहीजुसौं
निकहाइ॥हुनैयेंचित्यौआपुनौंःकरीअदोषिलआइ॥४३॥यहना
यकास्वाधीनकपतिकाःसषीकोवचनसषीसों॥सवैयाः॥रातिदिनाछ
कियाहीकेधामपर्योरसमैंरहैत्यौंसुषदाई॥पासपरोसनसवैकहनीय
हवीसविसैंतियहेहुनिहाई॥नेजवतेंनरूपकीरासिसुसीलसुहाति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लगोनहीआई॥ प्रानपतीअपनेंवसकैंतेंभलीकरीसौतिकीछोति
वहाई॥ टीका:॥ सषीकोवचननाइकाप्रती॥ तेंसौतिसिंगारेटोला
में॥ हुनिहाईकहियेटोनाकोरनवारीकहाइरहीहै॥ सौतेंआप
नीओरनायककोषैंचिकैसौतिआदोषिलकहियेदोषहीनकरी
॥ आइकरिलेषाअलंकार॥ सषीकीउक्तिनाइकाप्रतिस्तुतिकरतहै
नाइनाइकाउपासन्नस्वाधीनपतिकाजानियेंलेषालंकार॥ जहां
दोषमैंकीजीये॥ गुनकल्पितसुविशेष॥ कैगुनमैंठहराइये॥ दो
षसुजानोलेष॥ ४३॥ मूल: दोहा:॥ नैंकुउतेउठिबैठियेकहारहेगा
हिगेह॥ छुटीजातिनहदीछिनकु: महदीसूषनदेहु॥ ४४॥ यहनाय
काकेननमैजोवनआयोसुअंगनछुटिहैंतेवढिगए: वढिहैंतेंचुहिभए: य
हआमिप्रसंगकरिसषीसषीसौंकहतिहै: नायकहूसौंकहैतौसंभवे
सवैया:॥ आजुलौंकैसेंहूजानिपरीनचलीजवतेंरसरीतिचलायह
॥ देषिलैंअवहींउमगैपाकरपल्लवछोरनस्वेदजलायह॥ वैठहुंने
कुउतेउठिवैरेहुरीअवआवतिप्रेमकलायह॥ जातिछुटीअव
हींनहदीमहदीछिनुसूषनदेहूललायह॥ टीका:॥ नायकाको
वचननायकप्रती॥ तुमनेकुइहांतेंउहांउठिवैठौघरकौकहाछे
रिरहेहो॥ मेरेनषमैंदईजोमेहदीसोछुटीजातिहै:॥ ताकोसूष
नदेहु:॥ इसकेहेनावतिसौंसात्विकभावभयोजानियें॥ व्याजो
क्ति अलंकार॥ नाइकाकीउक्तिनाइकप्रतिवचोकहावस्वेदसाति
कनेंसयोगलालसांअंगिआच्छस्वाधीनपतिकाव्याजोक्तिअलं
कार॥ कियाकोमसुरवैकहु॥ कहूकपरगटहोइ॥ नाहिंदुरावैछ
लवचनव्याजउक्तिहैसोइ॥ ४४॥ मूल: दोहा:॥ अपनेंकरगुहिआप
हठिहियपहराईलाल॥ नौलसिरीऔरेंचढी: मौलसरीकीमा

ल॥४५॥यह नायक नें आपनें हाथ बनाइ कै मोलसिरी की माला पहराई:
ता छिब पहरिया की सोभा अधिक भई: सो सषी सषी सौं कहति है: सषी॰
नायक सों कहति है॥सवैया:॥आपनें हाथ नवीन कै फूल बनाइ
गुही मंजुल लाइक छाई॥मालसमोलसरी की रसाल सगंध भ
री अतिही छबि छाई॥आलिन के गन मैं लसि कै हसि कै हसि प्या
री पिय पैं पहराई॥ओपन पल्लव होन कनीन पैं अनुरागनि काई
टीका:॥सषी कौ वचन सषी प्रती: लाल कहियें नायक नि सनें
मोलसिरी की माला आपनें हाथ सौं गुहि कैं: आबु ही हठ करि कैं
नायका के हियें मैं पहिराई॥ता माला सौं नायका की नई सो॰
भा भई॥भेदि कातिसयोक्ति अलंकार॥उक्ति सषी की सषी सौं हूं न कै
कहि वे नें नाइका को गर्व हर्ष संचारी॥अंग्यात सत्र स्वाधीन पति
का लेद्या थायोक्ति अलंकार॥औरयहपददीजिये॥अधिकाई
कै हेत॥अतिसयोक्त भेद यह कहै॥कहत नायक विसिरनैन॥४५॥
मूल:दोहा:॥दीयौ जु चिबुक उठाय कैं कंपन कर भरतार॥टेढ़ी टेढ़ी
फिरति है: टेढ़े तिलक ललाट॥४६॥यह नाइका नें पती प्रेम सौं ठोढ़ी उ
ठाइ कै तिलक दियौं तिलक करें है: तिलक दियें सों नायका टेढ़ी भई:॥
सवैया:॥ठोढ़ी उठाइ करी चित चाइ सौं नंदलला अति ही अनुरागे:
भाल लगावन हो अंग रोकर कंपु भयो अति हेत सौं पागे:॥आ
नें नु आनें मनेन न तें न गनें कछु आपने प्रेम के आगे:॥टेढ़ी यै टेढ़ी
फिरै मृगलोचनी टेढ़े ई टीको लिलार पें लागे:॥टीका:॥सषी कौ
वचन सषी प्रती: भरतार कहियें नायक: ताने कंपजुत कर जे हाथ
ता सौं ठोड़ी उठाइ कै जो तिलक करौ है॥ता टेढ़े तिलक सौं नाय॰

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विल॰
५५

59

कादैहौपिकरतिहै॥ इसकैहूनावतिसोंअतिअभिमानद्यनितोन्नुहै॥
अलंकार॥ सषीकीउक्ति सषीसोंनाइकाकेकंपसात्विकनाइकाप्रे
मगर्विनास्वाधीनपतिका॥ विभावनाअलंकार॥ कारननाहि पैका
रिजहोइ कैकारजकारनकोंउपजावैं॥ कारजहोइअकारननैं॥ कि॰
अहूरनकारजकाजवनावै॥ कैप्रतिबंधकहोनहूंकारजहोतयहु
रससोंनुवह्यावे॥ देनुतेंकाजविहद्दविलोकितुथेसहै॥ भांतिविभा
वनागावै॥ ५६॥ मूलःदोहाः॥ लालसलोनेंअरुरहैंअतिसनेहसोंपा
गि॥ ननककचाईदेतिहूषःहूरनलोंमहलाग॥ ५७॥ यहनाइकाप्रो
ढाहैनायककेसनेहकरनेंमेंकछुकपटजानिउराहनेंमेंप्रगटकरति
है॥ नाइकाकोवचननायकसोंः॥ सवैयाः॥ नेकचितैचितचोरहैउ
रजेभनहैअनुरागसचाई॥ रावरेप्रेमप्रबंधनकीजितहीतितहौ
सुनियेंचरचाई॥ रूपसलोनेंसनेहपगेहरिप्रीतकेरंगमेंबुधिर
चाई॥ हूरनलोंमुहलागीनऊ दुषदेतीललायहनेहकचाई॥ टी
काः॥ सषीकोवचनअथवानायकाकोवचनसषीप्रतीः॥ लाल
कहैंनायकसोसलोंनेंकैहैंसुंदरहैः॥ अतिसनेहकहियेप्रीति
तासोंपगेपाहैः॥ जेसेंहूरनजोजिमीकंदसोसलोनोंकैहैंलवण
संजुक्तः॥ अरुवहुनचोउमेंपाकेहैः॥ पैनकचारीकचाईमुहमें
लगीदुषदेतीहैः॥ श्लेषउपमाअलंकार॥ उक्तिनाइकाकीविछ्योक
हावहैप्रेमकेगर्विनेंकपटअनादरकरतिहैं॥ श्लेषउपमाकोंलक
र॥ एकशब्दकेअर्थजह॥ भासतआइअनेक॥ सहश्लेषसोंकह
तहैं॥ जिनकीबुद्धिअनेक॥ १॥ उपमाअरुउपमामेय॥ साधारन॰
वाचकहोइ॥ एवारगोपइयेंजिहा॥ पूरनउपमाहोइ॥ ५८॥ अथ

अभिसारिकावर्नन ॥ मूल: दोहा: ॥ गोप अथाइनि तैं उठैं गोरज छाई गो-
ल: ॥ चलि बलि अलि अभिसारिका भली सकोची सैल ॥ ४८ ॥ यह्ला-
इका संध्या अभिसारिका सषी सों कहै ॥ सवैया: ॥ छोड़ि अथाइनु गोप
लई को उठी सग गोपनु की अवली है ॥ छीन भई सुष है न विकी छ-
वि गोरज एरिन गैल गली है ॥ चंदकला प्रगटी री अजौं चलि बेगि न
करै मिलि रंग रली है ॥ मानि सुहागिलि मेरो कह्यो अभिसार की सै-
ल सकोच भली है ॥ टीका: ॥ सषी को वचन नायका प्रती ॥ गोप कहिये
अहीर ते अथाइ कहै चौतरा उठी गए ॥ गोरज कहिये गायन के पायन की
धरि: सो गैल कहिये मारग तामें छाई है ॥ चली अली संबोधन है
संध्या समै की सैल भली होत है ॥ काव्यलिंग अलंकार ॥ दूती की उक्ति
नाइका दिवाभिसारिका परकीया प्रति ॥ काव्यलिंग अलंकार अर्थ-
समर्थन कीजिये ॥ जहां जुक्त सो मित्र ॥ काव्यलिंग मथनत हैं भाष-
त बुधि विचित्र ॥ ४८ ॥ मूल: दोहा: ॥ सघन कुंज सघन घन तिमिर ॥ अधि-
क अंधेरी राति ॥ तऊ न दुरिहै स्याम वह दीपसिषा सी ज्ञाति ॥ ४९ ॥
यह नाइका अभिसारिका है सषी नाइक सों कहै ॥ सवैया: ॥ कारे भये न
व भारी बड़ो उनयो जु चहूं दिस तें अंधियारो ॥ ता महि मेघ बड़ो गरजै
बरजै न रहै यदई को सबारो ॥ तैसो ई कुंज सघै बीच अनि रात कुल कहै ल-
षि ये न उज्यारो ॥ ता महि जात चली सजनी सग भाम नि वैं धों मसाल
निहारो ॥ टीका: ॥ सषी को वचन नायक प्रती: ॥ स्याम संबोधन है:
सघन जो कुंज तामें घन कहिये मेघ: ॥ ताको घन कहै अधेरो तिमि-
र तातें अधिक बड़ी अंधेरी राति है: ॥ तामें दीपसिषा जो मसाल: ॥
तैसी नाइका जद्यपि जाती है: तऊ छिपती न छिहै ॥ विसेषोक्ति उप-
समन्वय उनरा अलंकार ॥ दूती की उक्ति नाइका प्रति नाइक वें अभि-

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बिहा० ६

लाषसंचारीनाइकाअभिसारीकाश्रीगारस्सोग्रंथकेमनकस्थि-
तिकौंतिनाअसाध्यापरकीयाहै॥ असामर्थहूषणविशेषो-
क्तिउपमासमुच्चयउत्प्रेक्षालंकारकोसंकरसंसृष्टिहै॥४९॥मू
लःदोहा॥ निसिअंधियारीनीलपटु॥ पहिरिचलीपियगेह॥ क
हौदुराईक्योंदुरै॥ दीपसिखासीदेह॥५०॥

सवैया॥ कारीनिसाकीअंधारीमहाअरुनैसीयेस्यामछटाकु-
किआई॥ प्यारीअवैतेंबिहारीपैजातिसुजीननमैंचकसारीसु-
हाई॥ देखूचटमैंमुषचंदुदुराइकैहैकविहूलकरीचतुराई॥ देह
कीदीपतिदीपसिषासीकहौयहकैसेंदुरैगीदुराई॥टीका॥स
षीकोवचनसषीप्रतीःकैनायकाप्रतीः॥ अंधेरीरातिमेंनायका
नीलाकपराषहिरिकैः॥ पियजेनायकताकेपासचली॥ मसा
लकीसीदेहदुइवेंमेंछिपतिहैःतुमयावातकौंकहो॥विशेषो-
क्तिअलंकार॥उक्तिसषीकीसमषीमेंनाइकापरकीयाअभिसारी
काविशेषोक्ति०॥५०॥मूलः॥दोहा॥ छिप्योछिपाकरछितिछुयो
तमससिहरनसम्हारि॥ हंसतिहंसतिचलिससिमुषीमुषतेंअं-
चरुटारि॥५१॥यहनाइकासुकलाअभिसारिकाःसषीकीसीख्याअंग-
दीपतिकोअधिकहैःयाहमेंचंद्रमाअस्तभयोतवदेषिसकुचीतवसषी
समाधनकरतिहैः॥सवैया॥नेरेंकहैंसजिकैअसिंगारुबलीअलि
हेलंगाहिकैमतिमंदहि॥ आपयोंसोमअलीअधवीचहीदेषिछुप
छितियेनमहूंदहि॥ हेचुरकोपटुटारिकेप्यारीउद्यारिदेतूंअपनो
मुषचंदहि॥ सोचसनैमतिजोऊहसीकरियोंचलिकेमिलिरी
नेरनंदहि॥टीका॥सषीकोवचननायकाप्रतीः॥छुपाकरक-

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रहियें चंद्रमा: सो छिप्यो कहियें अस्त भयो ॥ तम कहियें अंधकार।
सो छिति जो पृथ्वी तामें छयो है: ॥ अथवा छिति में छिप्यो जो चंद्र
मा सो छयो: ॥ इसको यह मतलब है: ॥ की चंद्रमा उदय भयो: ॥
तानैं ससिहरन कहियें दूरमति अथवा राह: ताको तू मल्लारि:।
सखि सखी संबोधन है: ॥ सुख को कपरा दूरि करि कैं हमतैं हस
ति चलियें: ॥ इसको यह मतलब है ॥ को अंधकार तैं न डरियें ॥ अ
थवा चांदनी में तू मिली जायगी ॥ वाचकलुप्तोउपमा अलंकार ॥ ।
परकीया अभिसारिका प्रति ॥ दूती को उक्ति सो दामति भाव धति
करि वाचकलुप्तोपमालंकार ॥ ५१ ॥ मूल दोहा: ॥ अरी षरी सटप
टपरी बिधु सुन्यो अंधे मग हेरि ॥ संग लगै मधुपनि लई ॥ भागनि गली
अंधेरि ॥ ५२ ॥ यह नाइका कृष्णाभिसारिका: अपनी रानि: कों बानस
षीसों कहति है: राहमें चंद्रमा उदै भयो: सु देषि सकुची भौरन गली।
बाइलीनी: यापद तें रूपगर्विता होइ: ॥ सवैया: ॥ स्याम निसलू षि तै
सोई साजु सिंगार कै हौं पति पास चली री ॥ त्यौं अथयौ लउदोत
भयौ सषि देषत मो मनि सोच रली री ॥ पंकज ज्यौं डसि सुगंध केला
भचली संग भौरन को अवली री ॥ नाहि समेम मम भागन तें आइ कै
षाइ लई उन कुंज गली री ॥ टीका: ॥ नायका को वन सषी प्रती: ॥ अ
धो मारग विषै चंद्रमा कों देषि कै: अरी सषी को संबोधन है: ॥ मो
कौं षरी सटपटपरी बडो भय भयो: ॥ पै संग लागे जो मधुप कहियें
भौरा तिन तीन भागपसें अंधेरी गली करी: ॥ इसको यह मतल।
व है: की मैं भौरनि के अंधेरे मों चलि गई ॥ प्रहर्षनाअलंकार ॥ पर
किया अभिसारिका की उक्ति सषी प्रति प्रहर्षणालंकार ॥ विना
जतन वंछित फल होइ ॥ पहिला भेद कहत सब कोइ ॥ इछित तें

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

61

नैंअनिफललहै॥ दूजोभेदसुमनियहकहै॥ जाकोजतनहूंहिय
न्हहोइ॥ वस्तुहायहावैसुनिसोइ॥ त्रिविधिसूक्ष्मएजानोमित्र॥
लखनलषिअवधारोचित्र॥ ५२॥ मूलःदोहाः॥ जुवतिजोंहमैंमि
लिगई॥ नैंकुनहोतिलिषाइ॥ सौंधेकेडोरेलगीअलीचलीसं
गजाइ॥ ५३॥ यहनायकाशुक्लाअभिसारिकासषीकोवचनसषीसों
कवित्तः॥ तनकोगुराईतकनाईकीनिकाईछाईजाकीउजराईलेउ
ज्यारीउपमानिहै॥ सरदनिसामेंप्यारीसुकलसिंगारसाजेंजग
मगजोतिनीकीसोभासरसातिहै॥ चलीअनुरागीमनभामं
नसोंमिलवेकोंचांदनीमेंमिलिगईबचौंहूनलषातिहै॥ ल
पटसुगंधकीअछेहउपटनिअंगनाहीकीनरेगलागेसषीसं
गजातिहै॥ टीकाः॥ सषीकोवचनसषीसों॥ जुवतिजोनायका
सोचांदनीमेंमिलिगई: सोमोकोंनहीदिषाईदेतिहै:॥ सौंधेक
ह्यिसुगंधःताकेडोरेसोंअलीकहियेसषीसोसंगजातिहै॥ उन
मिलिताअलंकार॥ ५३॥ मूलःदोहाः॥ उठिठकठकपतोकहाःपा
वसकेअभिसार॥ जानिपरेगीदेषिये:दावनिघनअंधियार॥
॥५४॥ सषीकीउक्तिसषीप्रतिनाइकापरकीयाअब्ज्ञाभिसा
रिकाउत्तमकाव्य॥ उन्मीलितमुद्रालंकारकीसंसृष्टि॥ उन्मी
लितसोजानजहं॥ सदृसावस्तुमिलिजाइ॥ पैकाहूइकभाउ
सौंभासैभेदबनाइ॥ मुद्राप्रस्तुतपदविषेऔरअरथप्रकास॥
जानिलीजीयोजानिमन॥ जिनकेवुद्धिविलास॥ ५२॥ मूलःदो
हाः॥ उठिठकठकपतोकहाःपावसकेअभिसार॥ जानिपरेगीः
देषियेःदावनिघनअंधियार॥ ५४॥ यहनाइकापरकियाअभिसा
रिकासषीनायकासोंकहतिहैः अभिसारकौसतहजहीसमयहैः॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सवैया:॥ कौंननि नील निचोल सजै सषी कौंन मृगमद को लेप करैंगी॥ पावस कौ अभिसार कौ पैनो विचारु कहा उर सों कपरैंगी॥ कुंजन के भौंन निसंक है कौंन चलै री महू हरि कंठ भरैंगी स्याम घटा की अंधेरी मैं तेरी छटा सौं न हौं तिय जानि परैंगी॥
टीका:॥ सषी को वचन नायका प्रती: तूं उठि चल पावस कहिये वरषा रितु॥ ताके अभिसार को इतनी ढील कहा करति है॥ यतन करिये मैं चतता के चनै अंधेरे मैं जानी जायगी॥ इस को यह मतलब है: कौ तो कों जान को इ ना जानैंगी॥ ५४॥ मिलिता अलंकार॥ ५४॥ [illegible]

इति अभिसारिका: अथ उत्कंठिता: लछन: दोहा:॥ न भलाली चाली निसा॥ चटकाली धुनि कीन॥ रति पाली आली न अपन वरमालीन॥ ५५॥ यह नाइका उत्कंठिता परकिया नायका को वचन सषी सैं॥ कवित्त:॥ आज मनमोहन कों मग निरषत मेरे पलकन लागै प्रीति उरनें न हाली है॥ भई न भलाली देषि को कौंवरीन षलाली सुनि यत धुनि चिटकाली निसा चाली है॥ काक रवनी कोलसै मद गज चाली ता सौं जानियत री फि वनमाली रितपाली है॥ कहा कहौं आली इन मदन पतिचाली सेज भई जैसी व्याली विकराली महाकाली है॥ टीका:॥ नायका।

कोवचनसखीप्रती॥ नभलालीकहैआकासलालभयो॥ और
निसाजोरातिसोचली॥ औरचटकालीजोचिरयनकीपंक्ति ता
तेंधुनिकहैं नवटकरोहै॥ अलीसखीकोसंबोधनहै॥ नायक
तेंअनतकेहैंऔरठौररतिकरी॥ वनमालीकहियेश्रीकृष्ण
सोनहीआयो॥ इसअर्थमेंउक्तानायकाहोतीहै॥ अथवाये
सेप्रातसमेंमेंऔरठौररतिकरिकैवनमेंवसिकैनायकआयो
इसअर्थमेंषंडिताहोतीहैछेकानुप्रास॥इतीउक्ता॥उत्कंठि
तानाइकाकीउक्तिसखीसोंकोमलाहृत्तिछेकाहृत्तिकीसंसृष्टि
जहांवृत्यानुप्रासमेंमाधुर्यप्रकास॥ तहांकोमलाहृत्तिहैवरनत
वुधिविलास॥ जहांवहीपददैपरै॥ अछरसमतानाआइ॥ तहांछेका
नुप्रासहै॥ कहतसुकविसमुदाइ॥ वीचनपैयेपदजिहां॥ अछर
समताहां॥ सोवृत्यानुप्रासहै॥ कहतसयानेलोइ॥५५॥अथकल
हांतरितावर्ननं॥मूलःदोहाः॥ अपनीगरजनुवोलियत॥ कहानि
होरेतोइ॥ तेप्यारोमोजीयकोमोजीउप्यारोमोहि॥५६॥यहनाय
काप्रोढाहै सनायकसौंअपनैंजीउकीविवस्थाकहतिहै॥ कितेरेविनामे
रोजीउतरसतमांहीयातेंअपनोंजीउराषिवेकोंतोसोंवोलतिहै॥
नायकाकोवचननायकसों॥कवित॥ आपनेंआपनेंप्रानसवकों
कोप्यारेहोनजानिराषिवेकोंसवकहोवहियतुहै॥ येसीकहवा
तीपुरीमेंरप्रानलकोंताहिदेषोंजोलोंमोसोंचेंनलहियतुहै॥
करनिउपाउहोंतोतिनहूकेराषिवेकोंकूलप्रांनप्यारेकिनप्या
रेकहितुहै॥ तातेंलालवोलियतुआपनेंगरजनुताकोकछुन
मसोंनिहोरोकरियतुहै॥टीकाः॥ नायकाकोवचननायकप्र
ती॥ मेंतुमसोंअपनीगरजकहियेप्रियोजननाकरिकैवोल

निहो ॥ इसकौ कहा निहोरो है ॥ तू मेरे जियकौ प्यारो लागतु है ः
सो मेरो जियमोकौं प्यारो है ॥ इसकौ यह मतलब है ः कौ तुम्हारे ।
बिनु देखे मेरो जियन हो रहतु है ॥ काव्यलिंगालंकार ॥ उक्ति क
लहांतरिता नाइकाकी नाइक प्रति ईर्षा भाव प्रानि औन्ह बेबोरइय
काव्यलिंग लाटानुप्रासकौ संसृष्टि ॥ अर्थसमर्थनकौ जीयै ॥ ज
हां युक्त सो मित्र काव्यलिंग भूनन हभाषत बुधि विचित्र ॥ वही अ
रथपद फिर परै भिन्न भाव कछु होय सो लाटानुप्रास है ॥ कहत
सयाने लोइ ॥ ५६ ॥ मूलः दोहाः ॥ भए बटाऊ नेह तजि बादि बकति बि
वेकाज ॥ अब अलि देन उराहनोः उर उपजित उर लाज ॥ ५७ ॥ यह
नाइका प्रोढा परकिया उराहनों नायककी बिद्यमानताका सखीसों क
हति है ः ॥ सवैयाः ॥ नैननसों मनमों बहनै इमि लैलहनै सखसों अ
बसाजनि ॥ भूलि गई सब बैबनिया फिन पुननकी बड़भागि वि
राजनि ॥ पत जि नेह बटाऊ भए अब बादि बके सजनी बिनु काननि
देनि उराहनो यामनकों अपने उरही चुपिये अति लाजनि ॥ टीकाः ॥
नायकाको बचन सखी प्रती ॥ नायकने नेह जो प्रीति ताको छोडिकै
बटाऊ क्रकिये राहगीर भएः तू बादिक है हथा वेकाज बकै है बिना
मतलब बकति है ॥ अली संबोधन हैः सो अब नायककौ उराह
नौ देनः उर बिषैं अति लाज उतपन्न होती है ॥ काव्यलिंग आक्षेपाऽ
लंकारः ॥ इती कल्लनरताः ॥ कलहांतरिता नाइकाकी उक्ति सखीसों
बिषाद संचारी काव्यलिंग आक्षेपको संकर ॥ अर्थ समर्थनकी ।
जीये जिहां युक्त सो मित्र प ॥ इरै निषेध जु बिधि बचन ॥ और निषे ।
धाभास ॥ पहिलैं कहिबें आप कछु ॥ बहुर फेरिये नाम ॥ २ ॥ विप्र
लब्धा वर्णनं ॥ मतिरामकौ दोहा ॥ ५७ ॥ अथ लसकक सज्ञाः ॥ मूलः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दोहा:॥निसिनियरानननिहारियत:सौतिबदनअरविंद:॥सषी
पकजहदेषिए:तेरोआननइंदु॥५८॥

टीका:॥सषीकोवचननायकाप्रती:निसिकहियेरातिनाकी
नियरातिकहियेनिकटआए॥सौतिकोमुषकमलदेषियतु
है॥इसकोयहमतलबहै॥कौरातिकोसौतिनकोमुषकम
लसोमुद्रितहोतुहै॥सषीनायकाकोधनहै॥तेरोमुषचंद्र
मादेषियतुहै॥रूपकाअलंकार॥वासकसज्जानाइकाप्रतिस
षीकीउक्तिरूपलंकार॥अथषंडितावचनेन॥सषषीडितानि
मैंडेषामलकविप्रलंभशृंगारहै॥५८॥मूल:दोहा:॥मनमोह
नकैमिलनकौंकरैमनोरथनारि॥धरैपांनकेसामुहैंदीया
मौनकैवारि॥५९॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

टीका:॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ नारीकहियेनायका:सोमन:
भावनकहियेनायक॥ ताकेमिलवेकोमनोरथकहियेइछ्या
करिकैजरकोदीपकुपोनकहैसाम्हेकैवारिकैधरतिहै॥ इसके
हैन्वावतिसोपरकियावासकसज्ञाजानियें॥ काव्यलिंगाअलं
कार॥ जिमिलछिनकीनीहै॥ सोकहतिहैकाहूप्रतिकाव्यलिंग
हेकाकोसहछीअनवछमतिराम॥ जिहंवीचिपरदेपरै॥ अछ
रसमनाआइ॥ तिहंवेकाकोसहिहै॥ कहतनवकविसमुदा
य॥५९॥ इतिवासकसज्ञा॥ अथविप्रलब्धा:॥ लछन:दोहा:॥ साह
सकरिकुंजनगई:लषोननंदकिसोर॥ दीपसिषासीथरहरी:ल
गेवियारझकोर॥६०॥

टीका:॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ नायकासाहसकहियेधीरज
ताकोकरिकैकुंजमैंगई॥ नहांनंदकिसोरजोश्रीकृस्नसोनहींदे
ष्यो॥ तातेंपोनकेझकोरकेलागेमसालजैसेंथरहरातिहै॥ तैसें
नायकाथरहरातीहै॥ उपमाअलंकार॥ सषीकोउक्तिसषीसोंना
इकापरिकीयाविप्रलब्धाहैसोउपमालंकार॥ उपमाअरुउपमेय
वाचकसज्यादोहामतिरामकौं॥६०॥ अथषंडिता:॥ लछन:दोहा:

कनसकुचननिधरक फिरौरनियों षोरि नहलैन॥ कहाकरौं जो जा
हियें लगेलगौंहैं नैन॥ यह नाइका प्रौढा धीरा खंडिता नाइकाको वच
न नायकसौं॥ कबित्तः॥ हंसप्रानप्यारे आजुप्रीतिके पधारेहौंनो
तमनसकुचारौं फुलसि बधाइये॥ नेकनिरषनलागे जाहि जोल
गौंहैं नैननाकों तुमकहाकरौं प्रीवननिवाइये॥ कैसें राषौंजा
तमोरिमनवांध्योप्रेमडोरितुमतननषोरिकहूं रंचकौननपाइये॥
काहेकोंसकुचकीजेचेतिचितैसुषदीजें अलीहै निसंकरसली
जेजहांपाइये॥ टीकाः॥ नायकाकोवचननायकप्रती॥ तुमकनक
हियेवपीसकुचनकहेंलाजवंतहोतहो॥ तुमनिधरककेहेंनिड
रह्वेकेफिरो॥ तुमेंकहियेतुमकोरतियाभरिषोरिकहेंदोषुसोन
हीहे॥ औरतुमकहाकरौंजोतुलावेलगौंहैंएनेत्रऔरनायका
निकेसाथचलेजातहैं॥ परजायोक्ति अलंकारः॥६१॥

मूलदोहाः॥ वैसीयैजानीपरतिझगाऊजरेमांह॥ मृगनैनीलप
टीजुहियबैनीउपटीबांह॥६२॥ यह नायका प्रौढा धीरा खंडिता धीरा ना
यकाकोवचननायकसौं नायकके विद्यमानसषीसौंकहेः॥क
बित्तः॥ काहेकोंकरतचतुराई केचबित्रलालसांचभरीसूरतिप्रगट
पेषियतिहै॥ मोहें जिनकरौमोसौंमोहैं करौनैननेकसौंहनिसी
सोभाअंगनलेषियतिहै॥ हंसप्रानप्यारेकुचकुंकमकीछापरहीछ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नी पैं उघरि यह अवरेषियतु है ॥ मृगनैंनी लपटतु उपटी षए पैं कहु
उघरि रही अवरेषे पेषियतु है ॥ टीका ॥ नायका को वचन सषी प्र
ती कैं नायक प्रती ॥ मृगनैंनी कहिये नायका अरु ताके लपटे
ते जो पैंनी वाहु मैं उपटि कैं है उघरी है ॥ सो पैंनी उज्जल जंघा मैं वे
सी ये जानी जाति है ॥ भाविकाअलंकारः ॥ अधीरा षंडिता की उक्ति
नायक प्रती उत्प्रेक्षालंकार ॥ जहा कौ जानि संभावना ० ॥

॥ ६२ ॥

मूलः दोहा ॥ वेई गडि गाडैं परीः उपट्यौ हारु हियैंन ॥ आन्यौं मोरि म
तंगमनु मारि गुरेरनु मैन ॥ ६३ ॥ यह नायक सव है शिमयान हार
के चिह्न सौ षंडिता नायका रिसु पावत है नायक को वचन नायका सौं औ
नाइका नायक सौं कहै तो षंडिता होइ ॥ कवित्त ॥ आज मन मोहन
मया कै मेरैं आए लाल सोन सिंगारु चाह मेरे मन मान्यौं है ॥ आल
स वलित हग कैं मत ललित गति सिथल कलित रूप मोहि न सो
मान्यौं है ॥ हास आन प्यारे रह्यौ उर पैं उपटि यह विन गुन हार आगे
जानु जान्यौं है ॥ वेई गडि गडि गाडैं परी जो मतंग मनु गुरेरनि सौं
मारि कै मोरि मैं न आन्यौं है ॥ टीका ॥ सषी को वचन नायक प्रती
तुम्हारे हिये मैं यह हार न होउ पर्यौ है जो मैंन कहिये कामदेव ता
नैं गुलेला मारि कै तुम्हारे जो मन ॥ सो ई भयो मतंग ताके हैं हाथी
सो इहा आन्यौं है ॥ सो वेई गाडैं परी है इसको यह मतलव है की जो
तुम्हारे कामनै गुलेला मारै हैं ताकी ए गाडैं हैं ॥ उत्प्रेक्षा अलंकार
अधीरा षंडिता की उक्ति नाइक प्रती ॥ उत्प्रेक्षा रूपक को संसृष्टि ॥ ज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हकौ ज्ञातिसैं भावनाय उपमान हु उपमेय मैं भेदु पर्यौ न धाइ ॥ तासौं रूप
कअलंकृत है ॥ सकल लक्षक विसमउदाय ॥ ६३ ॥ मूल दोहा ॥ सदन सद
न के फिरन की सद न छुटै हरि राइ ॥ रुचै तितै विहरत फिरौ कत
विहरत उरु आइ ॥ ६४ ॥ यह नायका प्रौढा उ राहनौं नायका को बचन
नायक प्रती ॥ सवैया ॥ डोलत लाल चुनैं घर हा कत प्रेम को आंकु
कहूं न उघार्यौ ॥ जानि परै अबतौ बकसौं उरहीक विहै हम ध्यान लि
हार्यौ ॥ बानि परी तुमकौं रु छुटै मन मानन डोलहु विमानि पथा हे
हार्यौ ॥ भावति सेज विहारि विहारि फियौं कित या उर आइ विहार्यौ ॥ टीका ॥
नायका को वचन नायक प्रती ॥ जहु राई श्रीकृष्ण को संबोधन है ॥ घ
र घर के फिरवे की तुमकौं सदा अभ्यास सो छूटत नहीं है ॥ तातें तुम
कौं ज्यौ ठौर रुचती है ॥ तहां तुम विहार करते फिरौ ॥ इहां तुम आइ
कैं वृथा विहार करते हौ ॥ उपमा अलंकार ॥ अधीरा खंडिता की उक्ति
नाइक प्रति ॥ लाटा उपमक आक्षेपालंकार की संसृष्टि वहै अर्थ
पद फिर परै ॥ भिन्न भाउ कछु होइ ॥ सो लाटानुप्रास है कहूं कहत
सयाने लोइ ॥ ६४ ॥ मूल दोहा ॥ नहि नचाइ चितवनि दृगनि ॥ नहि
बोलति मुसकाइ ॥ ज्यौं ज्यौं रुखी रुख करै ॥ त्यौं त्यौं चितु चिकनाइ ॥ ६५
यह नाइका की चेष्टा नाइक सखी सौं कहै की वह रुखाई मैं मेरे चितकौं चि
कनावति है ॥ कवित्त ॥ जो रतिन लोचनन चाइ नेकु ताइ भरे मुरु उमु
सिकानि कौं न भाउ दरसात है ॥ बोलनि न कहूं मन मोहन मधुर बैन
मोरनि न भृकुटी मरोरति न गात है ॥ कहै कवि कुलपवा की गरवीली
बानि कहूं सहज बसीकरकौं मंत्र ज्यौं ज्यौं जात है ॥ ज्यौं ज्यौं रूखी रहति
प्यारी धार हू परु षोक रि ज्यौं ज्यौं ही त्यौं त्यौं ता को मेरो चित चिकनात है ॥
टीका ॥ सखी को बचन कै नायक को बचन सखी प्रती ॥ कै नायका प्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नीः ॥ सा कहिये मित्रः तिनसौं न चाहु कहै मट काहु वे नाइका चितवति
है देषति नहीं है ॥ तथापि नायका जैसें जैसें हषोत्कर्ष करति है तैसें
तैसें चित्त विकृत नाव बहै ॥ इसकै है नावनि सौं नायक सठ जानियें ॥ वि
भावना अलंकारः ॥ नाइक की उक्ति सषी सौं विभावना लंकार तुम मति
अकारन तैं जहां ॥ कारिज परगट होइ ॥ चौथे भेद विभावना को जान
न सब कोइ ॥ ९५ ॥ मूलः दोहा ॥ पलन पीक अंजन अधरः धरे महाव
र भाल ॥ आजु मिले सु भली करीः भले बने हौ लाल ॥ ९६ ॥ यह नाय
का आहांच डिता नायका को वचनु नायक सौंः ॥ सवैयाः ॥ वाही के नैन
को काजर औठ पैनी को लस्यो जिनि पौछि कैं कोऊ ॥ वाही के पाइ को
जावकु लाल लिलार मांहां हु विदेनु है सोऊ ॥ ऐसो बनाइ सिंगारु ।
कस्यो जिहि है बहवाल विचक्षन सोऊ ॥ जानति लाल रती उनहौ
अषियां अधरानके रंग मैं दोऊ ॥ टीकाः ॥ नायका को वचन नायक प्रती
तुम्हारे पलकन मैं पीक लागी है ॥ और अधर जो ओठ ता मैं काजर ला
ग्यो हैः और तुम्हारो भाल कहिये लिलार ता मैं महावर जो लाष को
रंग सो धर्यो है ॥ सो तुम मो कौं आजु मिले सो भली करी ॥ लाल मैं बोध
तै है तुम भले बने हो ॥ अथवा भले बने हो हाथी बने हौः ॥ इसको यह
मतलब है की जैसें हाथी सिंगारियत हैः तैसें तुम भी सिंगार करि
आये हौ ॥ असंगति अलंकारः ॥ धीराधीरा नाइका की उक्ति नाइक सौं
बनें पद स्लिष्ट है असंगति अलंकार ॥ कारन औरे ठौर है ॥ कारिज ।
औरे ठौर और काज आरंभियें ॥ औरे कीजे दृम और ठौर हूं की जियै ॥ ।
औरे ठौर को काम ॥ ताहि असंगति कैं कहै भेद तृतक विमति धाम ॥ ९७
मूलः दोहाः ॥ गहकी गांस औरे गहैः रहै अधपुले वैन ॥ देषि षिसौंहैं
पिय नयनः किये रिसौंहैं नैन ॥ ९८ ॥ यह नायका षंडिता नायक सौं रसति ।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कोचिक हुवाइके याकें अथोयह वानक वनला वीनवचनमेंनाइकाकेनेत्रल
गौंरहेंदेषिवाजायनजानी॥ सवैया॥ आवनप्रानतिहीनविलोकिहु॰
धामसनेहवोमीठिसोंहेरे॥ धाइकेआगेंहैंआइलियोहियमेंउपजे॰
लाषपुंजचनेरे॥ आधेसेबैंनकहेंसुबगामसगाहेडरकोपकरेरे॥ ला
लकेनेंनबिसालबिलोकिरिसाइकेराधेनहींद्रिगफेरे॥ टीका॥ स
षीकोवचनसषीप्रती॥ नाइकानेंगासकहियेगुस्सा॥ ताकोंगह
कीवहैंपकरिकेओरेंवचनगहेकहियेकहेहें॥ पहिलेवचनसुषि
ककहेरहो॥ नायककेनेत्रनिकोंबिसालतैंदेषिकेअपनेनेत्रक्रोध
वंतकिए॥ इसकोयहमतलवहै॥ कीनायकाप्रथमभलेवचनक
हे॥ सोनायककोंषंडितजानिकेरोसकरिदेषो॥ विषमाअलंकार॥
सषीकोउक्तिसषीसोंनाइकाअधीराषंडितानाईकोदयविषमालंकार॥
आनंदकेकारनतेंजहकारजआनंदगहैजाइ॥ उद्यमकीजेभलो॰
जानिकै॥ तातैहोइबुरोफलआइ॥ अनमिलतेकोसंगकोसंगहो
होइ॥ तिहंजानिलीजीयोचिन्नचंचलाइ॥ अलंकारयहविषमती
नविधिमैंसवकोंदेतोसमझाइ॥ ६७॥ मूलः दोहा॥ नेहतरेरोत्योरक
रिःकनककपितनदृगलोल॥ लीकनहीयहपीककीः स्रुतिमनिफल
ककपोल॥ ६८॥ यहनायकअपराधजानिनाइकानेत्रचंचलकरतिहै
सनायककीसषीनाइकाकोचितवकोभ्रमनिवारनकरतिहैः सषीकोव
चननायकासोंः सोनायकासषीसोंकहेतोभूनसुरतनगुप्तापरकियाहो
इः॥ कवित्त॥ आजुलषियतकहुऔरैंभातितेरीगतिआननपैउमगि॰
ललाईउमगतिहै॥ भ्रकुटीकुटिलअतितेरुसैंानतेनेंनीभईनैननुमें॰
रिसकीतरंगझलकतिहै॥ कहैकविकुलपयहधोयोहियहातोकु
रिपीकलीकजानितंजुबोलतवकतिहै॥ ललितकपोलपरनीके

कै बिलोकि स्रुति भूषन की मनि निज झलक झलकनि है ।।टीका:।। ना
यक को बचन नायका प्रती ।। तेरे कहिये गुस्सा ताम्हें तेरे रोक कहिये है
हो न्यारो ह्वकरि कै है नेत्रनि कौं चंचल क्यों करति है ।। मेरे कपोल मैं पी
क की लीक न होलगी है ।। इस कौं यह मन लख्यौ है ।। कौ कांनन के मनि
नि की झलक देषि कै पीक लगी जानी सो गुस्सा मनि कै रो ।।रसवदा
श्रांतापह्नुति अलंकार:।। उक्ति सखी नाइका प्रति नाइका अधीरा षंडिता
सी भासति है पे प्रकाशन बिरुद्ध दूषन तैं निषिद्धा लक्षना करि हास्य कौ
बिभाव है या तैं हास्य रस कहिये श्रृंगार ।। अंग है ता तैं रसवदालंकार कौ
अरु भ्रांतापह्नुति अलंकार पर्यु तिं षंडिता मैं वाच्य अर्थ करि प्रकास एव सनेलि
षायो ।।६८।। अथ लक्षण दोहा:।। बालक हो लाली भई: लो इन कोइ न माहु ।।
लाल निहारे द्रिगन कौ: परी द्रिगन मैं छाहु ।।६९।। यह प्रति उक्त अनाकु
सठ नाइका षंडिता है:।।सवैया।। चाहनि काई लषै जिन की रद लागनि
आपर नो पल कौ है ।। बंदन को ह्वै बिमैं दकरी निदरी हु नि बिद्रुम के दल
कौ है ।। आंन पियारी कहा इन नैंन न आजु लिलाई इती ललकौ है ।। लो
चन लाल तुम्हारे लषे निह को इन आनि प्रभा झलकौ है ।।टीका:।। ना
यका को बचन नायक प्रती ।। बाल संबोधन है: तुम्हारे नेत्रनि के कौ घ
न मैं लाली कहां तें भई है ।। तुम्हारे नेत्रन की मेरे नेत्रनि मैं छांह परी है:
इस कौ यह मन लख्यौ है: कौ तुम षंडिता भए हो: ता तैं मेरे नेत्र लाल भए
है ।।उत्तराअलंकार:।। दूपनि को उत्तर प्रति उत्तर धीरा षंडिता ।। उत्तरालंका
र ।। उत्तर प्रति उत्तर जो होइ ।। प्रश्नोत्तर है जो है सोइ ।।६९।।अथ लक्षण दोहा:।।
बिधुबदनी मो सों कहत: तुम यह सांची बात ।। नैंनन लिन पियरा वरे:
न्याय निरष नैं जात ।।७०।।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

[illegible]

टीका:॥ नायकाकोवचननायकप्रती॥ तुममेमोसौंचंद्रवदनीकहतेहौ:
सोसांचीबातुहै: पियसंबोधनहै॥ रावरेकहैंतुम्हारेनयनः सोईभ
एनलिनकहैंकमलतेदेषिकैन्यायपूर्वककहतेजानेजातहैं॥ इस
कोयहमतलबहै: कीचंद्रमाकोदेषिकमलमुद्रितहोतहै: इसक
हनावतिसोंधीरायेडिताजानियें॥ उपमांरूपककाव्यलिंगअपह्नु
निश्चयालंकार॥ धीराषेडिताकीउक्तिनाइकप्रतिदोहाछेएक॥ उपमा
रूपककाव्यलिंगकोसंसृष्टिहै॥ उपमाअरुउपमेयसाधारनवाचक
होइ ०॥ उपमाअरुउपमेयमैभेदघरेनलषाइ॥ अर्थसमर्थनकी
जियै॥ जहांयुक्तसोमित्र॥ काव्यलिंगभूषनतहां॥ भाषतबुधि
विचित्र॥ ८॥ मूल: दोहा:॥ नजनअवाननतहठपरौ: सठमतिआठौजा
म॥ भयोवामवावामको: रह्योकामबेकाम॥ ८२॥ इहनायकाप्रोषि
तपतिकाविरहनिवेदनसषीकोवचननायकसौं सषीसषीसोंकहैं:॥
कवित्त:॥ लालमनभावननिहारेबिछुरेतेबालिविरहआगनिमैंवर
तिनेहुनांधिहै॥ वाहीकामकामवामदेवकेभरमभूलिदेतीवा
हीवाममैंविषमवेहु बांधिहै॥ सठमतिहठभरीदयाउरपूरहरी
आठौजामरहतुसरोसमरसाधिहै॥ कीजैधाकहाउपाउछोडत
नुआटपाउउनकेनिवेकौदाउलारेयाइहि धाधिहै॥ टीका:॥ सषी
कोवचनसषीप्रती॥ हठजाकीमतिकहियेबुधिहै॥ ऐसोजोनाय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कमोग्राठौनकहियेषुराई ताकोनजननहीहैः हठपरीहै ॥ या।
हीनेकामदेभुवावामकहियेनायकाः ताकोवामकहियेउल।
टोभयोहै ॥ यातेवैकोमहृषाभयो ॥ जमकाअलंकार ॥ २१ ॥

मूलः दोहा ॥ नहनकोकनदवरनवरः भएअहननिसिजागिः ॥ ।
वाहीकेअनुरागहृगः रहेमनोअनुरागिः ॥ २२ ॥ यहनायका ...
खंडितानाइकाकोवचनानायकसों ॥ कवित्त ॥ हालप्रानप्यारेप्रात।
प्रीतिकोपधारेआजुदेषेमैंनमूरतिविरहगयोभागिकै ॥ मरग।
नेवागेरसपागेलटपटीपागेआरसमगनअंगरहेअंकलागिकै
मेरेप्रानप्रानपतिवाहीप्रानप्यारीकेपरमअनुरागमेंरहेहैंअनुरा
गिकै ॥ गावेरलसतअतिलोचनललितभएकोकनदवरनअह
ननिसिजागिकै ॥ टीका ॥ नायकाकोवचननायकाप्रती ॥ वरकहि
येश्रेष्ठजेनैनतेरानिकोजागिबैः ॥ नहनकहियेहलेजोकोकन
दकहियेकमल ॥ ताकेवरनकेहैं रंगभएहैं ॥ सोमानोंतुम्हारेने
त्रवानायकाकेअनुरागसोंरंगिरहेहैं ॥ उत्प्रेक्षाअलंकारः ॥ अधी
रापंडिताकीउक्तिनाइकप्रति ॥ उत्प्रेक्षालंकार ॥ जहकीजतिसंभा
वना ॥ २२ ॥ मूलः दोहा ॥ केसरिकेसरिकुसमकेः रहेअंगलपटाइ
लगेजांनितनषअनषुलीः कतबोलतिअनषाइ ॥ २३ ॥ यहनाय
कापरकियाभूलकरतनिगुपतानायकाकोवचनसषीसोंः सोनायक

के प्रश्न सषी नायका सौं कहै : तोषेडिता होइ संभवे :॥ सवैया :॥ तोहितो
वोनि परी अन षेवे कौ ये सें हि वै तौ सुनराह हू डिठाने ॥ वो त्रिये नेति
रधारक हूं कि धौं भौंह चढाइ कै बोलन षांनें ॥ केसरि सौं उरकैग्रा
ननसो कहूं के सरिकै कर है लपटाने ॥ आउरी नो हि हिषाउं न जो
बहै बांउरी जै सैंन पछुत जाने ॥ टीका :॥ नायक को वचन नाय
कापती ॥ केसरि के फूल के केसर कहिये किंजलक तें मेरे अंग
में लपटि रहे हैं ॥ अन षुली कहिये मुसीली नायका : सो संबोधन
जानिये ॥ तू मिन कौ जलकन कौं न षलागे जानि कै यों अन षाइ कै
बोलति है ॥ अपन्हुति अलंकार ॥ उत्तमा सषी कौ उक्ति नाइका प्रति
अवहि याक रि चिह्न नाइक के छिपावति है अपन्हुति अलंकार ॥
दुरै निषेध जु विधि वचन ॥ और निषेधाभास ॥ पहिलें कहिये आ
पन्हुति ॥ वक्र पके रिये नाम ॥ २३ ॥ मूलः दोहा :॥ लालन लहि पाए
दुरै चोरी सौं हु करै न ॥ सीस चढे पहिया प्रगट : कहैं पुकारें नैन
२४ ॥ यहु नायका मोटा षंडिता नाइका को वचन नायक सौं :॥ सवैया :
आए जु नीट जस्नान तऊ कछु भेद न जान्यौ हिये कि मैं भोरी ॥ वा कु
चकुंकम के लगे चिह्न मिला हियो मनके जिहगोरी ॥ लालन
हो अवलो समभवान दुरै नहि सौं हु करौ किन कोरी ॥ सीस चढे प
ह्रियो दोऊ नैन पुकारि कहे रति रंग की चोरी ॥ टीका :॥ नायका
को वचन नाइक प्रती : लाल संबोधन है ॥ तुम चोरी छिपे करन
पाए हो : तुम सौंह मति करौ ॥ पहिया कहिये चोरी के बताइ देन
वारे ॥ तेरे जो भए तुम्हारे नेत्र ते माथे चढे पुकारे कहत है ॥ तुम
को यह मत लवहै ॥ कौन नत्र निते तुम षंडित जाने ॥ काव्यलिंग
अलंकार :॥ अधीरा षंडिता की उक्ति नाइक सौं ॥ काव्यलिंग अल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कार॥ अर्थस्मर्थनकीजियेप॥ ७४॥ मूलःदोहाः॥ नूतनसुरतकैसैं
दुरतःसुरतनैंनजुरिनीठि॥ डोडीगुनराचेरेःकहतकनौडीडीठि॥
७५॥ यहनाइकाप्रौढाअधीराषंडितानायकाकोवचननायकसोंःप्र
षीकोवचननायकसौंः॥ कवित्तः॥ चिह्नअंगअंगनकेदुराएचतुराईकै
पैयासमयानवाननकुरिठहरानदै॥ प्रेमसुधापानकैफुलासनैं
सदितमनमेंनसुषसनैयैनवेननन्हुनरानदैं॥ नूतनसुरतकहा
कैसैंकैदुरतिलालनीठिजूरिसुरतनयनजलजानदैं॥ कहसप्रान
प्यारेयहडोडीहोकनोडीडीठिप्रगटकरनितानिरतिवारिवानकै
टीकाः॥ नायकाकोवचननायकप्रती॥ नूतनकैहैंमेथुनःकैसैंछि
नुहैः॥ तेरेनेत्रकष्टसौंजुरिकैसुरतनकहियेछिपतुहैं॥ नुहडोरी
कनौडीजोहष्टिसोढोलवजाएतुम्हारेगुननिकोंकहतीहैः॥ लो
कोक्तिअलंकारः॥ अधीराषंडिताकीउक्तिनाइकसौंलोकोक्तिअ
लंकार॥ ७५॥ मूलःदोहाः॥ मरकतभाजनसलिलगतिःइंदुक
लाकेवेष॥ झीनझगामेंझलमलेःस्यामगातनषरेष॥ ७६॥ य
हनाइकाअधीराषंडितानायकाकोवचननायकसौं॥ सवैयाः॥ आ
पहोमेरैंमयाकरिमोनहराजतिमूरतिरंगभरीहै॥ पंकजनैनीके
पानकीआजुहियेनषरेषभलीउचरीहै॥ झीनैंझगामेंविरा
जतियोंछविछाजतिमोमतिहेरिहरीहै॥ नीरमेंनीलमनीको
सिलानलइंदुकलामनोंनापैंधरीहै॥ टीकाः॥ नायकाकोवच
ननायकप्रतीःझीनझगाकैहैंमहीनजामामेंस्यामसरीरमैंनष
कीरेषाजोनषक्षत॥ तेजलगतजोमरकतभाजनकहियेनी
लमनिकोपात्रताविषैःचंद्रमाकीकलाकेरूपकलमलातुहै
॥ उपमाअलंकार॥ अधीराषंडिताकीउक्तिनाइकप्रतिउत्प्रेक्षा
लंकार॥ जहकीजतिसंभावना ०॥ ७६ ॥ मूलःदोहाः॥ वाहो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विल॰
६५

69

कीचितचटपटीः धरतअटपटेपांइ॥ लपटबुझावनविरहकीः क
पटभरेहोआइ॥७७॥ यहनायकाअधीराप्रोढानायकाकोवचनना
यकसौंः॥ कवित्तः॥ अननबसेकोरहैनाेगुनमनमानतिहेंसबरसबस
कियोचाहेबहुनाइकै॥ ताकेभागजागेजागेमेंसंननिसिजागेमेरेभो
रभयेंआएहितहियकोजनाइकै॥ जानियतवाहीकीलगीहैचित
तचटपटीअटपटेवचनपरतउगुलाइकै॥ लपटबुझावनकेहोविर
हहुतासनकीकपटभरेऊप्रानप्यारेइतआइकै॥ टीकाः॥ नायका
कोवचननायकप्रती॥ वाहीनायकाकीतुम्हारेचित्तमेंचटपटी
कैहैचाहनाहै॥ तासोंतुमअटपटेकहियेअसतविसलपाइकोबुझा
वनहैः॥ सोकपटकहियेछलः तासोंभरेतुमविरहकीलपटकों
बुझावैहो॥ विभावनाउत्प्रेक्षाअलंकारः॥ धीराधेउदिताकोउक्तिनाइ
काप्रतिविभावनालंकार॥ काहूकारनतेंजहां॥ कारिजपरगटहोइ
चौथोभेदविभावना॥ कोजानतसबकोइ॥ मूलःदोहाः॥ कनवेकाज
चलाइयतः चतुराईकीचाल॥ कहेदेतिपरावरेः सबगुननिरगुः
नमाल॥७८॥ यहनायकाप्रोढाधेउदितानायकाकोवचननायकसौं॥
सवैयाः॥ सौतिकेधामविरामकैआपुप्रभातइतैपगधारतहोजब॥
मैनअकोछविऐनदिखाइअनेदहियेंउपजावतहोतब॥ कैसौविनु
काजचलावतहो चतुराईकीचाललला हमसोंअब॥ मालवि
नागुनकीउरपैउपटीगुनरावरेहैतिकहैसब॥ टीकाः॥ नायका
कोवचननायकप्रती॥ कनककहियेवोः वेकाजकहियेविनामत
लवचतुराईकीवातैंकरतहो॥ निरगुनकहियेविनाडोराकोमा
लतुम्हारेसबगुनकहेदेतिहै॥ विरोधाभासअलंकारः॥ धीराधे
उदिताकोउक्तिनाइकाप्रतिसहजविरोधाभासअलंकार॥ जिहिंथल
सहजविरोधहै॥ अर्थमांझनविरोध॥ सहजविरोधाभासकहि॥ जो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कहियेप्रबोध॥ ७८ ॥मूलदोहा॥ पावकसौंनैननिलग्यौ: जावकल
ग्यौभाल॥ मुकुरहोहुगेनेकुमैं: मुकरबिलोकौलाल॥ ७९ ॥यहना
यकाप्रौढाअधीराषंडितानायकाकोवचननाइकसौं॥कवित्त॥ नीकेर
मनीकेवससैहैंकेरसकेलिकीनीवाहीकहुगंधअंगमहिकिरह्योर
साल॥ होतुकहामुकुरैपडरेंनतुरापचिह्नअंजनुअधरदियेंबिनगु
नहियेंमाल॥ पावकसौंलागतप्रगटममनैननुकौहूलसप्रानप्यारे
लग्योजावकुतिलकुभालु॥ कैसीआजुराजतिहैंसारससारसयह
आरसमआनआषिआरसीलैदेषोलाल॥टीका॥ नाइकाकीउक्तिना
इकप्रती॥ तुम्हारोभालकहियेलिलाटतामैंलग्योजोजावकक
हियेमहावर॥ सोमेरेनेत्रनिकोंआगिसोलागतुहै॥ सोतुममुक
रिजाउगे: तातेंमुकरकहियेसीसाताकोदेषिलेहु॥ इसकोयहमन
लबहै: कौसीसोदेषिकैसाचमाल्रुमहोइगो: लालसंबोधनहै॥
उपमाअसमकाअलंकार॥ अधीराषंडिताकीउक्तिनायकसों उत्प्रेक्षाल
कारजमककोसंसृष्टिकारननाहिंपैकारिजहोइकेकारिजकारन
कोउपजावै॥ कारिजहोइअकारननैंकिअपरनकारिजकाजवना
वै॥ ७९ ॥मूलदोहा॥ रह्योचकितचहूंघांचितै: चितमेरोमतिभूलि
सूरउदैआयेरह्यौ: दृगनिसांझसीफूलि॥ ८० ॥यहनाइकाप्रौढाअधीरा
षंडितानायकाकोवचनसषीसौं: अथवानायकासौं॥सवैया॥ देषति
गातरीमाहनमूरतिमांहिसबैसुधिभूलिरहीहै॥ आजुमहाछवि
ब्राजतिभोरतिकाइसबैअंगनकुलिरहीहै॥ चाहिरह्योचहूंघांच
किसोंचितुआचरजैमतिझूलिरहीहै॥ आपदैसूरउदोतभयो
विवनैननुसांझसीफूलिरहीहै॥टीका॥ नायकाकोवचननायक
प्रती:॥ मेरोमतिभूलिकहियेबुद्धिहीनजोचितु॥ सोचहूंघांक
हियेचारौंघानरफचितैकहियेदेषिकेचकितभयोहै॥ सूरउदैकहिये

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मानसमैं तुमआए हौ॥ पैनपारे नेत्रनिमें संध्या सी फूली है॥ इनकौ य
ह मतलब है॥ कौन प्यारे नेत्रनि मैं संध्या ज्ञानन है॥ कौन मग्न बहीउ
हां जाउगे॥ विभावना उत्प्रेक्षा अलंकार॥ धीरा षंडिता की उक्ति नाइक प्र
ती विभावनाउत्प्रेक्षा के संकर॥ कारन नाहिं पै कारज होइ के कारजका
रनकौं उपजावै॥ कारज होइ अकारननतैं कि अपरन कारज कारज बनावै
कै प्रतिबाधक होत हू कारज होय है रससौं तु वडावै॥ हेतुनि कारज
विनहू विलोकि बुधै सह्रै भांति विभावना गावै॥ ८०॥ मूलदोहा॥ अ
नवसै निसि कौ रिस तिः उरवर रही विसेषि॥ तऊ लाज आई फकति ष
रे लजी हौ है देषि॥ ८१॥ यह नायका प्रौढा धीरा है सषी को वचन सषी सौं॥
सवैया॥ रातिकहूं अनतै वितई मनमोहन केलिकलानु पसी है॥ तातैं
हियैं अति ही रिस छाइ रही अनषाइ चढाइ कै भौं है॥ भौंरहीं आवत देषि
जऊ कहि वे कौं भई फुकि वे न हू षौं है॥ आइ तऊ अति लाज हियैं निर
षै नवलाल षरेई लजौंहै॥ टीका॥ सषी को वचन सषी प्रती॥ कैं नाय
का को वचन सषी प्रती॥ नायक कौं और ठौर वसे इहसरिससौं उरविषैं
विसेषि कै चरि रही है॥ नायका कौ षरो लजौ हो कहि ये लप्यावे न देषि
कै तऊ फुकतक हियै क्रोधकरत है॥ लाज आई है॥ विभावना अलंका
र॥ निरसया उत्तमा षंडिता॥ सषी की उक्ति सषी प्रति विभावना अलं
कार॥ ८२॥ मूल दोहा॥ सुरंग महावर सौति पग निरषि रही अनषाइ॥
पिय अंगुरिन लाली लषैं षरी उठी लगि लाइ॥ ८२॥

सवैया॥ पेषि सुरंग महावर सौतिकें पाइनु वालि रही अनषानी॥ याही
विलोकि विकार रंगौ मोहन बातय है अपनें उरआनी॥ एतेमैं प्रीतम कौ
अंगुरीनु ललाई विलोकि षरी विलषानी॥ पावकज्वाल लगी उरमें सु
हुफांनि महा रिसमें अकुलानी॥ टीका॥ सषी को वचन सषी प्रती॥ सु

रंगकहियेलाल॥ महावरकहियेजावक॥ ताकौंसौतिनकेपगमेंलगौ
देषिकैः अनषाइकहियेक्रोधवंतह्वैरही॥ फेरिपियकीअंगुरिनमेंला
लीदेषिकैषरीवडुनलाइकहियेआगिसोलगिउठी॥ इसकौयहम
तलवहैकीनायकनेंअपनेंहाथलगियोजानिकेअनिजरी॥ [illegible]
यअलंकार॥ सषीकोउक्तिसषीसोंनाइकाअधीरषंडिता॥ लाइपदल
छनिकहै॥ समुच्चयअलंकार॥ होइसमुच्चइभाववहु॥ कहूंकउप
जतसंग॥ एककाजचाहैकरयोहैअनेकइकअंग॥ ८२॥ मूलःदोहाः
प्रानपियाहियमेंवसैः नषरेषससिभाल॥ भलोदिषायोआनिजहः
हरिहररूपरसाल॥ ८३॥ यहनाइकाप्रौढाषंडितानायकाकोवचन
नायकसोंः॥ सवैयाः॥ रतनप्रेमसोंप्रानपियारीवसाइहियेंहियेंगोकु
लसायो॥ भालनईनषरेषविराजतिसोईमयंककलैछविछायो॥
लोचनरागुरजोगुनराजतुचूंमतुनेंननमोंगुनछायो॥ प्रीनमप्रा
नहीआनिभलोहरकोहरिकोयहरूपदिषायो॥ टीका॥ नायकाको
वचननायकप्रती॥ प्रानपियाकहियेप्रानपियारीनायकासोतुह्मा
रेहियमेंवसतिहै॥ औरनषरेषाकहियेनषछतःसोईभयोचंद्रमा
सोभालकहियेमाथेमांहै॥ सोतुमहरिहरात्मकअपनोरूपमोकों
भलोदिषायो॥ इसकोयहमतलवहैः कीलछमीविस्नुकेहृदयमें
रहतीहै॥ औरचंद्रमामहादेवकेमाथेमांहैः सोरूपधारिकेतुमभ
लेआएहो॥ रूपकाअलंकार॥ अधीराषंडिताकीउक्तिनाइकसोंरूप
कालंकार॥ उपमानरुउपमेयमे॥ भेदपरैनलषाइ॥ तासोंरूपकक
हतहैसकलसुकविसमुदाय॥ ८३॥ मूलःदोहाः॥ ह्यांनचलैवलि
रावरेःचतुराईकीचाल॥ सनषहियेंषिनषिननटतःअनषवढावत
तलाल॥ ८४॥ यहनायकाप्रौढाअधीराषंडितानायकाकोवचननाय
कसोंः॥ सवैयाः॥ ह्यांनचलैकछुरावरेलालचलावतजेचतुराईकी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चालहिं॥ छातीनषछतपीहनमालधरैंअतिरंगमहावरभालहिं
बातइतैपरसोहगुपालहियैंडमगावतवैरिसजालहिं॥ आगव
डेउहिभालहियैंउपटीजिहवालकीभेटनमालहिं॥ टीका:॥ नाय
काकोवचननायकसौं॥ बलिनायककोसंबोधनहै॥ तुमारीचतु
राईकीचालिइहांमोसोंनहींचलतिहै॥ इसकोयहमतलबहै:॥
कीचातुरीकीवातेंमोसोंमतिकरौ॥ सनषकहियेनषछातनिदीस
हिनतुम्हारोहियोहै॥ तापैंतुमछिनछिनमैंनरतकहियेनखकरतहौ॥
सोतुमअनषकहियेरोषताकोंवढावतहौ:॥ लालसंबोधनहै॥
विरोधाभासअलंकार:॥ अधीराषंडिताकीउक्तिनाइकसोंप्राइविरोधा
भासअलंकार॥ जिहिंघलप्राइविरोधहै॥ अर्थमाहुनविरोध॥ स
हविरोधाभासकहि॥ जोहियेप्रतिबोध॥८४॥ मूलदोहा:॥ नकह
नउरुसबजगकहतु:कनवेकाजलजात॥ सोहेंकीजैंनैनए:तुमसों
हैंकतघात॥८५॥ यहनायकाप्रौढाधीराअधीराषंडितानायकाकोव
वचननायकसौं॥ सवैया:॥ मोहितोलागतुनीकेमहातुमआपप्रभा
तप्रभासरसोंहैं॥ जोकरियैतोहियेंडरियेविनुकीजियेकीजैंडरीडर
सोंहैं॥ वैयोबिनकाजसकोचभरीउरकाहेकोंकीजतनैनलजोंहैं
जोतुमसांचियेसोंहकरोहरितोइतवैंपौंनकरोमुषसोंहैं॥ टीका
नायकाकोवचननायकप्रती॥ मतिकहियेमतिडरियेयहबातसबु
जगकहतुहै॥ वेकाजकहियेव्यर्थतुमवयोंलाजवंतहोतुहो॥ तु
मसौगंधैंवयोंषावहौ:तुमअपनेंइननेत्रनिकोंमेरेसामुहेंकरौ॥
काव्यलिंगलोकोक्तिअलंकार॥ अधीराषंडिताकीउक्तिनायकाप्र
तिकाव्यलिंगलोकोक्तिकीसंसृष्टि॥८५॥ मूलदोहा:॥ कहतकहि
यतइपदेनकों:रचिरचिवचनअलीक॥ सबैकहावरहैलषै:
लालमहावरलीक॥८६॥ यहनायकाप्रौढाअधीराषंडितानायका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कोवचननायकसौं ॥ सवैया ॥ आजुमयाकरिमेरेंपधारेलसीछविरैंनि
विहूमविहारें ॥ वेसौंकहियेंजुघटेनकोवैनवनाइवनाइसनेहहिहारें ॥ चूं
मतलोचननीटभरेउचरेउरमैंनषचिह्ननिहारें ॥ औरकहाउरहैयासु
बुलालललिलारमहावरलीकनिहारें ॥ टीका ॥ नायकाकोवचनना
यकप्रती ॥ लालसंबोधनहै ॥ जुघटीवेकोंझूठेवचनरचिरचिकहिये
वनाइवनाइकैवैसोंकहतेहौवककहियेअवमहावरकोलीकदेषिइस
वातनैंऔरकहादेषनोरह्यौ ॥ छेकानुप्रासअलंकार ॥ अधीरापंडिता
कीउक्तिनायकसोंकाजहांवीचपरदेपदेअछरसमताआइ ॥ तहांछे
कानुप्रासहै ॥ कहतसुकविसमुदाय ॥ ८६ ॥ मूल ॥ दोहा ॥ नषरेषा
सोहैहियेंअलसौंहैसवगात ॥ सौंहैहोतननैनपै तुमसौंहैंकतषात ॥
८७ ॥ यहनायकाअधीरापंडितानायकाकोवचननायकसौं ॥ सवैया ॥ हा
रिजानिपरीहमहूंपैमयापगुधारईतेरनिकेलिकियें ॥ तुमनोसवकेसु
षदायककेहोवमहीकोंवनेंसुषपुंजदियें ॥ द्रिगसौंहैनहोतसकोचनि
तेंअवकाहेकौंसौहइतीकरियें ॥ सुकरोजिनियेंप्रगटेलषियेंजुलगी
टरकीनषरेषहियें ॥ टीका ॥ नायकाकोवचननायकप्रती ॥ नषनकीरे
षाकहियेचिह्नः तेतुह्मारेहिएमेंसोहतहैं ॥ औरतुह्मारेसवअंगआल
समभरेहैं ॥ औरतुह्मारेनेत्रसाम्हनेंनहींहोतहैं ः तुमसुगंधेंवैसोंषातहो
जमकाअलंकार ॥ अधीरापंडिताकीउक्तिनाइकसोंअवरकाव्यजमकाअ
लंकार ॥ जहांवहोपनिपरै ॥ ८७ ॥ मूल ॥ दोहा ॥ पलसौंहैंपगिपीकरंग
छलसौंहैंसवबैन ॥ वलिसौंहैंकतकीजियतयेअलसौंहैंनैन ॥ ८८ ॥ यह
नायकाधीराअधीरापंडितानायकाकोवचननायकसौं ॥ कवित्त ॥ सो
हतसिथलगातपारसमैंपागेनिसिजागेतातेंआरसकेहारहरियतुहैं ॥ वैं
ननतनरातअंगरागतमुरिविरवेरपिकिरिपिकिरिहरिहेरिहिरियेंहरियतुहैं ॥
वैनसनेंछलसौंहैपीकपगेपलसौंहैंदेषेंछविद्रिगनिअनंदभरियतुहैं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

फूलप्रानप्यारेअनजकाहेकोंकरतएतोअलसोंहैंनेनवलिसोहैंकरि
यतहै॥टीका:॥नायकाकोवचननायकप्रती॥तुह्मारेपलकपीक
सौंपागिकहियेभरेसोहतहैं॥औरतुह्मारेसबवचनछलभरेहैं:व
लीसंबोधनहै:तुमसुगंधेवौंपाषानहौ: पतुह्मारेनेत्रआलसभरेहैं
जमकाअलंकार॥आधीरापंडिताकीउक्तिनाइकसोंअवरकाग्रज
मकालंकार॥जहांवहीपदपुनिपरै॥अर्थऔरहीहोइ॥जहजमका
लंकारहै॥भाषितपंडितहोइ॥५८॥मूल:दोहा:॥कतलपटैपतसों
गरैं:सोनजुहीनिसिसैंन॥जिहचंपकबरनीकिये:गुललालारंगनैं
न॥५९॥यहनायकाप्रौढाअधीरापंडिताहै:फूलनकौनामसबद
कौचमतकारहै:॥सवैया:॥मोगरैंफूलिनलागियेलालनसोंनजुही
निसिसेंनमैंप्यारी॥जाकोलसैतनुचंपकसौदसनावलिकुंदकलीछ
विथारी॥लोचनलालगुलालकोरंगकरेजिनिरैंनिजगाइविहारी
निंदतहैअरविंदनकीछविप्रीतिपरागभरेभरभारी॥टीका:॥नाय
काकोवचननायकप्रती॥तुममेरेगरेक्यौंलपटतहो॥जोनायका
निसिकहियेरातिकोः सैनकहियेसेजविषैंहीसोमैंनहींहौं॥जिहचं
पकबरनीनायकानैंतुह्मारेनेत्रगुललालाकेरंगकियेहैं॥विषम
अलंकार:॥अधीरापंडिताकीउक्तिनाइकसोंफूलचंदयासौंकहत
हैं विषमालंकारअंनरंगकेकारननेजहकाजआनरंगहैजाइउयम
कीजैभलोजानिकैतातैंहुबुरोफलआइअनमिलनेकोसंगहोइ
नहांजानिलीजीयेचित्तचलाइअलंकारयहविषमतीनविधिमेंस
वकोदीनोसमसमरमाइ॥६०॥मूल:दोहा:॥सुभरभरयौतुअगनक
ननिपचः योंकपटकुचाल॥कैंयोंदारमनौंहियैं:दरकतनाहिंन
लाल॥६१॥यहनायकाप्रौढाउरहनौंनायकाकोवचननायकसैं॥
सवैया:॥तोउरमेंअनुरागकेफूलतेंप्रीतिप्रतीतिकलीप्रगटीजैसो॥वा

वरेश्रोगुनकेकनकाछलवेवकुलासंगभूरिभरेज्यौं॥ वेचकनाईकी॰
वाननसोंकविकुलकहैपरिपक्व भएज्यौं॥ श्रावनमोहिपरेषोयहैश्र
वदाडिमज्योंदरकेनहियेज्यौं॥टीका॥नायकाकोवचननायकप्रती॥तु
म्हारेजोगुननेईभएकुनकहैंवीज॥तिनसोंसुभरकहियेवाहनभयोहै
श्रोरहुस्वामीकुचालिसोंकपटकोसोपकोहै॰लालसंवोधनहै॥कोजै
सेंदाडिमपकिकेफाटिजातहैं॥तैसेंमेरोहियोंफाटेहैतेनहीफटतहै॥रू
पकाश्रलंकार॥श्रधीराषंडिताकीउक्तिनाइकासोंरूपकउपमाकोसंकर
उपमानरुउपमेयमैंभेदपरेनलषाइ॥तासोंरूपककहतुहै॥सकल॰
सुकविसमुदाय॥१॥उपमानरुउपमेयसाधारनवाचकहोइ॥पचातैया
पहएजिहांहरनउपमासोइ॥५०॥मूल॰दोहा॥श्राजुकहूंश्रोरैभए॰ठए
नएठिकुठैन॥चितकेहितकेचुगलए॰नितकेहोइनतेन॥५१॥यहनाइ
काकेनेत्रदेषिसषीकहे॰तोलछितनाहोइ॰जोनायकानायकसोंकहैतोषं
डितनाहोइ॥सवैया॥श्रालसकेनरमेंप्रियकेरंगिलालकेरंगरहेरंगभ॰
एहैं॥देतवतेहैंचितकेहितकीचुगलीठिकठेननपईठएहैं॥निंदतहैंश्रर
विंदप्रभाश्रनुरागपरागमेंपागिगएहैं॥होहितएनितकेसजनीश्राश्र
जुश्रएरश्रापजुएहैं॥टीका॥नायकाकोवचननायकप्रती॥तेरेए॰
नेत्रश्राजुकहूंश्रोरैभएहैं॥ठिककोजोरथाननामेंथितनहीहै॥चित
कौजोहितकहियेप्रीतताकेचुगिलहै॥तुम्हारेएनेत्रहमसकेसेनहो॰
हैं॥इसकोइहमतलबहै॰कीतुम्हारेएनेत्रश्रोरठारलागेहैं॥भेदकातिस
योक्तिश्रलंकार॥श्राधीराषंडिताकीउक्तिनाइकप्रतिभेदकातिसयोक्तिश्रलं
कार॥श्रोरयहपददीजियै॥श्रधिकाईकैहेत॥श्रतिसयोक्तिभेदयकहैक
हनसुकविमिरतैन॥५२॥मूल॰दोहा॥फिरतजुश्रटकतकटनिविनु॰
रसिकसुरसनिषियाल॰॥श्रनतश्रनतनितनितफिरत॰कतसकुचा
वतलाल॰॥यहनाइकाप्रौढाउदाहतोंनायकाकोवचननायकासें॥क
वित्त॥हमप्रानप्यारेजगजानततिहारेगुनगढनउच्चारेश्रोसीहरतिठ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वि॰प्र॰ ७३ 73

रत है॥ सब रहौ कौ भावत है रसिक कहावत हौ रस के रसीले लाल छा
ल सो कहत है॥ अटकत फिरत लगानि विनु ठौर ठौर प्रेम पैन माची पै
कहू न उछरत है॥ अनत निनत नित को ज तन बल नेह रंचक हू जियमैं
न सकुचन धरत है॥ टीका॥ नायका को वचन नायक प्रती॥ रसि
क संबोधन है॥ तुम जो कटनि कहि लगानि॥ ताविनु अटकत फिर
त हो॥ सो रसक रतो बैल न ही है॥ और ठौर ठौर विषै नित नित प्रीत
करि कै मोहि वै मल्लजावत हो॥ इसको इह मन न लव है॥ की पल ताकै को
पति प्रीति कह निवाहत न ही है॥ लाल संबोधन है॥ अक्षेपा अलंकार
अर्थी रापकिया षंडिता की उक्ति नायक प्रति॥ उपालंभ संचारी उपा
दान लक्षना॥ अक्षेपालंकार जो दुरै निषेध जु विध वचन॥ और निषे
धाभास॥ पहिलैं कहिये आपकहु॥ बहुर फेरिये नास॥ ५२॥ मूल॥ दो
हा॥ जो तिय तुम मन भावती॥ राखी हियें बसाइ॥ मोहि कहु का वनि
हत निजू॥ बहुड उफक नि आइ॥ ५३॥ इह मान भ मनाइक की आंखिन मै
अपनो प्रतिबिंब देखि औरस नायका जानि नायक सौ कहति है॥ नाइका को वच
न नायक सौं॥ सवैया॥ नेकु मनै करौ पाइ परौ यह काहे को मो सौं रही
दति है॥ राजकरौ नित याही लियै रहौ या मैं कहा कहलावति है॥ जो तु
म राखी बसाइ हियें पिय प्यारी सिहारी कहावति है॥ झांकति रावरी आ
खिन आनि कहै तिय मोहि कुकावति है॥ टीका॥ नायका को वचन
नायक प्रती॥ जो तुम अपने मन की भाउति॥ तिय कु हिये नायका॥
सो अपने हियमें बसाइ राषति है॥ सोई तुम्हारे नेत्रनि में मानो उफक
ति है॥ उत्प्रेक्षा अलंकार॥ अर्थी राषंडिता की उक्ति नाइक सौं॥ उत्प्रे
क्षा अलंकार॥ मह को जति सं भावना॥ ५३॥
मूल॥ दोहा॥ मोहि करत कत बांवरी॥ करै दुराउ दुरै न॥ कहै देत रंग
राति के॥ रंग निचुरत से नैन॥ ५४॥ यह नायका के नेत्र देखि सखी कहै
है लक्षिता दोइ॥ जो नायक कहै पिय मन न नाइक की सखी सौ नायका कौ है

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तौखंडिताहोइ॥ कवित्तः॥ तरुनिके चिह्न चतुराई सौं लखु कापतन भख
नवताइ सजे वसनन रतु है॥ कुल प्रान प्यारे के सने हस्र रसानैं तातें
गात अरसानें रस उमरि ठरतु है॥ काहू कों सयानी मोहि दिवा अरीक
रति अब कियें तें तु राउ अब कैसैं हूं तु रतु है॥ अगर पुकारें रंग रातिकें क
हनए तैं लोचन जुगल मानौं रंग निचुरतु है॥ टीका॥ नायका को व
चन नायक प्रती॥ मो कों तुम कैसें बाचरी करतु हौ॥ छिपाउ करेन हौं
छिपतु है रंग सैं तुम्हारे नेत्र निचुरत है॥ रातिके रंग कौं कही देत है॥ इ
सकों यह मतलव है॥ कि रातिके जगे तुम्हारे नेत्र लाल भए है॥
अलंकार॥ अधीरा खंडिता कौ उक्ति नाइक प्रति॥ लछन लछना
उक्रमका अउत्प्रेक्षा अलंकार॥ जो सखी की उक्ति होइ तौ नाइका लछिता
है॥ जहं कीजति संभावना॥ ५४॥ मूल: दोहा:॥ पट सौं पौंछि परै करौ:
खरी भयानक भेख॥ नागनि सी लागी दृगनि: नागवेलि रंग रेख॥ ५५॥
यह नाइका खंडिता नायका को वचन नायक सौं॥ सवैया:॥ आजु भयाक रिमे
रैं पधारे खुली बड़ भागनि कौ सु चरी है॥ पीतम एपट छोर सौं पौं छिपरे
करौ भामा मनि है विहरी है॥ लागति है मन नैनन कौं अहि भामनि सी ।
भय भरि भरी है॥ केलि समें अहि वेलि के रंग की रेख निमेषनि कौ उचरी
ही है॥ टीका॥ नाइका को वचन नायक प्रती॥ नागवेलि कहिये पान ।
तिन के रंग की रेखा मेरे नेत्रनि कौं नागनि कै है सापनी जैसी लागति है
पान के रंग की रेखा अति भयानक भेष है॥ तातें पट सौं पौं छि के परे
करौ वगाहू रि कै रो॥ उत्प्रेक्षा अलंकार॥ अधीरा खंडिता कौ उक्ति नाइ
का सौं॥ उत्प्रेक्षा अलंकार॥ जहं कौ जनति संभावना॥ ५५॥ मूल: दोहा:
डरैं निछरक छवै रहे दियें: यह रावरे कुचाल॥ विससी लागति है बुरी:
हसी खिसी की लाल॥ ५६॥ यह नायका अधीरा खंडिता नायका को वचन
नायक सौं॥ सवैया:॥ जानति हौ हित के हित सौं उनही के वसें सुख सें ।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निसिनासी॥ भोरकिहूं भ्रमभूलि कैलाल पधारे हु मैं कछु जो नी
ह पासी॥ ठौरठौ दियें कहा कै मैं दुरै यह ओरहीं तेज्जु कुचालप
भासी॥ लागति बीस बिसें बिसु सी सबसों अपने कहु आवत हा
सी॥ टीका:॥ नायका को वचन नायक प्रती॥ निचरकहिये जिस
कौ चरन हीसो संबोधन जानियें॥ चतुरन के दर्पन लाल पकुचाल
नहीं छिपति है॥ इसको यह मतलब है कि तुम को हम आप मो स
रव सदयौ॥ परतु हमारी रीति नहीं मिटी॥ जो तुम्हारी बिसराइ पना
की जो हासी है॥ सो मो कों बिसु सी लागति है बुरी॥ उपमा अलंका
र॥ अधीरा खंडिता की उक्ति ॥ इन नाइक सों उत्प्रेक्षा अलंकार॥ जह
कीजति संभावना वृत्त हेतु फलमधि ठ॥ ५८॥ मूल: दोहा:॥ मृदुमि
ठास हूं गचीक नें: भौं हैं सरल सुभाइ॥ नऊ परे आदर खरे: चितु चि
तु हिया सकाइ॥ ५०॥ यह नाइका प्रौढा सादराधीरा नायक को वचन॥ सखी सखी सौं कहै॥
सखीसों: नायकाहूं सौं संभवै: सखी नायका सौं कहै
कवित्त:॥ मदन कमलनें अधिक हित सानैं वेन मधुरे कहत अ
मी जिनपें चवात है॥ भ्रकुटी सुभाइ ही सलिल लखियति कहूं
रोस कौन रंच लवलेस दरसात है॥ नेत्रन की निसा रीर समानी चि
त वनितन्हि को केसें हूं न मापे यह भेद जान्यौ जात है॥ ज्यौं ज्यौं अतिब
ढावरो आदर करति प्यारी त्यौं त्यौं मेरो हियो परो घराई सकात है॥
टीका:॥ नायक को वचन नायका सों॥ तुम्हारे मुख में मिठास है॥ इस
को यह मतलब है: कि तुम कठु वचन नहीं बोले॥ अरु तुम्हारे
नेत्र चीकनें हैं॥ इसको यह मतलब है॥ कि तुम अपनें नेत्रनि सों
रुखी तरह नहि देखो॥ अरु तुम्हारी भौं हें स्वभाविक ही धरी हैं॥ इ
सको यह मतलब है: कि तुम भौं हें नहीं चढाई॥ नऊ परे आदर
सों छिन छिन विषें मेरो मन बहुत भय मान होत है॥ विभावना

अलंकार ॥ नाइककी उक्ति नाइका सादराधीरा विभावना अलंकार ॥
कारन नाहि पै कारिज होइ कै कारन कान को उपजावै ॥ कारज होइ अ
कारन तैं किं अपरन कारज काज बनावै ॥ कै प्रतिबाधक होत हू का
रज होन य होतय हो रससो तु बढावै ॥ देखुतै काज विरुद्ध विलोकि ॥
बुध ऐसे छै भांति विभावना गावै ॥ ५७ ॥ मूल: दोहा: ॥ जिहमाम मिभूषन
रच्यो चरनमहावर भाल ॥ उहीमनों अषियां रंगी ओठन के रंग लाल ॥
५८ ॥ यह नाइका ओढा षंडिता नाइका को वचन नायक सों ॥ सवैया: ॥ वा
हीकै नैनन को काजर ओठ पै नीको लस्यो जिनि पीछि कै कोऊ ॥ वाही कै
पाइ को जावक लाल लिलार महा छबि देत है सोऊ ॥ ऐसो बनाइ सिं
गारु कर्यो जिहि है बहु बाल विचछन कोऊ ॥ जानति लाल रंगी उन
है अषियां अधरान के रंग मैं दोऊ ॥ टीका: ॥ नायका को वचन नायक
प्रती ॥ जिस नायका नै भाल कहिये माथो ॥ ता मैं पाइ के महावर भूष
न करबो कहिये बनायो है ॥ इसको यह मतलब है ॥ कीजिस के पाय
न परे हो: अथवा जिस ने तुम को लातनि मारी ॥ उही को कहिये उस नाय
का: ॥ ने मानों अपने ओठनि के रंग सों तुम्हारी आषि रंग कहिये लाल क
री है ॥ इसको यह मतलब है: की तुम्हारे नेत्र नायका नें चूमे हैं ॥ उत्प्रे
क्षा अलंकार ॥ अधीरा षंडिता की उक्ति नाइक सों उत्प्रेक्षा अलंकार ॥ ज
हवो जनि संभावना ॥ ५८
मूल: दोहा: ॥ घरे अदव इठिलाह ठी: उर उपजावति त्रास ॥ उसहसंक
चितकी करैं: जैसें सोंठि मिठास ॥ ५९ ॥
सवैया: ॥ गांठ गह्यो उर मैं जिन नैं नोक छू मैं तान
[illegible] ॥ वानित जी इठलाह ठको अवकाहै तैसो धों कहा
नि परी है ॥ त्रास उपरो उपजावै हिये अति आदरसों अभिमान भरी है ॥
सों ठि च वात जैसी मसी ठीलगै सब कोऊ कहै वह की नइ री है ॥ टीका:
नायक को वचन नायका प्रती ॥ तुमेरी बडो अदव कहिये अलाहिजा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नाकौराषिवेजोइठिलातिहै॥ नासोंतूमेरेहृदयमेंत्रासउपजावत
तिहै॥ जैसेंसौठिकोमिठासतुमहकहिये सहैानजाइ॥ सोजो
विसताकीसककहियेभयनाकोंकरैहै॥ इसकोयहमतलवहै॥
कीतेरेमीठेवोलनेंसोंमोकोंभयहोतुहै॥ दृष्टांतत्रलंकार॥ ना
इककीसषीकोउक्तिसादराधीरासोंदृष्टांतत्रलंकार॥ उपमानरु
उपमेयगुन॥ वाचकधर्मसुजानहोतविंबप्रतिविंबहै॥ दृष्टांत
सुपरिमान॥ ५५॥ मूलःदोहाः॥ मोहनसंगसमानसोः यहैकहत
सवलोग॥ पानपीकत्रोठनिवनेंःकाजरनेननिजोग॥ २०॥ यह
नायकात्रोढाषंडितासैनायकाकोवचननायकसौंः॥ सवैया॥ त्रंषू
नमेंयहवातप्रमानहैयोंचलित्रायोमतोसवहीको॥ जैसेकोसोइ
जोजोगुजुरेनवहोतुमहासुषदायजीको॥ नेविपरीतविलोकि
येसंगकुहंगुनहीरंगलागतुफीको॥ पानकीपीकवनेपियत्रो
ठनुत्राषिनकाजरलागतुनीको॥ टीकाः॥ नायकाकोवचनायक
प्रती संगवरोवरिकोसोहतुहै॥ यहवातसवलोगकहतुहैंः पान
नपीकत्रोठनिपरवननीहै॥ काजरनेत्रनिमेंवनतुहैः॥ इसकोइ
हमतलवहैः॥ कीपानपीकलालहोतुहैसोत्रोठनिमेंहीवनति
है॥ त्रौरकाजरस्यामहोतुहै॥ सोनेत्रनिमेंहीवनतुहैसोतुमपान
पीकनेत्रनिमेंलगाइत्रापहो॥ त्रौरकाजरतुम्हारेत्रोठनिमेंला
गयोहै॥ अर्थांतरन्यासत्रलंकार॥ त्रधीराषंडिताकीउक्तिनाइक
सोंदोहासमाविकहैहै॥ अर्थांतरन्यासत्रलंकार॥ कह्योत्ररथ
जहुपोषिये॥ त्रौरत्रर्थसोंमिन्न॥ सोत्रर्थांतरन्यासहै॥ वुधजनक
रतप्रतीतवंडिमा॥ अर्थप्रोषितपतिका॥ २००॥ इतिवंनिषंडिताः॥ अ
थप्रोषितपतिकाः॥ मूलःदोहाः॥ दुसहविरहदारुनदसाः रह्योन
औरउपाइ॥ जातजातज्योंराषियेंः पियकीवातसुनाइ॥ १॥ यहना
इकाप्रोहाषितपतिकाविरहनीसषीकोवचनसषीसोंदसत्रवस्था

नकेभेदसैंबाव्यिजानियेः॥ सवैया॥ प्रानपियापरदेसकियोतियप्र
गमअंगनरंगनिताए॥ सीरीहूजानिजरैकबहूउपचारविचारजिते
सबन्हाए॥ ईठिनिधाइषवासिडितैंमुरफाइरहीनभएमनभाए॥
येसैंकहैंजोवचैतोवचेकहाँगाउतैंभावतेमोहनआए॥ टीका॥
सषीकोवचनसषीप्रती॥ इसदुककहियेसह्योनजाइ॥ येसोविरह
कहियेवियोगताकीदाहनकहियेभयःदसाकहियेअवस्थाः॥ ता
सोंहमपैरह्योनहीजातुहै॥ नायकोजैसोंकहियेप्रानसोनायकको
वातैंसुनाइकेजानजानतैंराषियतुहै॥ इसकोयहमतलबहैः कोनाय
कानायककीवातैंसुनाएतेकोइदिनजीवतुहै॥ काव्यलिंगअलंकार
सषीकोउक्तिविषादभावधनिकरिसषीसौंप्रोषितपतिकानाइ
काउत्तमकाव्यकाव्यलिंगअलंकार॥ अर्थसमर्थनकीजीये॥ ज
हायुक्तसोमित्रकाव्यलिंगभूषननहा॥ भाषतनबुधिविचित्र॥१॥ मू
लःदोहाः॥ चलतचलतलैलेचलैःसबसुषसंगलगाइ॥ ग्रीषमवा
सरसिसरनिसिःध्योमोपासबसाइ॥२॥ यहपत्नीनाइकाकीनायक
कोपठाईजानियेः॥ सवैयाः॥ रैनदिनारहनेईमिलेरससंगउमंगनमैं
मनुहारे॥ येसोसनेहवडाइकैदेषिरीकैसीकरीउनकाहूपियारे॥
लैगयोसंगलगाइसबैसुषदैगयोसोचुटरैनदिहारे॥ ग्रसकीजामि
निजेठकोचोसबसाइगयोअबपासहमारे॥ टीकाः॥ नायकाकोव
चनसषीप्रती॥ नायकचेलतकोमेरेसबसुषआपनेसाथलेगयो
गरमीदिनसीनकालकीरातिमेरेपासछाडिगयो॥ इसकोयहमत
लबहैः॥ कौदिनमोंकोग्रीषमकालकेसेवडेभए॥ रातिसीतका
लकोसीवडीभई॥ उत्प्रेक्षाअलंकार॥ प्रोषितपतिकाकीउक्तिस
षीप्रतिउत्प्रेक्षाअलंकार॥ जहकीजतिसंभावना०॥२॥ मूलःदोहाः
पजरेआगिवियोगकीःवह्योविलोचननीर॥ आठैजामरह्योहि

यो उड़ैः उसाससमीर ॥ ३ ॥ यह अवस्था विरह की नाइका अथवा नाय
का अपनी अवस्था सषी सौं कहै ॥ कवित्त ॥ मवहीने कठिन सनेह की
गैल गनये कितन सुष पायो मन प्रेम पथ हारिकै ॥ जाके न न लागै सो
ई जानत है भेद यह वेदनि विषम कौ न सकत सम्हारिकै ॥ कहै कवि
हलय यह और अदस्तु निरातिय जसो वियोग आगि वसौ हग वारिकै
तऊ देषो आठो जाम उड़ौ ई रहत हियौ दीरघ उसासन को प्रवल
वयारिकै ॥ टीका ॥ नायका को वचन सषी प्रती ॥ विरह की आगि सौं
जरौ है ॥ और नैंननि के पानी सौं वह्यौ है ॥ यैसो मेरो हियो उसास के स
मीर कहिये पवन ॥ तासौं आठो पहर उड़ो ई रहत है ॥ पर्यायोक्ति अ
लंकार ॥ जो सषी की उक्ति सषी सौं होइ तो विषाद संचारी प्रोषित प
तिका नाइका ॥ जो सषी की उक्ति नाइक सौं होइ तो नाइका कै एवानु
रागतें विरह जो भयो है ताको निवेदन करति है ॥ ऐसें ही नाइका की
उक्ति ते अंगिजानिये ॥ पर्यायोक्ति अलंकार ॥ पर्यायोक्ति प्रकार
है ॥ कछु रचना सौं वात ॥ मिसि करि कारिज को जीए ॥ जैसें चित्र सुरूप
व ॥ २ ॥ मूल दोहा ॥ पुलनु प्रगटि वरुनीनि वढि नहि कपोल ठह
राति ॥ असुपरि छतियां छिन कः छन छनाइ छिपि जाति ॥ ४ ॥
यह नाका प्रोषित पतिका सषी को वचन सषी सौं नायक हूं सौं वनै
तो संभवै ॥ कवित्त ॥ वाल नंदलाल के वियोग ते विकल याते पलप
ल विधि के से वासर विहात है ॥ विरह तताई कौ वढ़ति वरुनीन
जाति एते मानन चेवा के कुसुम से गात है ॥ पलनतें प्रगटि वढ
त वरुनीन सूं ते परत कपोल मैं न रत ढरजात है ॥ सलिल की वूंद ना
नी छिन पैपरति औसें छाती पर असु वा छन कछिपि जात है ॥ टी
का ॥ सषी को वचन सषी प्रती ॥ पलकनि में प्रगट है कै वरुनी क
हिये चीलेनि में वढि कै ॥ कपोलनि में न ही ठहरात है ॥ आस्ह आ

नीयरपरिकैं: छत्रछन्नहैकै छिपिजातहै ॥ पर्यायोक्तिअलंकार: ॥ जोस
खीकोउक्तिहोइविषादकरिसखीसोंतोप्रोषितपतिकाजोनाइकसोंउ
क्तिहोइतोविरहनिवेदनहूतवअंगिजोनाइककीहूतीकोउक्तिहोइ
तोपुरुषवियोगएवांनुराग ॥ ह्यांवक्ताकीउक्तितेंअंगिहै ॥ विभावकी
व्यक्तिलिखिएनासौंहैयहरसदोषहै ॥ ऐसेंहीऔरठौरजानिलीजियो
पर्यायोक्तिअलंकार ॥ ४ ॥ मूल: दोहा: ॥ मरवेकोसाहससकवै: बढै विर
हकीपीर ॥ दौरतिहैसमुहैसखी: सरसिजसुरभिसमीर ॥ ५ ॥ यहनाय
काप्रोषितपतिकाविरहनीसखीकोवचनसखीसौं ॥ सवैया: ॥ श्रीमनमो
हनसौंजवतैंविछुरीनवतेनपलौकलपावति ॥ नीरविनासफरीज्यों
घरीपैघरीतलफैहभई दुवरीअति ॥ साहसकैमरिवेकोसखीरउठा
रिकैअनतुजोहुमेंआवति ॥ दौरतिसामुहैसीरसमीरसरोजनिलैहि
यरासौंलगावति ॥ टीका: ॥ सखीकोवचनसखीप्रती ॥ विरहकीपीडा
केवढिवेमरिवेकोसाहसकरिकैं: ससिकहियेचंद्रमा ॥ अरुसरसि
जकहियेकमल ॥ औरसुरभिकहियेसुगंधता ॥ समीरकहेपोंनुता
केसामुहेहैकेदौरतिहै ॥ विचित्रालंकार: ॥ जोसखीकोउक्तिवि
षादकरिसखीसौंहैतोप्रोषितपतिकाजोनायकप्रतिहै ॥ विरहनिवेद
हूनएवांनुराग ॥ अन्यसेनिधितेअंगिविचित्रालंकार ॥ ५ ॥ मूल: दोहा:
ध्यानआनहिगप्रानपति: मुदितरहतदिनराति ॥ पलकुकंपतिपुल
कतिपलकु: पलकुपसीजतिजाति ॥ ६ ॥ यहविरहनीध्यानमेंमिल
तिहै: तबसातिकहोतहै: पविकाआनंदहमेंहोतहै: सोसखीसखीसों
कहतिहै: जोसखीनायकाकैमेंकहैतोसंभवै: ॥ सवैया: ॥ वाहरिकेवि
छुरेगतऐसीभईहवषांनककंलगकीजै ॥ ध्यांनतौध्यांनमैचंदमु
खीमिलिप्रानपियाहीयिहियेंरसभीजै ॥ रैनदिनारहैमोदभरीवहकोहै
वियोगिनिकैपांननुखीजै ॥ कंपितहैललकैकवहूंकवहूंपुलकैकवहूं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कपसीजै ॥ टीका ॥ सषीकोवचन सषीप्रती ॥ ध्यानविषैंप्रानपतीकरि
येनायकताकेहिगकहैंसमीपविषैंदिनरातिआनंदितरहतिहै ॥ सो
पलकहियेछिनमेंकंपतिहै ॥ औरछिनमेंरोमांचितहोतिहै ॥ औ
रछिनमेंपसीजतिहै ॥ स्मरतिअलंकार ॥ सषीकीउक्तिसषीसोंप्रो·
षितपतिकानाइकाकेस्मृतिदशाकंपरोमांचस्वेदअनुभावतेंजा·
ति ॥ अनवत्रीसषीसोंउक्तिहोइतोपूर्वानुरागहै स्मृतिअलंकार ॥ ६ ॥
मूलः दोहा ॥ विरहजरीलषिजिगुननीकहिनकह्यौकैवार ॥ अरेआउ
भजिभीतरीवरसतुआजुअंगार ॥ ७ ॥ यहप्रोषितपतिकानाइकासषीस
षीसोंकहैविरहतेंजिगुननकोंआगमघतावतिहै ॥ नायकाकोवाक
संभवेन ॥ कवित्त ॥ कलपतरहैकछुओरहूसोंमहूकेवाहिसुषदजैसें·
मैहैवेउषपरसतहै ॥ विरहविकलम्रगलोचनीविवसभईहरविनुन
नमनप्रानतरसतहैं ॥ पलपलवरतिनधरतिरतीरतीकअधिकअ
नेगतुषदंदसरसतुहै ॥ अरेभजिआउवेगिभीतरभमनदेषिअंवर
तेंआजुतौअगाइवरसतुहै ॥ टीका ॥ सषीकोवचनसषीप्रती ॥ वि
रहसोंजरीजोनायकाताजिगुनूंदेषिकेंवारनहीकहै ॥ इसकोर
यहमतलवहैकीवहुतवारकही ॥ अरे संवोधनहै ॥ तेंभीतरभ
जिआउआजुअंगारवरसतहैं ॥ भ्रांतिअलंकार ॥ सषीकीउक्तिस
षीसोंप्रोषितपतिकानाइकाप्रलापदसाजोनाइकसोंउक्तिहोइ·
तोपूर्वानरागभ्रांतिअलंकार ॥ भ्रमचित्तहोतआइ ॥ भूषनसुंआ
निगाइ ॥ ७ ॥ मूलः दोहा ॥ अरीपरैनकरैहियोंः षरोजरोनपजारि ॥ ·
डावतिघोरिगुलावसोंः मिलेमिलेघनसारि ॥ ८ ॥ यहनायकाप्रोषित
पतिकानायकाकोवचनसषीसें ॥ सवैया ॥ काहेकोलैघनसारग
लावमैंघोरिघनौंघुरिचंदनलावै ॥ काहेकोसीपरेनीरभिगाइउ
सीरपषानिसनीरहलावै ॥ नाहिकंहांनकअैसीपरीगोजरीउर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

आनिबसी पजरावै ॥ ए उपचार परे न करै कलया तेपरै किनि ताहि मि॰
लावै ॥ टीका ॥ नाइकाको वचन सखीप्रती ॥ अरी संबोधन है ॥ बैरी ज
रैजो मेरो हियो ताको नंम निज्जा कहि कहिये जराउ ॥ ताते तू गुलाब से॰
घोरि कै मिलाइ मिलाइ कै चंनसार जो कपूर ताको डारि कै लगाउ
ति है ॥ सो ताते इस को पैरे न होकरति है ॥ इसको यह मन लवै है ॥ को
कप्र मेरी छाती मैं मति लाउ ॥ काव्यलिंगालंकार ॥ प्रोषित पति
काकी उक्ति प्रति ॥ उद्वेग दशा विषमालंकारः ॥ उद्यम कीजे भलें को
होइ बुरो फल आइ भेदनी सो रो विषम को भाषत कवि समुदाय ॥ ५
मूल दोहा ॥ कहै जु वचन वियोगनी ः विरह विवस विललाइ ॥ किये न॰
को अंसुवा सहित ः सुवा तै बोल सुनाइ ॥ ४ ॥ यह नाइका प्रोषित पति
का विरहनी सखी को वचन सखी सें ॥ सवैया ॥ प्रानपती विनवा तिय
कौ इक साथ सवै दुख आनि परे हैं ॥ वाकौ दसा लखि पास के वासी उसा
स भरै गहरे गहरे हैं ॥ जे कहै वैन वियोगनि नैं अकुलाइ वियोग वि॰
थानभरे हैं ॥ वे बतियां अबबोलि सुवा सब ही असुवानि समेत कह
रे है ॥ टीका ॥ सखीको वचन सखी प्रती ॥ वियोगनी कहिये विरहनी
जो नायका ः ताने विरह की जरनी सैं विललाइ कहिये व्याकुल ह्वै
कै जे वचन कहे ॥ स्वाति के वचन कहिये पीउ वचन ताकौ सुना
इ कै ः कौंन आंसु सहित न किये ॥ इसको यह मन लवै है ॥ को नाय
का को विलाप सुनि कै सबै रोई ॥ काकोक्ति विरोधाभास अलंकार ॥
सखी की उक्ति सखी सें नाइका प्रोषित पतिका जो नाइक सें उक्ति हो
इ तो एवं ताकाकोक्ति पाइह विरोधाभासः ॥ और बात मैं और हो ॥ ॰
अर्थ करै जह जानि ॥ श्लेष शुद्ध द्वै भांति को ॥ वक्रोक्ति उर आनि ॥ ॰
जिहिं थल पाइ विरोध है ॥ अर्थ मांझ न विरोध ॥ सह विरोधाभास
कहि ॥ जो दीजिये प्रबोध ॥ ६ ॥ मूल दोहा ॥ सी रे जतननि सिसिर निसि॰

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सहि॰ विरहनितननताप॥ वसिवेकौंग्रीषमदिननुःपरौवरोसनियाप॰
१०॥ यहनायकाप्रोषितपतिकासषीकोवचनुनायकासेंाःविरहनिवेद॰
नुग्ररुसषीकोवचनुसषीसैंासंभवै॥ सवैयाः॥ काहूनिहारीवियोगिनि॰
कीगतिदेषतनमेरोहियैंाग्रकुलायो॥ हैाहुतुमाहुसषीरहुतौग्रववै
मैावियोगहुतासनतायो॥ सीतमैंसीरेउपायनसौंधिसहौतनताप
समैंावहरायो॥ ग्रीषमद्यौसनिकौंावसैपासपरोसिनुकोग्रवपा॰
पुसोम्प्रायो॥ टीकाः॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ सीरेजतनकहिये॰
सीतलउपायनसैं॥ सिसरनिसिकहियेसीतकालकीरातिमैंपरो
सनितुविरहनीनायकाकोःतनकोतापसहोपरोसनिनुकौंग्रीषम
केदिननिमैंवसिवेकौपापपरो॥ इसकोयहमतलवहैःकीवसनें॰
कीकठिनपरी॥ ग्रनुक्तिग्रलंकार॥ प्रोषितपतिकानाइकासषी॰
कीउक्तिसषीसैंाग्रप्रनुक्तिग्रलंकार॥ ग्रलंकारग्रनुक्तियह॥ व
नेनग्रतिसयरूप॥ १०॥ मूलःदोहाः॥ पियप्रांननकीपाहरूःकरति
जतननतनग्रापु॥ जाकोदुसहदसापरौःसौतिनहूंसंताप॥ ११॥ यह
नायकाप्रोषितपतिकासषीकोवचनसषीसैंाः॥ सवैयाः॥ तापतयी
विरहानलकेविलषीवहनागरिषीनतिहारी॥ ग्रांषिनहीमेंरहे
ग्रवग्रानिकेप्रानसवैहधिग्रानविसारी॥ सौतिसवैउपचारकरैं॰
गतिकेपियप्रानतुकीरषवारी॥ दारुनवाकीदसानिषेउनहूंके
परैाजियसंकटभारी॥ टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ पियकेप्रा
ननिकीपाहरूकहियेरषवारीजोनायका॥ ताकोजतनकहियेसवी
र॥ ताकोजतनग्रापुकरतिहै॥ जोनायकाकोदुसहदसासेंासौतिन
कैासंतापुपरौ॥ इसकोयहमतलवहै॥ कीनायकाकेमरेतेंनायकु
मरीजायगौ॥ इसवातसेंासौतोकोउपाउकरनौहै॥ संबंधातिसयोक्ति
ग्रलंकार॥ सषीकोउक्तिसषीसेंाप्रोषितपतिकास्वाधीनपतिकाकोस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बल॥ सपत्नीनिकै संकासंचारीव्याधिदूषणासंबंधनिषायोजि अलं
कार॥ संबंधातिषायोजि जहदेतअजोगकहिजोग॥ ग्रंथनकोमतदे
षजहभाषतकविजनलोग॥ ११॥ मूलःदोहाः॥ आडेदैआलेवसनः
जाडेहूकीरातिं॥ साहससवैकैसनेहवसः सषीसवैहिराजाति॥ कवि
त्त॥ लालवनमालीविछुरेतेहूजवालभईपटविहालविषाउरसर
सातिहै॥ अननसनाईवाकेननकीननाईदैपैहूषवकेतरुनहूकीकि
रनिरसिसातिहै॥ करतिउपाईहाईहाईकहिवारवारमीठीमीठीकर
तिनिपटअकुलातिहै॥ आडेदैवसनआलेजाडेहूंकीरातिमांकसाहस
सनेहनातेसषीहिराजातिहै॥ यहनायकाप्रोषितपतिकाविरहनिवे
दनुसषीकोवचननायकसैं॥ टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ सीतकाले
कीरातिमेंभीजेवस्त्रनिकों॥ आडेदैकहियेओटदैकें॥ साहसकरिकैसवै
सषीहिराजातीहै॥ अनुक्तिअलंकार॥ सषीकोउक्तिसषीसोंप्रोषितपति
कानाइकाव्याधिदसाजेनाइकसोंउक्तिहैहतोपूर्वानुराग॥ अनुक्तिअ
लंकार॥ अलंकारअनुक्तियहवर्ननअतिसयरूप॥ १२॥ मूलःदोहाः॥
सुनतपथिकमुहमाहनिसिः लुवैचलतिउहिगाम॥ विनुबूझेविनुही
कहेःजियतविचारीवाम॥ इहनाइकाप्रोषितपतिकाविदेसमैंपथिकयेकमुह
कीवातसुनीनाइकनेंअटकलतेंजानीसषीकोवचनसषीसैं॥ सवैया॥
सीतसमैंहूकीरातिमैंलवैचलैंउहिदेसहुनासमसानी॥ अपससेंवतरात
वटोहीअचानककानपरीयहवानी॥ जाउदिएसवकाजविदेसीकोबु
द्धिनहीसरबकोअकुलानी॥ प्रानपियारीकीआईगईसुधिजीवतिहैजो
यमैंयहजानी॥ टीका॥ कविकीउक्तिपथिककहियेपंथीहै॥ ताकेमुष
सोंयहवातसुनत॥ माहकीरातिमेंउसगांउमेंलुवैंचलतीहै॥ तातेंवि
नबूझेविनाकहै॥ वामकहियेनायका॥ सोनायकनेंजीवतविचारि
कहियेजानी॥ इसकौयहमतलबहै॥ कीमाहमहीनाकीरातिमें

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बिहा·
७५

79

लुवैन ही होती है। तातें नायका के तापकी लुवै है॥ अनुमान विभावना अलं
कार॥ दोसंकरः॥ सषी को उक्ति प्रोषितपतिका नाइक कैं स्मृति संचारी अनु
मान विभावना अलंकार को संसृष्टिः सुमति प्रकारन तैं जहां कारिज पर
गट होइ चौथो भेद विभावना को जानत सब कोइ॥ हेतु पाइ अनुमान तें सम
फिली जीये वात॥ अलंकार अनुमान सो भाषत मति अवदात॥ मूलः दो
हा॥ इत आवति चलि जाति उत चली छसातक हाथ॥ चढी हिंडोरे से रहै लग
गी उसासनि साथ॥ यह नाइका प्रोषितपतिका सषी को वचन नाइक प्र
ती॥ सवैया॥ मोहनलाल तिहारे वियोग रही ब्रजनागरि चित्र कढी सी॥
होसि हिंडै न हिंडै न ओर रही रंग अनंग को वेद निषंग वढी सी॥ बातन आइ उली
ड्वराइ सषी लषि सोच समुद्र मढी सी॥ आवति जात छ सातक हाथ उसास
के साथ हिंडोरे चढी सी॥ टीका॥ सषी को वचन सषी प्रती॥ इहां आवति है छ
सात हाथ चलि के उहां जाति है॥ उसासनि के साथ लगी हिंडोरा जो फूला॥
तामें चढि सी नायका रहती है॥ इसको यह मतलब है॥ की जैसें हिंडोरा जा
न आवत है॥ तैसें नायका कछु चलती है॥ कछु फिरती है॥ उपमा अलंकार॥
सषी की सामान्य सषी सों होइ तो प्रोषितपतिका जो नाइक सों होइ तो पूर्वा
नुराग विरह निवेदन उत्प्रेक्षा अलंकार॥ जहं कीजति संभावना॥ २९ मूलः
सोरठाः॥ विरह तपाई देह नेह कियो अति डहडहो॥ जैसें वरसें मेह जं
रै जवासो ज्यौं जमै॥ यह नाइका प्रोषितपतिका विरह की अरु प्रेम की अ
धिकाई सषी सों कहति है॥ औरु नाइक कहें सषी सों अपनी अवस्था कहे
तो कहैं॥ सवैया॥ देषो वियोग नै देह सुषाइ करी दुवरी रह्यो मास न मासो॥
नेह लगा उलहाइ हरी करि दै दिन ही नुहको पलै सो मासो॥ आवति है जि
यमें उपमा कवि केशव के यह देषि तमासो॥ ज्यों पावस में घन पावस के
सब जीमैं जरै यह आवु जवासो॥ टीका॥ सषी को वचन सषी प्रती के
नायक प्रती॥ विरह कहिये वियोग ता नै देह सुषाई है॥ औ नेह कहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ये प्रेम॥ सो इहां दोकहिये लगे कह्यो है जैसें मेरु को वरसें तें जवासो
जरतु है॥ औरजवासे को वीज जु जमत है॥ इहां दोष्प्रालंकार॥ जो नाइक
की उक्ति होइ सा याहां सषी सों जो प्रोषितपतिका जो नाइक की उक्ति
इ सषी सों कैहू ती की उक्ति होइ नाइक सों॥ तोप्रवासुराग॥ इहां अलं
कार॥ उपमानक उपमेय जुग॥ वाचक धर्म सु जांन॥ होत विंब प्रति
विंब है॥ इहां दृष्टांत परिमान॥ २६॥ मूल सोरठा॥ ज्यौं बिज्जुरी जनु मेह॥
मानि है हां विरहु धरयो॥ आठो जाम अछेह॥ दृगन जु वरषत मरत है॥
यह नाइका प्रोषिता है॥ सवैया॥ मानो मरु हार नाइका रूव निमें नइ तो॥
उपचार कयो है॥ लै विरहा तिय के दृग में बिज्जुरी जु तमेह सुमन छु धरयो
है॥ झूलवा रहेयु हवें मन वर्षे भई मन मों नन का रहे रयो है॥ छो ता निसा
वरषैं रु जैसें यह नेम लियो आकर नान हरयो है॥ टीका॥ सषी को वचन सषी
सी सी छ वाला कवो वषु नमषी सली॥ जनु कहिये मानो विरह नेः नू
तलकहिये इन नेत्र नि मैं बिज्जुरी सहित मेह धरयो है॥ याहो मैं आठो जाम
कहिये दिन राति॥ दृगन कहिये नेत्र॥ नेम छेहु कहिये अछेह यवरत कहि
ये जरत है॥ औ रु वरषत है॥ उक्तोपास्प्रलंकार॥ उक्ति नाइका की सषी सों
है उक्तो प्रोषितपतिका हूतीसों है उक्तो पूर्वानुराग नाइक की उक्ति है
इके नाइका की उक्ति हो इलो पूर्वानुराग॥ उक्तोपास्प्रलंकार जह को जु
निसं भावना॥ २७॥ मूल दोहा॥ विरह विपति दिन परत ही तजे सुषनि सब
संग॥ रहि अब लौं अब दुषो भए चलाचले जिय संग॥ इह नाइका प्रोषितप
तिका को वचन सषी सों सषी को वचन नाइक में सोम कन सषी सषी सों कहे लप
सभै॥ कवित्त॥ जौ लौं प्रान नाथ के समीप रहे तौ लौं संग संग सरसाने सुव
उमंगि उमंगि कै॥ न्यारे होत न प्यारे के वियोग विवथा वाढत हीमा लो करि हो
तौ वे अगा रह गए भागि कै॥ दुष की निकाई कहू वरनी न जात माई पावै दुष सहै
तौ उरयो प्रेम पागि कै॥ येन भयो होनो तो दीपक ह्वालो साथ दीनें अब चलिवो।

विचारयोसंगप्रानननवेलगिकै ॥ टीका ॥ नायकाकोवचनसषीप्रतो ॥ ।
अथवासषीकोवचनसषीप्रती ॥ बिरहकेबिपतिकेजेदिन ॥ तिनके
पेरतैंसवनिसवअंगछोडे ॥ औरहुवरहेतैंतेऊजियकेसाथचलाच
लेभए ॥ उत्प्रेक्षाअलंकार ॥ जोनाइकाकीउक्तिसषीसोंहेतौप्रोषित
पतिकाजोनाइकसोंउक्तिहोइतौमैंतोपूर्वानुरागजोनाइकाकी
उक्तिहोइतौ ॥ उत्प्रेक्षालंकार ॥ जहकीजतिसंभावना ॥ मूलःदोहा ॥
कैसैंनेहकागरहियाभयोलषाइमटौक ॥ बिरहतच्योउघरोसुअवःसे
हुंडकैसोआक ॥ इहनाइकाप्रोषितपतिकासषीकौवचनसषीसोंनाइकको
वचनसषीसोंसंभवै ॥ सवैया ॥ जोलोसमीपरह्योहरितोलगिमैंअपनोम
नभायोकह्योई ॥ काहूलष्योयहभेदनजीयकौजदपिहैंसभभौनमह्यो
ई ॥ नेहछुतोइहमोहियकागरकौनहुभांतिनजान्योभयोई ॥ सोरुडकोसो
लिषाउअलीबिरहागिनचेअवतोउघर्योई ॥ टीका ॥ सषीकोवचनसषी
सों ॥ छलनाकहियेछिप्योजोनेहकहियेप्रीति ॥ सोहियोजोहैसोईभयोः
कागदुतामेंटांकोमाजदिषाइनाहईं ॥ सोप्रीतिबिरहकेनचेते ॥ सेहुंडकेद
धकेआककेसमानउघरोकहियेषलो ॥ इसकोयहमतलवहै ॥ किछ्ः
हीकेदूधकोअक्षरलचायेतेप्रगटहोतुहै ॥ तैसेंबिरहसौंप्रीतिप्रगटीहै ॥
उपमाअलंकार ॥ सषीकीउक्तिजोइनाइकामध्याहोइतौप्रोषितपतिकाजे
परकीयाहोइतौपूर्वानुरागभावकोव्यक्तिहुसैहैयहदोष ॥ टांकपदला
क्षिनिकहैउपमाअलंकार ॥ उपमाअरुउपमेयसाधारनवाचकहोइ ॥ ।
एचारयोंपरएजिहांधरनउपमासोइ ॥ २९ ॥ मूलदोहा ॥ नयेबिरहवहती
विथाःषरीबिकलजियबाल ॥ बिलषीदेषिपरोसिनीःहरषिहसीतिह
काल ॥ यहनाइकाअन्यसंभोगिनदुषितायवनोनाइकघासोहिननाहीकरे
तोतेविकलहै ॥ हसैरपरोसनप्रसन्नदेषीनवषरीविलषीअरुनाइकायाकोपरो
सिनिसैंभरुहुतैसुवकहेतोबिलषीदेषि ॥ सवैया ॥ वालमकोहितआनवधू ।

सो रैन कहूं चरपकु त्तुरी है ॥ नाइ घवालमै है जिय माकुल स्याम घरी कनका
नकरी है ॥ वाही विथा स्रुति डाही सो डोलति ताही वियोग की गाढ परी है
त्यौ बिलषी सगनैनी वरी पैपरोसिनि कौं लषि मोद भरी है ॥ टीका ॥ सषी
कौ वचन सषी प्रती ॥ नयविरह की वाही जो विथा ॥ तासौं वाल वकहिये ना
यका ॥ सो घरी व्याकुल भई ॥ परोसनि कौ विलषो देषिकै ॥ नायका निस
हौ समै मैं हसी ॥ इस कौ यह मतलव है ॥ कि परोसनि कौ नायक साथ प्री
ति जानि कै हसी ॥ विभावना अलंकार ॥ सषी की उक्ति सषी सौं नाइका प्रो
षितपतिका ईर्षा तें हर्ष हुया को गुन भला अंगिकार है ॥ मध्यम काव्य स्व
कीया परकीया को संकर ॥ विभावना अलंकार ॥ काहु कारन तें जिहं का
जि रूह विरुद्ध ॥ पचंधउ भेद विभावना ॥ को भाषत मति शुद्ध ॥ २८ ॥ मूल
दोहा ॥ कर कै मीडे कुसमलौ गई विरह कुमिलाई ॥ सदा समीपनि सषिन
हू नीठि पिछानी जाई ॥ इह नाइका प्रोषितपतिका सषी कौ वचन नाइका सौं
सषी सषी हैं सौं वाहै नो संभवै ॥ कवित्त ॥ प्यारे नैं दनंदन निहारे विछुरे नेमो
पै कहन वनैन जैसी भई वाकी गति है ॥ आली जे रहति निसवासर समीप
तिनहू पै परह चानी वहनीठि नपरति है ॥ त्रासते पियास जै वोछाडु पाप ॥
सुवा विनहू पै मान मदन कु नासन परति है ॥ कोमल कुसम सालो नामी ॥
डाकर वरस्रति ऐसेऊ मिलाइ मरकाइ गाई रुति है ॥ टीका ॥ सषी कौ व
चन सषी प्रती ॥ कैं नायक के सषा प्रती ॥ हाथ के मीडे जैसे फूल कमला
तु है ॥ तैसैं नायका विरह सो कुमिलानी ॥ सर्वदा समीप की सषी तिन ॥
सौं नीठि करि पेछाणी ॥ कुरि कैं पै हवा मीजाति है ॥ उपमा अलंकार ॥ स
षी कौ उक्ति सषी सौं होइ तो प्रोषितपतिका नाइका सौं होइ तो स्वांनुवाग
है ॥ माधि दषान्य सुंनिधिमें स्वगि उपमा अलंकार ॥ उपमा अरु उपमे
य ॥ साधारन वाचक होइ ॥ एचारयो पद एज्जिहां वरन उपमा सोइ ॥ २९ ॥ मू
ल दोहा ॥ मरी डरी कि टरी विथा कहा षरी चलि चाहि ॥ रही कराहि क
राहि अति अव मुष आहि न आहि ॥ उह नाइका प्रोषितपतिका व्याधि ।

प्रवस्थासखीसोवचनसखीसोंजोमननाइवसोंकहेसोविरहनिवदनजा
नियो॥सवैया॥ऐसिकोछुटिविदेसगयोहरिजोकवहूंविछुरीनहुतीरहै॥
न्हायइहैरहलाइरहीनलपैजलहीनमनोसफरीरहै॥बोलवियोगव
न्नागिभरीतेवकराहिनवपोंअवहीविसरीरहै॥पीरहीकिपरीरहैमरीव
लिटेपिअनीकहांहूरिपरीरहै॥टीका॥सखीकोउक्तिसखीप्रती॥नाथ
कामविगाइहै॥केविछाहहरिभइहै॥नेकहावैठीहै॥औरनंदलालिकेरे
घुः॥वहलायकाकीकराहघाराहिगयोहै॥औरअवलायकाकेमुषमें
आहिआहिनहीरहीहै॥इसकोयहमतलवहै॥कीनाइकाआछीभं
ईहै॥केमरिगईहै॥विरोधाभासअलंकार॥सखीकोउक्तिसखीसोंप्रोषि
नपतिकानाइकाव्याधिदसा॥अनुप्रासविरोधाभासकीसंसृष्टि॥
वीचनूपैयेपदजहां॥अच्छरसमनाहेछ॥सोहुअनुप्रासहे॥कहूनस
यानेलाइ॥जिहिथलपाहूविरोधहै॥अर्थमाफलविरोध॥सहूविरो
धाभासकहिं॥जोहोयेप्रवोध॥२२॥मूल॥दोहा॥याकेउरऔरेकछू:
लगीविरहकीलाइ॥पजरैनीरगुलावके॥पियकीवातवुझाइ॥यहना
इकाकीअवस्थासखीसखीसोंकहतिहै॥सवैया॥वामनभावनको।
विछुरेकविहासकहेउपजीजुविथाहै॥सोविरहानलमेंवरतीन
रतीकहुनाहिउपाइरहाहै॥सोचियेज्योंहिज्योंनीरगुलावसोंत्यों।
त्योंघरीपजरेउवढाहै॥याहीतेसीरीलहैनवहीजवहीकोऊप्यां।
रेकोनाउंसुनाहै॥

पयत्राभीभुलीरहु गादोरहे टीकातीकाहै

महीतनया	सीता
सुन्दरता	सुंदर
नसाई	नस्य
रवीबार	सूर्य
मारग	रसता
भेजा	चाहे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

82

विना·
८२



CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

टीका॥ सषीकी उक्ति सषी प्रती॥ या नायका के उरमैं॥ औरै कछु कौ
विरह को लाइक हियें आगि सो लगी है॥ गुलाब के पानी सों पजरै है॥।
औ र पिय की बातन सों बुझति है॥ बातन ही मैं है हु जानियें॥ इसको यह
मतलब है॥ कि औ रस्सा गपानी पैं है रु झति है॥ औ रल गे प्रज्वलि त हो
ति है॥ ताते यह औरि ही आगि है॥ भेदकातिसयोक्ति श्लेषा अलंकार को संक
र॥ सषी की उक्ति सषी सौं नाइका प्रोषितपतिका भेदकातिसयोक्ति श्ले
ष को संकर है॥ औरै यह पद दीजीयै अधिकाई को हेत॥ अतिसयोक्ति
भेद यह कहै॥ कहत सुकवि मतिधीर॥।॥ पकरालू के अर्थ जहु भासत
आइ अनेक॥ सब्द श्लेष तं कहत हैं॥ जिनके बुद्धि विवेक॥२३॥ मूल दो
हा॥ नवजीवन के सथ कौ जिये नवल वधू कहि जाहि॥ आषिन अं षिल
गी रहैं अंषै लागति नाहि॥ यह एक वानगवनाहुकाम्रपघवानाइकसषी
सौं अपवात कहै है॥ सवैया॥ यह प्रीतकी रीत अनोषी लषी कछु जानि न
जाति कहा गति है॥ चितवाह की चौंप चढ़ीयै रहै अरु प्रेम वियोग उपा
गति है॥ तिन आंषिन सों वे ह्यां आंषि लगी रहै आंषिन के सं है लागति है।
नव हीजीव वै सुधि की जति है नव है भ्रम है की सुधि भाजति है॥ टीका॥
नायका कौ वचन सषी प्रती॥ नवजीवन वहु नायक या हि करि यतु है॥ नवल वधू या
हि भलति है॥ मेरी आंषिन सौं नायक की आंषै लगीरहति है॥ औ र मेरी आंषैं
लागति नहीं है॥ इसको यह मतलब है॥ कौ नीदन ही परति है॥ विरोधाभास
अलंकार॥ सूतिनाइ सदा नाइका की उक्ति होइ तो प्रोषितपतिका जो नाइक
की उक्ति होइ तौ पुरुष वियोगना है विरोधाभास ण॥ जिहिं थल पाहू विरोध
है॥ अर्थ मांफन विरोध पाहू विरोधाभास कहि॥ जो लियै प्रबोध॥२४॥ मू
ल दोहा॥ जो छुन ही यह न मव है: कि यो जु जगत निकेत॥ होत उदो ससि के
भयो: मानो ससि हर सेत॥ यह चाहनी वर्नन वियोगी कौ वचन कवि हू की
उक्ति होइ॥ सवैया॥ हरि विंयो अधरूप धमैं धर अंत व लो जिहि दिंक ठयो है॥।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जाहि त्रिलोकि विषै गीइ रैअनुरागिनको मनु मोह भयो है ॥ हो इनको
रूवदैनम हैयहजानै सबै जग छाइ लयो है ॥ हो नुउदोत लख्यो सखि को
नहिं नेकामसोन तुसे नुभायो है ॥ टीका ॥ सखीको वचन सखीप्रती ॥ अथ
वा कविको वचन ॥ यह जो रूकहिये चांदनी सो न होहै ॥ वहैतम कहिये
अंधकार सो है ॥ जिस अंधकारनें जगतविषें ॥ तिकेतक हिये ध्यानकि
यो है ॥ सो मानो चंद्रमाको उदयभएते ॥ ससिहूर कहिये डरि कै सेत भयो
है ॥ उत्प्रेक्षाअलंकार ॥ २५ ॥

मूलदोहा ॥ कौंन सुनें कासों कहौं सुरति बिसारी नाह ॥ बदाबदी जि
यलेत हैं ए बदरा बदिराह ॥ उत्तमा उ का प्रोषितपतिका विरहनी दसअव
स्थानके भेदमें चिंता नायिका नायकाको वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ कासों
कहौं कौन यह जानै दुख अंमर की सुरति बिसारी है पै सुबकारी नाह री
ऐसे परबस जौन मानै वे ए हू मानलेत बदाबदी बदरा निपट बहराह री
अंग हेत बिकल अनंग मनलाय मरैं स्वेद निहारति उसहति चित चा
हरी ॥ कल मान प्यारे को उपाई न हुहा इकहू बरसत नैनन नैंसलिल
प्रवाह री ॥ टीका ॥ नाइकाको वचन सखीप्रती ॥ मेरी बात कों कौनु सु
नें अोर मैं कासों कहौं ॥ नाह कहिये नायक तिसनें मेरी सुरति कहिये
याद ॥ सो बिसारी कहे भुलाई है ॥ ए बदराह जे बादर ते ॥ बदाबदी कहि
ये जोरावरी ॥ मेरे जी कौं लेत है ॥ यमकालंकार ॥ प्रोषितपतिका
नाइकाकी उक्ति सखीसों ॥ उद्वेगदसा यमकालंकार ॥ जहां बदी॰

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पटघुलिपरे॥ अर्थश्रोरदीहोह॥ निहाजमककालकारहै॥ भाषनपडि
लेगा॥ २६॥ मूलदोहा॥ औरेंभांतिबणभयेचौसरचंदनचंद॥ पति
बिनुअतिपावतविपति: मारतमारुतमंद॥ इहनाइकाप्रोषितपति
कादसअवस्थानकेभेदमेंउद्वेगजानिये॥ कबित्त॥ बैसेंमृहिनकरिअवसे
सीबिसराईनिठुराईवाकन्हाईकीकहतनवनतिहै॥ जेईहैसुषदअवते
ईभएदुषदाईअवकहाकहेंमाईअकुलाईअतिहै॥ चंदनसरोजचंदचौ
सरसिवाररवाहंचंपकहूंचंद्रिकाकीऔरैंभईगतिहै॥ भयोनिरदईमंदु
मारुतहूमारतहेंप्रानपतिबिनआकुलाइमेरीमतिहै॥ टीका॥ नाइका
कोवचनसषीसों॥ चकहियेअवप॥ चौसरकहियेहार॥ औरचंदनऔ
रचंद॥ एसोकोऔरेंभांतिभएहै॥ पतिबिनअतिविपतिकोपावतकहि
येपावतहै॥ औरमंदजोमारुतपवनसोमारतुहै॥ भेदकातिश्रयोक्तिज
मकाअलंकारकोसंकर॥ प्रोषितपतिकानाइकासषीसोंभेदकातिश
योक्तिजमककोसंसृष्टि॥ २७॥ मूलदोहा॥ नेकुनकरसीविरहकरनेह
लताकुम्हिलाति॥ नितप्रतिहोतिहरीहरी: षरीकालरतिजाति॥ इहना
इकाप्रोषितपतिकाकीअवस्थासषीसषीसोंकहै॥ सवैया॥ पैसीदसा
लषिहैंअकुलातिहिनेउपचारविचारिषकीरी॥ अंननवालैविलोचन
हेंवरीदैहनेहामितिदिनेछिनपीरी॥ यातेहियेंककुऔरैंअनोषीसियागुला
सनज्वालललगीरी॥ नीरगुलावकेहूनीचरैपियप्यारेकीवातहरीहोतिहै
सीरी॥ टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ विरहकीकरसोंकरसीजोनेह
लताकहियेप्रीतिकीलता॥ सोनेकुनहोकुम्हिलातिहै॥ यहअदभुत
रसहै॥ नितप्रतीनेहलताहरीहरीहोतिहै॥ औरषरीकालरतिजाति
है॥ अथवानेकुनहीविरहकीकरसोंकरसीहै॥ इसकोयहमतलवहै
कीवहुतकरसीहै॥ याहीतेंनेहलताकहियेनाइका॥ सोकुम्हिलातिहै
नितप्रतीहरीहरीकहतिरहतिहै॥ औरषरीकहियेसंताप्सोवहतु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

84

मिल
२५

जातुहै॥ अरु याविरहकेडरसौंमैंकौनहीकरमीहै॥ इसकोयहमतलब
वहै॥ किनाइकानायकउदेनहीभयहै॥ याहीतैंप्रीतिकोलताफाल
रतिजातिहै॥ नेहलतानितप्रतिहरीहरीहोतिजातिहै॥ औरबरीव
हतिजातिहै॥ इसअरथमैंसंजोगसिंगारजानिये॥ विसेषोक्तिअलंकार॥
सखीकीउक्ति सखीसौंआस्चर्यसंचारीकरिनाइकाप्रोषितपतिकास्थान
स्यपरहूघणविशेषोक्तिरूपकअलंकार॥ उपमानरउपमेयमैं॥ भेद
परैनलखाइ॥ तासौंरूपककहतुहै सकलसुकविसमुदाय॥ सबका
रनकाजनसौंउक्ति विशेषसुहोयेधरै॥ मूलदोहा॥ २८॥ जहविन
समनताषिकै: जगतवडोजसलेहु॥ जरीविषमज्वरजातिहै: आइसुदर
सनदेहु॥ इहनाइकाप्रोषितपतिकाव्याधिअवस्थासखीकोवचननाइ
कसौं॥ कवित्त॥ जरीहै विषमज्वरगिरीहै अचेतवह धिरीहै चहूंघाव्या
धिवृंदनमैंपूरीये॥ कंचनसेतनुकोअतनुहूघावावरतुहैरतनउघारिये
जतनुहरवारीये॥ औसीगतिदेखेहोतमतिहीपरेखेनेरेनाहिककुलेख
इहिसोचअवसारिये॥ लीजियेजगतजसकोजीयेधरमयहदीजिये
सुदरसनवाकोनापुहरीये॥ टीका॥ सखीकोवचननायकप्रती॥ जह
विनसतकाहियेविनासकोप्राप्तहोतजोनगताकोताषिजगतमैंवडो
जसलेहु॥ विषमज्वरसौंजरीजोनायका॥ ताकोतुमअपनोदरसनदेहु॥
जैसैंविषमज्वरकोसुदरसनचूरनदीजैहै॥ तैसेंतुमदरसनदेहु॥ श्लेषा
अलंकार॥ सखीकोसंदेसनाइकप्रतिनाइकाप्रोषितपतिकाश्लेषाअ
लंकार॥ एकपदहूंपैअरथजहभासतआइअनेकपदहूश्लेषसोकहतहै
जिनकीवुधिअनेक॥ २९॥ मूलदोहा॥ तितसंमोहसोवचन: मनोमोहइ
हिअनुमान॥ विरहअगनिलायरनसकै: कमलनिमीचुहचान॥ इहना
इकाप्रोषितपतिकासखीकोवचनसखीसौंजोनाइकासौंकहैतोविरहनि
वेदनरूप॥ कवित्त॥ जबहीतैविछुरेमनमोहनप्यारेवालनिपटबीन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

करीयैमदनमतनाइकै॥ सबंदीकेरहनहियेमैंयहीसंसोवहरेसोअव
लगिकैसैंरह्योहहराइकै॥ जानियतुयहीअनुमानताकेवचिवेकोआ
निपचिराहेसोअनगाननउपाइकै॥ विषमलपटलषिविरहकुलास
नकीकहपटिनसकनुसिचानमीचुआइकै॥ टीका॥ सषीकोवचनसषी
प्रती॥ तिनसंसोकहियेसंदेहहै॥ इसकहियेजीवकैआकहसंपकोसो
मानोंइसअनुमानसैंवचन॥ विरहकीआगिकीजेलपटैंतिनसैं।
मीचुजोहैसोईभयोसचानकहियेवाज॥ सोजपटिनहीसकतुहै॥
उत्प्रेक्षाअलंकार॥ सषीकीउक्तिविनर्विसंचारी॥ सषीसैंनाइकाप्रोषि
तपतिकाउत्प्रेक्षाअलंकार॥ जहकीजतिसंभावना॥ वस्तहेतुफल
मधितीनभांतिउत्प्रेक्षावरननसुमतिप्रसिद्धि॥ २॥ मूलः दोहा॥ क
रीविरहऐसीतऊ गैलनछोडतनीचु॥ दीनेहूचसमाचषनिःचाहै।
लहैनमीचु॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकासषीकोवचननाइकासोंविरह
निवेदनअनुभवहसषीसोंकहै॥ सवैया॥ काहूकहाकहौंकोनसुषीकोनि
हारैवियोगकीतापसहावति॥ हैतिखरोइवरीषिनदेषहूतानअलीक
लपावति॥ ऐसीकरीतऊगैलनछाडतऐसोकहाकहीयकहनावति
देषतआंषिनदेचसमातऊहूहेहूमीचुकीडीठिनआवति॥ टीका॥ स
षीकोवचनसषीप्रती॥ विरहनेनायकायैसीछीनकरीहै॥ ताहूपैनी
चजोमीचुसोगैलकहियेवाटनाकोनहीछोडतुहै॥ ससुआपनेहूग
कहियेनेत्रतामेंचसमादएचाहतिहै॥ पैलहैकहियेदेषतिनहीहै
अनुज्ञाअलंकार॥ सषीकीउक्तिहैनभावकरिसषीसोंकहेइतोना।
इकाप्रोषितपतिकाजोनाइकसोंउक्तिहोइतोइहतलवकारिनाइका।
केसर्वानुवागतेंविरहजुभयोहैसोनिवेदनकरतिहै॥ अनुज्ञाअलं।
कार॥ मूलः दोहा॥ मरनभलोवरविरहतैंः यहविचारिजियजोइ
मरनमिटैदुषएककोः विरहदुहूंदुषहोइ॥ यहनाइकाप्रोषितपति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कासषीकोवचनसषीसोंव्याधिअवस्थाजानियें॥सवैया॥नेक
हीकेविछुरेंसवहीसुषसाजभएदुषदाइकभारे॥नैननुनीरकरी
वरसेंनरसौंजियराविनुप्रानपियारे॥आलीवियोगविथावरिवे
तेंभलोमरिवोमनमान्योहमारे॥एकवौदुषमरैमिटिजातुवि
योगमैंहोतहैंदोऊदुषारे॥टीका॥सषीकोवचनसषीप्रती॥विर
हतेंमरनुभलोवरकहियेउतमहै॥इसवातकोविचारिकेनियम
देषो॥मरेतेंएकवाकोदुषमिटतुहै॥विरहतैंदोऊकौंदुषहोतुहै॥ले
षालंकार॥प्रोषितपतिकानाइकाकीउक्तिविषादसंचारिलेषा
अलंकार॥जहांदोषमैंकीजीयेगुनकल्पनतासुविशेषकेगुनमैं
वहराइयें॥दोसज्ञानोलेष॥३२॥मूलदोहा॥औधाईसीसीसुल
षि:विरहवरतिविललातु॥वीचहिंसूषिगुलावगौछीटौहुछी
नगात॥छद नाइकाप्रोषितपतिकासषीकोवचननाइकासोंसषी
हिसोंकहैतोवनें॥सवैया॥वालवधूमनमोहनसोंविछुरेविलषीउ
षंदहनवाई॥नीरविनासफरीज्यौंपरीतलपेवहुभांतिवियोगदवा
ई॥सीतलजानिसषीकरुनाकरिसीसतेंसीसीगुलावकीनाई॥
वीचहिंनीरविलाइगयोसबुएकहुछींटनआगलौआई॥टीका॥
सषीकोवचनसषीप्रती॥कैनायकप्रती॥विरहकीजरनिसेंवि
ललातकहियेविलापकरतुगुलावकीसीसीऔधाईकहियेउ
री॥सोगुलावुवीचुहीसूषिगयो॥गुलावकीछीटोगातमैंनहीं
छुहीगई॥अत्युक्तिअलंकार॥सषीकीउक्तिसषीसोंनाइकाप्रो
षितपतिकाव्याधिदसाअत्युक्तिअलंकार॥अत्युक्तियहवरनन
अतिशयरूप॥३३॥मूलदोहा॥हौंहींवौरीविरहवस:कैवौ
रौसवगाम॥कहाजानियेंकहतहैं:ससिहिसीतकरनाम॥छद
नाइकाप्रोषितपतिकाउद्वेगदसाजानियेसषीकोवचनसषीसों

कवित्त ॥ ऊंभ जहुं अचयो सुपचयो नपाहौ नैं उगिलि डारयो नमहूं
इरषिविषकंदसौ ॥ देषि अबलानिकौ बलैकौ लै चढायो सीसहू
सकहु राजानि दिनकौ नाम निमंदसौ ॥ कैधौ सबही कौ मति मंद
भई मेरी आली कैधौ हौंही बौरी भई बिरहके दंदसौ ॥ देषि पतुपा
वकनें विरहबिसेषबसमीतनककाहेनें कहत ऐसें चंदसौ ॥ टी
का ॥ नाइकाकौ बचन सषीसनौ ॥ बिरहकै बहाकरिकै हौं इरीहौं
कैसि रैगाउबाउरीहै ॥ कहुजानि कैं पगाउकैलोगसमीकहिये
चंद्रमाकौ सीतकरना उकहनहैं ॥ संदेहाअलंकार ॥ प्रोषित
पतिकानाइकाकी उक्ति उद्वेगदसामैं संदेहालंकार ॥ हेत जहा संदे
हजहसो संदेहबषान ॥ ३७ ॥ मलहोहा ॥ सोवत जागत सुपनव
सः रसरिसचैन कुचैन ॥ सुरति स्यामघनकी सुरतिः बिसरैंहू वि
सरैं न ॥ इहूनइकाअपनेचित्तकी प्रीति सषीसों उकहति है इस
अवस्थानके भेदमैं स्वनिजानीयें ॥ कवित्त ॥ कहुंन सुहात निसयो
सनविहातनवैसोअं कहाकहौं बालन परवस परेमन कौ ॥ सोवतहूं
जागतहूं सपनेहूं जिततितचाहि रहै चित्रवदिवानि प्रीतिपन कौ
रसहूमैं रिसहूमैं चैन हूं अचैनहूं मैं कौन मैं कौन मैं वगरहूमैं बाट
हूमैं बनकी ॥ भूलतिसुरतनिजतनहूं कौ नाहं वहभूलतिन केसंहूं
सुरतिस्यामघनकी ॥ टीका ॥ नायकाकौ बचन सषीसनौ ॥ सोवन
मैं जागतमैं सपनेमैं रसमैं रिसमैं चैनमैं कुचैनमैं ॥ स्यामघनकी ह
ये प्रीतमलालाकी सुरतिकहिये भली प्रीतिताकी सुरतिकहिये
याहि सो विसरैहूं भुलायहूं भूलतिन हीं है ॥ विसेषोक्ति अलंकार
सषीकी उक्ति सषी सौं नाइका प्रोषितपतिका सुरतिदसा विसेषो
क्ति अलंकार है सब कारनकाज न सरै ॥ उक्ति विसेष सुकहिये धरै ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

86

बिहा.
८६

३५॥ मूल: सोरठा॥ कौड़ा आंसू बूंद: कसि सांकर बरुनी सजल॥ कीने
वदन निमूंद: दृग मलंग डारे रहत॥ दूलनाइक कौ देषि नाइका कौ नै
त्र विवस भये हैं॥ आंसून पवनु है मंदि रहतु है सु सषी सौं कहति है॥ सवै
या॥ नैंन बतै तुष भौंन मनु नाह रिके दृगन के कनिका बिहुरे हैं॥ बैन बनै
न हलैं न चलैं रहैं वाही चितौनि की चाह भरे हैं॥ कौड़ा की बेन्नु
बानि कौ बूंद जंजीर बड़ी बरुनी जक रै हैं॥ नेक अबै उनकी सुधि लेहु
मलिंग मनो तुरत टपरे हैं॥ टीका॥ सषी कौ वचन सषी प्रती॥ आंस
के बूंद हैं ते ई कौड़ा हैं॥ और सजल जो वरुनी सो ई भई सांकर॥ ता कौ
कसे हैं दृग कहिये नेत्र॥ ते ई भए मलंग कहूं फकीर॥ ते परे रहत है॥ ।
तिन वदन कहिये मुष सो नमूंद कहिये जाहर कियो है॥ रूपकालं
कार॥ सषी की उक्ति सषी सौं नाइका प्रोषितपतिका अथवा नाइका की उ
क्ति॥ रूपकालंकार उपमान रु उपमेय मैं भेद परै न लषाइ॥ ता सौं रूप
क कहत है सकल सुकवि समुदाय॥ ३६॥ मूल दोहा॥ जिहि निदाघ दुप
हर समै भई: माह की राति॥ तिहि उसीर की रावटी: षरी आवटी जाति॥ दू
ती नाइका प्रोषितपतिका विरह निवेदनु सषी कौ वचन नाइक सौं सषी कौ
वचन सषी हैं सो कहै॥ सवैया॥ लाल तिहारे वियोग तें बाल बिहाल ब
रीत लपै सपरी सी॥ बातन तापके जासन तें सषी कौ उतजाइ कहै निय
री सी॥ दूरे जेठ की ज्वाल निमें जहां जाड़े की राति तिलग्यारभरी सी॥ ता हि
उसीर के धाम मैं बाम सुजाड़े की राति मैं जाति बरी सी॥ टीका॥ सषी
कौ वचन सषी प्रती॥ जिस राउटी बिषैं निदाय कहिये ग्रीषम रितु॥ ता
की दुपहरी माह की राति भई रहति है॥ ता उसीर की राउटी मैं नाइका ष
री औटि जाति है॥ पर्जायोक्ति अलंकार॥ सषी की उक्ति सषी सौं नाइ
का प्रोषितपतिका व्याधि दसा पर्यायोक्ति अलंकार पर्यायोक्ति प्रकार

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

है ॥ कछु रचना सौं बात न मिलि कहि कारिज कीजीये ॥ जैसैं चित्र तुराय
३७ ॥ मूल दोहा ॥ नचौ आंच अति विरह की : रह्यौ प्रेम रस भीजि ॥ नैं
ननि के मग जल वहै : हियौ पसीजि पसीजि ॥ कृष्ण सखा वचन वीउनकी
विरह वरनन नायका को अथवा नायका सखी सौं कहै सखी सखी सौं कहै ॥
सवैया ॥ जा दिन तैं वृजनागरि को मनु नंद किसोर के नेह नयौ है ॥ ता
दिन ते दिन रैंन रैं अवतानि को यह भेद लख्यौ है ॥ आंच न चैं विरहान
ल की हिन के रस मैं अति भीजि रह्यौ है ॥ तातैं पसीजि पसीजि हियौ विवनै
ननि के मग नीर वह्यौ है ॥ टीका ॥ सखी को वचन सखी सौं ॥ अति विर
ह की आंच सौं न चौं कहिये नास भयौ है ॥ और प्रेम के रस सौं भीजि र
ह्यौ है ॥ यैसौ हियौ पसीजि पसीजि के ॥ मानौं आंषिन के मारग है कै ॥ व
ह्यौ जातु है ॥ उत्प्रेक्षा अलंकार ॥ नायका की उक्ति के सखी की उक्ति
सखी सौं चित के संचारी करि प्रोषित पतिका ॥ उत्प्रेक्षा ० ॥ लषन को जति
संभावना वस्तु हेतु फल मधि ० ॥ ३८ ॥ मूल दोहा ॥ गोपिन के अंसु
वनि सदा रहे अमास अपार ॥ डगर डगर नैं है रही : वगर वगर के वार ॥ प
रदेस गये नायक को विरह निवेदन ऊधो वचन श्रीकृष्ण सौं सखी को वचन
सखी सौं ॥ सवैया ॥ श्री जदुनाथ तिहारे वियोग कलीन परे ब्रज को
जु दसा है ॥ गोपिन के दृगयों वरसैं सरसैं अँसुवानि तें नीर अगाध है ॥ गो
लगली सब वरि कै भरि नदी वहि के तिन्ह अपार अथाह है ॥ देषत धीव्रज
कौन धरै हरि वांह गहै तिन को अब गाहै ॥ टीका ॥ सखी को वचन ना
यक प्रति ॥ सदा अपार कहिये जिस को पार नहीं ॥ यैसो अंब सो मक
हिये अमासु ॥ तातैं गोपिन के आंसुन सौं भरी है ॥ डगर डगर कहिये
मग मग विषैं ॥ वगर वगर के द्वारे मैं नै कहिये नदी है रही है ॥ लक्षणामूला
अलंकार ॥ ऊधो की उक्ति हरि प्रति प्रोषित पतिका जे है गोपी तिन को
विरह निवेदन ॥ लक्षणामूला ० ॥ ३९ ॥ मूल दोहा ॥ स्याम सुरति करि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

87

विहा. ८०

राधिकाः तरनितनूजानीर ॥ घनहवनिकरनितैंरोसकैंः बिलकुवरी
हैतीर ॥ इहनाइकाप्रोषितपतिकाइसअवस्थाभेदमेंस्तनिजानीये
सखीकोवचनसखीसों ॥ सवैया ॥ श्रीमनभावनकेबिछुरेवृषभान
सुताअतिहीअकुलानी ॥ भोजनभौनसखीनसहाइसुहाइनिसीन
सिवासुरवानी ॥ सुरसुतादिनिहारिरहीउनहारिकहूहरिकीपर
छानी ॥ आंसुनकेपरवाहवहोबिनपंकभयोहोतरोसकोपानी
टीका ॥ सखीकोवचनसखीप्रती ॥ स्यामकहियेश्रीकृस्नताकीसुरति
कहियेजमुना ॥ ताकेतीरकहियेकिनारेविषैं ॥ आंसुनिसोंतरोसकै
हियेनीचेकोनीरकहियेपानी ॥ ताकोघरोहोकहियेगरमकरतिहै ॥
अथवाधरोहोकहियेपानीकरतिहै ॥ इसकोयहमतलबहै ॥ किआं
सुनकौपानीगरमहोतहै ॥ औरखारोहोतहै ॥ उत्प्रेक्षाअलंकार ॥
सखीकीउक्तिसखीसों ॥ प्रोषितपतिकानाइकाकैंस्मृतिविषादसंचारी
उत्प्रेक्षाअलंकार ॥ जहकीजतिसंभावना ॥ ४० ॥ मूलःदोहा: ॥ रचोपैं
चिअंसुनलखोअवधिदुसासनवीर ॥ आलीबाढतविरहयोंः पंचाली
केचीर ॥ इहनाइकाप्रोषितपतिकाप्रौढानाइकाकोवचनसखीसों ॥ सवै
या ॥ बेनुपरैनहीयेसैंदहैदिननैननमाझरहैजलछायो ॥ भावैनभो
जनसोधौसहाइनहूहियोपरितापतचायो ॥ ऐंचतस्रोदिदुसासन
चीरजऊवसुधैनऊअंतनपायो ॥ वाहरिकेबिछुरेविरहाअवद्रोपदीके
पटज्योंअधिकायो ॥ टीका ॥ सखीकोवचनकैनाइकाकोवचनसखीप्रती
अवधिजोहैसोईदुसासनवीरभयोसोबैंचिरह्योअंतकहियेछोरसो
नहीपायो ॥ आलीसंबोधनहै ॥ विरहद्रोपदीकेचीरलोंबाढतुहै ॥ रू
पकउपमाअलंकार ॥ प्रोषितपतिकानाइकाकीउक्तिसखीसोंरूपक
उपमाकोसंकर ॥ उपनउपमेयमें ॥ भेदुपरैंनलखाइ ॥ तासोंरूपकक
हतुहै ॥ सकलसुकविसमुदाय ॥ १ ॥ उपमाअरुउपमेयसाधारनवा

वकहोइ॥ एकवारकैंपदपजिहैं॥ दूरनउपमासोइ॥ ४१॥ मूल॥ दोहा॥ गग्न
नीगनिवैनेरहै॥ दुनहल्यक्षनसमान॥ अवअलिपतिथिआमलैः परेर
हैननमान॥ इहनाइकाप्रोषितपतिकानाइकाकौवचनसषीसैं
लैहेरा॥ देषिरीकैसीकरीमनभावनऐसीघोवाहिकहावनिआई॥ औ
धिहूवीतिगईनलईसुधिएतीधरौउरमैंनिठुराई॥ गाननतीगनिवेनेर
हैनभएसेभयेविनवासुबदाई॥ एतिथिआमलयेहकेहेमलैंआनप
रेननमेंरहेमाई॥ टीका॥ नाइकाकोवचनसषीप्रती॥ गननतीकेगनिवेते
रहैहैं॥ औरछिंयाइकोसंबोधनहै॥ अबएमानदेहविषे॥ अबआमतिथि
लैंपरेरहे॥ उपमाअलंकार॥ प्रोषितपतिकानाइकाकीउक्तिसषी
सैंविषादसंचारीहर्षउपमाअलंकार॥ उपमाअरुउपमेय॥ साधारन
वाचकहोइ॥ एकवारकैंपदपजिहैं॥ दूरनउपमासोइ॥ ४२॥ मूल॥ दोहा
मारनुमारकरीषरीः मरीमरीदिननारि॥ सीचितुलावचरीचरीः चरीव१
रीहिनवारि॥ इहनाइकाप्रोषितपतिकाउद्वेगदसानाइकाकौवचनस
षीसौंअंतरगतसषीसषीसेंबोरूलैचलै॥ कवित्त॥ बालमवियोगतें१
विवालअतिआनकहुतरहतनआनवनेइषहीकोहाउरी॥ औरउपचारक
रिमारिमारिनमरिकैजोरहीहैंतोहूसमानप्यारेविनलाउरी॥ चरीचरी
सीचितितुलावकेमलिलसोंनूकियाकहाचाहतिहैमोहूधोवनाउरी॥
मरीमरीरहीपरीमारीमारकीडरीहै विरहागनिपैअबवारिजितवाउरी॥
टीका॥ नाइकाकोवचनकैसषीकोवचनसषीप्रती॥ मारकहिएकाम
देव॥ ताषरीमारकरी॥ औरमरिमरिरहीजोनाइका॥ ताकोमतिमारनु१
लावसें॥ चरीचरीमैसीचिवैजरीजरीरहीहै॥ ताकोमतिमारह॥ विरो
धाभासअलंकार॥ सषीकीउक्तिसषीसौंप्रोषितपतिकानाइकाके
व्याधिसंचारीउद्वेगदसा॥ अर्थविरोधाभासलाटानुप्रासकीसंसृष्टि॥ १
भासैअर्थविरोधजहू॥ सहूमांजनविरोधअर्थविरोधाभासजहू॥ वर्नत
हैबुधबोध॥ १॥ कहीअरथपदफिरफिरै॥ भिन्नभाउकछुहोइ॥ सोलाटानु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रासहै॥ कहत सयाने लोइ॥ ४३॥ मूल दोहा॥ कागद पर लिषत न ब
नैं, कहत संदेस लजात॥ कहि है सब तेरो हियो, मेरे हिय की बात॥ यह
पत्री नाइका की प्रषवा नाइका की परकिया॥ कवित्त॥ पाती मैं लिषत
कैसें बनति जितौ है चाह सागर कौ सलिल चुरू मैं कैसें कीजिये॥ कह
न संदेसै अति लाज हिये आवै मोहि कीजियै कहा लौं ऐसी ही छिन छिन
छीजिये॥ मनु ऐसो मानस मिले न कोऊ सधियाती जामै सो सम फाइली
कौ भेद कहि दीजियें॥ यातें प्रीति रीति अवदातन मे वेही की बात आपने
हिये तेरी की भांति जानि लीजिये॥ टीका॥ नाइका को वचन सषी प्रती
मो सैं कागद पर लिष्यो नहीं जात है॥ और संदेसो कहत लाज होती
है॥ तातें तेरो हियो मेरे मन की सिगरी बातें कहैगो॥ इसको यह मत
लब है॥ की मेरे हाल कोनी कैं जानति है॥ अतिसयोक्ति अलंकार॥ जो
नाइका की उक्ति होइ दूती प्रति संदेह नाइक कौ तो प्रोषितपतिका जो ना
इक की उक्ति होइ॥ तो पुरुष वियोग॥ अतिसयोक्ति अलंकार॥ औरै यह
पद दीजियै अधिकाई कैं हेत॥ अतिसयोक्ति भेद यक है॥ कहत सु कवि
सिरनैन॥ ४४॥ मूल दोहा॥ जाति मरी बिछुरत घरी, जलसफरी की री
ति॥ षिन षिन होति षरी षरी, अरी जरी वह प्रीति॥ यह नाइका प्रोषितप
तिका है नाइक के वियोग तें षरी व्याकुल है॥ अरु प्रीति निबहाते है सम
षी सो कहै॥ सवैया॥ नैन प्रवातन हो निरषें परषे चित चैनु घुरै न घ
री है॥ व्याकुलई मुर— नपरी न लषी विनती रमनी सफरी है॥ मैं नम
नरविथा चित हो नित ही नित है तिषरी षषरी है॥ जाति मरी छिन वे
छुरें यह प्रीति जरी अरी कौ नैक री है॥ टीका॥ सषी की उक्ति सषी प्र
ती॥ जैसें जल के विछुरें सुफरिक हियें मछरी॥ सो मरती है॥ तैसें नाइका
सो विछुरें तें नाइका॥ घरी मैं मरि जाती है॥ छिन छिन विषें प्रीति षरी
होति॥ अरी संबोधन है॥ तातें जल प्रीति जरी कहिये जरी जाहु॥ इत्यो
नाल अलंकार॥ सषी की उक्ति सषी सों प्रोषितपतिका नाइका जो नाइ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

काकी उक्ति है इहां ॥ आपनी प्रीतिको संभ्रम करति है ॥ दृष्टांत अलं
कार ॥ जहा देषवे मैं कोजीये उनके लिपत है विशेष के उन मै ठहरा
इये ॥ दोष कछु जानी लेष ॥ ७५ ॥ अलंःदोहा ॥ विरह विथा जल परस
बिन ः बसियत मो उर ताल ॥ कछु जानत जल थंभ विधि ः दुरजो
धन लौं लाल ॥ यह नाइका प्रोषितना आपनी अवस्था सषी सों
कहति है ॥ सवैया ॥ श्याम मनमोहन के बिछुरे कलना दिल है कहूं ये
बावरी री ॥ वाढी विथा विरह जल की सु तौ बौरि दियो ज्ञाल मनोज्ञ
करी री ॥ जानत हैं दुरजोधन लौं मनभावन पानि को थंभ धरी री ॥
हे सबकहै यह सो चरहै दिन रैन दहै सु वियोग सही री ॥ टीका ॥ ना
इका को वचन सषी प्रती ॥ कै नायका प्रती ॥ विरह की विथा कहिये
पीर सोई भयो जल ॥ ताके परसे सौं मेरो उर कहिये हृदय ॥ सोई भ
यो ताल कहिये सरोवर ता मैं बसत है ॥ सो मैं जानति हों ॥ कछुक
नाइक दुरजोधन के समान जल थंभ की विधि जानत है ॥ सषी
के साथ कहि नावति सौं नाइका प्रोषितपतिका है ॥ जो लाल संबोध
न कहिये ॥ तौ नायका षंडिता जानिये ॥ उपमारूपकअलंकार ॥ जो
हती ती प्रतीउक्ति है इ नाइका की नाइक कौं संदेसनो प्रोषितपतिका जो
नाइक सों उक्ति है इ तो उपालंभ संचारी एवं अनुराग ह्यो अन्य संनिधिते
जानिये ॥ उपमा रूपक को संकर ॥ उपमा अरु उपमेय ॥ साधारन वाच ।
क होइ ॥ एवा है ते पद एजि ॥ सकल उपमा सोइ ॥ १ ॥ उपमान अरु उपमेय मै
भेद पै न लषाइ ॥ ता सों रूपक कहत है ॥ सकल सुकवि समुदाय ॥ ७
६ ॥ अलंःदोहाः ॥ फिरि सुधि दै सुधि दाइ प्यौ ः इहि निरदई निरास ॥ नई
नई बहुरो दई ः दई उसास उसास ॥ इहि नाइका प्रोषितपतिका पाकी अव
स्था सषी सषी सौं कहति है ॥ सवैया ॥ आली वियोग भये वनमाली को ।
व्याकुल बालि षरी अकुलाई ॥ पाहन की पुतरी परी उपचार विचार क
छू न बसाई ॥ ऐसे मैं बाहि दई सुधि दै सुधि वाइ पियाइ पराति जगाई ॥

वानिउदैसोकहांकहीयेजिनप्रेममभूरकीपीरनपाई ॥ टीका ॥ नाइ
काकोवचनसषीप्रती ॥ कैंदैवप्रती ॥ निरदईकहियेदयाहीन ॥ नि
रासकहियेपपीहा ॥ तानैंफेरिमोकौंसुधिदेकैंओरपियकोया ।
दिदिवाइकैनईनईउसासैंउठाइदई ॥ दईकहियेयहदवडोदुषहै ॥ अ
थवादईविधाताकौसंबोधनहै ॥ विषमजनककाअलंकार ॥ प्रो
षितपतिकावर्ननं ॥ समान ॥ सषीकीउक्तिसषीसौंविधाताकी
निंदाकरतिहै ॥ प्रोषितपतिकानाइकाम्रतिसंचारीव्याधिदसाविष
मानुप्रासजमकसोंसंसृष्टिअनंगकौकारनतेंजहकारजआनरै
गहैजाइ ॥ उद्यमकीजेभलोजानिकै ॥ तातैहोइबुरोफलआइ ॥
अनमिलनैकोसंगकीजीयैतिहांजानिलीजीयेविघ्नचलाइ ॥ अलं
कारयहविषमातीनविधिमैंसबकोंदीनोसमुदाइ ॥ ४७ ॥ अथआ
गतपतिकावर्ननं ॥ मूलः दोहा ॥ भेटतबनतनभावतोः चिततर
सतुअतिप्यार ॥ धरतिलगाइलगाइउरः भूषनबसनहथ्यार ॥ आ
हनाइकामध्या ॥ लाजकामदोउसमानहै ॥ सषीसषीसोंकहति
है ॥ सवैया ॥ प्यारीकोनेहलग्योपियप्यारसौंध्यानमेंप्रानरहैदिन
राती ॥ भेटिवेकौंनउपाअवनेगुरुलोगनकेउपहासहकाती ॥ जा
निवैप्रीतमकेतनकेतिनकेमिलिवेकौहियेअकुलाती ॥ भूषनु
वासअवासकेकोंनमेंवारहीवारलगावमछाती ॥ टीका ॥ सषी
कोवचनसषीसौ ॥ नाइकनायकाकोमिलननहोवनतुहे ॥ सोअति
प्यारकहियेवडीप्रीति ॥ तासौंमेरोचितनरसतुहै ॥ सोनाइकानातै
नाइकपेभूषनकैहैंगेहनें ॥ औरबसनकहियेवस्त्र ॥ औरहथ्यार
हलकों ॥ उरकहियेछातीतासौंलगाइलगाइधरतिहै ॥ संबंधाति
सयोक्तिअलंकार ॥ ४८ ॥ सषीकीउक्तिसषीसौंआगतिकानाइक
कैंदर्सअरोत्सुकासंचारी ॥ संबंधातिसयोक्तिअलंकार ॥ संबंधातिस
योक्तिजहं ॥ भेदअजोगनिहिजोग ॥ ग्रंथनिकोमतदेषिजहं ॥ भाषत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कविजनलोग॥ ४५॥ मूलःदोहा॥ कियोसयानीसषिनसौंःनहिसयान
जहुभूल॥ दूरेहुराईफूललौःवैोपियआगमफूल॥ आगमोत्सवना
इकासौंसषीकोवचन॥ कवित्त॥ ललितकपोलआछेमंदमूलकन
लागेआननतेभईछकछबिऔरैअबकहाईरी॥ मैनोहूरितिरतुषमानितेकहु
कहाईठानीसुखसमैंकोकिलबषुदीठिकेंभाजुराईरी॥ नोरुंतैतेसियानप
नुवैमुषविसैंभलिहिसयानीसषीसौंकरीजोचतुराईरी॥ फूलकीसु
वासलैकेविकासयहलेहीतोनफूलहिआगमकोकहिवेंबाझुराईरी॥
टीका॥ सषीकोवचननाइकाप्रती॥ तैनेंसयानीसषिनसैं॥ जोछिपा
उकियोसोसियाननहीहै॥ जहुतुमभूलजानो॥ पियकेआगमको
फूलफलकीवासकेसमानछिपाईछिपतिहे॥ अपह्नुतिअनुमान
उपमाअलंकारः॥ सषीकीउक्तिनाइकापरसोया॥ आगतपतिकासों
हर्षअवहित्थासंचारीअपह्नुतिअनुमानउपमाअलंकारकीसंसृष्टि
एकवस्तुपैलोपिकैंनाथलघापेआनिथुउअपह्नुतिकहतहे॥ तामें
सवविसमान॥ हेतुपाइअनमानतें॥ समजिलीजीयेवातअलंका
रअनुमानसोभाषतमतिअवदात॥ उपमाअरुउपमेय॥ साधारनवा
चकहोइ॥ एचारोंपईयेजितेंपूरनउपमासोइ॥ ४६॥ मूलःदोहाः॥
आयोमीनविदेसतेःकाहूकह्योपुकारि॥ सुनिफूलसीविहसीहसीःदोऊ
उडिलिनिहारि॥ यहनाइकापूरकीयाएकनाइकउपपतिसोंदोउनको
सनेहहैताकेआगममेंदोउनकेहर्षभयोयाहीतेपरसपरजानिपरीसषी
कोवचनसषीसों॥ सवैया॥ काहूकहेविछुरेहुजबालिहवोसतहीम
नमैंमुसकानी॥ फूलकहेवहरोइवेकौमनुवैठिहुहूंमिलिबोपर
ठानी॥ मोहनमीनविदेसतेआयोपुकारिकेकाहूकहीजववानी॥
तोहतिदोऊउहनिविलोविलसीविलसीफूलसीमुसकानी॥ टी
का॥ सषीकोवचनसषीसों॥ नाइकविदेसतेंआयो॥ यहकाहू

पुकारिबैकह्यो॥ आयैसुनिकैंहैनाइकाआपुसमैदेषिकैंहसी॥ अथ
वापकनाइकाप्यारीहौंजीप्यारीनैंदोउहसी॥ सुभावोक्ति अनुमानअ
लंकार॥ सषीकीउक्तिसषीसोंपरकीयाआगतिप्रतिका॥ दोऊहैंह
र्षसंचारीएकमतनाइकाहैतुलक्षितिहैं॥ सुभावोक्तिअनुमानाअ
लंकार॥ हेतुपाइअनुमानतैं॥ समषिलीजीयेबात॥ अलंकारअ
नुमानसोंभावनमतिअवदात॥५०॥ मूलदोहा॥ ह्योंबरोठेमैंमिल
नःपियप्रानननकोईस॥ आवनआवतकीभईःविधकीघरीघरीस॥ इह
आगमोत्मवनाइकाकोवचनसषीसों॥ संचारीकौभेदमैंऔत्मुक्य
जानियें॥ सवैया॥ आयोविदेसतेंप्रानपतीयोतियाकीहनेंसुतियारि
यराई॥ नैननलागिरह्योदिषिसाधयोमोउरमंगहियेंभरिआई॥ स
सकैमिलिवेकहकाहूसोंपोरिमैंज्योलोंरह्योसुषदाई॥ आवनर
आवनकीसुघरीविधिबासरहेनेपरीसरसाई॥ टीका॥ सषीकोवच
नसषीसों॥ प्रानकोईसजोनाइकसोबरोठेमैंमिलतरहै॥ ताकेआउ
नआउनकोसोघरी॥ ब्रह्माकीसीघरीभई॥ अथवानाइककोआव
न॥ अपनीआपुकहियै॥ आपुबैलसौतनकोकहियेदेषि॥ इसकोय
हमननलवहे॥ किअबमैंराजीऊंवचो॥ सषीसूकहियेचरवोस्वामी
सोभलोविधिकीघरीभयो॥ रूपकाअलंकार॥ सषीकीउक्तिसषीसों
आगतपतिकानाइकाकैं॥ औत्सुक्यसंचारी॥ रूपक·॥ उपमाअरुउ
पमेयमैंभेदपरैनलषाई०॥५१॥ मूलदोहा॥ जदपितेजरौहालबल
पलकौलगीनबार॥ तोग्वैड़ोघरकोभयोःपैडोकोसहजार॥ इरूप
रदेसतेंआगमआगतपतिकानाइकाउत्सुकसंचारीजानियें॥ सवैया॥
कौनहूकाजकोप्रानपियापरदेससमोंबहुतेदिनयाहै॥ राधिकाकी
राधिकैककविपुरानिहीछिनभोंनकोंगोंनठयोहै॥ जद्यपितेजनवी
नियरोचकतनदिपिर्षकंसंचारभयोहै॥ ग्वैडेकोपैंडोतनकासोकहैअ।

भिलाषबहुमुहहियेउनबीहै॥टीका॥सषीकोवचनसषीप्रती॥
अथवानाइककोवचनसषीप्रती॥कैसषाप्रती॥जद्यपितेजु॥
ओरहेलालचलनेकोवलनासोपलकमात्रबिललमलगो॥न
ऊयरकोमवेहुकहियेसमीप॥सोहजारकेसमभयो॥बिसेषोक्ति
अलंकार॥उक्तिसषीसोनाइकाआगतिपतिकाकीकैनाइककी
आनुकूलसंचारीबिसेषोक्तिअलंकार॥सबकारनकाजुनभरेउ
क्तिविसेषबहुदियेपरै॥५२॥मूलःदोहाः॥बिछुरेजियेसकोचइहि
बोलनबननबैन॥दोऊदोरिलगेहियेःकियेललोहैनेन॥इह
परदेसतेंआगमहोऊनकेहिनकोअधिकसषीकौवचनसषीसों॥
सवैयाः॥दंपतिआपुसमेंकहतेंपलुओरभयेकोएकप्रानरहेंना॥
आयोविदेसवितेवहुवारननेंदललाअतिचैनकोऐना॥एतेविछो
हभएहूजियेइहिलाजतेंबोलनबैनबनेंना॥दोऊलगेलपटाइहि
येपैनिचौहेंकियेसकुचौंहेंसनेंना॥टीका॥सषीकोवचनसषीप्र
ती॥बिछुरेकहियेजुदेरहे॥औरजियेइससकोचकहियेलाज
तासोंवचनबोलनबनोनहो॥दोऊकहियेनाइकनाइका॥सोनी
चैनेत्रकरिकेदोरिके॥हियेकहियेछातीसोंलगे॥काव्यलिंगअलं
कार॥इतिआगतपतिका॥अथआगमिष्यनपतिकावर्ननं॥सषीकी
उक्तिसषीसोंदंपतिकेउभासंचारीनाइकाआगतिपतिकाउत्तमका
व्यलिंगअलंकार॥अर्थसमर्थनकीजीयेजहायुक्तसोमित्र॥काव्य
लिंगभूषननहो॥भाषतबुधिविचित्र॥५३॥मूलःदोहाः॥कहाभ
योजोबीछुरेःमोमनतोमनसाथ॥उडीजातिकितहूंगुडीःतऊउ
डाइकहाथ॥इहनाइककीपत्रीनाइकाकोलिषी॥सवैया॥जोकर
तारचीसहसहीविधिऔरविचारप्रकारघनोहै॥वेदपुरानपुराने

मनीसबकोऊकहैयहगाथनहीहै॥ अंतरबीचपर्योतोकहाभ॰
यौमोमनतोमनसाथसहीहै॥ जाकुगुडीकिनहूंउठिडोरिगुडावन
वारेकेहाथरहीहै॥ टीका॥ नाइककोवचननायकाप्रती॥ जोहम
तुमसौंबिछुरेतोकहाभयो॥ मेरोमनतुम्हारेमनकेसाथहै॥ जैसें
गुडीकहियेचंगसोआकाशमैंकितहूंउडौ॥ नकूचंगसोउडायक
कहियेउडावनवारौ॥ ताकेहाथमैंरहतीहै॥ दृष्टांतालंकार॥

गमिष्यतिपतिकावर्ननं॥ लक्षणदोहा॥ रहिहैंचंचलप्रानए कहीकौ
नकियगोर॥ ललनचलनकीचितधरी कलनपलनकीओट॥ प्र
हनाइकाप्रौढाप्रवत्सत्पतिकानाइकाकोवचनुसषीसैं॥ कवित्त॥
मैंनरुपसंगनिमैंनेहकीतरंगनिमैंअंगअंगपगिरहे रंगमेंउमहिहैं
कुलप्रानप्यारेतेनछिनोंभरिन्यारेभएऔरहीनेंवसभएऐसीवानी
गहिहैं॥ पलनकीओटभएकलनरहतबैयांहुंजैसीगतिहोतिसो॰
धौआवतिनकहिहैं॥ ललनविचारीचितचलनकीबातअबकौन
कीअगोटएचलनप्रानरहिहैं॥ टीका॥ नाइकाकोवचनसषीप्रती॥
एमेरेचंचलकौनकीअगोरकहियेओटवाआसरेसोरहैंगे॥ सोतु
मकहौ॥ ललनकहियेनायक॥ तिननेंचलनेंचलनेंकोचितमेंध
रीहै॥ सोनायकुमेरेपलकनकीओटहोतहै॥ तबहीमोकोकलन

हीयचलतु है ॥ अथ बानाइक को बचन नाइका सनी ॥ होइलौ ललन संबोध
न है इजा निबैं ॥ बृत्यानुप्रास अलंकार ॥ प्रोषितपतिका नाइका को उक्ति
सखी सौं को मलार बृत्रि वृत्यानुप्रासः जहवृत्यानुप्रास है ॥ गुन माधुर्य
प्रकाशनि हाय को मलार ह्वि है ॥ बरनन बुद्धिविलास ॥ १ ॥ बीच न पैये पद
जिहाँ अक्षर सम नाहोइ ॥ सो वृत्यानुप्रास है ॥ कहत सयाने लोइ ॥ ५५ ॥
मूल दोहा ॥ एसमा सन निसषिन पै साँइ चलन सवार ॥ गाढि कर बीन
प्रवीन निय गायौ राग मलार ॥ यह नाइका क्रियाविदग्धा प्रथमो परकि
याके भेद हैः सुकियाहू होइ नो होई ॥ सवैया ॥ सीन समै परदेस को पी कौ
पयान नसुन्यौ बहुरावन लागी ॥ या रितमे रहिबे को हूरके ये रदे बलाइ रजि
मना बनलागी ॥ ओकउपाउनवेपानकाहूनवहाजिकैबीनुबजावन ला
गी ॥ प्यारी प्रवीन भैरहु में चमलार अलापि कै गावन लागी ॥ टीका ॥
सखी को बचन सखी सौं ॥ साइं कहिये नाइकु ॥ सो असवार कहिये प्रात समै च
लतु है ॥ यह बात सखि नु पै सुनि कै ॥ एक के सहौ नाभे ॥ प्रवीन नायका
नै करके कहिये हाथ ॥ ता मैं बीना कौ लैकै ॥ मलार जो राग सो राग्यौ कहिये
गायौ ॥ इसकौ यह मनलबु है ॥ कि नाइकु अकाल वृष्टि जानि कै न चलैगौ
आक्षेपालंकार ॥ सखी की उक्ति सखी सौं प्रोषितपतिका नाइका आक्षे
पालंकार ॥ ५६ ॥ मूल दोहा ॥ ललन चलन सुनि पलन में अंसुवा झ
लके आइ ॥ भई लखाइ न सखिन मैं झूठे ही जमुहाइ ॥ यह नाइका मध्या
प्रवत्स्यतिपतिका सखी को बचन सखी सौं क्रियाविदग्धा परकियाहू
होई ॥ सवैया ॥ खेलति ही सजनी गन मैं वृषभान कुमारि सरूप सोंसानी ॥
कान्ह कहका ल्हि करैंगौ पियान सुनी यह कान्ह के आननवानी ॥ आंखि
न मैं अंसुवा झलकै यह भेद की बात न आली न काहू जानी ॥ यों मुह मोरि ज
भाइ के कौ कारि रूठ मुपोंछि तिनैं न सयानी ॥ टीका ॥ सखी को बचन सखी
सौं ॥ ललन कहिये नाइकु ॥ ताको चलन कहिये चलिबौ ॥ ताकौ सु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निकै नायकाके पलक निमैं आँसु आइ झलके ॥ सो सषि नु मैं जु नाइन भ
ई ॥ फटे हो जु जल्लु आइन लागी ॥ इस को यह मतलब है ॥ कि जल्लु ना तेँ आ
इ जात है ॥ पिहित नाम अलंकार ॥ सषी की उक्ति सषी सेँ ॥ नाइका मध्या प्रमि
ष्य ति पतिका अवहित्था संचारी काव्यलिंग अलंकार ॥ पिहित छिपी पव
बानको ॥ जान दिषावे भाइ ॥ प्रात हि आये से रु पिय रह्मे मिटाव तिय पाइ
मूलः दोहा ॥ ललन चलन सुनि चुपि रही ॥ बोली आपु न ईठि ॥ राख्यो ग
हि गाढे गरैं ॥ मनौं गिलगिली डीठि ॥ यह नाइका प्रवत्स्यत्पतिका मध्या स
षी को वचनु सषी सेँ ॥ कबित्त ॥ प्यारी के भवन अति हितु करि प्रानपति
आये विदा होन परदेस को उमहि कै ॥ ललन चलन सुनि [illegible] ही अनबो ली
तिय आली हूं न वचन सुनाये काहू कहिकै ॥ चकित सी भई चकचौह द
सौं ल्यायो चित आवृति सलिलु दोऊ नैनन ते बहिकै ॥ गिलगिली डीठि कारि
है रहि रिस तन सु षमे रे जान राख्यौ वेह गाढो गरे गहि कै ॥ टीका ॥ सषी
को वचन सषी प्रती ॥ ललन कहिये नाइक ताको चलनौ सुनिकै चुप करी
रही ॥ ईठि कहिये नायका सो आपन बोली ॥ सो मानौं गिलगिली कहिये
रोउने की ॥ नाइका की दृष्टि ने गाढे गरे सौं पकरि राषे ॥ उत्प्रेक्षा अलंका
र ॥ उक्ति सषी की सषी सौं नाइका प्रोषितपतिका उत्प्रेक्षा अलंकार ॥ जह र
की जनि संभावना ० ॥ ५८ ॥ मूलः दोहा ॥ बिलषी डभको है चषनु ॥ तिय
लषि गमन बराइ ॥ पिय गहबर आयो गरें राषी हियें लगाइ ॥ इह नाइका
प्रवत्स्यत्पतिका मध्या या की यह दसा देषि नाइक हू के नैन गबनु बरायो गरे
सौं लगाइ राषी सषी को वचन सषी सौं ॥ सवैया ॥ पति प्रानपिया बिछु
रेन कहं सुष सों रहे प्रेम पियूष पिये ॥ हित मानि विदेस कौं होन विदा हरि आ
ये पियान को साज किये ॥ निरषी डभकौं हे से नैन किये बिलषी सु गलोच
नी मास लिये ॥ न कही चलिवे की कछू बतियां जब ही भरि लीनी लगा
इ हियें ॥ टीका ॥ सषी को वचन सषी सौं ॥ डभकौहैं कहिये आंसून सौं भ

रेचषक हियेनेत्रनिमसोंविलषीक हियेतुषित ॥ नियक हियेनायका
ताकौंदेषिकै ॥ नायकअपनौंचलनौंअटकाइकै ॥ गहवरक हियेभरि
आयोजोगरौ ॥ तासोंनाइकालगाइराषो ॥ काव्यलिंगअलंकार ॥ स
षीकोउक्तिसषीसोंप्रोष्यनपतिकानाइकाकाव्यलिंगलाटानुप्रासकी
संसृष्टि ॥ अर्थसामर्थनकीजीये ॥ जहांयुक्तसोंमित्रकाव्यलिंगभूषन
नहांभाषतनुबुधिविचित्र ॥ जहांबहोपदफिरषरै ॥ भिन्नभावकछुहोइ
सोलाटानुप्रासहै ॥ कहुनमयानेलाहु ॥ ५५ ॥ मूलःदोहा ॥ नियहिय
मेंउलहौचलनःपियनषरेषषरोट ॥ सषनदेतिनसरसईःकोटिषो
टिवनतरोट ॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकासषीकोवचनसषीसें ॥
सवैया ॥ सेजमेंसंगरमीरसरंगअनेनतरंगउमंगनसहाई ॥ काहूरकेव
रकीनषरेषकहूनियकेउरमेंलगिआई ॥ पीपरदेसगयोजवतेंनवतें
उननीधनकोधनुपाई ॥ वेषनषोटषरोटिषरोहिनसषनदेतिवहेस
रसाई ॥ टीका ॥ सषीकोवचनसषीप्रती ॥ नियकहियेनायका ॥ सोपि
यकहियेनायक ॥ ताकोचलनआपनेहियेमेंलागिनाइककेनषकी
रेषाकोषरोट ॥ ताकीसरसाइकेछतकोजोहूटभयोहै ॥ ताकोंदूरि
करिकै ॥ सषनतहींदेतीहै ॥ इसकोयहमानलवहै ॥ किनाइकनेंजे
नषछतदएहैं ॥ तिनकोभलोननहीदेतीहै ॥ पर्जायोक्तिअलंकार ॥
सषीकोउक्तिसषीसेंप्रोषितपतिकानाइका ॥ निरर्थकदूषन ॥ लेष
अनुप्रासकीसंसृष्टिजहांदोषमेंकीजीयेगुनकल्पितसुविशेष ॥ कै
गुनमैंठहराइयेदोषसुजानोलेष ॥ बीचनुपइयेपदजहां ॥ अछरसम
नाहोइ ॥ सोहत्यानुप्रासहै ॥ कहुनसयानेलाहु ॥ ५६ ॥ मूलःदोहा ॥ अ
हेनआपसहजरंगःविरहदूवरेगात ॥ अवहीकहाचलाइयतःलल
नचलनकीवात ॥ यहनाइकाप्रवत्स्यतपतिकासषीकोवचननाइ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

93

बिहा॰
९३

कहैनाइकाकोवचननाइकसोंहै॥ सवैया॥ खेलनमैंकहूंकाहूकेः
घ्यानुमकाहूंकहोंजैहौंचरावनगाई॥ सोसुनिकैउनहीवचस्वाससभरी
सवअंगपसीपियराई॥ तादिनकोभ्रानवेलीकेअंगनिआजुहूलौनः
मिटीदुवराई॥ लालरह्योअनकोलैकह्योअवहौचरवाचलिवेकीः
चलाई॥ टीका॥ नाइकाकोवचननायकप्रती॥ विरहमैंदूबरेकहि
येप्रमेरेभएजेसारेगातकहियेअंग॥ तेसवजवरंगमैंरहेमसकेसंगमैन
हीआए॥ अथवामेरेगाततोजैनहीभए॥ ललनसंवोधनहै॥ सोत
मअवहीचलिवेकीवातकहाचलाइयतिकहियेकरतहो॥ अखेपा
लंकार॥ नाइकप्रतिउक्ति सषीकीकैप्रोष्यतपतिकानाइकाकोअखे
पालंकार॥ दुरैनिषेधजुविधिवचन॥ औरनिषेधाभास॥ पहिलैंकहि
यैआपकहु॥ वहुरेपेवियेनाम॥ ९१ ॥ मूलःदोहा॥ चाहभरेअतिरसभ
रेः विरहभरेसवगात॥ कोरिसदेसेदुहुनिकेः चलेपोरिलौंजात॥ इह
परदेसकोगवनदोउनकेहिनकोअथकाईनाइककोप्रोषितिकासषीस
षीसोंकहतिहै॥ सवैया॥ कोंनहूंकाजकौकाहूरकीहोप्रयानमहूंतय
सोधिभलेई॥ अंतरहोततुदुहूंनकोत्योअकुलातवियोगकेसूलसलेई॥
चाहभरीअरुप्रीतिभरीछतियांभरिकैवतियानिरलेई॥ पोरिलौजातदु
हूंनकेऔरतेआलीरीकोरिसदेसेचलेई॥ टीका॥ सषीकोवचनसषीप्र
ती॥ नाइकनाइकाकेसिगरेअंगचाहनामैंभरेहैं॥ औरअतिरसकहि
ये॥ अतिप्रीतितामैंभरेहैं॥ औरविरहमैंभरेहैं॥ दुहूनकेकहियेनाइक
नाइका॥ कपोरिलौकहियेद्वारिलौजाति॥ कोरिसदेसेचलेकहियेक
हे॥ दीपकाअलंकार॥ सषीकीउक्ति सषीसैंप्रोष्यतपतिकानाइकादीः
पकाअलंकार॥ उपमानवस्तउपमेयहै॥ घसौंइकपदलागैजाइतामैं
दीपककहतहैसुमतिसुकविसमुदाइ॥ ९२ ॥ मूलःदोहा॥ मिलिमिलि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चलिचलिमिलिचलनआंगनअथयोभानु॥ भयोमहूरतनभोरकौः
पौरीप्रथममिलानु॥ इहनाइकाप्रदेसप्रयानकौसमयसखीसखीसों।
कहतिहै॥ कवित्त॥ रमनगमनपरदेसकौविचारचित्तसाधिकुभलना
नानेसबकौमनायोहै॥ साहसबैउरआनप्यारीहूंकछुनकह्योमंगल।
हवैहाइकबैरंगरेगायोहै॥ चलतमिलतमिलिचलतचलतमिलिन
चलतमिलनयोंबासरबितायोहै॥ भोरकोमहूरतनभवनहूमेंमाह
भईपौरीहीमेंप्रेमसोंमिलनठहरायोहै॥ टीका॥ सखीकोवचनसखी
सौं॥ मिलिमिलिकेचलतहै॥ औरुचलिचलिकेफेरमिलतहै॥ इस
भांतिआंगनमैंभानुकहियेहारजे॥ सोअथयोकहियेअस्तभयो॥ म
हूरतकहियेचलनेंकोदिनभोरकोभयो॥ तातेंपौरिकहियेद्वारमें॥ प्र
थममिलानकहियेपहलौडेराभयो॥ जातिवर्ननअलंकार॥ सखी।
कीउक्तिसखीसोंप्रोषतपतिकानाइकाजातिवर्ननं॥ जाकोजैसोरूप
गुनवरनवहारूरीति॥ तासोंजातसुभावकविभाषतहैकविप्रीति॥
६३ ॥ इतिप्रवत्स्यतभर्तृका॥ अथआगमिष्यतपतिकावर्ननं॥ मूल॥ दोहा
मृगनैंनीदृगकोफरक॥ उरउछाहतनफूल॥ बिनुहीपियआगमउम
गि॥ पहरनलगीदुकूल॥ इहनाइकाआगमिष्यतपतिकासखीकोवचनस
खीसों॥ सवैया॥ बालिघरीअकुलातिकहियेंनंदलालवियोगविथाउर
जागी॥ ऐसेमैंआनिअचानकहीफलसोंछतियासुचरीअनुरागी॥ बा
मबिलोचनकेफरकेमृगलोचनिजीमैंउछाहनिपागी॥ फूलभरीबि
नहीपियआगमचारुदुकूलबनावनलागी॥ टीका॥ सखीकोवच
नसखीसों॥ मृगनैंनीकहियेनाइका॥ सोनेत्रकेफरकनेंसोंउरविषें
उतसाहसों॥ तनजोसरीरतामैं॥ फूलसोंनायककेबिनाआगमही
उमगिकहियेउतसाहखुसीह्वैकै॥ कपरनकोबदलनलगी॥ इसको
यहमतलबहै॥ किनायककेआउनेकेसगुनबहुपजानिकै॥ मेले

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

९५
बिह.
२५

बसंतरउमारे॥ उजलपैरहे॥ अनुमानालंकार॥ सखीकीउक्तिस-
खीसैं॥ आगमिष्यतपतिकानाइका॥ अनुमानालंकार॥ हेतुपाइ
अनुमानमें॥ समझिलीजीयेबात॥ अलंकारअनुमानसैं॥ भाखत
मतिअवदात॥ ६४॥ मूल: दोहा:॥ बामबाहुफरकतिमिलैः जोह-
रिजीवनमूरि॥ तोतोहीसैंभेटिहौंराखिदाहनोंहूरि॥ इहआग-
मोन्मुखभुजफरकनहीनाइकाकौवचनबामभुजप्रति॥ सवैया
काहूबिसासीबिदेसबस्यौबसिमैनदहीबहुभांतिहियैहौं॥ बामभुजा
फरकीतुभलेअबकेहुफयहेनिहचैपतुवैहौं॥ वैसेहवामनुभाव
नसैंअबजोभरीअखिनदेखनिपैहौं॥ राखिहौंहूरियादाहनोबाह
कोतोहीसैंगाढेआलिंगनदैहौं॥ टीका॥ नाइकाकोवचनबामबाहु
प्रती॥ बामबाहु संबोधनहै॥ तूफरकतिहै॥ मेरेजीवनकीमूरिओषदीहै
पैसोहरिकहियेश्रीकृष्ण॥ सोजोमोकोंमिलैगो॥ तोमैंदाहिनीबा-
हकोहरिराखिहो॥ ताहीसोंमिलोंगी॥ संभावनअलंकार॥ आग-
मिष्यतिपतिकानाइकाकीउक्ति संभावनालंकार॥ जैसैंयोंतोयों
होनहैयहकहनावतेआइ॥ नहाकहतिसंभावना॥ कविपंडित
समुदाय॥ ६५॥ मूल:दोहा॥ मलिनदेहवेईवसनःमलिनविरह-
केरूप॥ पियआगमऔरैउठीःआननओपअनूप॥ इहनाइका-
आगमनस्पपतिकासखीकोवचनसखीसैं॥ कवित्त॥ लालमन
भावनकेबिछुरेमयंमुखीअतिहीबिकलचितपरयौचिंताकूपहै
मधिकअनंगपीरतोखगातिहियेबाढनीलगतिजैसौग्रीषमकी-
धूपहै॥ कोनेतनभिंगारकैसीयमलिनदेहवसनमलिनउहीबिरह
केरूपहै॥ कहैकविकूलपियआगमसुननवहीऔरैआपआन
नपैउमगीअनूपहै॥ टीका॥ सखीकोवचनसखीप्रती॥ मैलीतो
देहहै॥ औरमैलेईवसनकाहैकपरेहैं॥ औरविरहकारिकेमैलो

इहरूपहै॥ नयाप्रियकहियेनायक॥ ताकोआगमकहियेआइबो॥ ।
तासौंआननकहियेमुख॥ ताकोअनूपकहियेअनूपम॥ ओपक
हियेसोभासोओरभई॥ भेदकातिसयोक्तिअलंकार॥ सषीकीउक्तिस
षीसौंनाइकाआगमिष्यतिपतिकाभेदकातिसयोक्तिअलंकार॥ औ
रैयहरूपदरसिजीये॥ अधिकाईकैकहैं॥ अतिसयोक्तिभेदयकहै॥ बाह
नक्कविलितवैन॥ ६६॥ मूलःदोहाः॥ कहिपठईमनभावतीःपियआ
गमकोबान॥ फूलीआगनमेंफिरैःआगीआंगनमात॥ इहआग
मानबसषीकोवचनसषीसौंसंचारीमैंहर्षजानीये॥ सवैया॥ बा
लवियोगमलीनमहा विसरीसुधिहासविलासहूभूले॥ पतेपैंओ
धवितीतभईउरएकहीसासबसैदुषभूले॥ आवनतोमनभावनको
सुनिवैउमहे सुषपुंजसमूले॥ आगनमैंडुलसीफिरैसुंदरिआगमजा
नसमाननफूले॥ टीका॥ सषीकोवचनसषीसौं॥ पियकहियेनाइक
तिसनैनाइकाकोंअपनेआइबेकीवातेंकैहिभेजी॥ ताकेंसुनिकेना
इकाआगनमेंफूलीफिरतिहै॥ औकनाइकाकोआगमकहियेसरीर
सोआगीमेंसमातुनहींहै॥ लोकोक्तिअलंकार॥ इतीआगतपति
का॥ सषीकीउक्तिसषीसौंआगमिष्यतपतिकानाइकाहर्षसेवा
रीलोकोक्तिअलंकार॥ कहूनावतिहैलोककोलोककोकतिहैगो
ह॥ ६७ ॥ अथरूपगर्विता॥ मूलःदोहाः॥ इमहलैसौतिसालतिज्योहि
यःमनमिलनाहविवाह॥ धरेरूपगुनकोगरवःफिरैअछेहउछाह
इहनाइकाअपनेरूपकेअरगुनानकेगर्वतेंसौतकेचितमेंसालत।
तिनाहीसोसषीसषीसौंकहतिहै॥ सवैया॥ नाहकेव्याहमेंप्यारी
अछेहउछाहभरीपटभूषनठांनति॥ जानतिहैअपनेतिहुंवेंजि
युकोवनिताकरिहैनइहानति॥ रूपकेजोवनकेगुनकेअभिमा
नतेंसौतनहीनामनआनति॥ जद्यपिसौतियांसालतऊउरमेंवह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तीनरसोंदुषमाननि ॥ टीका ॥ सषीकोवचनसषीसों ॥ दुसहकहिये
सह्योनजाइ ॥ ऐसीजोसौतिनि ॥ सोकहियेकौसालतिकहियेदुषनीहै ॥ ९
ताहूपरनाइकानाहकहियेनाहक्षु ॥ ताकेब्याहकौनहोमनतीहै ॥ इ
सकोयहमतलवहै ॥ किनाइकजोमेरेरूपऔरगुनकाबोलायो
सोमेरेवरोवरीकवहोयेगी ॥ ताकोक्यविंजकरतहै ॥ नायकारूप
औरगुनहैवातनिकोजोगरवकहियेअभिमान ॥ ताकोधारे ॥ अरुयह
जोउत्साहतासोंफिरतिहै ॥ इसकोयहमतलवहै ॥ किसौतिकोमेरेगु
नकी ॥ औरूपकीवरोवरिनहोयगी ॥ विभावनाअलंकार ॥ उक्तिसषी
कीसषीसोंरूपगुनगर्विताना(इ)काधृतिसंचारी ॥ विभावनाअलंकार
९८ ॥ मूलः दोहा ॥ सुचरसौतिनिपियवसकरनततुलहति दुगुनहुलास
लषीसषीननडीठिकरिःसगरवसलजसहास ॥ यहनाइकागुनगर्वि
ता ॥ अपनेंगुनकेगुमानतेंसौतिकेआगमकोदुषनाहीमानति ॥ प्रस
न्नभईसषीकीउरचितवतिहै ॥ सषीकोवचनसषीसों ॥ सवैया ॥ रूपकी
रासिसषीनसमाजमेंसोहैसिंगारसजैव्रजनारी ॥ काहूकहीसचुरा
पनुयैतुमसौतिनिनेंलीनीतिहाईविहारी ॥ यौसुनिकेअतिहीहुलसीगु
नवातरीकीपरमावधिप्यारी ॥ ल्याजगुमानभरीसषिकाइकेंवक ।
डीठिअलीननसारी ॥ टीका ॥ सषीकोवचनसषीसों ॥ सुचरकहिये ।
चतुरजोसौतिनि ॥ ताकेवसमेंपियकोसुनिकें ॥ दुलहतिकहियेनाइका
ताकोदूनोहुलासकहियेसुषीदुसौहै ॥ सषीननकहियेसषीकेनर
फ ॥ गरवसहितलाजसहितहासससहितदेषतिभई ॥ विभानाअलं
कार ॥ इतीरूपगर्विता ॥ अथप्रेमगर्विताः ॥ सषीकीउक्तिसषीसोंरूपगुन
गर्वितामध्यानाइकाहर्षसंचारीविभावना ॥ मूलः दोहा ॥ पियसौतिनि
नेदेषतदई ःअपनेंहियतेंलाल ॥ फिरतिसवनमेंडहडहीःवहीमरजी
माल ॥ यहनाइकाकीमालापाइकेअतिप्रसन्नभई ॥ सोसषीनाइकासों ।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कहत हैं॥ प्रेम गर्व बिना जानियें॥ कवित्त॥ सौतिन के लषत मनभावन म
याके दीनी उरते उतारि यार गरे की नीरजनि हैं॥ नवल तीनें लहि सिसिर कस
नि कुल सनि बिलसनि लसनि गुमान भयो अनि हैं॥ मनमें सदिन षूली
न नमें समाति ना हि वलन चिन्तन अनुराग झलक नि हैं॥ मरगजी मा
ला बकसी उरधरै वाला बढ़ ई रहई ही आलिनु के झुंड में फिरनि हैं॥ टीका॥
सषी को वचन सषी सौं॥ पिय कहियें प्यारो॥ लाल कहियें नाइक॥ तिन
नें सौतिन के देषत माला अपनें हियतें उतारि के॥ नाइका कौ दई पे ताई
वही नाइका मरगजे फूलन की माला॥ सो सखिनि में कहिये॥ सब नाइ
कनि में इतराही कहिये फूली फिरति हैं॥ विभावनाअलंकार॥ सषी
की उक्ति सषी सौं प्रेम गर्व बिना नाइका विभावना अलंकार॥ कारज हो
इ अकारन तें कि अपूरन कारज काज बनावै॥ हेतु तें काज विरुद्ध किलौ
कि बुधे सछै भांति विभावना गावै॥ ३० ॥अनौं प्रेम गर्व बिना॥ अथ प्रेम प्र
संसा वर्ननं॥ मूल: दोहा॥ उनकौ न उनही बनें: कोऊ करौ अनेक॥ फिरत
काग गोलक भयो: दुहूं देह जिय एक॥ यह दोउन की हित की अधिकाई
सषी सषी सौं कहति है॥ सवैया॥ आजु लौं ऐसे न देषे कहूं इनही के व
ने उनके हित के पन॥ और अनेक उपाइ कौ ये हूं पै है हित ऐसें सने ह
सने मन॥ कोऊ न जानत दोऊ है एक ही श्री वृषभान सुता मनमोह
न॥ वा इस गोलक ज्यौं सजनी फिरि वो करै एक ही जी व दुहूं तन॥ टीका॥
सषी को वचन सषी सौं॥ इनको प्रीति उनही सौं बनती है॥ अरु कोई अ
नेक बातें करौ॥ एक जीय दोऊ देहन में ऐसें फिरत है॥ जैसें कागा को गोल
क दोऊ आंषिन में फिरतु है॥ रूपकाअलंकार॥ सषी की उक्ति सषी सौं
दंपति के हित की प्रसंसा करत है॥ रूपकालंकार॥ एक सा हू को अ
र्थ जहं॥ भासै आइ अनेक॥ सब्द सलेष सौं कहत है॥ जिनकौ बुद्धि स

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नेक॥ उपमा अरु उपमेय मैं भेद परै न लषाइ॥ ता सौं रूपक कहत हैं॥ ९१
अथ मानिनी वर्ननं॥ मूलः दोहा॥ जद्यपि सुंदर सुघर पुनः सगुनौं दीप
क देह॥ तऊ प्रकास करै तितौः भरियै जितौ सनेह॥ यह सुनि कह वहाइके
कौं सषी नाइका सौं कहै॥ नाइका हू सौं कहै॥ सवैया॥ जद्दपि चारु करी है विक
नाई सुहार रहत्यौ सु चुरौ किनि होऊ॥ कंठसुभाव कहै वहु संडिनके गनज्यो निज
नाई थरौ पुनि सोऊ॥ हे यह बात प्रसिद्ध सवै जग एकसी रीति निबाहत दो
ऊ॥ नेहु भरे विन दीपक देहु प्रकास करै न कितौ कहौ कोऊ॥ टीका॥ सषी को
वचन सषी सौं अथवा नायक सौं॥ जद्यपि नायका की देह सोई दीपक
है॥ सो सुंदर है॥ और सुघर कहियै चतुर है॥ दीपक सुघर कहियै भला
गढ्यौ है॥ और सगुन सहित है॥ दीपक पछवाली सहित है॥ तऊ जितनौ सनेह
कहियै प्रीति॥ दीपक पछु नेभरियै॥ तितनौ प्रकास कहियै सुंदरता॥ दीप
क पछु उज्यारौ करै है॥ [illegible] अलंकार॥ सषी की उक्ति नाइका सौं र
सी ह्या रूप वचन तैं बोध अर्थापत्ति करि मान ब्यंजन है॥ नाक विनाइका के
प्रतिमान धनिता है॥ या ही सुगुरमान कहति है॥ अरु अर्थांतरसंक्र
मितध्वनि या है॥ जो यह उक्ति साधकी होइ तो सांतरस है॥ ऐसें औ ठौर सं
क्रमित हू सब जानि है वाच्य॥ इति रूपक कौ पोषत ये॥ ९२॥ मूलः दोहा॥ रा
ति द्यौस हौसे रहैः मान निठिक ठहराइ॥ जेतौ औगुन हूढियैः गुनै हाथ प
रि जाइ॥ इह नाइका स्वकीया है॥ नाइका कौ वचन सषी प्रति है नायक
के औगुन हूं गुन भासन है॥ सवैया॥ जो हौं फु कौं सोष रौलहु हैकवारै म
नुहार विलं ठिअन्न ठी॥ औगुन हूं हैं रू हाथ न आवन सौ गुन की रहै सि
हिसी हठी॥ सील सुभाव सदा निवहै रू सिवोले अमी वरषा मनों लूठी
होस हियैं निमचौ सरहै मन मोहन सोक बढ़ै न दिहठी॥ टीका॥ ना
इका कौ वचन सषी प्रती॥ राति दिन मान करिवे की मो कौं हौंसें कहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

येइछाईरहतीहै॥ परमानकोठिकुनहीठहरातुहै॥ हूहतिहौंनेनै।
नाइककौ॥ मैंनाइककोजेतोश्रौगुनेंमेरेहाथपरतुहै॥ इसकोयहसम
नलवहै॥ कीविनुदोषदेषेमानुनहीहोतुहै॥ काव्यलिंगअलंकार॥

मूलः दोहाः॥ नाउसुनतनहींहैगयोः तनुश्रौरैमनुश्रौर॥ द्वैवनहीचित
चहिरयोः अबैचहौकौनठौर॥ इहनाइकासषीकेंरिसकोमिसकरकेले
हुरावतिहै॥ पैनाउसुनेंतेचित्रकोसु [illegible] याश्रौरहीभातिभईया
तेंसषीनेंनीकेकरिजानीनाइकालछिनासषीकोवचननाइकासौं॥ स
वैया॥ नेहकीरीतियहैनवनागरिनेकुलगौनिवरेनलिवेरे॥ नाउसुनें
हीभयोमनुश्रौरहीश्रौरेभयोतनुचेतननेरे॥ वैयोंहूमनसोंमनलाइवि
लोकतिहौतनुकहाँश्रवलोरीतनेरे॥ श्रैसेकियेकरिकैसेउहेहियारे
कोश्रवचहौचितनेरे॥ टीका॥ सषीकोवचनसषीसनी॥ नायकाके
पासनाइकानें॥ श्रौरनाइकाकोनामलियो॥ ताकोसुनिकै॥ नायका
कीननकरियेहैसोश्रोरहैगई॥ श्रौरैमनहैगयो॥ नवतेनाइकाको
चितद्वैवनुनहीहै॥ चहौईरहतुहै॥ अवलोविदौरहौनिराकवनेंहै॥ भे
दकातिसयोक्तिअलंकार॥ १४॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

९७

बिहा
२०

मूलः दोहा :॥ औरैं मति औरैं वचन : भयो वदन रंग और ॥ द्यौसक तैं पिय
चित चढी : रहै चढे हूं त्यौर ॥ इह नाइका के प्रेम के गर्व ते कहूं को मन आन
तिनांही सो सखी सखी सौं कहै है नाइका हूं सो वनै ॥ सवैया ॥ और ही बालि वि
लोकनि औ रही देखिये आननहूं रंग और रहि ॥ बोलनि आन ही भांति गु
मान सों ज्यौं विधनी निधि पाइकै बोरहि ॥ दूके हूं बानहि उन्नह देतिन ही
ठि वचा इहाँ तिन ठौरहि ॥ वै दिन तैं चढी पिय के चित्र मैं प्यारी चढाये
ही त्यौं तिन त्यौंरहि ॥ टीका ॥ सखी को वचन सखी प्रती ॥ कोई दिन तैं नाय
क के चित मैं चढी है ॥ नव तै नायका की बुद्धि और भई है ॥ वचन औरै भ
ए है ॥ और मुख कौ रंग औरै भयो है ॥ नव तै चढे हू त्यौं कहूं रहत है ॥ ७५
भेदकातिसयोक्ति अलंकार ॥

मूलः दोहा ॥ नोही निरमोही लग्यो : मोही यहै सुभाउ ॥ अनआए आ
वै नहीं : आए आवै आउ ॥ यह नाइका प्रौढा है नाइका की निठुरता और स्न
वनेह देवो आसक्ति उराहनो दे करि प्रगट करति है ॥ नाइका को वचन नाइ
का सैं ॥ कवित्र ॥ नेह भरे नैननु को जब तैं न जई मिली न वही तैं चित को ल
गायो अति चाउ है ॥ मिलत मिलत मनु मिलि मिलि एक भयो परयो प्रेम
फंद को अनोखो उरझाउ है ॥ वा दिन सकति निरमोहि होयो निरमोहि अति मे
रेही ये गयो कहू ऐसो ई सुभाउ है ॥ तेरे अनआए अनआवै कै इहे यं

हलैरै आओ औ आई जालिम्यारे नैन आउ है ॥ टीका ॥ नाइका को वचन नाइक प्रं
नी ॥ निरमोही कहैं मोहहीन जो न लगावै हियो ॥ तासैं में रहि दियौ लागौ है
अपघाम में न लावै हियो तैसे मोही कहै वस भई है ॥ मैरो यह ही स्वभाव परो है ॥
अनआए कहि पे न लावै बिन आए ॥ आवैं कहि पै आय वलसो न ही है ॥ औ
हन लावै आय ॥ आपु षा आउ नी है ॥ विन देषै मरती है ॥ अलंकार ॥ नाइका
को उक्ति नाइक सौं सो मानिनी उपालंभ संचारी अतिसयोक्ति अलंकार ॥ औ
रै यह पद दीजियै ॥ अधिकाई कैहेत ॥ अतिसयोक्ति भेद का यहै ॥ कहत स
कवि सिरनैन ॥ २६ ॥ मूल दोहा ॥ रही पकरपाटी सुरिसः भरे भौंह चित नैंन ॥
लषि सपनें पिय आन रति जागत निलगति हियें न ॥ यह नाइका ने स्वप्न में नाइ
क अन्य स्त्री देषी तब जागत हू मान नाहीं छोडति ॥ नाइका अन संभोग दु
षिता सषी को वचन सषी सौ ॥ सवैया ॥ दंपति केलिक सौ लषरो उर लागे
ई सोइ गए पलिका ही ॥ औसे में प्यारी लष्यो सपनो हरि और न वधू सौं कियै
गलवांही ॥ पाटी सौ लागि रही वे भरी रिस नैनु सकोचन भौंह नु मांही ॥
चौंकि यहै चितपागी महा निय जागी तऊ हिय लागति नाहीं ॥ टीका ॥
सषी को वचन सषी सौं ॥ रिस करि हियें क्रोध मासौ भौंह विनु नेत्र भरे है ॥
सो नायका पाटी पकरे रही है ॥ इसको यह मतलव है ॥ कि नायका रोस
करिकै करवट लै रही है ॥ सपनें में नाइक को ॥ और नाइका के साथ रतिक
हियै रस्यो देषि के जागति है ॥ तथापि नाइक को हृयै सौं नाइका नाहीं ला
गति है ॥ भ्रांति अलंकार ॥ सषी को उक्ति सषी सौं मध्यम मान भ्रांति अलं
कार ॥ भ्रम चित्त होन आइ भष्यन हूं भ्रांति गाइ ॥ ११ ॥ मूल दोहा ॥ तूं मति
मानै मुक्ताई : किये कपट चितकोरि ॥ जोगुन ही नो राषिये : नैन नि मांक
अगोरि ॥ यह परमान विकरायानी तिमे संभवे ॥ अह नाइका भेद में सषी
को वचन नाइका सौं षि. रेया दि छोडे मन निश्चा षिन मैं गाषि ॥ कवित्त ॥ सव
नई मानियेन देषो सो कपट वित कोरि करै तऊ छोडिवो न अभिलाषिये ॥ को

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जियेहमारोनव्योदोजियेनज्ञानकहुं वारवारवानसमझाइयहैभाषिये
कहैकविकुलसयहलोकहूनसियानीसवदेष्यो राजनीतिहू केग्रंथनमैं
भाषिये॥ जानियेजोगुनहोतोआनियेनऔरउरनीकैहीग्रगोटिक
रिआषिनमैंराषीये॥टीका॥सषीकोवचनसषीसौनाइकाप्रती॥तूं
नाइककीसुन्नाईकहियेऔरनाइकनिकुं॥ सागनिकोमतिमान॥ना
इकनैचितमैंकरोनिकपटकहियेछलनकुरेहै॥तातेजैसेंगुनहीक
हियेगुनहगारकौ॥नजरवंदिराषियतहै॥तैसैंतेंनाइककोनेत्रनिमेंग्र
गोटिकैहैरोकिराष॥इसकोयहमतलवहै॥किनाइककौग्रोरठौरम
तिजानदेह॥अथवासाधकोवचनसाधुप्रती॥अथवाचित्तप्रती॥तूं
अपनीसुन्नाईकहियेमोहनताकोमतिमान॥तैंअपुनेंचित्तमैंकोटिक
पटकरेहै॥अथवाचित्तसंवोधनजानिये॥भगवांननेंतोकोगुनहगा
रकीसुनाईनजरिमैराषीहै॥अथवाकपटकोटकिलाकोनामहै॥अथवा
गुनहगारकीन्याई॥भगवानकोअपनीनजरिमैंराषु॥अथवाजोतैंअप
नेंचित्तमैंकरोरिजेकपट॥तिनकीसुन्निकहियेत्यागसोकियो॥ता
तैंतूंमतिमानेंकहियेवुद्धिमानहै॥जैसेंगुनकोंहीकहियेहियेमैंरा
षियतहै॥तैसैंतूंभगवांनकोनेत्रनिमैंराषु॥इसकोयहमतलवहै॥कि
परमेस्वरहाजराहजूरहै॥अथवाजोतोमैंगुनहै॥तोतूंनारायनकौंने
त्रनिमैंराषु॥पर्जायोक्तिअलंकार॥जोउक्तिकाहूसाधकोहोइतोचित्तहे
जानिये॥चितकिंसंचारीनेपेष्योनवेद॥स्याजांनियेइसोकथनसोअतु
भाउतेंसांतरसव्यंगि॥जोसषीकीउक्तिहोइनाइकाप्रतितोईर्षासंचा
रीभेदोपात्तमैंमानु॥जानियेंपर्यायोक्तिअलंकार॥पर्यायोक्तिप्रकार
द्वैकछुरचनासोंवात॥मिसकरि॥काजिकीजीये॥जैसेंचित्तसुजान
८८॥मूल:दोहा॥आईकहनकछुकह्यो:तोसौंनंदकिसोर॥वडवोली
किनहोतिहै:वडेहगनिकेजोर॥यहमनाइवोसषीकोवचननाइकासं

कवित्त॥ सांचुकहिमोसोंअरेकहेनेवकहननाह्योनोसोंकहाकह्योमन
मोहनकहाकहाईरी॥ वैनांतूऐसोवडोवोलबोलनिगुनमानभयोपतीरिस
रासिवकहाकहेनेभरिपाईरी॥ कृस्नप्रानप्यारेमैअतिहितसोंमनावनतूहेकारि
मनतूहारिविकुवातेंमैंवूनाईरी॥ मानिकह्योमेरोवलितुलटनकारिजोपै
नेह्योपाइवडीवडीआंखिछविछुईरी॥ टीका॥ सखीकोवचननाइकाप्र
ती॥ अरेहेसंवोधनहै॥ नंदकिसोरकहियेश्रीकृस्न॥ तिननेतोसोंक
ह्योकह्यो॥ सोतूवैननकहतीहै॥ औरतूंवडेनेत्रनिकेजोरसोंवडेवडेवो
लकाहेवोलतिहै॥ अथवानोकोंनंदकिसोरजोश्रीकृस्न॥ ताकीसोंहेक
हेगंधहै॥ श्रीकृस्नतोसोंकहाकह्योहै॥ सोतूकयोनकहतीहै॥ नाइ
काकोवचनसखीप्रतीति॥ वडेनेत्रनिकेजोरहैसो॥ वडवोलीवैसोहूति
है॥ काहाकहोनाजहवडवोलहै॥ अथवातोसोजहवडवोलहै॥ अथवा
नंदकिसोरजोनंदकोछोहरा॥ यहवडवोलहै॥ लोकोक्तिअलंकार॥
सखीकीउक्तिमानिनीनाइकासोंलोकोक्तिअलंकार॥ कहनावतिहैलोक
कीलोकोकनिहैसोइ॥ अलः दोहा॥ फूलीफालीफूलसी॥ फिरतिजुविम
लविकास॥ भोरतरैयांहोइगेतेतोहिचलतपियपास॥ उत्तमनाइकासखीकोव
चननाइकासों॥ कवित्त॥ निरखिनिकाईतेरीह्येंतोफोविकाइवलिनहैअ
लवेलीकहुमेरोकह्योकरैगी॥ तेरेतनदुतिआगेरतिननवलीकलागैसा
चीकहितेंतोहठकोलोउरयधरैगी॥ फूलीफालीफिरतिसिंगारसजेसो
तितेरीतिनकेगुमानकहितेंधोकवहुरैगी॥ भोरकीतरैयांसममंदहोहिंगी
सकतिसवकहितूकाजवहोंपियाकेऔरठरैगी॥ टीका॥ सखीकोवचनना
इकाप्रती॥ उन्हेंसोतेंविमलकहियेनिर्मल॥ विकासकहियेप्रकास॥ ता
सेफूलकेसमानफूलीफालीफिरतिहै॥ तेसोतेंतोहिपियकेपासचल
त॥ भोरकेनछत्रवरावरिहोइगी॥ इसकोयहमतलवहै॥ किजैसेंभोर
केनछत्रमैलेहोतहै॥ तैसेंसोतेंतेरीमलिनमुखहोगी॥ उपमाअलंकार॥

ईर्षाभिप्राय वरनाइका मानिनी प्रति बालहूती की उक्ति नाइकानै भेदोपमा
उकह्यौ॥ धर्मलुप्तोपमालंकार॥८०॥मूल:दोहा॥मनमोहनसौंमो
हकरि:तूंघनस्याममल्हारि॥ कुंजविहारीसौंविहरि:गीरधारीउरधा
रि॥यहभक्तकौवचनकहौयेनोसंभवै॥कवित्त॥ मेरोकह्यौमानमन
मोहनसौंमोहकरिसुंदरवदनघनस्यामकोनिहारिलै॥ बृजवन
कुंजकेविहारीसौंविहारकरिगिरवरधारीरूपकारीउरधारिलै॥
भूलिहूंकैचित्तहूथावादमैंरचावैमतिकहूंकविहकलयहमुकुतिवि
चारिलै॥ पिरमरहलधनुजोवनभवननमानिहृजजीवनसौंसाचो
पनुपारिलै॥टीका॥सखीकोवचननाइकाप्रती॥ मनमोहनजोश्रीह
स्नतासौंतूंमोहकरि येप्रीतिकरि॥ तूंघनस्यामजोश्रीहरस॥ ताकौं
निहारिकैदेषु॥ कुंजविहारीजोश्रीकृस्नतासौंतूविहारकर॥गि
रधारीजोश्रीकृस्नताकोंउरविषैंधार॥ ग्रथवातूंस्यामजोतासैं॥ इ
नजोमेघतिनकोदेषिकै॥ मनमोहनसौंतूंमोदकौकर॥ इसकहना
वतितै॥ उद्दीपनविभाइकैमानभंगकरिवाहतिहै॥ जिनश्रीकृस्नप
रवतधारोहै॥ ताकौंउरमैंराषैगी॥ तोतेरीबडीबडाईहोयगी॥परिकां
कुराअलंकार॥ जोसाधकीउक्तिलिहृतोसांत॥ जोसखीकीउक्तिमानि
नीप्रतिहैतोसृंगारहै॥ परिकराकुरअलंकार॥ साभिप्रायविसेषज
हांपरिकराकुरमानौ॥ ८१॥मूल:दोहा॥ उठौसबदरुकाससौं:कर
तिवेपालचितचैन॥ मनौमदनछितिपालकौ:छाहगीरछविदेत॥इ
हसखीकोवचननाइकासौं॥मानछुडाइवेकोप्रयोजन॥सवैया॥ वलिश्राज
सुहावनीरातककीसाजविहारसमोसुषसाजनहै॥ वहदेषिरिहैउ
दोतभयोग्ररनाईगहैछविछाजनहै॥ ग्रवलोकनजाहिविलोलनि
यानिकोमानकहूंउडिभाजनहै॥ यहमानोमनोजमहामहिपाल
कोमानिकछत्रविराजनहै॥टीका॥सखीकोवचननाइकाप्रती॥ सख

हरिनकोराकाकहियेपूरनमासी॥ ताकोससीकहियेचंद्रमासो
उदोकहियेउदितभयो॥ त्वैयोतहिमनविषैचेत॥ मानत्यागना
वैकोकरतिहै॥ सोमानोमदनकहियेकामदेव॥ सोईभयोछितिपाल
कहैराजा॥ ताकोछाहगीरकीछविकोदेतहै॥ उत्प्रेक्षाअलंकार॥ इ
ह्यांशृंगारनाइकामानिनीप्रतिवाएहूतीकीउक्तिनाइकानै॰भेदो
पाऊकयोउत्प्रेक्षालंकार॥ जरुकोजतिसंभावना॰॥ ८२॥ मूलः
दोहा॥ रिसकैसैंकहसमसिमुखीःहसिहसिबोलतिबैन॥ गहमानम
नवैयारहैःभएबहरंगनैन॥ इहनाइकाधीराकोमानहै॥ सोसखीनाइ
काकोनाइकासोंकहतिहै॥ सवैया॥ कैसेंकैदेखकैरोअलिकोलनएतो
सदाहितकेसरसाने॥ सधेचितेहसिबोलतिभामतिबैनकहैअनुप्र
मीठेसुधाते॥ नेहकेचिह्नजनाइसबैविधिवासदवाइकेनेहकेताने॥
मानहियेकोउऐकेकहिवैपोजुमनोठकेरागभयेहगताते॥ टीका॥ सखी
कोवचननाइकाप्रतीअथवासखीप्रती॥ सखीसुमुखीसंबोधनहै॥ अथ
वासहित्तमुखिकहियेचंद्रवदनीनाइका॥ सोरिसकहियेक्रोधतैसोजो
रुषताकोहसिहसिकैवचनबोलतिहै॥ तिणोमानुमनविषैकैसें
रहै॥ नैनबहकहिये[illegible]बहहीनाकेरंगभए॥ इसकोयहमतलब
है॥ किलालनेत्रहैंसिमानजानो॥ काव्यलिंगउपमाअलंकार॥ नाइक
कीयासखीसखीकीउक्तिमानिनीनाइकासोंकाव्यलिंगधर्मलुप्तोप
माकोसंसृष्टि॥ अर्थसमर्थनकोजीये॥ जहांयुक्तसोलिंग॥ काव्य
लिंगसुबनतहां॥ भाषतबुद्धिविचित्र॥ उपमाअरुउपमेयके॥ ८३॥ मूल
दोहा॥ हमहारीकैकैहहाःपाइनपायेप्यौरु॥ लेहुकहाअजहूंकि
येःतेहतरैरोत्यौरु॥ इहअतिरुखमानहै सखीकोवचननाइकासों॥ सवै
या॥ वेदरकचहरसीचारुउपासकहालललीमहिलिफलीमुखदाइनि॥
हाहाकैहारिरहीसजनीबहुभांतिनिहोरन[illegible]कोभाइनि॥ जीवन

जो सिंगार हू जको हरि प्रीतम सो उपज्यो हु रिमाइ नि॥ लेहु कहा अजहूं व
लि नेह सों मो हन रे रो किये ढकु राइनि॥ टीका॥ सषी को वचन नाइका
प्रती॥ हम कहा करि कै तो सों कहा री॥ कहिये याकी तै न मानी॥ अरु
कहिये और॥ प्यौ कुं हिये नाइकुं॥ सो तै रे पाइन डारो॥ सो तै नेह अ
हिये क्रोध॥ ता सों न रे रो मोर कारे कहा लेहुगी॥ विसेषोक्ति अलंका
र॥ सषी को उक्ति मानिनी नाइका सों गुरु मान मेदा पाय विशेषोक्ति
अलंकार॥ सब कारन का नु न सरै॥ उक्ति विशेष बषहिये धरै॥ ८४॥
मूलदोहा॥ लषि गुरु जन विच कमल सोः सीस छुवायो स्याम॥ ह
रि सन मुष करि आरसीः हिये लगाई वाम॥ दूरहू वोधि कहा वनाइका
मोढा परकीया दोऊ जन की चतुराई की क्रिया सषी सषी सों कहति है॥
सवैय॥ आनुकूल मिलि कै सजनी कछु सैन नु है सम भ्यो समझा
यो॥ गोरी लषी गुरु...रिन मैं सब सी हरि सौं सिर स्याम छुवायो॥ सो
लषि कै वृषभान लली हियौ उनरभेद सबका हू न पायो॥ इस्तु कै ह
रि के सनमुष कै करि दर्पन कुचा लि हिये लै लगायो॥ टीका॥ सषी को वचन
सषी प्रती॥ स्याम कहिये श्रीकृस्न तिसनें॥ गुरजन कहिये घर के वडे
लोग॥ तिन के वीच मैं नाइका कौ देषि कै॥ कमल सौं अपनो॥ सीस
कहिये माथो सो छुवायो॥ इसको यह मतलव है॥ कि नाइका के च
रन माथे सो छुवे॥ इस कहना वति सैं मान नी जानिये॥ वाम कहिये
नाइका॥ तिस ने श्रीकृस्न के सन मुष आरसी करि कै॥ सो आरसी अ
पने हिये सों लगाई॥ इसको यह मतलव है॥ कि तुम मेरे हिये मांव स
ते हो॥ हौं तुम कौं मिलौंगी॥ सूक्ष्मा अलंकार॥ सषी की उक्ति सषी
सों नाइका सो॥ कमल पद करि पदलाइति नहीं नहे
सौं सौ नी साध्य व साना लछ्छ ना तें कमल पद कर पद लतिन हो न है
तन अलक धुनि तैं नाइका मानिनी गुरु मान व्यजित है॥ सूक्ष्मालंकार
स छुम पर आसै लषै॥ सैन निमै कछु भाइ॥ ८५॥ मूलः दोहा॥ मनु

नमनावनकोकरैः देनकहाइकहाइ॥ कौनुकलागैपोपियपियाःषिरुझं
रिझवनिजाइ॥ इहनाइकवैमनुदेषिवेप्रयोजनुलैहमानुछतनमानु
हैतनवहीपेरिझषोईदेतहैसोसषीसषीसोंकहतिहै॥ सवैया॥ रोसभ
रीअषियानहुकोअवलीकतमांझभ्रभोरतभारी॥ याहीतेमानहुंको
रुषदेषिवेकौनदनाइहियेकु चिधारी॥ होतिमनोहिप्रियाजवहीतव
मेकारिहेतहमाइविहारी॥ कौनिगलागैपोरहीरसकेषिषिहकैरिझा
वतिराधिकाप्यारी॥ टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ नाइककोमं
नुनाइकामनाइवेकौनहीकरतुहै॥ इसतेनाइकनाइकाकोहठावतहै
पियाकहियेनाइकसोषीझहुमै॥ रिझावतिहै॥ यहकोनकनाइक
कौलागोहै॥ इसकोयहमतलवहै॥ किक्रोधकोभावनाइकाको॥ ना
इककोअच्छोलगतुहै॥ यातेनाइकाकोगुस्साकरावतहै॥ अवज्ञाअ
लंकार॥ सषीकोउक्ति सषीसोंअभिलाषपूर्वकनाइककैमपरिहासअवज्ञा
अलंकार॥ यहीअवज्ञाऔरकेलगैनगुनअरुदोष॥ ८८॥ मूल: दोहा:
तोहीकोछुटिमानुगौः देषतहीव्रजराज॥ रहीचरीलोमोतनसीः मानु
कियेकीलाज॥ इहमानमोचनसषीकोवचनसषीसों॥ सवैया:॥ आ
जुकेचूसनेकीअतिसोभाकहाकहोंपानिकपोलधरेकी॥ आलिनु
कीकिनतीहंसनेनटरीरिसराधिकाकेहियरेकी॥ छुटिगईहसतेदेष
तहीमनुमरतिकाफूलनाईभरेकी॥ मानुहीसीउरमांझरहीवहला
जचरीकलैमानुकरेकी॥ टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ ब्रजराज
कहियश्रीकृष्णताकौदेषत॥ तवहीनाइककोमानुछुटिगयो॥ मा
नकरेकीजोलाजु॥ तासोनाइकाचरीभरिमानसोंरही॥ उत्प्रेक्षालं
कार॥ सषीकोउक्तिसषीसोंमानाभासहै॥ उत्प्रेक्षालंकार॥ जहं
कौजतिसभावनावलहैनुफलमधि॥ ८९॥ मूल: दोहा॥ कपटम
नरमौहैंकरीः मुषअनषौहैंवैन॥ सहजप्रिसोहैंदेषिवेः सोहैंकर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तिनतैंन ॥ यह मानपरिहरासहेनाइकाप्रौढाससीकोवचनसषीसैं ॥
कवित्त ॥ प्रीतमकोप्रीतिप्रतीतिनलषिवेको प्यारीकछुषीनोपरिहा
सम्रसैंरुठोमानठानि ॥ कहैंकविहरुउरमैंपरहथाइंभरीवदनवि
दोरिवैठिधरिकैकपोलपानि ॥ आपनीअलीनहूसोंजोरतिनहष
सुपवैनअनषाइकहिवेकोज्योंलोगरहीवानि ॥ भृकुटीसनकोनी
कपटसोंनानिश्रेयेसोहैनवारतिहगसहजहूसोंहैजानि ॥ टीका ॥ स
षीकोवचनसषीसैं ॥ नाइककोआयोदेषिकै ॥ नाइकाकपटकहियेम
ठेही ॥ भौंहेसतरकहियेटेढीकरी ॥ औरुनायकासुषसोंअनषाह
स्केवचनकहे ॥ नाइककौसहजहीषिसौहैदेषिकै ॥ नेत्रनिकोनाइ
इकासमहनहीकरतिहै ॥ इसकोयहमतलवहै ॥ किनाइकामष्य
मरुठोमानुकरो ॥ पाछेतैंमानुसांचोभयो ॥ काव्यलिंगअलंकार ॥
सषीकोउक्तिसषीसैंनाइकाकेहर्षअवहित्थासंचारीहूए ॥ इंषो
भासविवोकहावमानाभासहै ॥ काव्यलिंगअलंकार ॥ अर्थसम
र्थनकीजोये ॥ जहांयुक्तसोमित्रकाव्यलिंगभूषननहां ॥ भाषनवु
धिविचित्र ॥ ८८ ॥ मूल ॥ दोहा ॥ सोवतलषिमनमानधरिहिगसो
योपियआइ ॥ रहीसुपनकीमिलनमिलिःतियहियसोंलपटाइ ॥
यहनाइकाप्रौढाहै ॥ मानवतीहिसोईहै ॥ नाइकहिगआइसोयोहै ॥ सो
सुपनेकीमिलनिकोसुकरिलपटाइगई ॥ मानहूराष्योसोसषीसषी
सोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ मानकीयोतियमानेंनवैसैंहूआलीरहीवहुभां
तिमनाइकै ॥ सोइगईरिसहीजियमैंधरिसोइरह्योहिगमोहनआ
इकै ॥ सोसहूमैंसरसायोरसैकहेतैनवनेजरहीछविछाइकै ॥ वाल
वहसुपनेकेसुभाइरहीपियकेहियसोंलपटाइकै ॥ टीका ॥ सषीको
वचनसषीप्रती ॥ मनमैमानकोधारिकैसोईजोनाइका ॥ ताकोल
षिकहियेदेषिकै ॥ पियजोनाइकसोहिगआइकैसोयो ॥ तियकहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

येनाइकासोमपनेंकौमिलनौसोमिलिवै॥ नाइककेहियेंसोल॰
विराहरुौ॥ पर्जायोक्तिअलंकार॥ उक्ति सषीकौसषीसों सिंयोगसृ
गार॥ ईर्षाजनितहर्षादयअवहित्थासंचारीहर्षभृकुट्यादिअनुभाउपर्या
योक्तिअलंकार॥ पर्यायोक्तिप्रकारहै॥ कह्युरसनासोंबातमिसरच
िकारिज्जकौजीयेजैसेंचित्रमहहान॥ ८५॥ मूलदोहा॥ दोऊअधिकाई
भरे॥ एकैगोगहराइ॥ कौनमनावैकोमनैं॥ मानैमनुठहराइ॥ यहप्र
परमानकै॥ दोऊअधिकाईभरे॥ सनाइकामानवती॥ नाइकुलहमानी॥ अप
नानाइककौंमानदेषिवेकौंसोपै॥ सषीकौवचनसषीसों॥ अजोदोऊअन्या
समहोपुनौयौंहीकहिवौसंभवे॥ ॥ आजुचलीविसहीविसमें
रसवातडूहनिसवैयाकहिआवै॥ लेअपनेंअपनेंविसमेंअकुलायेवि
योअवकैयाहरकावै॥ दोऊवहेअधिकाईभरेगहेंएकहीगोकोऊभेद
नपावै॥ कौंनमनावैमनैंकहिकोमनमानौदुहूनकौंमानछिमावै॥ टीका
सषीकीउक्तिसषीसों॥ दोऊकहियेनायकनाइका॥ नेअधिकाईकहि
येहठकीअधिकाई॥ तासौभरिरहेहै॥ सोदाऊकीएकैगोगहिरीभईहै॥
तातेंकौनमनावै॥ अरुकौनमानै॥ दोऊकेमानकौमनुठहरानौ॥ इस॰
कौयहमतलवहै॥ कौदोऊनेंमानकछाड्यौ॥ अलंकार॥ स॰
षीकीउक्तिसषीसौंअपरसमान॥ काव्यलिंग॥ ८६॥ मूलदोहा॥ ग॰
हैयोअवोलौवोलिप्यौ॥ आपैपठैवसीठि॥ दीठिचुराईदुहूनकी॥ लषि
सकुचौहीडीठि॥ दूहूनाइकाअन्यसंभोगदुषितासषीकौवचनसषी
सों॥ सवैया॥ आपनीप्यारीअलीकौपठैपियप्यारेकौआपुहीवोलिप
ठायो॥ आगेंहैआइलियाहितसौंहियरौहुलसैयौनिषेगजवआयो॥
एतेपैहकलदुहूनकीडीठिलजौंहीलषीउनैहुनचायौ॥ वोलेकौभा
रीमलोलोभयैजियकासौंकहेअपनौउरकायौ॥ टीका॥ सषी
कौवचनसषीसौ॥ आपुहीवसीठिकहियेसषीसौंप्योकहियेनाय

का॥ ताकेबुलाइवेकौंपठाई॥ फेरनाइकाश्रबोलोकहियेमौनसौंषक
रै॥ दुहूनकीकहैसषीनाइककौंसकुचौंहीकैंहै लाजभरीदृष्टिदे
षिकै॥ अपनीदृष्टिचुराईकैंहैं दोऊकौंतरफनदेषो॥ इसकहूनावति
सो॥ नाइकाअन्यसंभोगदुषिताजानिये॥ श्रबोलोयहतेमानुधनिन
होवहै॥ विषमाअलंकार॥ सषीकीउक्तिमानिनीप्रतिनाइकाअन्यसंभो
गदुषिता॥ मौनरहिवेतेंनाइककी॥ प्रत्यक्षताकरिमानश्राभासन
है॥ यातैंमानिनीकहियेविषमाअलंकार॥ श्रानरंगकैंकारनतेंजह
कारज॥ श्रानरंगहैजाइ॥ उद्यमकीजेभलोजालोजानिकैं॥ तातेंहो
इबुरोफलश्राइश्रनमिलतेकोसंगहोइ॥ नहोंजानिलीजीयोचित्रच
लाइ॥ अलंकारयहविषमतीनविधिमैसबकोंदीनोसमझाइ॥ ९२॥ स
लःदोहाः॥ षरीपातरीकानकीःकौनवहाऊंबानि॥ आककलीनरली
करैःअलीअलीजियजानि॥ यहनाइकामानवतीसषीसोंवचनकरावति
है॥ सवैया॥ कानकीपतरीसुनरीसुतायसोंसहभाउकहालोधरैगी॥
येतोवहूउसनेंसजनीअजहूंमेंयेतोहिपुकारकरैगी॥ आककलीन
रलीकरैभौरनभौरतेंसाकलोंनाहिररैगी॥ हलककहैमनहूसनयोंहि
कहायहतेरासमानसरैगी॥ टीका॥ सषीकोवचननाइकाप्रती॥ तूषरी
कानकीपातरीहै॥ इसकोयहमतलबहै॥ कितेंजोसुनतीहै॥ सोई
मानिलेतीहै॥ सोतेरीजहकौनसीवहाऊबानिकहियेंसुभाउसोपरी
है॥ अलीनाइकाकोसंबोधनहै॥ अलीकहैभौरा॥ सोआककीकली
मैंरलिकहियेंक्रीडा॥ ताकोनहीकरतहै॥ सोतूंजियमैंजानु॥ इसको
यहमतलबहै॥ कितेरोनाइकतुझोहकाहमैनहीआसक्तहै॥ अथवाना
इकाकोवचनसषीसैं॥ नाइककोकानकोषरोपतरोसुभाउपरोहै॥
ताकोंमैंवहाइहेंउ॥ अलीसषीकोसंबोधनहै॥ भौराआककीकलीन
मेंक्रीडाकरनलागो॥ यहतूंजानु॥ इसकोयहमतलबहै॥ किनाइकु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कुरीभलीठौनहींदेषतहै॥अर्थांतरन्यासालंकार॥सषीकोउक्तिमा
ननीप्रतिसौक्षामतिसंचारी॥अर्थांतरन्यासाकहोअर्थजहांबिधियुत्र
छुअर्थसोभिन्न॥सोअर्थांतरन्यासहै॥पंडितकहतप्रवीन॥५२॥मूलः॥
दोहा॥मानकरतिवरजतिनहीं॥उलटिदिवावतिसौंह॥करीतिसौंहीं
जोइगी॥हसतहंसौंहीभौंह॥यहनाइकामानछोडावतिहैसमानछुडा
वैकौंप्रयोजननहै॥सषीकोवचनसषीसौं॥सवैया॥हषोकरौंहषवैंनचहा
ह्यौंवेंनवाहैजुषेसोअनषोहै॥मानुकरोंसभलीकरीहानमनेकौंदिवा
वतिसौंहै॥सोतुमसौंहफेनऊनदेतिसहिदेषोगीमोहनकौंमंजु...जोहैं॥दो०
हिंगीकेसरसोहीहगहागिलहसीभरीजुसभाइकीभौंहैं॥टीका॥सषी
कोवचननाइकाप्रती॥तैंमानकोकरतिहै॥सेतोकौंमनैनहीकरतिहो॥
तापैसहजकहियेंसुभावकीहसौंहजेभौंहैंतेरिसौंहीकरीजाइगी॥इ
सकोयहमतलबहै॥कितोसौंहैहीभौंहैनहीकरीजाइगी॥काकोक्तिअ
लंकार॥वानरूनीकोउक्तिमानिनीप्रतिभेदापायकाकोक्तिअलंकारहै॥
औरस्वातमैंऔरहीअर्थकरैजहज्ञानिसेषसुद्धहैभोनिकी॥वक्रोकति
उरआनि॥५३॥मूलःदोहा॥रुषेरोषेरुषेरोषमिसःकहतिरुषाहैवैन॥
रुषेकैसेहोतहै॥नेहचीकनेनैन॥इहनाइकालछितापरकियाकषाइक
रिसषीसोंजुरावतीहैपेप्रीतिकेनेत्रदेषिसषीसषीसोंकहतिहै॥कवित्त॥
भ्रकुटीमरोरतिसुरमारिरामुसिसकरिरूपकरुषाईसाधिकहैरुषैवैनहैं
आलिनकोयहैपनप्रीतिहीकोधरैननुकैसेंहदुरावाकछुइनसोंजुरतनहैं
हरिकेसनेहसानीकैसेंधोवहुनछानीकहैदेनप्रगटहूविलोकिमिश्रेन
है॥रुषोरुषकरिरुषीवानिगनिवेडीपरिरुषेकैसेंहोतनेहचीकनेए
नैनहैं॥टीका॥सषीकोवचननाइकाप्रती॥रुषेरुषकहियेंरुषसुभा
उसो॥क्रोधकेरुषकेमिसकहियेंछलसो॥तेंरुषवचनकहतीहै॥त
थापितेरेनेहकहियेंप्रीतिअग्रथवालेल॥तासोचिकनेंजेनेत्र॥तेरुषकै
सेंकहियेंःकौनभातिहोतहै॥काव्यलिंगअलंकार॥उक्तिसषीको

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बिहा॰
९२

103

सषीसोंसंयोगशृंगार॥ ईर्षासंतिरहर्षोदयअवहित्थासंचारीएतेहुअथ
अनुभावउपमानिनीनाइकाकाअलिंग॥०॥ अर्थसमर्थनकोजीयति
हासुत्रसोमित्र॥ काम्रलिंगभूषननतहांभाषतबुधिविचित्र॥ मूलःदो
हा॥ सोहैहचायोमनतेंः केलीषाइसोह॥ पहोवेगवैठीकियेंःयेढींवैठी
भाव॥ इहनाइकामनवतीसषीकोवचननाइकासों॥ कवित्त॥ केती
मनुहारिकरिहारयोनंदलालब्रजवनितानिहालहोतिजाकेनेकचाह
तें॥ होतनहसयानीपरिकहोचितआनीएतेरिसकेसमाजविनुकाज
अवगाहतें॥ सोहैहेरिवेकोहमकेलीषाईसोहैतऊतेरोमनललकौ
नरसवेउमाहतें॥ कीयोकहाचाहतिहैसोईवेगानकहैबलिएंडीगेंवें
डीभोहैंकरिवैठीअवकहाहैतें॥ टीका॥ सषीकोवचनअथवानाइक
कोवचननाइकासो॥ मैंतोसोंकेतीसोंहकरि॥ पैसोगंधतेषाई॥ नथ
पितैसमहैनदेषो॥ पहोमैंबोधनहै॥ तभोहनिकोयेंठिवैठीकेवेगावै
ठीहै॥ इसकोयहमतलबहै॥ किभोंहवेपानानीहै॥ विसेषोक्तिअलंका
र॥ हतीकोउक्तिमानिनीनाइकाप्रतिगुहनछेकानुप्रासविशेषोक्तिकी
संसृष्टि॥ जहांवीचपददेपसेअक्षरसमतायाइ॥ नहछेकानुप्रासहैक
हतसुकविसमुदाय॥ सवकारनकाजनसरै॥ उक्तिविशेषसहोये
धरै॥०॥ ८५॥ मूलदोहा॥ लगेसुमनहैंहैसफलःआतपरोसनिवा
रि॥ वारीवारीआपनीःसींचिसुहृदनावारि॥ इहसषीनाइकासोंसि
षावकहतिहै॥ कवित्त॥ वारीहैनवावरीतहेतिलउवावरेवेमानकति
वेकोउसमोसरविचारिये॥ अवहौतोनेहवेलिनवललगाईताहिजन
नवतनहठकरिमोषिपारिये॥ लगेपाहैसुमनसुतौरोहिगोसुफल
अवकहैकविकुसारिसआमपनिवारीये॥ सिषमानमेरीमतिसोति
नुकेचितकैप्यारोप्रीतिरसहोसोंसीचिहिवारिये॥ टीका॥ सषी
कोवचननायकाप्रती॥ तेरोमनसमनकहियेंभलो॥ मननायकूको
लागोहै॥ अथवासुमनजोफूलसोवहतमैलागोहै॥ सोसफलहोइ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गो ॥ फलसंपूर्न होइगो ॥ ताते आतप कहियें घाम ॥ सोई भयो रोस क
है गुस्सा ॥ ताको निवारक कहियें दूरि करै ॥ वारी बालक नाइका को संबो
धन है ॥ नेवारी कहियें नाइक के मिलवे को दिन ॥ अथवा वारी कहियें
फलवारी ताको सुहृदयता कहियें प्रीति ॥ सोई भयो वारि पानी ता में
सींचु ॥ इसको यह मतें लवहै ॥ कितहूं गुस्सा मति करु ॥ नाइक के साथ प्री
ति करु ॥ काव्य प्रकास के मत मुष्य श्लेष मूल वक्र रूपक ॥ जमका अलंका
र को संकर ॥ मानिनी नाइका प्रति सषी को उक्ति सो लुभाव धुनि मुष्य
श्लेष मूल क रूपक अलंकार है काव्य प्रकाश के मत चंद्रालोक को मन ने
समासोक्ति मुष्य श्लेष रूपक यमक यो षक है रूपक रूपक मूल ज॰
ह ॥ परंपरति है सोइ ॥ श्लेष मुद्रा है भांति को ॥ वरनत है कवि लोग जग
अप्रस्तुत पूरन है ॥ अस्तुत वरनन माह ॥ समासोक्ति तासों कहत हैं छ्या
ग्रथन मांहि ॥ एक शब्द के अर्थ जह भासत आइ अनेक ॥ स्लेष सो संक
हत है ॥ जिनके बुद्धि विवेक ॥ जहां वह पद पुनि परे अर्थ और वही होइ ॥
तहां जमकालंकार है भाषत पंडित लोइ ॥ २६ ॥ मूल दोहा ॥ परी जरहते
री धूर्ते बोहं अकु लिन जाइ ॥ नेह भरे हियरा षियें नूह षियें लषाइ ॥ उ
हमनाइका सषी को वचन नाइका सों ॥ कवित्त ॥ कौन परी प्रकृति न छूटे हू
न छूटै वैं बांह जैसो जैसो कीजे ऊन तैसो तैसों हुतनी पैषियत है ॥ कुलस आन
प्यारे को डुहाई दैषो तेरी गति मेरी मति सोचि सो समनी विसे षियत है ॥
नेय पसने ह भरे उर में बसाई प्यारे प्रीति सरसाई अनलेष लेषियत है
तऊ तिय भोहन में बैननु में नैनन में तैं अंग अंग मैं रुषाई देषियत है ॥ टी
का ॥ सषी को वचन नाइका प्रती ॥ ऐसी संबोधन है ॥ जहतें रीदी नीजे अ
कृति कहियें स्वभाउ न छीजानु है ॥ नाइक तो कौने ह भरे हियमें राष
तु है ॥ तऊ तें रुषी दे षियति है ॥ नेह पद इहां श्लेष कौ कहतु है ॥ अनकूलं
अलंकार ॥ बाण कूती को उक्ति मानिनी सो उपालंभ संचारी अनकूल

104

चित्र·
२८

लंकार॥ सुषतरुण सुरतांति भएउ जब तनलागत नाह॥ ५७॥ मू
लदोहा॥ विधिसों निधि निकरे है रहीनपरे रहू पान॥ चितै किते नैने ले
धरोः इतो इते तन मान॥ इहां नाइका सखी को वचन नाइका सों॥ स
वैया॥ पाइ परे मन मोहन हूं बहु भांति हितो रसभाइ भरे तो॥ प्रीति ल
की चोप बढाइ अलीनि कही सम भाइ विनै करिके तो॥ लोचन तें रनकु
नल चैअनषाइ तन चै अनि रोस रचै तो॥ नाक चितै मृगनैनी कितै न धरे तो
भरि मानु इतै तनु पतो॥ टीका॥ सषी को वचन नाइका प्रती॥ पानहू
नक हियें षापते महीन भये॥ सुषतें विधि विधिका हियें बड़े कह सोनि
करत है॥ और र रतु है॥ सो तूं नाइक को नरफ चितै के देषु॥ सो तें यसी
सहु मदे है मेंपतो बडो मानु कहातें ले धरो है॥ अधिका अलंकार॥
सषी को उक्ति सषी सों स्तुह मान नाइका मानिनी विषै षोक्ति अलंका
र को संसृष्टि॥ अधिकाई आधेय को जब आधार सों॥ हेतु कै आधार आ
धेय तें॥ अधिक अधिक है सोइ॥ ५८॥ मूलदोहा॥ तोर समाचो आनव
सःकहै कुटिल मति कूर॥ जीभ निबोरी को लगैः बौरी चाषि अंगूर॥
इहां नाइका के चित्त को भ्रम सषी निवारनु करति है॥ सषि को वच
न हु विवोह संभवे॥ मनाइवे हूं हेतु अनकूल नाइक स्वाधीनप
तिका नाइका॥ सवैया॥ नेरो ई ध्यान धरे मन मोहन कान न हूं सुनि ने
री बूथा है॥ तो रस रंग मैं पागि रह्यो निस वासर ते रोई रूप सराहै॥ वा
वरी टेषि विचारि हियै को ऊ दोष कहि षाइ निबोरी ही चाहे॥ ताहि तूं औ
रसों राच्यौ कहै कहि मी सो हहा मन आई कहा है॥ टीका॥ सषी को
वचन नाइका प्रती॥ नाइकु तेरो मषो रचो है॥ नाइकुः और नाइका के
वस मैं है॥ इस बात को कुटिल कहियें है ही जे नाइका॥ और जे मति
कूरक हियें मतिहीन जे नाइका ते कहीनी है॥ बौरी बाउरी को सबो
धन है॥ जिन अंगूर को फल चाषो तिस को नीव वृक्ष को फल मी

ठौलगतुहै॥ इसकौयहमतलवहै॥ कितेरेआगेऔरुनाइकाआछी
नहीलगतीहै॥ अर्थांतरन्यासअलंकार॥ मानवतीनाइकाप्रतिसखी
इसीकोउक्तिउक्तिउपमालंभअर्थांतरन्यास॥ कह्योअर्थजहसोषि-
ये॥ वर्ण्यअर्थसोभिन्न॥ सोअर्थांतरन्यासहै॥ बुधजनकवरैप्रतीत॥ १४४
मूलःदोहा॥ गहलीगरवनकीजियेःसमैसुहागनिपाइ॥ जियकौ
जीवनिजेठहीःमाहनछाहसुहाइ॥ इहसखीकोवचननाइकासें
सिख्यारूविनमनाइवो॥ अरुनाइककौहितअधिकजानिसोतिं
कोदेषिकहै॥ तौअहयासंचारी॥ अन्यसंभोगितदुखिताकेभेदमें
होइ॥ सवैया॥ अलिहौसमकाचनितौदियेहैतजमानरुहासुषदे
रहमै॥ फलवधौनलहैनवजोवनकोमनमोहनसोमिलिवोनर-
मै॥ लइवावरीपाईसुहागसमैजिनिएतोगुमानधरैमनमै॥ सवकौ
वहजेठमैंजीवनसरिसछांहसुहातिनमाहसमै॥ टीका॥ सखीको
वचननाइकाप्रती॥ गहलीगर्विहनाइकाकोसंवोधनहै॥ इससमैं
विषैसुहागपाकरिके॥ नाइककोप्यारतौकोपाइकैगरवुनकरियें॥ ।
काहेकाकियेंक्यायासोजेठमहीनाहीमेंजीवनसरिसहै॥ माहमही-
नामैछाहनहीभलीलागतिहै॥ इसकायहमतलवहै॥ कितेरी
इसअवस्थामैनाइककोप्यारहै॥ दृष्टांतअलंकार॥ सखीकीउ-
क्तिमानिनीनाइकासौ॥ विभावविरुद्धएहवन॥ दृष्टांतअलंकार॥
उपमानरुउपमेयगुन॥ वाचकधर्मसुजान॥ होतविंबप्रतिविं-
वहैदृष्टांतसुपरिमान॥ ३०००॥ मूलःदोहा॥ हाहावदनउघारिदृगः
सफलकरेसवकोइ॥ रोजसराजनिकेपरैःहसीससीकीहोइ॥ यह
हालवर्ननहै॥ इसखीनाइकासौकहैहै॥ नवोढाकेप्रसंगमेवने
मानकुछाइवेकौकहतहै॥ कवित्त॥ लोचनललहैकोफलसफल-
हमारोराजहप्यारीप्रांनपतिकोमनेतहरमलीनकरि॥ तेरोपाइपरम

मिकाइकीअवधिअवधतीवृषभानकीकुंवरिअरवीनकरि॥हाहेहं
उचारिमुषदारिपटवंचूवटनिजबुविधानपमैं पीकेनैनमीनकरि॥
केजज्ञविङ्कीनकरिससिहिमलीनकरिहोतिनकौदीनकरिप्या
रेकौअधीनकरि॥टीका॥सषीकोवचनकैनाइककोवचनसषीम
नी॥मैंतोसोहाहाकरतिहौं॥तूंअपनेवदनकहियेमुषताकोउघा
रकहियेषोलु॥सवकोईनेत्रनिकोसफलकरै॥अथवासहरनकोइ
नसुफानेत्रसफलहोइ॥सरोजकहियेकमलतिनकेराजकहियेरा
उनासोपरै॥औरससीकहियेचंद्रमाताकोहसीहोइ॥अथवाकमल
निकेराजहोइ॥परकहियेरातिकौंचंद्रमाकोहसीहोइ॥इसकोयह
मतलवहैं॥किदिनकौमुषकेषोलेकमलरोवै॥रातिकोचंद्रमाकोहा
सहोइ॥प्रतीपालंकार॥मानिनीनाइकाप्रतिदूतीसामोपायकार
तिहै॥प्रतीपालंकार॥उपमानवस्तुउपमेयकीसमालाइकमाहि॥चो
थोभेदप्रतीपको॥पुनोपुरवनिपांह॥२॥[illegible]॥कहालेहुगेष
लमैःतजोअटपटीवात॥नेकुहसाहीहैभईःभौंहैसोंहैघात॥इहनाइके
औरसोंअसक्तजानिनाइकानेमानकीयौनाइकमनावनआयोहवाही
नाइकाकीनामसहतेंनिकसियोसोसषीनाइकसोंवावैभ।नाइ[illegible]
इवेकोपरिहासकौप्रसंगचलायोसषीकोवचननाइकासों॥सवैया॥
हांसीतोकीजीयेनासोंललाजुहसेंहसुपाएनयेतियऐसी॥वारहीं
वारलेऔरकोनामसुकाइवाइकेनजोवानिअनैसी॥यापरिहासपै
लैहोकहाहरियानाइलेकहिकेमुरिवेसी॥सोहैकियेभएतीठिहु
सोंहीपभौंहकमानमनोजकीजैसी॥टीका॥सषीकोवचननाइ
कप्रती॥इसषेलमैतुमकहालेहुगे॥नातेपअटपटीकहियेषोटी
जेवातेतिनकौतुमतजोकहैछोडो॥नाइकाकीभौंहैसोंगंधेषात॥हु
सोहीतनकभईहै॥काव्यलिंगअलंकार॥सषीकोउक्तिनाइकाप्रति

मध्यमसमाजमानिनीनाइकाव्यलिंग॥ अर्थसमर्थनकोजियेजहांयु
क्तसोमित्रकाव्यलिंगमखनतहांभाषतबुधिविचि॥२॥अथदोहा॥
सकुचितरहियेंस्यामसुनि:एसनतेरोहेवेन॥देतरचौहांचितकहें:नेह
नचौहैंनैन॥यहमध्यमसमागमनाइकपरकीयासखीकोवचननाइका
सों॥कवित्त॥नाहीमैंहांहेनईरीतिहैईहांकीयहरसिकमननिकोकर
तिअतिचैनहै॥ यहरुखौंछांहचिकनावतअधिकचखराईमनमथकेवि
लासखबदेतहै॥सकुचितरहोयेसुजानमनस्यामसुनेकहांभयोतो
पेसनतराइकेहेवनहै॥प्रीतिसोंसचौहेंयारचौहैंसोहियेकीवातमेंहः
सोनचोहेंएककहेईदेतनैनहै॥टीका॥सखीकोवचननायकप्रती॥स्या
मनाइककोसंवोधनहै॥एसनतेरोहैकहियेंसमानभरेवेनकहियें॥ना
ईकाकेवचनतिनकौंसुनिकैसकुचितरहियेकहियेलाजनकरियें
नाइकाकेनेहकहियेंप्रीतिसासौंनचोहैजेनेत्रतेनाइकानुसारसाथ
रचिरहीहै॥काव्यलिंगअलंकार॥सखीकोउक्तिनाइकसोंनाइकाकैसं
गिनाइकाकेपरिहासहै॥काव्यलिंगअलंकार॥अर्थसमर्थनकीजी
यै॥जहांयुक्तसोमित्र॥काव्यलिंगमखनतहां॥भाषतबुधिविचित्र
३॥अथदोहा॥चलोचलैहुटिजाइगो:हठरावरेसकोच॥सेरचढाए
हेतिअव:आपलोचनलोच॥यहसखीकोअयोजनमानकुइवोनाइ
काकौलैजाइवोसखीकोवचननाइकसें॥सवैया॥जानेकोकाहूतिहा
रीपियारीकहांजियजानिसहारिसठानी॥केलीमेंवातवनाइचनाइ
करीमनुहारियैएकनमानी॥ वैगोंहूकेआनुटुरैहगभौंहकहूकनईजु
डतीअतितानी॥लालचलोअवलोकिनुहैलैछुटिजाहिगोमानअ
वैहमजानी॥टीका॥सखीकोवचननाइकप्रती॥तुमनाइकाकेपा
सचलो॥तुमारेचलतेंअगेरावरेसंकोचसोंनाइकाकोहठछुटिजाइ
गो॥औरनाइकानेजेनेनखरेचढाए:तेतिलोचनकहियेंनेत्रतेअव।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लोचकहियेनेत्रनै ॥ अवलोचकहियेहमपैभए है ॥ काव्य लिंग अलंका
र ॥ दूतीकीउक्ति नाइकासौं काव्यलिंग अर्थसमर्थनकोजीयेसो ॥ ४ ॥
मूलदोहा ॥ अनरसहूरसपाइयत: रसिकरसीलीपास ॥ जैसैसाठे
कीकठिन: गांठौभरीमिठास ॥ दूतमानवतीकीसोभासषीनाइकासौं
कहतिहै ॥ प्रयोजनयहहैकिनाइकचलैतौ मानछूटै ॥ कवित्त ॥ मा
ननीनिहारीमनमोहननिहारीकहूमोपैनकहोपरैतुसोभाकौनवि
लासहै ॥ नासिकासकोरमोरभ्रूकुटीअनषिवैठीलोचनतुमाफअब
नाइकौप्रकासुहै ॥ रसिकरसलवारसीलीकोविलोकोछविअनरस
हूमैंऐसोरसकोविलासुहै ॥ कहैंकविकुलसजैसेंकंठेकरसरीतिगां
ठिवकैतौकठिननरपैरसुमिठासुहै ॥ टीका ॥ सषीकोवचननाइक
प्रती ॥ रसिकनाइककोसंबोधनहै ॥ रसीलीकहियेरसभरीनाइका ॥
ताकेपासअनरसहूकहियेबिनारसहूरसपाइयतुहै ॥ जैसैसाठाक
हियेगाडैताकीकठिनकहियें ॥ कठोरगांठिमिठासभरीहै ॥ इसको
यहमतलबहै ॥ किनाइकामानहूमेंसुषदानिहै ॥ उपमाअलंकार
दूतीकीउक्तिनाइकसौंनाइकामानिउपमालंकार ॥ उपमाअरुउपमे
य ॥ साधारनवाचकहोइ ॥ एचारौंपदएजिहांपूरनउपमाहोइ ॥
५ ॥ मूलदोहा ॥ सकुचनसकवतानेवचन: मोउरकोरसषोइ ॥ छि
नछिनऔरेघीरलौ: घरोसवादिलहोइ ॥ दूतनाइकासठमापरा
पायोहैसुनाइकाकौक्रोधमे। कटुकवचनकहतिहै ॥ ताकोरीति
वातकहिकोमुनिवारनुकरतिहै ॥ नाइकाअधीरा ॥ तियेनाइकको
वचननाइकासौं ॥ सवैया ॥ काहेतेभोंहनैनीभईतियकोनपैकोज
नकोपइतीकौ ॥ तेरैनैनोतांतेऊवोलसुहातेपमोदमहांउमगावत
जीकौ ॥ कोरिककैकिनभामनिकैसंहुहातौनहोतजुमोरसहूही
कौ ॥ ज्यौंहोज्यौंघीरुघरोवकरिआहियेत्यौंहीत्यौंहोतुसवादिलनी

कै॥ टीका॥ नायककौवचननाइकाप्रती॥ नेरेलानेवचनकहियें॥
क्रोधकेवचनतेंमेरेहियेंकेरसकौहरिनहींसकतिहै॥ नेरेक्रोधकेव
चनहुनछनूविषै॥ औरहूधलोषरसादिष्टहोतहै॥ उपमालंका
र॥ नाइकाकीउक्तिमानिनीनाइकाप्रतिउपमालंकार॥ उपमाग्रह
उपमेयहै॥ ६॥ मूल॥ दोहा॥ वृंदोंहूमहवाननलगैः याकेभेदउपाइ॥
हठहूहगाहगाढवैसचलिः लीजैसुरंगलगाइ॥ यहगुरुमानहैसषी
नाइकसोंकहतिहै॥ वाकौमाननुलावेचलेहूहैगौसषीकोवचनना
इकासों॥ सवैया॥ आजुसज्यौहठकौगढप्यारीनेदेषनधीरजकौनकौ
धीजै॥ कौनहूंभांतिलगैमहवानतिभेदउपाइथकेमतिछीजै॥ लो
चनहूतनवैंगोहूमिलैहरिमानिपैमंत्रविलंबनकीजै॥ आपुनहीच
लियेंमिलियेवलिजाइसुरंगलगाइजोलीजै॥ टीका॥ सषीकोवच
ननाइकप्रती॥ नाइकाकैसेंहूंकाहूकेसाथवाननहीकहतिहै॥ गाढव
तकैसेंहूसहवाननहीलगतिहै॥ अथवागढकेलोगवाहिरकेलो
गनिकेसाथवातनहीकहतहै॥ भेदकेउपाइकरथके॥ इसकोयहम
तलबहै॥ किऔरवातनिसौनाइकानहिमाननिहै॥ गाढपनजिसकौ
भेदुनहीलगतहै॥ हठजोहैसोईभयोहूहगाढनामेगढकेकहियेंग
होईनाइकामाकौमसुरंगकहियें॥ भलोरंगलगाइनाइकाकीजे॥ इ
सकोयहमतलवहै॥ किगहसुरंगलगायेंमिलतहै॥ तैसेंचलीप्रिति
लगाइनाइकामनाइलेउ॥ श्लेषालंकाररूपकाअलंकार॥ दूतीकी
उक्तिनाइकप्रतिनाइकामानिनीश्लेषरूपककोसंकर॥ एकपाठकै
अर्थजह॥ भासतआइअनेक॥ शाहृश्लेषसंकहतहै जिनकैवुद्धिअ
नेक॥ उपमानरुउपमेयमें॥ भेदपरैनलषाइ॥ ताहीसोरूपककहतहै
सकलसुकविसमुदाइ॥ ७॥ मूलदोहा॥ वाहीदिननेनामिटेमान
कलहकोमूल॥ भलेपधारेपाइनेंकहूगउहरवीफल॥ उहनाइका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

107

विहा॰
९०

परकी प्राइ पपति कौ विरह दुराइवे कौ पति सौ मान की हौ सौ स
षी सषी सौं कहति है ॥ जौ नाइका की सषी नाइक सौं कहै तौ षंडि॰
ता है ॥ कवित्त ॥ जा हि रजनी के चुंबन मे आन चुंबन मे जाने कौ न क
हा मंत्र कै से पठनायो है ॥ वा ही रजनी ते गुंज्या मिटै न आने सो मान स
षी पचिहारी है मरसनु पायो है ॥ का है क विहास ऐसे नाहू ठनस मान
देष्यो जैसे सो उहि लसि हारी उर मैं डिहायो है ॥ पाइने पधारे आछे फूल गुड
हर कौ है कल ह कोमल बाचु गर बगरायो है ॥ टीका ॥ सषी कौ वच
न नाइक प्रती ॥ अथवा सषी प्रती ॥ लराई को मूल जो मान ॥ सो नाय
का को वा दिन तें मिटै न ही ॥ पाइने संबोधन है ॥ अथवा मूढ़ि मान
नाइक सो गुड हर को फूल बनिके चर मे लाए लराई हानि है ॥ तें से॰
नाइक जब तें चर आयो तब तें लराई मिटि नहि ॥ रूपका अलंकार ॥
सषी की उक्ति नाइक सौं परिनाम का रूपकालंकार ॥ उपमान कउप
मेय मे ॥ ८ ॥ मूल दोहा ॥ आप आपु भली करी : मेटन मान मरोर ॥ ॰
हरि कै राय ह देषिये : छला छिगुनिया छोर ॥ दूहू नाइका पौ ठा षंडि॰
ता नाइका कौ वचन सषी कौ वचन नाइक सौं ॥ सवैया ॥ आप
कृपा करि आप भली करी आजु कौ वा निकु मा मन मोहै ॥ देषन रावरी
मोहनी मूरति मान मरोर धरे उर कोहै ॥ काकु छबीली कौ छोरो छला
य हिये छिगुनी के छाजत जो है ॥ देषि दिसा हि गी हरि कै री क छुजा
नत है अनषाइल सो है ॥ टीका ॥ सषी कौ वचन नाइक प्रती ॥ सो तु
म आपु मान कौ मरोर मिटवे कौ इहा आप सो तुम भली करी ॥ छगु
नी के छोर में इ मछला कौ हरि कै री ॥ काहु बहु नाइका देषि है ॥ तो॰
मानु छुटनो कठिन है ॥ छोर पद ते छला और कौ है ॥ विषमा अलं॰
कार ॥ मानिनी नाइका की सषी की उक्ति नाइक प्रति ॥ सो इहां विषमा
लंकार ॥ आन रंग कै कारन तें ॥ जह कार ज आन रंग है जाइ ॥ उद्यम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कीजै भलो जानिकै ॥ जातें होइ बुरो फल आइ अनमिलनै को संग होइ ॥
तजि जानि लीजौ यो चित्त चलाइ ॥ अलंकार यह विषमलीन ॥ सबकौं
दीनो समझाइ ॥ ४ ॥ मूल दोहा ॥ तूं हूं कैहैं हूं कहै कहा समझनि सबै स
यान ॥ लषि मोहन तो उरबसै मान नु राषो मान ॥ इहां नाइका प्रौढा सषी कों
हति है ॥ तू मीन करि हूं नाइका सषी सौं कहति है ॥ सवैया ॥ मानकी येर
मनोजनके बस पीन मरे हों न मनै यह तेरी ॥ सो कहै अपने चित आन
ति जानति हों करि स्याम ह्यने री ॥ तो करौं मानु री मोहन कों लषि जो मषि
लाष है मन मेरो ॥ तू सिष जो मैं विचारति हों यो कहों करौं नाहक नहों नुन
री ॥ टीका ॥ नाइका काकी वचन सषी प्रती ॥ तूं मोसों कहती है ॥ मैं हूं स
बै सयान समझति हूं ॥ मोहन के हिये श्री कमला को देषिकै जो मेरा म
न देषिवै तो मैं अपने मन में मान राषो ॥ किन्नाइक को देषन ही ॥ मानन
हीरहत है ॥ विसेषोक्ति अलंकार ॥ नाइका की उक्ति सषी सौं सी छाकर
ति है ॥ विशेषोक्ति अलंकार ॥ सबकारनकाजुनसरै ॥ उक्ति विशेष कहि
ये यै ॥ मूल दोहा ॥ मोहि लजात निलज पद ॥ लषी मिलत सब गात ॥
भानु उदै की ओस लौं मानु न जानो जात ॥ इहां नाइका प्रौढा मान मोचन
नाइका को वचन सषी सौं ॥ कवित्त ॥ तोसिषावति मन मोहन सों मान
करि मेरे हूं हिये मैं ए विचार बहरानरी ॥ निरषत कमल प्रान प्यारे को छ
बी लीक्षि कि आपु ही तें फूलसि मिलत सब गात री ॥ कहा करौं निलज ए
मोहि कोल जावतिहैं जोपै होइ कछु येकी वकु बात री ॥ भानु को उदोत
भयो ओसन को सोभागति मानु मन में ते होन जान न बिलात री ॥ टीका
नाइका को वचन सषी प्रती ॥ निलज कहिये लाज हीन ॥ ए मेरे सब गात
आनंद मानि कै नाइक सौं मिलत है ॥ सो मोहि लजावत है ॥ जैसे स
रज के उदै भए ओस मिट जाती है ॥ तैसें नाइक को देषि मेमानु हरि होतु है
उपमा अलंकार ॥ पत्या नुरागा की उक्ति सषी सौं उपमालंकार ॥ उप
मान रु उपमेय साधारन वाचक होइ ॥ एक अंग पइए जिहां पूरन उपमा
सोइ ॥ १२ ॥ मूल दोहा ॥ षिचे मान अपराध तें चलि गै बढे अचैन ॥ जुरत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

डीठिनजिरिसिषिसीःहसैंउकुनिकेनेन॥इहमाननमोचननाइकाकें
न्रसनमोंहैंचे[illegible]केनेघ[illegible]मोंहैंचेहैपेमुचेनतेंबिनाद॰
घेगायोनजाइयातेंरिसअरुषीसीछोकेंआपुहीतेंदोउनकेनै[illegible]
षीकोवचनसषीसें॥सवैया॥मानुकेमामनिअंचिरहोइगयोति
कहूंहविअंतवमेरई॥याहीतेमोहननारिनवाइरहेंउरसोचसकोचग
मेई॥फूलकहेविनुदेषेउहूंकेतोमानअचेनहियेसरमेई॥डीठिजुरे
तजिरोसषिसीविविनैननमिलेसुषपाइहमेई॥टीका॥सषीकोवचन
सषीप्रती॥नाइककेअपराधतेनाइकामानकरो॥तातेंवडोकुचैनभ॰
यो॥नाइकनाइकाकेनेत्रडीठिजुरतदेषीरिसकोतजिकेहसे॥प्रहर्ष
नाम्नलंकार॥सषीकीउक्तिसषीसोंहर्षादयईषोमातिमानमोचन
प्रहर्षणालंकार॥बिनाजतननवांछितफललेहार॥पहिलोभेदकहत
सवकोइ॥इछितहूतेंअतिफललहै॥दूजोभेदसुमतियहकहेंजा॰
कोजतनकहिंहियतहोइ॥वस्तहाथआवेकुनिमोइ॥त्रिविधिप्रहर्षण
जानोमित्र॥लछनलछिअवधारोचित्र॥१२॥मूलदोहा॥डीठपरोस
निईठकेःवहेजुगहसयान॥सवेसंदेसेकहिकहेःमुसिकाहटमेंमा
न॥इहपरकीयाप्रोढासषीकोवचनसषीसें॥सवैया॥जाहीपरोसि॰
निकेंरूपषीसोंरुकीललनारिसजीमेंदिठाई॥सोईपरोसिनिडीठइइ॰
हालगिईठिहयाहीमनावनआई॥पीनमकेजुसदेसेहुतेवेकहेसव॰
हींकरिकेचतराई॥एतेपेमानुकह्योमुसिकाइयहेकहिप्यारिषरीके
रुषाई॥टीका॥सषीकोवचनसषीसें॥डीठपरोसनिसोईठमित्रहुवे
सयानलेवेनाइककोओरकेसवसंदेसेकहिके॥मुसिकहठमेंकहि
येसहिकेंयहकह्योतमान॥इसकोयहमतलववेहे॥किनाइकान
मानैंतोभलीहै॥इसतेंपरोसनिनाइकसोंआसक्तजानियें॥सूक्ष्म
अलंकार॥सषीकीउक्तिसषीसें॥परोसनिकोकहनावतिनाइ॰
कानाइकसें॥कहिमानजनावनिदेयहे॥सूक्ष्मालंकार॥सूक्षमप
रआसेलषेसैननिमेंकछुनाइ॥मूलदोहा॥चलापरोसनिहाथ

कै छलबलिलयो पहिचानि ॥ पियहि दिषायो लषि किलवि: रिसरुचि॰
कनमुसकानि ॥ यह नाइका अन्य संभोग दुःषितासषीकोवचनसषीसौं ॥
यथा ॥ पेषि परोसिनिके कर प्यारी करी चतुराई को चारु कला है ॥ मा
निलियौ कछु ऊनम सौं बहु के मनु रूपहि हलाऊ भला है ॥ प्रीतमसौं मु
सिकाइ कह्यौ कि बिहाल सकै हैं कहा बरी सरला है ॥ नेक इतैं लषियें मनमोह
न आजु भलो हमपायो छला है ॥ टीका ॥ सषीको वचन सषीसौं ॥ नाइ
काने परोसनि हाथ तै छला पहिचानि कै छल सौं लयौ ॥ इषी भई जो ना
इकाना नें जनाइ न वारी जै मुसकानी ॥ नाभै नाइक को छल दिषायो ॥ नु
मल षिक हियें देषो ॥ सूक्ष्माअलंकार ॥ सषीको उक्ति सषीसौं परोसनि
को कहनावति ॥ नाइकानाइकसौं काहि मानजुनावति है ॥ सूक्ष्मालं
कार ॥ २४ ॥ मूलदोहा ॥ मोहु सौं वातनि लगि लगीजी भजि हनाइ ॥ सो
ई लैउर लाइयें: लाल लागियत पाइ ॥ इह मध्यममानु नाइका सौं बाते
करत जो नाइका सौं अमसकि नाइकने नाहीको नाम लीनो सो नाइक॰
सौं कहति है ॥ कवित्त ॥ वे तौ राषी गोइ है तौ इप प्रगट हियें भाउजा सौं रसि
मसि मन बरत्यो अनुरागि कै ॥ उत्तरी रसिक रसरीतिकी प्रवीनी वाको॰
भले हथिकौनी मो सौं बातन हू लागि कै ॥ हास प्रान प्यारे एरी प्रीति॰
को धरम यहै पायो अब सर मभर मगयो भागि कै ॥ पाइ न परति हरवा
ही उर लैये जाही रमनी को नाम रस्योरस भामें पागि कै ॥ टीका ॥ नाइ
का को वचन नाइकप्रती ॥ तुम मो सौं बातनि लागे हौ ॥ तुम्हारी जीभजि
सनाइका के नाम सौं लगी है ॥ इसका विचार है ॥ कि औरनाइका को ना
म मेरे आगे लेन है ॥ नातें मोई नाइका छाती मैं लगाइयें ॥ मेरे लारे पाइ
लागत है ॥ आक्षेपाअलंकार ॥ नाइका की उक्ति नाइक प्रति मध्यमा
न ॥ आक्षेपालंकार ॥ २५ ॥ मूलदोहा ॥ डिगे ति गोड़े तेन डिगि: गहे न
चैन अचैन ॥ हो कछु कछु करि रिस को कहै: एन सिषै ह सि दैन ॥ इह नाइ
का प्रौढा आपने नैन की अमसकि नाइक कविये है सो सषी सौं नाइका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

109

विल० २९

कहे धर किया ॥ सवैया ॥ सही येऊ ग के उपहास निनै रही ये मुह लोग
न मांरुग सै ॥ ऊरु ज्ञानियै अपुने उर हे मस मका इ रहे नहि नैकु त्रसै ॥
अरु रंच क मेरो कह्यो न करै न नहु मन हारि न ऊडुल सै ॥ यह नैन लगा
इ सु सज्जनी इन नैनन पै रहि रहि सेई हसै ॥ टीका ॥ निगोड़ी कहियें
अभागे ए मेरे नैन गिरत हैं ॥ सो ए नेत्र ज्ञान अज्ञान नहीं गहत हैं ॥ है
वे कहूं क छिवे क्रोध कौ करती है ॥ ए नेत्र क्रोध कौ नहीं सिषत है ॥ ह
सि देत है ॥ पर्यायोक्ति अलंकार ॥ २९ ॥

मूलदोहा ॥ विलषी लषै षरी षरी भरी अनष वैराग ॥ म्रगनैनी सैन
नि भजै न लषि वैन नि के दाग ॥ यह नाइका अन्यसंभोगदुखिता सषी
को वचन सषी सौं ॥ सवैया ॥ साजि सिंगार रुलाल सों आइ विलो कि
रही चकि कै हरि ही के कहि ॥ मोतिन की चौकनी चोटी कौ दागु लगौ पर
टकौ पति के परजंक हि ॥ हा ही जवकी सी कपोल धरें कहि रोसु भरी सट
कुली करि वंक हि ॥ सोच भरी पल के लगी लोचन लै लै तिउ सासुनि आ
वति संक हि ॥ टीका ॥ सषी को वचन सषी प्रती ॥ विलषी कहियें दुषि
त ॥ और अनष कहियें गुस्सा और हवैराग कहियें विरक्तता ॥ ता सौं
भरी जो नाइका सो षरी षरी कहियें हाही हाही देषति है ॥ म्रगनैनी
कहियें नाइका सो वैनी के दाग सेज मैं देषि कै सेज पै बैठती नहीं है ॥
काव्यलिंग अलंकार ॥ सषी की उक्ति सषी सौं मानिनी नाइका का काव्य
लिंग है का नु प्रासु की संस्रष्टि ॥ अर्थ समर्थन कीजीये ॥ जहां युक्ति
सो मित्र ॥ काव्यलिंग भूषन तिन्हें ॥ भाषत बुधि विचित्र ॥ जहां बीच

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पदहेपैं॥ अद्भुत मनभाय॥ नहू कै कानु भामहै॥ काह तुमहू कवि
समुदाय॥ २७॥ मूलदोहा॥ चितवत रूष हू रानको॥ हासी वितम्रम
कानि॥ मान जनायौ मानती॥ जानि लियौ पिय मानि॥ इहा नाइका मा
नवती है पै मानवे लछिन लछ प्रकार गट कौ नाही पै प्रवीन नाइक ने
जानी सषी कौ वचन सषी सौं नाइका हू सौं कहै॥ कवित्त॥ वे सें हौं चितै
तित सें आगे चितवति ही पै नेह चिकनाई कौन इगन विनि सानी है॥
मधुर वचन त्यों ही बोलति वह सिपै सरस मुसिकानि कौन वानी प
हचानी है॥ ऐसी भांति भामनि जनाइ रूठ मान री तिज्ञान मन प्यारे
भेषदेष तिहो जानी है॥ साधिके रुषाई रिस ठानी तें सियानी सो प्रवी
न तुको ईठि तैं रहत के सें छानी है॥ टीका॥ सषी को वचन सषी प्रती
रूषे नेत्रनि सौं चितवनी करि यें देषे नें॥ सौनकौ करियें न कीनें॥ प
रि नाइका हासी विना मुसिकानि॥ अथवा मुसिकाहट विना हासी॥ प
या हौ ते जानि यें करियें चतुर जो नाय क सोने मैं नितिनी नाइका के कि
ये मान को जानि लयौ॥ अद्भुत मा अलंकार॥ सषी को उक्ति सषी सौं
नाइका मानिनी॥ अद्भुत विभावना उ म का लंकार को संकर॥ अ
द्भुत पर आसे लष॥ सैन निमिक छु भाइ॥ कारन विन हौ काज को उ
दय होइ जिहि ठौर॥ २८॥ विभावना अलंकार॥ उ म का अलंकार॥
मूलदोहा॥ हसि हसाइ उर लाइ उठि॥ कहि न रुषौ हैं वैन॥ जकि न
थकित में है रहै॥ तकित तिरीछे नैन॥ इहां मान परिहास नाइक के
विद्यमान सषी नाइका सौं कहै॥ जो नाइक को सहवास पराधरु या इ
वे कौ सषी नाइका सौं कहै तौ परिवादि वौ संभवै॥ कवित्त॥ मानकी
ये हा इतें अमनावे प्यारे पाइ गहि रिस सपरि हास को जतनन करि लौ
जीये॥ हसिक रसाल नेरे लोचनन ति रोछे चाहि चकित है रहे यों
सें नाह कत न पीजिये॥ हा हा तो हि सौंह अब रसधी करि भौंहें वैन व
हिन कषो हैं लाल लछानी लाइ लीजिये॥ हसिये हसाइये री सवर

बिहा॰
२२

110

माइ कहतै नाऐसी करयहरहु पहो तिन कों दीजिये ॥ टीका ॥ सषी ॥
कौ वचन नाइक प्रती ॥ जु हम औरन नाइका कौं हमाउ औरकहु ठिना
इक कौ उरक हियें छाती न मैं लगाउ ॥ जौ कहन हम पे वचन मतिक
हु ॥ नाइक तेरे तिरछे नेत्रनि कों देषि के जकि न ष कि न मोकहियें भ
यभीत है रहो है ॥ उत्प्रेक्षा अलंकार ॥ इतीमानिनी ॥ दूती की उक्ति
मानिनी नाइका सों सामोपाय ॥ उत्प्रेक्षालंकार ॥ जहु कोजलिसंभाव
ना ॥ २५ ॥ अथ रतन बर्नने ॥ मूलदोहा ॥ दीपउजेरेहू पतिहि हरत
वसन रतिकाज ॥ रहीलपटि छुबिकी छटनि नेकौ छुटी नलाा॥
ज ॥ इहां रतिवर्ननन नाइका को ननकी छबि को अधिकाई सषी
सषी सौं कहै जो नाइका [illegible] अंतरंग सषी सौं कहे तौ स्वपरा विला
हि है ॥ कवित्त ॥ जैसें सोई प्रकासत निमंदरके दीपनको तैसें सोई समरह
जगमगात रतननको ॥ तैसें हो सुधारसें सषकों निरषि छें लोनि मोहन
के मन भाउ उपज्यो अनननको ॥ प्रीतम बिहारीलाल ले के कौ सतनस
पनि जक रकरष किवसन हरयो तन को ॥ छबि की छटानहीं सो रहो मि
उराई बालन गनहू मनकी छूटी न लाजननको ॥ टीका ॥ सषी की
उक्ति अथवा नाइका की उक्ति सषी प्रती ॥ दीपक के उज्यारे पति बो
रति काजके लियें मैथुनके वास्ते बसन कहिये वस्त्र तिनको हरत क
हिये ॥ षोलत छबि के समह सौं लपटि रहो ॥ नेक लाज न छुटी ॥
स्वरूप अलंकार ॥ सषीकी उक्ति सषी सौं मध्या नाइका सुरतव
र्नने ॥ स्वरूप अलंकार ॥ स्वरूप लेसं गगुन ॥ तजिकि स्त्रिय पनो
लेन ॥ हू जे जवगुनना मिटै ॥ किये मिटन के हेत ॥ २६ ॥ मूलदोहा ॥
ल षि दौरति पिय कर कटक बास छुडावन काज ॥ बरुनी बन गाहे॥
दृगनि रही गुढी करि लाज ॥ इहां रति समय सषी सषी सौं कहति
है ॥ सवैया ॥ रति मंदिर मैं नवनागर का जु मिलै रस रंग हियें दृग कि
द्ल सोय नदे षो नहीं पिय को कर छबि वासहु डावन को जनिकै ॥ कवित्त

सकैहैंठहराइउहांनवसीरहियौवजकौंधसिकै॥नाहिंत्रोटह्वनेवहनीव
नकौरहीनैनवलाजगहौकरिकै॥टीका॥सषीकौवचनसषीप्रती
पियकहियेंनाइक॥ताकौकरकहियेंहाथसोईभयोकटककहि
येंफौजकौवास॥कहियेंकपरा॥ग्रौरवासकहियेंवसनैं॥ताके
छुडाइवेकौंकाजनेत्रनिकीवहनीसोईगाहौवनुभयौ॥तामैलाजं
गहौकरिरही॥रूपकाग्रलंकार॥सषीकीउक्तिसषीसैंनाइककेचं
चलतानाइकाकेंत्रपासरसग्रनभाउसंजोगसिंगारनाइकामध्यारू
पक॥उपमानरुउपमेयमैभेदपैनलषाइ॥तासोंरूपककहतहैं०
२१॥मलदोहा॥सकुचिसुरतग्रारंभहीःविछुरीलाजलजाइ॥हरकि
ढारहुढिगभईःढीठढिठाईग्राइ॥परू[illegible]॥ग्रथसषीकौवाकिस
षीसैंवाविउक्तिरूसंभवे॥कवित्त॥ग्रतिग्रभिरामसुषमासुरतिमंदि
रमैंविहरतउमगिग्रनंगरंगभरिकै॥नषदानरददानचुंवनग्रथरपा
नग्रालिंगनकरनग्रनेकभाइभरिकै॥सुरतिकेग्रारंभहीलाजलज
वेतौसबोनिपटलजानिजियगईकहहरिकै॥ढाहस्रुहियेमैंगहिलि
धरवाहूकेरहिढाढीभईनिपकटहिढाईढीठहरिकै॥टीका॥सषीकौ
वचनसषीसौ॥सकुचीकहियेंसंकोचयुत॥जोनाइकामाकीलाजल
जाइकेसुरतकेग्रारंभमैंविछुरी॥कहियेंदूरिभई॥ढीठजोढिठाईसो
हारसोहरषिकेंठिकैढिगभई॥इसकोयहमतलवहै॥किमैघुनहो
नलाजजातीरही॥ए१नानेरेग्राई॥उत्प्रेक्षाग्रलंकार॥उक्तिसषीकौस
षीसोंनाइकारतिकोविदाप्रौढासंजोगसिंगार॥उत्प्रेक्षाग्रलंकार॥जु
हुवीजतिसंभावना॥२२॥मलदोहा॥पलिरनिकोवनियाकुरो॥सषी
लषीमुसिकाई॥कैकेसवैटलाटली॥ग्रलीचलीमुषुपाई॥इहनाइ
काकीवहुनाइकनाकनिकेसुरनारंभसमैजानिसषीवहुमिसकरिउ
ठिचली॥सषीकौवचनसषीसौं॥सवैया॥वैपरिषेलपनावनिताव्र
जराजविलोकनहेलललचानो॥सेननुमैंकछुकेलिकलोलकीवात
कहीमननैंमैनभुलानो॥प्यारीग्रलीनकौंग्रोरलषीहसिथैंरसभाउहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ये सरसानो ॥ देषि सवै सषपाइ चली अपने अपने गृह छूठ सहानो ॥
टीका ॥ सषी को वचन सषी प्रते ॥ पति ने मेथुन की बातै कही नाः
इका सषीन की ओर सो मिस काइ कै देषा ॥ नव सिंगारी सषी टलाट
ली कहिये ॥ अपनी अपनी काम वताइ कै ॥ उठि गई ॥ पर्यायोक्तिअ
लंकार ॥ सषी की उक्ति संयोग सिंगार ॥ पर्यायोक्ति पर्यायोक्तिप्र
कार है ॥ कछु नासैं बात ॥ मिसि करि ॥ कारिज कीजीयें ॥ जैसैं चित्र
सुजान ॥ २३ ॥ मूलदोहा ॥ चमकतमक हासी ससक मसक झपटि लिप
पिटानि ॥ ए जिहि रति सो रति मुकति और मुकति रति हानि ॥ इह सुर
त समय की विकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ किलकनि मुसकनि हेरनि हरनि
चित चमकतमक झमक निससिका नि है ॥ हिलनि मिलनि अह रूप
समरीकसनि ससकसमसक झपटनि सुषदानि है ॥ लटकनि मटक
निकलछु जनि लफनि ललक झलक मलक निलपटानि है ॥ ऐसी
रीति रति सों ई मुकति निकहावति है मुकति कहावति है सो तो अनि
हानि है ॥ टीका ॥ नाइका को वचन सषी प्रते ॥ चमक कहियें चमक
नै ॥ तमक कहियें क्रोध करनो हासी कहियें ॥ हसनैा ससक का
यें सीत्कार करनो ॥ मसक कहियें सीत्कार करनो मसक कहियें चु
पि रहनो ॥ और झपटि कै लपिटनो ॥ जिन मैथुन मैं ए सब बातें है सो र
ति मुकति है ॥ और मुकति मैं रति हानि है ॥ इसको यह मतलब है ॥ कि
रति प्रीति की अधिकाई तैं उक्ति नै अधिक है ॥ अतिरेकालंकार ॥ उ
क्ति सिंगारी को सुरत बरनन ॥ अतिरेकालंकार जानियै उपमानतैं ॥
जहां अधिक उपमेय ॥ नहभाषत व्यतिरेक है कविपंडित आधेय ॥ २४
मूलदोहा ॥ जदपि नाह नाही नहीं वदन लगी जक जाति ॥ तदपि भौंह
हासी भरिन हांसी ये ठहराति ॥ इह मानिनी नाइका के प्रेम छूटन की स
षी नाइका सैं कहै ॥ और सषी सषी सौं कहै ॥ नाइक तनै जाइ लैं नाइका
को ॥ सवैया ॥ बैठि सिंगार सजे ब्रजनागर अचानक मोहन आयो नहा
हो ॥ पानि गह्यो अवलोकि के अवलोकि कके लिकला चितचाहो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जद्यपिवानवनाउरिकोमषलालियहैअवनाननतोंहो॥नदपि
हांसीभरीमृदुहीनमैंबीसबिसेठहरानिहैहारु॥टीका॥सषीको
वचनसषीप्रती॥जद्यपिनाइककहियेंनाउवनाकेसाथ॥नाइकाके
वचनकहियेंमुषनामैंनाहीनहोजकलगीजानिहै॥नदपिहांसी
भरीजेभौंहैतिनुमैंहसीयेंठहरानिहै॥उत्प्रेक्षाअलंकार॥नाइककी
उक्तिसषीसोंअनषानाइकाकोसुरतवर्ननै॥उत्प्रेक्षाअलंकार॥जहकीज
तिसंभावना॥२५॥मूलदोहा॥नहींरीकोनगुलीवदेःनहिमेलन
हिहार॥सुरतसमैइकनाहियेंःनषसिषहोतिसिंगार॥यहसुरतम
मयसषिकोवचनसषीसों॥सवैया॥मेजनअंजनसाजनहैपरवंच॰
कहूंनहियेंमनआवै॥सुंदरीभूषनसाजअनेकप्रकारनकेसुषतो
नहिभावै॥जोरतिकेसुषसारसमैंजोरमैंपतिनाइकासोंसुषपावै॥ना
हियनाहिलरीभूषतेंसुभषनसवकहुपतियातेंरिझावै॥टीका॥नाइका
कोवचनसषीप्रती॥टीकासिंगारनहीहै॥गुलीवदकहियेंपंचम॰
तियासोसिंगारहै॥हमेलअरहमसिंगारनहै॥मैथुनकेसमैमेंना॰
हिजोहैसोसिंगारहोतुहै॥परिसंख्याअलंकार॥नाइककीउक्तितें
सिंगारकोगोपरिसंख्यालंकार॥अरथनिषेधएकथल॥दूजेथलठ
हराइ॥परिसंख्यातासोंकहत॥सकलसुकविसमुदाय॥२६॥मूलः
दोहा॥परेजोरविपरीतरतिःरुषीसुरतरनधीर॥करतकुलाहल
किंकनीःगह्योमौनमंजीर॥यहविपरीतिवर्नन॥प्रौढानाइकासषी॰
कोवचनसषीसों॥सवैया॥श्रीवृषभानसुतानतजोतिजोरतिला॰
जनलागी॥भौंहविलासनिहासनिकेहरिसाजनकोसुषसाजन॰
लागी॥धीरमहारतिसंगरमेंविपरीतरचीअतिराजनलागी॥मौन
गह्योविछियाननहीरमहीरमहीरसवाजनलागी॥टीका॥सषी
कोवचनसषीप्रती॥विपरीतरतिकोजोरपरो॥सुरतकोरनधीरक
हियेंभारीजुद्धजोह॥किंकनीकहियेंछुद्रघंटिका॥सोकुलाहल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कहियें ॥ वड़े भय्य वदनाको करतिहै ॥ मंजीर कहियें विछिया ॥ तिन
मौन पकरे ॥ समासोक्ति अलंकार ॥ चितर्कि संचारी करि सषी की
उक्ति सषी सों दंपतिके संयोग सिंगार नाइका उद्यम रति प्रौढा वि
परीति वर्नेन ॥ समासोक्ति अलंकार ॥ जहं अप्रस्तुत प्रस्तुत है ॥ प्र
स्तुत वर्ननमाह ॥ समासोक्ति तासों कहत ॥ देषौ ग्रंथनमांहि ॥
२७ ॥ मूल दोहा ॥ विनती रति विपरीत की ॥ करी परसि पिय पाइ ॥ ह
सि अनबोलें ही दियौ ॥ उत्तर दियौ वताइ ॥ यह रति विपरीत सषी के
वचन सषी सों ॥ कवित्त ॥ केलि कला कुसल कुरंग नयनी के संग
संग कौतिकाई तुनि रतिको रतीकरी ॥ पहिले तन अंतर नति विरु रेवि
विधि विधि मदन महीपकी विभूति वहती करी ॥ जहां रति मंदर
मैं प्यारी के परसि पाइ रति विपरीत कौ पियारे विनती करी ॥ प्यारी
न सिकाइ अनबोले ही वताइ दियौ प्रीतम के जी की चाह याही मैं
सही करी ॥ टीका ॥ पियक हियें नाइक निसर्नेन नाइका के पाइ परसि
कहियें छ्वै के विपरीत रति की विनती करी ॥ तव नाइका हसि के विना
वोले दिया वताइ कहियें वुझायो जो ही उत्तर दियो ॥ विभावना जम
कालंकार ॥ सषी की उक्ति सषी सों दंपति के संयोग सिंगार रूप
नाइका कहै के उन नाइका मध्या सी भासति है ॥ विभावना जमकालं
कार कारन विनु ही काज को उदय होइ जिहि ठौर ॥ पहिलो भेद वि
भावना ॥ वो कहि कवि सिरमौर ॥ जहां वहौ पद पुनि परे ॥ अर्थ औ
र ही होइ ॥ तहं जमकालंकार है ॥ भाषत पंडित लोइ ॥ २८ ॥ मूल
दोहा ॥ मेरे हग न वान तें ॥ कत वहरावति वाल ॥ जगा ज्ञानी विपरी
त रति ॥ लषि विदुली पियभाल ॥ इह नाइका प्रौढा रति विपरीत की नि
सानी सषी सों दुरावति है ॥ सो प्रवीन सषी जान लई ॥ सो नाइका सों क
हति है ॥ सवैया ॥ हों हित कै वलि हरि तितो कहत्त वहरावति वान
हि मेरी ॥ ए नैना को चंद्र उदोत न करें तव कैसें दवै कोयि ओर हमेरी ॥ नेह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रिसौं विपरीतकरी रति बैंगाउ रिहैं अब तो हम मेरी ॥ नीके दीजानिय
री सखि कें पियभाल लषै बिंदुली तियकेरी ॥ टीका ॥ सषी को वच
न नाइका प्रती ॥ बाल संबोधन है ॥ मेरे हू फन तें कन कहि ये कों वा
त को बहु रा धुनिका दियें ओर की ओर कहति है ॥ पिय के भाल में विं
दुली लगी है पिके जग नें विपरीत रति जानी ॥ काव्यलिंग अलंकार ॥
सषी की उक्ति नाइका सों नाइका के अवहित्या संचारी है विपरीत रति
सषी सों चित किं भाव तें लुकाव करी है ॥ एक मन नाइका न्हन रति म
या काव्यलिंग अलंकार ॥ अर्थ समर्थन कीजिये जहां युक्त सो मित्र ॥
काव्यलिंग भू मन नहं ॥ २४ ॥ मूलदोहा ॥ राधा हरि हरि राधिका
बनि आए संकेत ॥ दंपति रति विपरीत सुष सहज सुरत हूं लेत ॥ इह
लीला रूप रति विपरीति सम य सषि को वचन सषी सों ॥ कवित्त ॥ देषि
ये कौ देह है पे एक तन एक प्रान रूप सील वैस गन चातुरी समेत हैं ॥
जैसें ऊ सांचे मन राचे प्रीति रीति पन आज्ञुलौं न देष कहूं ऐसे देषी ल
है ॥ राधा माधो माधो राधा अदलि बदलि बेष बनि बनि आए के लि कुंज
के निकेत है ॥ कहे कवि कृष्ण सदा ऊ सहज सुरत हो में रति विपरीत
के विविधि सुष लेत हैं ॥ टीका ॥ सषी को वचन सषी प्रती ॥ राधिका
ने कहि दियें ॥ श्रीकृष्ण लाकों रूप बनी औ रु श्रीकृष्ण संकेत में राधि
का रूप धारि आये ॥ दंपति कहिये श्रीयुत रूप वने सहज सुरत हू में वि
परीत रति के सुष कौ लेत है ॥ काव्यलिंग अलंकार ॥ सषी की उक्ति
सषी सों दंपति के संजोग सिंगार हाव लीला रति विपरीत रति काव्य
लिंग अलंकार ॥ अर्थ समर्थन कीजीये ॥ ३० ॥ मूलदोहा ॥ रमन कह्यो
हठि रमनि कों रति विपरीत विलास ॥ चितई करि लोचन सतर
सलज सरोस सहास ॥ इह नाइक ने रति विपरीत की बात कही सो
नाइका चितवनि में जैवहा की नी सो सषी सषी सों कहै ॥ सवैया ॥ ह

113
विहा
२२३

बमान सुतान दलें दललार सके लिकलानि प्रवीन पढे ॥ रतिमें
रस मैं अति प्रेम पगे रतिके न विलास के रंग हरे ॥ रति की विपरीत
करौ रसनी हसियो जु बण्यो रनिके सिकरे ॥ न बण्यो रो कोउ विने
नति री बिगुमान हसी अरु लाज भरे ॥ टीका ॥ सखी को वचन सखी
प्रती ॥ रमन कहिये नाइक तिन्हनें रमनी कहिये नायका ॥ तासों
हठि विपरीत रति के विलास कौ कह्यो ॥ तब नाइका समन कहिये
रहे ॥ नेत्र करि कैलास हित क्रोध सहित ॥ और हास सहित नाइका
नाइकु देखो ॥ किलकिंचित हाव जानि वर्नन अलंकार ॥ सखी की उ
क्ति सखी सों संजोग सिंगार नाइका कै अभिलाष नाइका के त्रपा सं
चारी ॥ हाव किलकिंचित जानि वर्नन अलंकार ॥ जाको जैसो सरूप
गुन बरनन ताही रीति ॥ तासों जानत सुभावक वि ॥ भाषत है करि प्री
ति ॥ अथ सुरतांत वर्ननं ॥ इति सुरतांत वर्ननं ॥ ३१ ॥ मूलदोहा ॥
रंगी सुरत रंग पिय हियें: लगी जगी सब राति ॥ पैड पैड पै ठिठुकि कै
पैड भरी पैंड जाति ॥ इहा सुरतांत सखि को वचन सखी सों नैं सखी ना
इका सों कहे नौ लछिन दोहु ॥ सवैया ॥ सब रैनि जगी हरि कंठ लगी
रति रंग रंगी अलसाति खरी है ॥ डग एक चले फिरि कै चितवै सु रिकै
अगरात मरोर भरी है ॥ बिथुरी अलकै अमवारिकु की पलकै स्रम
हार हरी है ॥ लगी पीक कपोल निनी कौल से अतिसारी स
लौट परी है ॥ टीका ॥ सखी को वचन सखी प्रती ॥ सुरत के रंग मैं रंगी
जो नाइका ॥ सो पिय कहिये नाइक ताके हियें सें ॥ लगी सिगरी राति
जगी ॥ पैंड भरी कहिये गुमान भरी नाइका पैड पैड पै ठिठकि कहि
यें ठाढी है कै पैंड जाति है ॥ जाति वर्ननं अलंकार ॥ सखी की उक्ति सखी
सें ॥ सुरतांत वर्नन नाइका कै ॥ आलस संचारी है यामें अनुभाव
सुरतांत को जाति वर्ननं ॥ ३२ ॥ मूलदोहा ॥ लहि रति सुख लगि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यैं गरैः सषी जो गोहनी नीठि ॥ षुलतिन मो मन न बधि रह्यौः वह्यौ अधषु
लीडीठि ॥ दूतहूरनांन नाइका को वचन सषी सें ॥ सवैया ॥ के
लि कला सुष फैलि प्रभा तलसी परजंक पै राधिका प्यारी अंगराल
गी नंदलाल मुषगी रह्यौ नाहि न वाइ महाछवि छारी ॥ सो पैं चितैब
को मैं रह्यौ नव नेम कृ भौंह उचाइ निहारी ॥ सो उनी दी अधियां
अधषोलि चितै नाकि कियें तेरैं नदिहारी ॥ टीका ॥ नाइका को वच
न सषी प्रती ॥ रति कों सुष लै के मेरे गरै सौ लगी ॥ नीठि कियें उस
ष सौं जु गीजो नाइका को अधषुली जो डीठि सो मेरे मन मैं वधी रह्यौ ॥
षुली नी न ह्यौ है ॥ विरोधाभासअलंकार ॥ नाइका को उक्ति वचन अ
नुभव स्मृति संचारी नाइका मध्या भास निहै ॥ विरोधाभास अलं
कार ॥ जि हि थल शब्द विरोध है अर्थ माफ न विरोध ॥ शब्द विरोधा
भास कहि जो सोहै प्रबोध ॥ ३३ ॥ मूलदोहा ॥ लषिलषि अधषुलि
आंष सैं ः अंगराइ सो निअंगराइ ॥ आधिक उठि लेटति लटकि ः आरस
भरी जम्हाइ ॥ दूतनाइका प्रोबास रतनान सषी को वचन सषी सें ॥
कवित्त ॥ सैन सुषपागी अनुरागी पति सैन जागी सो भाससरसानी ।
अरसानी जंभाति है ॥ बिथुरी अलक कछु कि आवति पलक मन म
थ की कलक अति रस बरसाति है ॥ ललित कपोलपै लसति नी
की पीक लीक दोऊ भुज जोरि मरुमोरि जमुहाति है ॥ अधषुली अं
षिन सौं आली तिन अवलोक आधी उठि सेज हीं लटकि लटजाति
है ॥ टीका ॥ सषी को वचन सषी प्रती ॥ अथवा नाइक प्रती ॥ अधषु
ली जे आंषै तिसै अंगनिकौ मारि कैं यें डा तिहै ॥ आधिक उठि कै लोट
ति कहियें पोहति है ॥ और लटकि कै आरस भरी जो नाइका सो ज १
म्हाति है ता कों तू देषु ॥ स्वभावोक्ति अलंकार ॥ उक्ति सषी को सषी
सें प्रोहा नाइका के क्रिया अनुभाव तें कर्ष अभिलाष सम विबोध
संचारी नितैं रति पोषी संजोग सिंगार ॥ स्वभावोक्ति अलंकार ॥ ना

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बिहा॰
२४

114

कोजैसोरूपगुनचरनतवारहौरीति॥ तासौंज्ञातसुभावकविभाखतहै
करिप्रीति॥३४॥मूलदोहा॥नीठिनीठिउठिवैठिहूंःपियप्यारीपर
भात॥ दोऊनीदभरेषरेःगरेलागिगिरजात॥यहसुरतांतनाइकाऔ
रासखीकोवचनसखीसों॥सवैया॥वृषभानललीव्रजराजलला॥
रतिसंगररैमेनिसिमेंसगजागे॥कविकूसलकहैकमलाकमलावड़भाग
विलासकियेंउमगे॥उठिवैठिनसेजपैनीठितऊउठियेनसकेंअलिमे
मपगे॥सुषनीदभरेअलसातषरेवड़रेंगागिरिजातगरेंहीलगे॥टी
का॥सषीकीउक्तिसषीप्रती॥पियकहियेनाइक॥प्यारीकहियेदोऊ
नीठिनीठिकहियेवड़ेकष्टसोप्रातसमै॥उठिवैठिवेंषरेनीदभरेगरे
सोंलगिकेंगिरिजातहै॥सुभावोक्तिअलंकार॥सषीकीउक्तिसषी॥
सोंरूपयाअनुभावनिद्रासंचारीअरुहर्षसुरतांतसुप्रगटहीहै॥सु॥
भावोक्तिअलंकार॥जाकोजैसोरूपगुनउ॥३५॥मूलदोहा॥लाज॥
गरबआलसउमगः भरेनैनमुसिकात॥रातिरमिरतिदेतकहिः औरै
प्रभाप्रभात॥नेत्रनकोभाउदेषिसषीनाइकासौंकहैहैलछितागाती
येजोनाइकानाइकसोंकहैहैतोषंडिताजानीये॥कवित्त॥सुरसतेंसर॥
सालमनभरेआलसमहारसमगनहै विहियेहुलिलेतिहैं॥लालडो
रेराजतहैंऔरैओपसाजतहैफूलेमुसकातहैंनिकाईकेनिकेतहैं॥
मैनकीउमगिभरेजोवनकेरंगभरेलाजकीतरंगभरेगरवसमेतहैं॥
मैनसुषपागेनिजजागेद्रगतेरेवालरातिरमीरतिकीप्रभातकहेदेत
हैं॥टीका॥सषीकोवचननाइकाप्रती॥लज्जाऔरगरवकहियेअभि
मान॥औरुआलसऔरुउमगकहियेउछाह॥इनसोंभरेजोतेरेनैन
तेमुसिकातहैं॥रातिकोरमीजोरतिताकोतेरेनेत्रकेंहदेतहैं॥इनतै
ननिकौप्रातसमैऔरैसोभाभइहै॥भेदकातिसयोक्तिअलंकार॥सषी
कीउक्तिनाइकासोंनाइकासुरतलछिता॥भेदिकातिशयोक्तिअलं
कार॥औरैंयहपददीजियेंअधिकाईकेहेत॥अतिसयोक्तिभेदकयहै॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कहतकक विसिरनैन ॥ ३९ ॥ सत्यदोहा ॥ कुंजभवनतजिभवनकौं च
लेपैनंदकिसोर ॥ फूलतिकलीगुलावकी चटकाहटचहुंओर ॥
इहांनाइकास्वकीयाहैकैपरकीयाहै हां नाइकाकोवचननाइक
सों ॥ कवित्त ॥ मकुलितकलीजलजातकीकछुभईभौरनिकीगुंज
मंदश्रवननुधारियें ॥ लषितगुलावकलिकानकौंसुगंधयोनचित
कासवदमदुमोरउरधारीयें ॥ कलधुनिकरतश्रनिंदबगांहूंदलिश्रनं
नहुविलसतिविहारीयोंविहारीयें ॥ आगमविभातकौविलोकियेछ
वीलैलालसुंदरनिकुंजनतजिसदनसिधारियें ॥ टीका ॥ नाइकाकोव
चनाइकप्रती ॥ नंदकिसोरश्रीकृस्नकोसंबोधनहै ॥ कुंजकेघरकोतजि
कैश्रपनेघरकोचलियें ॥ गुलावकीकलीफूलतिहै ॥ तिनकोचटका
हटुचारोंश्रोरहोतहै ॥ इसकोयहमतलवहै ॥ किभोरभयोकोई ॥ श्रा
वैगातौदेषगो ॥ इसकहनावतिनाइकापरकिया ॥ श्रथवाघरकोतजि
कैकुंजकेघरकोचलियें ॥ इसकोयहमतलवहै ॥ किगुलावकेफलफू
लनलगे ॥ चलिकेतमासादेषियें ॥ श्रथवाकुंजमैभवककाहियेमाहारे
वनाकोछांडिकैघरकोवेगानुचलियें ॥ गुलावकीकलीफूलनलागी ॥
तिनकोचटकाहटुचारोंश्रोरहोतहै ॥ इसकोयहमतलवहै ॥ किमाहा
रकोछांडिकैघरकोचलेंगे ॥ काव्यलिंगालंकार ॥ परकीयानाइकाकी
उक्तिसंकाभावधुनिकाव्यलिंगश्रलंकार ॥ श्रर्थसमर्थनकोलीयेजहां
युक्तसोमित्रकाव्यलिंगभूषनतिहां ॥ ४० ॥ सत्यदोहा ॥ मौरलिमलि
यतनिरदई दईकुसुमसोगात ॥ करधरिदेषोथरथराः उरकोश्रजौंनजा
त ॥ इहांनाइकाहरनसमैमर्दितकरिश्रतिविकलभईऐसोसषीनाइकासो
कहतिहै ॥ कवित्त ॥ वेसश्रलवेलीमरुवेलीमीनवेलीवालमिलईगु
पालनुरुसैकिनतेउपाइकै ॥ रसकरसालकितभपनिरदईकेलिकरैयों
करेरीनीतिविसराइके ॥ श्रसीदलमलीमरुकुसमकोपाषुरीसोपरीहै
श्रचेतसवसुडिविसराइके ॥ वनियाकहांहोकहेंछतियांकोधरधरात्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

115

बिहा·
१२५

जुहुलासितह्नैनिकटदेषोआइकै ॥टीका॥ सषीकोवचननाइकाप्र
तौ ॥ निरदईद्वयाहोननाइककोसंबोधनहै ॥ दईउषकोपदजानियैं ।
फूलसोजाकोगातकहियेंजाकोसरीरहै ॥ नानाइकाकोफूलिकैप्र
मेमलियतहै ॥ तुमआपनोहाथुधरिकैंदेषो ॥ नाइकाकेहियेंकोः
धरधराहटुअवहूंनहोंजातुहै ॥भाविकाअलंकार॥ सषीकोउक्तिना
इकसोंसुरयानाइकाकोसुरतांतभाविकालंकार ॥ बीतीहोनीबातजा
हांकहतहोतसोहोइ ॥ तासोंभावककहतहैंसबैसयानेलोइ ॥३८॥
॥मूलदोहा॥ छिनकुउघारतिछिनुछुवतिराषतिछिनकुछिपाइ ॥ स
बदिनपियषंडितअधरःदरपनदेषतजाइ ॥ इहनाइकाप्रोढादैनाइक
सोंअतिहिअधिकाहै ॥ यातेंनाइककुनछुवतिहै चिह्नकोमनुलगावतिहै ॥
सषीकोवचनसषीसों ॥कवित्त॥ रातिरसिरंगपतिसंगमिलिकीनौकेलि ।
अंगअंगमनमथकीतरंगसरसै ॥ भोरभयेबालसजनीगनमैंबैठि वे
तिसाकीबातेंसुमिरिहमिरिजियतरसै ॥ प्यारेकेदसनकोअधरपर
चिह्नताहिआरसीलैबारबारदेषरसबरसै ॥ कबहूंउघारैकबहूंढांकि
राषैअनुरागमैंउमगिपानिपल्लवसोंपरसै ॥टीका॥ सषीकोवचनस
षीसों ॥ पियकहियेंनाइक ॥ तिसनेंषंडितकरेजोअधरकहिओठतिन
कोंनाइकाछिनमात्रउघारतिहै ॥ औरछिनमात्रछुवतिहै ॥ औरछि
नमरिछिपाइराषतिहै ॥ येसेंसिगरोदिनदरपनकहियेंसीसातामेंदे
षतिरहतिहै ॥लीलानुप्रासअलंकार॥ सषीकीउक्तिसषीसोंजोनाइ
कापरकीयाहोइतौहर्षसमृतिसंचारी क्रियाअनुभावतेंयाकेलीरस
है होंअरुउपपतिहूंकेंव्यंगिहैजोपरकीयानहोइतोपतिनाइकाके
रसव्यंगिहैसकैयातेंपरकीयाकथ्यपदफिरपरैभिन्नभाउकछूहोइ
सोलीलानुप्रासहै ॥३९॥ ॥मूलदोहा॥ परयोमोरसुहागकोइनबि
नहीपियनेह ॥ उनदोहीअषियांककैकैअलसोहींदेह ॥ इहना
इकाआलसलिनसरसमसीअषिनदेषिसषीसषीसोंकहतिहैईषासं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

छपाईहै जो सषी नाइका सों कहै तो याकी हिसकौ निवारन होइ ॥ जो कछु ।
निकरि नाइका सषी सों कहै तो अन्य संभोग दुषिता ॥ सवैया ॥ सेंकरि आं
षिउनीदी करी अधरान्तर सों वकुवैन उचारयौ ॥ वारहीवार जंभाइ कैयों
हीयै रातन आरस कै ठहरायौ ॥ कहि जनावति है सब सेन जगी यज्ञा
मिनि जामिनि जागि चाहयौ ॥ देषि तो प्रीतम ककी विनप्रीति सौं हारगा को सा
र कितौ इह पायौ ॥ टीका ॥ सषी को वचन सषी सौं ॥ इह नाइका नैं आं षै
उनींदी करि कै ॥ औरह आलस भरी देह करी कै ॥ विना नाइक की प्रीति के
हारिका कौ पायौ है ॥ इस कहनावति सैं भई र तांन कौ ध्यानि करि लछिता
होति ॥ अथवा प्रेम गर्व विना होति है ॥ विभावनाअलंकार ॥ जो याहि नाइ
का की सषी की उक्ति है तौ याहि नाइका की सषी की उक्ति है तौ याही कौ
ह अरे वैन हीया तैं कहति है जो यानि की उक्ति होइ कै वाकी सषी की ।
तौ अमर्ष ईर्षा संचारी ॥ विभावना अलंकार ॥ कारन विना ही काज कौ ॥ उ
दय होइ जिहि ठौर ॥ पहिलौं भेद विभावना जांनत कवि सिरमौर ॥ ७ ॥
मूलदोहा ॥ लषि लैं नैंलौइन नि के कौ इन हो इन आज ॥ कौन गरीव
निवाजि वौ कत तूठै रति राज ॥ इह नाइका परकीया कुलटा है ॥ कौनग
रीव निवाजियै या पद तें छह नन नाइका नकी प्रतीति भई ॥ सषी को वचन
नाइका सौं ॥ सवैया ॥ सरसो रुह षंजन मीन कुरंग प्रभा इन की सहजे
हरिवौ ॥ इन नैं परवाह कै चाइन सौ चहुं ओर चलाचलि कौ करिवौ ॥
किन धौं रति नाथ सनाथ सनाथ भयौ वह कौ रहकनी जिह पै ढरि
वौ ॥ इन संदर लोइन कौ इन सों लषि कौन पै आज मया करिवौ ॥ टी
का ॥ सषी को वचन सषी प्रती ॥ नै नाइका के संदर जो नेत्र तिन के जे
कोप ॥ तिन कौं तूं देषि हो संवोधन है ॥ इन नेत्र निकौ नूं कौन गरीव नि
वाजे ॥ और हु रतिराज कहियें कामदेव ॥ सो कौन पर संतुष्ट भयौ ॥ संदे
हाअलंकार ॥ सषी नाइका सों परिहास करनि है संदेहालंकार ॥ ।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

116

चित्र·
२१६

होत जहां संदेह जहां सो संदेह वषानि: ॥४१॥ मूलदोहा ॥ वहु कि
नहूं विहिना पुलै: जवन वचीर विनास ॥ वचे नवड़ी सषी लहै: ची
कृ पैं सुलामास ॥ दुष्यसंताविक सषीको वचन नाइकासों ॥ सवैया
आपनी गों सब कोउ विचारत भेद यहै कछु पायो है नेह ॥ होइ गो पा
छे घरी पछितायो री तिक ह्यो समझाइ के मेह ॥ भूलि तिया वहिना
पुलि के दिन कंतन के रिमिलि सुपनेहु ॥ कैसें हू राषा पे चीहु के जो
न्हरा मास अछूतो वचैनहि वेगहू ॥ टीका ॥ सषीको वचन नाइकाप्र
ती ॥ सिक्षा करती है ॥ इस रुति कै वहिना पे मति भूलवी र संबोधन
है ॥ जवन वचि विनासै है ॥ चीह्न के चिह्न लामै मास धरि कै फिरि मा
स कौ वचायो चाहिये ॥ वड़ी तन वीर सो ॥ न ऊन वचन है ॥ इसको यह
मतलव है ॥ कि चीह्न मास को षाइ लेति है ॥ तो सेतें इसके मिलाप
सो वचेगी नही ॥ अर्थांतरन्यासा अलंकार ॥ सषी नाइका सों परि
हास करति है ॥ अर्थांतरन्यास अलंकार ॥ कह्यो अर्थ जहं पोषिये अ
रथ अरथ सों मित ॥ सो अर्थांतरन्यास है ॥ ४२ ॥ मूलदोहा ॥ हग
मिहचत मृगलोचनी: भरो उलटि भुज वात ॥ जानि गई तिय नाथ के:
हाथ परस ही हाथ ॥ दृगजानिवनेन सपिकोवचन सषीसों ॥ सवैया
वैठि हुती वृषभान कुमारि अचानक आयो तहां गिरधारी ॥ प्यारह
के लोचन मीचल एउ तहां भुज सोर भरयो अकुवारी ॥ प्रीतम के कु
र के परसें उमग्यो उर आनंद वुद्धि विचारी ॥ या हीते वा मन भावन को
पहचान हसी सु विचक्षन प्यारी ॥ टीका ॥ सषीको वचन सषी प्रती
नाइकनै पाछेतै नाइका के नेत्र मूंदे ॥ तव मृगलोचनी कहिये नाइ
का ॥ ताने अपनी भुजा सों उलटि कै नाइक परो ॥ तिय कहिये नाइका
सो अपने हाथ परसे सों नाइक के हाथनि कौ जानि गई ॥ काव्यलिंग
अलंकार ॥ सषी की उक्ति सषी सों नाइक को परिहास नाइका के चित
कि काव्यलिंग: अर्थ समर्थन कीजीये जिहां युक्त सो मित्र काव्य लिं:

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गम्म्रबनतिहुं मे ॥४३॥ मूलदोहा॥ प्रीतमदृगमिहचनपियाःपानिपर
मस्तुषुपाई॥ जानिपछानिअजानलैाःनेकनहोतिजनाइ॥ यहजा
तिवर्ननसखीकोवचनसखीसैं॥ सवैया॥ षेलतमैंकहुंकाछिलीघातें
अचानकहीचलिआयोविहारी॥ मूंदिकेप्रानपियारीकेनैनरह्योचु
पहरसरीतिसवारी॥ नैंहिपिवामनमोहनकोककहलागनहोउमंग्पा
सुषभारी॥ जद्दपिजानिकैआपनीयोहिअजानभई व्रषभानदुलारी
टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ प्रीतमकहियेंनाइक॥ तिसनेदृगा
कहियेनेत्रतेमिहचनकहियेंमूदे॥ पियाकहिनाइकसोहाथकेपर
सकोसुषपाइ॥ नाइककोपहिचानिकै॥ अजानकीन्याईनेकोजनाइ
नहीहोतिहै॥ अलंकार॥ सषीकोउक्तिसषीसोनाइकपरिहासक
रतिहै॥ नाइकाकेहर्ष॥ पर्यायोक्तिः॥ पर्यायोक्तिप्रकारहै॥ कबुरच
नासौंबातमिसकरिकारिजकीजीयै॥ जैसैंचित्रसहहात॥४४॥ मूलदो
हा॥ मृडुउच्चारिप्पौलषिरहतःरहौनगोमिससैन॥ फुरकेओठउठिपु
लकिःगएउचरिजुगनैंन॥ इहजातिवर्ननपरिहाससषीकोवचनसषीसैं
कवित्त॥ प्रानपतिआवतनिरषिमृगलोचनीउहालओठिफीनोपाछिर
हीमिसकरिकै॥ वाहेंनीचौंपचाइहरेहरेआइहिगमुषनिरष्योउच्चारिभ
रिहिततहीयभरिकै॥ हप्रानप्यारेकेविलोकतिमयंवनसषीसनहीमैंर
ह्योमिसगयोहरिहरिकै॥ गातपुलकितआपलोचनललकिमिलेला
जभाजिगईआलीआपुहीउघरिकै॥ टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥
अथवानाइकाकोवचनसषीप्रती॥ अथवाकविकोवचन॥ ध्याकहियेंना
इकनाकोमुषषोलिवेंदेषिरहतमोइवेकोछलनरहे॥ मेरेओठफुर
वेओकहेमोचउठोओमदोऊनैनउघरिगए॥ स्वभावोक्तिअलंकार॥ स
षीकोउक्तिसषीसोनाइकाकेअवहिथाभावकोसोतिहर्षोदयरोमां
चकंपअनुभावतेंसंयोगसिंगारव्यंगिनाइकसोपरिहासहेउत्तमकाव्य
४५॥ मूलदोहा॥ अथ पचकियावर्ननं॥ मूलदोहा॥ दीठिवरतबाधीअट

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

117

विहा·
२२०

निःचहिधावतनउरात॥इतनैउनचितउहूनकेःनटलौंआवतजात
यहदोउनकेचितलगेहै॥हपरस्परआपनेआदापरतेंनिमेंकुदेषतेहै
उतकोमनइतआवतहै॥इतकोमनउतजातहै॥हसषीसषीसोंकह
तिहै॥कवित्त॥पीतपुंजवहेआपआपनेअटनिचहेनिरषेमेंआज
जैसेंबोतवितरतहै॥औरैंकोऊजानतननतिनकेअनेकगतिछलब
लभेरेऐसीहरनिहरतिहै॥बांधेडीठवरतनडरतलगाअटकीनट
कीसीकलादेषोप्रमटकरतहैं॥उहूनकेचित्तचलिआवतउहूंको
औरधावतहूलसिअतिधीरजधरतहैं॥टीका॥सषीकोवचनसषी
प्रती॥डीठिकहियेंदृष्टिसोईभईवरतकहियेंरस्सीसोवाधीहै॥नाप
रचहिकैदोरतउरातनहीं॥नाइकनाइकाकेचितनटलौंइहांआउ
तजातहै॥रूपकउपमाअलंकार॥४६॥

मूलदोहा॥नियकनककमनैनीपहीःविनजेहभौंहकमान॥चलचि
तवेधोचुकतनहिःवंकविलोकनिवान॥इहअद्भुतरससषीकोवचन
नाइकासोंनाइककोवचननाइकासों॥सषीहूंसोंसंभवहै॥कवित्त॥स
षीतूकहांतेंअतिअदभुतिगतयहतेरीकमनैतीवरनतनवनतिहै॥क
हैकविहूलपतोप्रगटविलोकियतभ्रूकुटीकमानजिहिविनाहीतनन
है॥तिनतेंकहेअटीठिकुटिलकटाछसरचूकतिनचलतिचित्तवेधकों
नहतहै॥तेरीयाविलोकनिकोनिरषिअनोषीरीतिमेरीमतिअतिहि
तकोमिनतमनहै॥टीका॥नाइककोवचननाइकाप्रती॥नियसंबोधन
है॥कमनैतीकहियेंतीर॥चलाइवेकीविद्या॥सोकहापहीहैजिहक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कहियै तेहाता बिन भौहै जो है सोई कमान है ॥ वंकक हियें देही बिलोक
नि कहियें चितोनि ॥ सोई बान कहि तीर निन सो चंचल जो चित्र सोई वे
झो ॥ कहियें निसानो ताको चूकनि नही ॥ यातें अद्भुत रस जानियें ॥ वि
भावना रूपक अलंकार ॥ ४७ ॥

मूलदोहा ॥ कैधा आवन इहि गली ॥ रहौ चलाइ चलैन ॥ दरसन की साधै
रथैः रूपे रहैं नैनन ॥ इहलाइ का अपनें चित्र को अरु नायक के चित्र को
मामन सखी सौं वर्नन करति है कवि कैः इक अंस भैवे ॥ कवित्त ॥ सुंदर वदन
षटे जाके सुक निरान जो निहपद्दरो प्रभसामरंग अंगनै है ॥ महिमा
वषानत है जो को चारवेद मिल श्रुति के प्रमान ध्यान धरत मुनीन है ॥
काहू कवि कहू सहूज कुंजन नैं निकसत विकसत हृदय कमल लहि चैं
न है ॥ दरसन की साधैं बरी दर्सन न पायो नेक दर्स विन रूथे न हिये नमे रे
नैन है ॥ टीका ॥ नाइका को वचन सषी प्रती ॥ इस गली मे नाइक को
आयो जानि के वारनैं त्रनि को मे चलाइ रही पै चलैन ही ॥ सो मै कौ द
रसन की कहियें देषनै की साधै ॥ छाई रही पनैन न रूधे नही रहै ॥ काव्य
लिंगा अलंकार ॥ ४८ ॥

मूलदोहा ॥ जो लौं लषौ न कुल कथा ॥ तौ लौं हि कुठ हराइ ॥ देषे आव
ने देषि कैः बैसो हर रह्यो न जाइ ॥ इह सषी नाइका सो कहति है ॥ कैसो है ॥

118

बिह०
११८

वरुरूपदेषितिनाहीतौलौंऊलकथाकरिलै॥वाहिदेषिदेषेविनावैं
हरह्यौजातनाहीं॥अथवासषीनाइकाकोऊलकथाकोउरहदिखाइहि
ह्यादेतिहै॥तासौंनाइकाकहतिहैं॥किवाहिदेषिषिनावैंहरह्यौजात
नाहि॥सवैया॥जौलौंनडीठिपरैमनमोहनहौंनवेहासषीतौलौंस
यानहि॥डीकचुटानिपतिव्रतकोकरिलैऊलकानिकथाकेबषान
यानहि॥ठीकचुटानिपतिव्रतकोकरिलैऊलकानिकथाकेबषान
हि॥लोचनकेगांहनतोकेरहैजवदेषतिबामदमरनिकानहि॥देषिवि
हि॥लोचनकेगोहनतोकेरहैजवदेषतिबामदमरनिकानहि॥टीका॥नाइका
नानरघ्यापरवैकेसंडमेरोकह्योकिनमोचुकैपानहि॥टीका॥नाइका
नानरह्योपरवैकेसंडमेरोकह्योकिनमोचुकैपानहि॥इसकोयुह
कोवचनसषीप्रती॥जौलौंकुसलकथानहीलषनिहै॥तौलौंठिकठहरानह
मनलवहै॥किकुसलषीश्रानहीदेषतिहै॥सोमेदषिकेरहानजानहै॥पजीयाधलंकार
श्रावननाइकुमेदषो॥
७४॥

मूलदोहा॥डिगकुडिगनिसीचलिठिठुकि:चितईचलीनिहारि॥
लियेंजातिचितुचोरटी:वहीगोरटीनारि॥इहनमकाकोचेष्टानाइक
सषीसोंकहतहै॥कवित्त॥मनमथवानसेचपलअनियारेचषश्र
धरश्ररूनडुतिश्रतिसरसातिहैं॥सोनेसेसुदेसतनलौनेहैउरोजवो
नैंकौनकौनमतिलषिवेकोललचातिहैं॥इगएकडिगनिसीचली
फिरषरीभईवहतिविलोकचलिमनभिमसकातिहै॥जोवनमरोरभ
रीगोरटीगयंदगौनकोनयहचोरटीचुरायेंचित्रजातिहै॥टीका॥
नाइकको वचनसषीप्रती॥कैसषाप्रती॥डिगुकहियेंडगभरत
डिगनिसीजोनाइका॥सोचलिकैठिठकिठाढीहै॥कैचितईसो
नाइकादेषिकै॥चलीवहिगोरटीकहियें॥गोरीनारिकहियेंनाइका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सो चित कौ चुराए जाति है ॥ स्वभावोक्ति अलंकार ॥ ५० ॥

मूलदोहा ॥ सो घन कुंज छाया सुखद सीतल मंद समीर ॥ मन ह्वै जा
त अजौं वहै वा जमुना के तीर ॥ कहू एवं अनुराग है सो जमुना के तीर सं
जोग मैं चित की जो वृत्ति होति तिंही सौं वही भावना करि वैसेई होति है ॥
सो नाइका सखी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ सघन निकुंज छाए सुखद सु
हाए अरु मंद तिसरस गुंजत पुंज मधुपन की ॥ प्रफुलित मंजु अरविं
दन के वृंद आवै त्रिविधि बियारि लै सुगंध कुसुमन की ॥ ललिका ल
लितन्ह बिच बल्लिन लहलहाति जे कुती विरह भूमि नंद के सुवन की
हाल आनि प्यारे की सो वेई जमुना के तीर अजहू निरषि वह गति होति
मन की ॥ टीका ॥ नाइका को वचन अथवा नाइक को वचन सखी
सखी के सखा प्रती ॥ वहै कुंजन को छाह है ॥ सीतल मंद समीर कहि
ये ॥ पौन सो सुष को देनवारो ॥ सो मेरो मन अब सो क कहिये अब हूं
वहीं है जात है ॥ जमुना के तीर मैं ॥ इस को यह मतलब है ॥ कि जिस
के साथ क्रीड़ा करी सो याद आवति है ॥ स्मृति अलंकार ॥ पर की
या को उक्ति विप्रलंभ शृंगार रस तिसंचारी स्मृति अलंकार ने उद्दीप्त या प
रकरी या नैं संकर कहिये ॥ ५१ ॥ मूलदोहा ॥ मिलि परछांही जोन्ह
सो रहे दुहुन के गात ॥ हरि राधा इक संग ही चले गली मैं जा
त ॥ यह दोउन को मिलिवौ गली मैं आनि एक ठौरौ अनिय रतने है ॥ सो ए
को सखी सो कहति है ॥ निसचार को मिलन ॥ कवित्त ॥ दोउ रस भीजे रू
परी के नहनाई भरे दुहन के सनेह सों दुम गन गात है ॥ दंपति कारन

चतुराईके चरित्र चाहु औरकोन जानैप्रवीननकी बातहै॥ जहांपु
ष्छ्या हुतिहां प्यारीपै विलोकि परनिजोइको प्रकासजहां काङ्को
लषातहै॥ कहैहै कविकृस्नलोलिकैजको निसंक भए दोऊ इकसा
थहीं गलीमैं चलेजातहै॥ टीका॥ सषीको वचन सषीप्रती॥ दो
ऊ केसरीपरछाहीं औरचांदनीमैं मिलिरहे॥ इस कौ यह मतल
बहै॥ किश्रीकृस्नको सरीरपरछांहीमैं मिलिगयो॥ औरराधिका
चांदनीमैं मिलिगई॥ श्रीकृस्नऔरराधिकाएकसाथही कहियेए
कठेगलीमैं चलेजातहै॥ मिलितालंकार॥ सषीउक्तिसषीसोंदं
पतिके संकअवहित्थाहुतिसंचारीसंजोगसिंगारयरकीयाना
इका मिलितालंकार प्राइप्रावल्लमैं भेद नलहै तिहिंपलकवि
जनमिलितायुकहै॥ ५२॥ मूलदोहा॥ सषीलसतिगोपालकैः
उरगुंजनकीमाल॥ बाहिरलसतिमनोपियैःदावानलकीज्वाल
॥ रूनाइका प्रौढ़ा अधीराधीरानाइकाको वचन सषीसों॥ सवैया॥
भागबडे निरष्यो यहबानिक आजकी दौवलि जाउच्चरीको॥ जे
न प्रभालषिलागति है कछु मोहितोमैं नकी मूरति फीको॥ देषि
री मोहनके उरभावती मालविराजति गुंजकी नीकी॥ पाईकुनी
प्रगटीहुतीबाहिरज्वालमनो बडवानलहीको॥ टीका॥ नाइका
को वचन सषीप्रती॥ सषीसंबोधन है॥ गोपालकहियेंश्रीकृस्न
ताके उरविषै गुंजनकी मालालसतिकहियें सोहतिहै॥ दावानल
कहियें वनकीआगि सो श्रीकृस्नपीईहै॥ ताकी ज्वाला बाहिर मा
नो सोहतिहै॥ उत्प्रेक्षाअलंकार॥ परकी ताकी उक्तिसषीप्रतिव
चनअनुभाउतै॥ अनुरागिचिंतितउत्प्रेक्षालंकार॥ जहकीजातिसं
भावना॥ ५३॥ मूलदोहा॥ मकराकृतगोपालकैः सोहतकुंड
लकान॥ धर्यो मनो हियधरसमरःड्योढीलसतनिसान॥ यह

श्रीकृष्णजीकोध्यानहैसोअन्तःकरनाईआईहृदयमैंकंदर्पप्रवेसभयोयाःप्रयोज
नु॥सवैया॥मैंनिरष्योब्रजराजललाटुतिपुंजकहियेंछिनसांजिरहेहैं
कुलककेहगदीरघदेषिप्रभातकेपंकजलाजिरहेहैं॥मंजुलकान
नमैंमकराकृतकुंडलयोंछविछाजिरहेहैं॥मानोमनोजधस्योहिय
मेंदिवद्वारनिसानविराजरहेहैं॥टीका॥मकराकृतकहियेंमछरीके
आकार॥कुंडलजेहैतेगोपालकहियेश्रीकृष्ण॥ताकेकानमेंसो
हतहै॥मनमथकहियेंकामदेवसोहियेंकहियेंहृदयसोईभयोघरताम
धस्योहै॥ताकेनिसानमानोद्वारहीमैंसोभायमानहोतहै॥उत्प्रेक्षारू
पकाअलंकार॥गुनकथनपूर्वोनरागतेंपरकीयाकीउक्तिसंगिःउत्प्रे
ताऱूपककोसंकरउपमानरुउपमेयमेंभेदुपैरनलषाइ॥तासोंरूप
ककहत्त्वहै॥५४॥मलदोहा॥सोहतओढेपीतपटःस्यामसलोनेगा
त॥मनौनीलमनिसैलपरःआतपपरोप्रभात॥यहपीतांबरकीसोभा
नाइकाकोवचनसषीसोंसषीकोवचननाइकासोंभक्तहूकोवचनकोइ॥
सवैया॥बनजाहुविसोंहरतेननतिमैंअरुप्रानतुमैंअवरोहतहै॥स्याम
ताकहताछविकोकहियेछवियानिहुलोकमैंकोहतहै॥सषिसुंद
रस्यामकलेवरपैपटुपीतलसेमनमोहतहै॥मनिनीलकेसैलकेऊप
रमानोप्रभातकोआतपसोहतहै॥टीका॥स्यामकहियेंश्रीकृष्ण॥
ताकेसलौनेकहियेंसुंदरजेगातकहियेंसरीर॥तेपीतपटओढेसोह
तहै॥मानोनीलमनिकेपहारपैप्रभातकहियेंभोरकोआतपकहियें
धूपसोपरीहै॥उत्प्रेक्षाअलंकार॥जोउक्तिसषीकीहाइतोजानियतिहै
किनायकाकेआगेकहिवाकौंरुचिउपजावतिहैजोनाइकाकीउक्ति
हैसषीप्रतितोवासोंइनतुकरायोचाहतिहैइनीविवर्जितहैनाइका
उत्प्रेक्षालंकार॥जहंकोजतिमंभावनाभ्रमहैफलमषिनीनभांति
उत्प्रेक्षा॥५५॥मलदोहा॥कितीनगोकुलकुलवधूःकाहिनकिनसि
षदीन॥कौनेंतजीनकुलगलीःहैमुरलीसुरलीन॥यहमुरलीकीधु

निपेरीकी है सो सषी सिषावेति है ॥ तासों बासुरलीको मोहनता कहति
है ॥ सवैया ॥ गोकुलमैं न किती कुलनार पतिव्रत पालि निवारि अवी
नी ॥ और जसी घनकौ नेसुनीसुनसीलकी पद्धति कौनेन लीनी ॥
पेषत वा नटनागरकी छवि कौन भई इह रूप अधीनी ॥ बासुरली
धुनकान परै कुलकान विदा कहि कौन न कीनी ॥ टीका ॥ गोकल
मैं कुलवधू कहियें पतिव्रता कितनीन होइ इसको यह मतलब है ॥ १
किसवहुन सबकौ सिषायो ॥ और सुरलीक हियें वो सुरी ॥ ताके सुर
निमै ॥ लीन है कै कौने कुलकी मरजादा न तजी ॥ कहियें छाडी ॥ इस
को यह मतलब है ॥ कि जिन बांसुरी की धुनि सुनी तिन पैर है न गयो
उक्तालंकारका वोक्ति अलंकार ॥ को मंकर ॥ जो सषीकी उक्ति होइ तो ज्ञा
नियत है कि नाइकाके आगे कहि वा कौं रुचि उपजावति है ॥ जो ना
इकाकी उक्ति है सषी प्रतिनो ॥ वा सौं हूं नलक रायो चाहति है गुनक
थनैं पूर्वानुराग बंधि है ॥ हूती विविजिता है नाइका उत्तरालंकार का
कोक्ति कौ सरूप ॥ उभरदेवै मेज हां असोपर तुल षाइ ॥ असो तन रू
को प्रथम यह भेद कहत कविराय ॥ १ ॥ और बात मे और ही अर्थ करै
जहं जोनि ॥ है प्रसन्न हूं है भांतिकी वक्रोकति उरआनि ॥ ९८ ॥ सषी दो
ता ॥ अधर धरत हरि कैं परति ओठ डीठि पट जोति ॥ हरित बांसकी
बांसुरी इंद्रधनु रसी होति ॥ कृष्णनायका श्रीकृष्णकौ मुरलीबजावत देषि
रीझि सो वह सोभा भांतिकरि कहै सषी सषी सों कहै ॥ सवैया ॥ चलरेष
सी वानक सोवनि कै ब्रजराजको लाडिल आवत है ॥ मुषचंदकी चारु
मरीचन सों बलि नैनचकोर सिरावत है ॥ जबडीठि औ रनको परि कोस
भ्रिकानिको रंग मिलावत है ॥ नव बांसुरी बांस हरे कौल लासु रचाप
को रंग दिषावत है ॥ टीका ॥ सषीको वचन सषीसों ॥ अथवा कविको
वचन ॥ श्रीकृष्णकै अधर कहियें नीचे कौ ओठ तामें बसुरीको धारत
ओठ और डीठि और पट कहियें पियरो कपरा तिन की जो ति बांसुरी

मैपरी॥ सुहरे वा सषी जो वां भरी॥ सो इंद्रधनुष के समान होत हैं॥ इ
सको यह मतलब है॥ कि जैसें इंद्रधनुष बहुत रंग को होत है॥ तैसें वा
सुरी बहुत रंग की भई॥ तद्गुनालंकार उपमा अलंकार॥ इहां जो नाइ
का की उक्ति ठहराइये तो सिंगार वर्ननि है॥ ए दोनु रागानुराग के गुनतें आ
गिरति कौ अनुभाव है॥ वचन उक्ति सषी प्रति तद्गुणालंकार॥ निजा गु
न कौं तजि वस्तु जह॥ संगी को गुन लेइ॥ अलंकार तद्गुण तहां निरष
तिक विकहि देइ॥ ५७॥ मूल दोहा॥ ताचि अचानक ही उठे: बिनु पावस
वन मोर॥ जानति हों नंदित करी: जह दिसि नंदकिसोर॥ यह आगमैं ना
वनाइका कौ वचन सषी सौं सषीही कौ वचन नायक सौं॥ कवित्त॥ राधा यों
बिसाष सौं कहै निजा को रूप मोहि चाह चित्रपट अवरेषि तें दिषायो री
जा धनु वहि चित चोर नें देषत ही तन आली इहि कानन कहू तें आनि आ
यो री॥ लहलही होति वह काल की सुबानी बलि फूलन सुमन अैसो
बन छबि छायो री॥ बिन उनपे ही घन भये हरषित मन नाचि नाचि मो
रन कुलाहल मचायो री॥ टीका॥ नाइका को वचन सषी प्रती॥ अथवा
सषी को वचन नाइका प्रती॥ वन के मोर पावस कहियें वरषा रित॥ ता
बिना अचानक नाचि उठे॥ तातें मैं जह जानति हौं॥ नंदकिसोर कहियें
श्रीकृस्न तिन जह दिसा आनंदित करी है॥ इसको यह मतलब है॥ कि
मोरनि के बोलने सों श्रीकृस्न को आउनो जानो॥ हेतु उत्प्रेक्षा अलंका
र॥ सषी को वचन नाइका प्रति संकेत सूचक नाइका परकिया जानि
ए लिहै चित की भास करि सषी के संकाह चित होत है॥ यातें हेतो
त्प्रेक्षालंकार॥ जह की जति संभावना ठ॥ ५८॥ मूल दोहा॥ सब ही
त्यों समुहाति छिनु: चलति सबनि दै पीठि॥ वाही त्यों ठहराति जह:
कबलनुमा लौं डीठि॥ इहां नाइका लक्षिता है॥ सषी नाइका सौं कहति है॥
सषी को वचन सषी हू सौं वनें॥ कवित्त॥ लाल मन मोहन की छबि पर

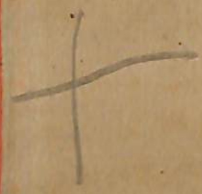
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

121

विह०
२२१

नैनौ वलिरीझि रहीमोहि वहरावतिहैं भोरीजैयों ॥ सौनिउक्तं नवकी
प्रगट विलोकियत मोह कीयें वैमें निवह निचोराचोरीजैयों ॥ सु
वत्यौंलषितिमिले काहूमान नेरी दौहीयौं देचलनि सुनि सवही
कीग्रोरीजैयों ॥ इनतउनहेरि चित्तचोरहीकीग्रोर ग्राइरहीनेहठहराईम
त्रवीकरोरीजैयों ॥टीका॥ सषीकोवचननाइकाप्रती ॥ सवहीं नेमोक
हियें सवकीग्रोर ॥ छिनमात्रसामुहीदेषनिहै ॥ ग्रोरसवकोपीठि
दैकैचलनिहै ॥ इसकोयहमतलवहै ॥ किग्रोरकौंनदेषतिहै ॥ तेरी
हष्टिकवलनुमालौवाहीकीग्रोर ठहरानिहै ॥ज्ञानिवर्णनउपमा
ग्रलंकार॥ सषीकोउक्तिसषीसौं ॥ हेतलद्विनापरकीयाउपमालं
कार ॥ उपमानहउपमेयसाधारनवाचकहोइ ॥ एचारोंपदएतिन्हा
पूरनउपमासोइ ॥ ५५ ॥ग्रलदोहा॥ येंचनिसीचनिचनिचितैःभई
ग्रोरग्रलसाइ ॥ फिरिउफकनकोम्हगानयनिःहगनिलगनियाला
इ ॥ इहनाइकाकीचितनुवनिहै पिनाइकाकेचित्तमैंवसीहै ॥ ग्रनाइकाम
षीसौंकहनहै वैसेंहीपरिचितवेयहग्रभिलाषहै ॥ कवित्त॥ षिरकी
निहारिनवनागरिनिहारिहूनठाढोनववारीमनमथछविछाइके ॥
विहरविलोकिससिवदनीलजाइकेसुग्रेंचनिसीमद्वभईग्रोठग्रल
साइके ॥ लगनिलगाइचितलैगईचुराइकैविहारीलालस्योठग
कीसीमूरिषाइके ॥ उनचितवनसवकाजविसराइके सुफिरिग्रव
लोकिवेकीग्रासउरलाइके ॥टीका॥ नाइककोवचनसषीप्रती ॥
कैसषाप्रती ॥ ग्रलसाईकहियेंग्रालसकरिकैचितैकैंनाइकाग्रोर
भई ॥ सामेरीचितौनिकैयेंचनिसीहै ॥ फेरिउफकिवेकीम्हगानय
नीकहियेंनाइकासामेरेनेत्रनिकौंलगनिलाइगई ॥रूपकाग्रलं
कार॥ उक्तिनाइककीतेगुनकथनपूर्वानुरागनाइकापरकीयाया
है ॥ ग्रभिलाषसंकसंचारीग्रलसायवोग्रनुभाव ॥ रूपकालंका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative



र॥ उपमान रु उपमेय मैं भेद परै न लषाइ॥ ता सौं रूपक कहत है॥
६०॥ मूल दोहा॥ कंजनयनि मंजन किये: बैठी ब्योरति बार॥ कच अं
गुरिन बिची ठि दै: निरषति नंदकुमार॥ यह नाइका नाइका को अ
छक बिदेषति है सो षी सषी सों कहै॥ सवैया॥ कंज सुषीन बना
गर आगर रूप उजागर सागर लेषति॥ मंजन कै पुनि बैठि दुनीक
विहूँ सवकै है सषि मंडलि पेषति॥ सीस के बार बिथार दुहूँ कर आ
रससों कछु भाव बिसेषति॥ आँगुरि औ कच की करि ओट हहंहर
नंदकुमार हिदै षति॥ टीका॥ सषी को वचन सषी प्रती॥ कंजन
यनि कहिये कमलनैनी नाइका सौं॥ मंजन कहिये सनान ताको
करै॥ के सजो तिनको बैठी ब्योरति कहि सुरझावति है॥ कचु कर
हिये बार: तिन मैं आंगुरिन के बीच डीठि दै कै नंदकुमार जो श्रीकृ
ष्ण ताकौ निरषति को देषति है॥ सुभावोक्ति अलंकार॥ सषी को उ
क्ति सषी सों है न लहिता परकीया स्वभावोक्ति०॥ जाको जैसो रू
प गुन वरनन वाही रीति॥ तासौं जानत सुभाव कहि भाषत हैं कवि
प्रीति॥ ६१॥ मूल दोहा॥ लीनें हू साहस सहस: कीनें जतन हजार
लोइन लोइन सिंधु तन: पैरि न पावत पार॥ इह नाइका के अंग अंग
की सुंदरता देषि नाइक के नेत्र तृप्त किंतु है रहत है॥ सो नाइक
सषी सों कहै सषी नाइका सों कहै॥ सषी सषी सों कहै॥ सवैया॥
जानन की न्नवि को कुवि को विर के ते कतौ उपमान बतावत॥ ता
तन की छवि देषि बेकाल बवते न लगे न इतें उत धावत॥ साहस कौ
रसयान छुनैवडू भांति अनेक उपाइ बतावत॥ सोभा के सागर मैं
उपरे अवपरतके से हू थाह न पावत॥ टीका॥ नाइक को वचन
अथवा सषी को वचन सषी प्रती॥ साहस कहिये हजार॥ साह
स कहिये धैर्यतें करै॥ और हजार जतन के हू उपाइ ने करै॥ तथा

पिमेरेलोइनकहियेंनेत्रनेनाइकाको॥ नमकहिसरीरसोइभयोलो
नकोसमुद्र॥ ताकौपेरिकैपारनहीपावतुहै॥ रूपकाअलंकार॥ उ
क्तिनाइककीकेनाइकाकीमुनकथनतेपूर्वानुरागव्यंगिओत्सुक
संचारीवचनअनुभावउपमालंकार॥ उपमाअरुउपमेयसाधार
नवाचकहोइ॥ एचारोपदएजिहांपूरनउपमासोइ॥ ६२॥ मूलदो
हा॥ पहुचतिडटिरनसुभटलौः रोकिसकेसबनाहि॥ लाषनहू
कीभीरमैः आंषिउहीचलिजांहि॥ इहनाइकाओढापरकीयानाइक
कीचितवनिदेषिसषीसषीसोंकहतिहै॥ सवैया॥ भीरभईहभका
जसमाजमैंलाषनुआनिजुरेनरनारी॥ दोउनकेउमगेमनचापसों
प्रेमकेभाइभरेअतिभारी॥ काहूकोरोकिचितेनारहैनविलोकत
आपुसमैपियप्यारी॥ डीठिउहौंठहरातिभटूसवतैकछुप्रीतकी
रीतिन्यारी॥ टीका॥ नाइकाकोवचनअथवासषीकोवचन॥ अ
थवानाइककोवचनसषीप्रती॥ आंषिरनकहेजुद्धतामेंउटिकहेदे
षिकै॥ सुभटकहियेंवीरताकेसमानपहुचतिहै॥ औरसबकोई
आंषिनकौरोकिनहीसकतहै॥ लाषनमनुष्यकीभीरमैंआंषिउ
हांईकोचलिजातिहै॥ उपमाअलंकार॥ ६३॥

मूलदोहा॥ जरेदुहुनिकेहगझमकिः रुकेनझीनैंचीर॥ हलकीफौ
जहरौलकीः परतगोलपरभीर॥ इहदोउनिकेनेत्रचूंघटकीओट
पैलिकैमिलगएहैसोसषीसोंकहतिहै॥ सवैया॥ बैठिअलीगन

मैंनवनागरआयोनहांचलिप्यारोबिहारी॥ लालकीडीठवचाइ
बेकोमुखघूंघटओटकरैनतिहारी॥ नैनसोंनैनउमंगमिलेनर
हेपटओटकिनोसबपिहारी॥ रोकिसकैनहरौलकोफौजज्यौंगोल
पैआनिपरेभहभारी॥टीका॥ सखीकोवचनसखीप्रती॥ दुहूकेहना
इकनाइकाकेहगजोनैनतेकमकिकैजुरेकैहेमिले॥ फौनैचोरकेहू
महौनकपटमैनकैनहरी॥ जेहरौलकीहलकीफौजहानीहै॥ नव
गोलपरभीरपरनिरू॥ नैसैंमहीनवसनमैनेअनअटकें॥ दोऊकेनेत्र
मिलिगए॥दृष्टांतअलंकार॥ पूर्वानुरागसखीकोउक्तिसखीसोंल
खिनासाक्षात्दर्शन॥ दृष्टांतअलंकार॥ उपमानअउपमेयगुन॥
वाचकधर्महुजानहोतबिंबप्रतिबिंबहै॥ दृष्टांतसपरिमान॥ दृष्ट
ान्तदोहा॥ गडिकुटुंबकीभीरमैः रहीवैठिदैपीठि॥ तऊपलककुपरि
जाउतसः सलजहसौहीडीठि॥ इहनाइकाकेनेहकीनिकाईअरुवि
नैकीचतुराईनाइककहतहै॥नाइकापरकीया॥सवैया॥ प्यारीप्रवी
नसनेहसनीनषतेसिषलौंमधुकीनिधिमोंहौ॥ कैसेहूमोउरतेन
टैरंजुभीचितचारुनिनेहनिबौंहौ॥ बेठीवधूगुरनारिनमैंनऊ
नारितवाहबरीसकुचौंहौ॥ लाजपगीपलपकनऊपरजातिइतैव
हडीठिहसौंहौ॥टीका॥ सखीकोवचनसखीप्रती॥ कुटुंबकीभीरमै
गडीजोनाकासानाइककोपीठिदैकैवैठिरही॥ तऊपलककहियेंप
कछिनमात्रसलजकहेलजसहित॥ हसौहीकहियेंहासयुक्तजो
दृष्टि॥ सोउनकहिउमनाइककीओरपरतीहै॥विभावनाअलं
कार॥ उक्तिउपपतिकीइनपदनेंव्यंजितहैनाइकवैंसुरतिनाइका
कैसंकालज्जानैअनुरागआगिविभावनालंकारकारनमाहिपे
कारिजहोइकैकारनकारनकोउपजावै॥ कारिजहोइअकारनतें
किअपरनकारनकाजवनावै॥ कैप्रतिबाधकहानहैकारजहोत

यहोर मसोनवहावै॥ हेनुनैंकाजविरुद्ध विलोकि बुधेसछैभांवि
विभावनावै॥ ६५ ॥मूलदोहा॥ सटपटातिसीससिमुषीः मुषघुंघ
टपटढांकि॥ पावककरसीझमकिकैः गईझरोषेझांकि॥ उत्तनाइ
कामध्याभाजकामसमानहै॥ सोनाइकसषीसेंजैसीभांतिदेषी
है तैसीअवस्थाकहतहै॥ सषीकोवचनसषीहूसोंनाहै॥ कवित्त॥
मोहनीसीमुरलीकोधुनिसुनिश्रवननललिकआईससिमुषी
सटपटसैं॥ नेसुकउझकिआनअवलोकिवेकोउदाविलीनोआ
ननलजाइपटपटसों॥ कहैकविकूलवालजानकोनिकाईदेषि
वेकोदगआकुलमदनचटपटसैं॥ दीपतिकीतरपउरपकिधोंपा
वककीझांकिगईझमकिझरोषाझरपटसैं॥ टीका॥ सषीकोवच
नसषीप्रती॥ ससीमुषीकहियेचंद्रवदनीनाइका॥ सोसटपटाति
कहियें॥ रतिसीमुषकौंघुंघटकोपटसोंढांकिकै॥ पावककहिये
आगि॥ ताकोझरकहिलपट॥ ताकेसमानझरोषामेझांकिगई
कैदेषिगई॥ उपमाअलंकार॥ उक्तिनाइककीगुनकथनतैंप्रवीन
रागवंति॥ वचनअनुभावनाइकाकैसंकसंचारी॥ तातेपरकीया
वंतिअनुभावदेषनोउपमालंकार॥ उपमाअरुउपमेय॥ साधा
रनधावककहाइ॥ एचारोंपदप्रजिहां॥ पूरनउपमासोइ॥ ६६॥ मूल
दोहा॥ नीचीयैनीचीनिपटः डीठिकुहीलौदौति॥ उठिऊंचेनीचोप
योः मनकुलंगझवकौति॥ इहनाइकामध्याहैलाजकामसमानहै
नाइककोवचनसषिसें॥ सवैया॥ सुंदरकमुष्अम्लपलसैमनमो
हनहेपलयेकनिहारे॥ कूलकहैउपमानवनेंकछुदेकेसवैक
विहूपुनहारे॥ नीचीतौनिलषैपुनिनीचेंहतूचोकछूप्रनतैनाहि
टारे॥ लैमनमेरोकुलंगज्युंयाइनमानोकुहीलाउडेअमुडारे॥
टीका॥ नाइककोवचनसषीप्रतीकेसषाप्रती॥ नाइकाकीडीठि॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लिपटनीचीनीचीनिपटकु हीलौदौरिकै॥ ऊंचेउठिकेमनजो
हैमोईभयोकुलंगपछी॥ सोफकफोरिकैनीचैंदयोहै॥उपमा
अलंकार॥ उक्तिनाइककोस्वोनुरागनाइकपरकीयाताकेक॰
राछविक्षेपअनुभाव॥उपमालंकार॥उपमाअरुउपमेय॰॥६७॥
मूलदोहा॥ हरीबरेसमीपकेः मानिलेतमनमोद॥ होतउइनके
दृगनहीः बतरसहसीविनोद॥ यहदोऊनेत्रनहीसैंबातेंकरनहैं
मिलिकोसुषमाननहैसोसषीसषीसोंकहै॥सवैया॥ प्रेमप्रभाउ
उइनकेकेसेंहु मोपवनैनबषाननतहैं॥ चातुकलाचितचातुरीको
रसभाउभरीउरआननहै॥ जद्यपिदूरषरेईतऊपेसमीपहीकोसु
षमाननहैं॥नैननहीवतराइहसेंयतिरीफरलीमतिठाननहै॥अ
टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ नाइकनाइकादूरषडेहै॥ तऊ
समीपकेमनविषै॥ मोदकारियेंआनंदनाकोमानिलेतहै॥ उइन
केनेत्रनहीसौबातनिकोरसऔरहसी॥ औरविनेदहोतहै॥वि
भावनादीपकाअलंकार॥ सषीकीउक्तिसषीसौंनाइकापरकीया
दंपतिकेहर्षसंचारीकटाछविक्षेपानुभावविभावनादीपकाल॰
कारकोलक्षणउपमानवस्तुउपमेयसौंइकपदलागेजाय॥ तासौं
दीपककहतहै॥ सकलविटलकहिजात॥ कारनविनहीकाज॰
को॥ उदयहोइजिहिठौर॥ पहिलोभेदविभावनाकोकहिकवि
सिरमोर॥६८॥मूलदोहा॥ नावकसरसेलाइकैः तिलकतरुनिइ
तताकि॥ पावककरसीझारिकैः गईझरोषाझांकि॥ इहनाइकनेना
इकाझरोषाझांकतीदेषीवहीसोभासषीसोंअपनापसषासोंक
हतहै॥सवैया॥ साजेसिंगारभरीछविभारहियेंविरहागिनिवा
रिगईहै॥ तोपभरीकछुआपेसोंआइझरोषेहनेकनिहारिगईहै

फेंकि नसोंज बूतें निरषी मवनें हुधि मोहि बिसारि गई है ॥ पावक
चाल सी वाल अचानक नावक नीर से मारि गई है ॥ टीका ॥ सषी
को वचन कै नाइक को वचन सषी प्रती ॥ नहनी कहियें नाइका ॥
सो तिलकु कहियें छिनमात्र ॥ इन कहियें इहां नावको कैहै देषि
कै ॥ नावक के तीर से लगाइ कै ॥ आगि की लपट सी फमकि कै ॥ ।
फेरा वा मे फाकि गई ॥ उपमाअलंकार ॥ नाइका को उक्ति हर्ष स्म।
ति संका संचारी क्रिया अनभाव ते या कै नोते सह है अरु उपपति नि।
ह कै संयोगि है जो परकीया न होइ तो पति नाइक कै रस संयोगिन
है सकै ॥ यातें परकीया ही कहिये लाटानुप्रास ॥ उपमालंकार
६४ ॥ मूलदोहा ॥ देषो अनदेषो कियो : अंग अंग सबै दिषाइ ॥ पै
ठति सी तन मे सकुचि : बैठी भितै लजाइ ॥ इहं नाइका परकीया या
को चितै को लाज करिबो देष्यो सो नाइक सषी सौ कहत है ॥ क
वित्त ॥ मोहन सरूप सनी बैठी ही छबीली राधा पैहै ह तहां नि
कस्यो अचानक कहूं आइ कै ॥ मेरी ओर देषि उन देष्यो अनदेष्यो क
रिके तिका नी अंग अंग सब काम दिषाइ कै ॥ पैठति सी तन मा से सकु
चि मन ये चित मी चितवन चाहि बैठी सिपटी लजाइ कै ॥ वह मु
सिकानि चितवनि तित सकु चति कैं ता रत नि नरही मेरे हिये मैं छुरा
इ कै ॥ टीका ॥ सषी को वचन कै नाइका को वचन सषी प्रती ॥ नाइ
का नै अपनें सिगरे अंग अंग न दिषा दिषाइ कै ॥ नाइक सुं देषो पके रिअ
न देषा करो ॥ इस को यह मत लव है ॥ कि नाइक मो को देषो मेन जा
नी ॥ सो नाइका चित को लजाइ कै है लाजवंत करी पसी वैठी है ॥ ।
ग्रथवा चितै कहियें देषि कै ॥ पसी लाजवती है बैठी है ॥ मानो सं।
को च मे अपनी देह मे पैठि जाति है ॥ अन्मेलासभावो क्तिअलंका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥ उक्ति सषी की सषी सें नाइका की कृपा वेदग्धता कौ कथन स्र
रुनाइका कैं अवहित्थ्या संकालाज संचारी जानि ये नाइका हृया वि
दग्धा है अथ लीलाभाव भावोक्ति अलंकार ॥ जहकी जुति संभावना वस्त
है तफल मथि ॥ तीन भांति इन लीला वरनत सब मति प्रसीज्ञ ॥ ७ ॥ मू
लदोहा ॥ उनि हरि की हसिकै इतै इन सौपी मुसिकाइ ॥ नैनु मिले
मनु मिलि गयो दोऊ मिलवत गाइ ॥ इहदोऊ गाइ मिलवत मन मिल
गए नाइका परकीया सषी सषी सें कहति है ॥ कवित्त ॥ उनहु मिलि
सी पकरी को है नई सी गाइ मोपैन छिरनि का आइ के नैकु षरी रहे ॥ इ
नकु मिकाइ कही भैज्ञ लीन चापै ता गाइ है हमारी हिलै गोरी सो ग्र
न पर्दै ॥ कहै कवि कृष्ण मिलै वैन न सो उन ग्रोर नैन सो नैन री फिर
सब सभए हैं ॥ भूली सुधि भौन की न गौन की सम्हार रही गाइ मिल
वत दोऊ मन मिलि गए हैं ॥ टीका ॥ सषी को वचन सषी सो ॥ उनि कृष्ण
ये इस नाइका ने ॥ हरि की गाइ बुलाई ॥ इस नाइका ने मुसिकाइ के गा
इ सौपी ॥ गाइ के मिलिबे ते दोऊ नाइक नाइका के नेत्र नि मिले तें ॥ म
न दोऊ को मिलि गयो ॥ पदार्थावृत्ति दीपक अलंकार ॥ सषी की उ
क्ति सषी सों देषति को हरि लाल छिलकी यौ है दोऊ नि कौ चितै वो अनु
भाउ हर्ष संचारी तें रव अनुराग व्यंगि सात्त्विक तदर्शन यर्कीया नाइका
है ॥ उभया वृत्ति दीपकालंकार ॥ उपमान वस्तु उपमेय सौं ॥ इक पद ला
गै जाइ ॥ तासौं दीपक कहत है सुमति हृदै कवि समुदाय ॥ ८ ॥ मूल
दोहा ॥ फेरि कछुक करि पौरि तें फिरि चितई मुसिकाइ ॥ आई जाव
न लेन तिय नैह चली जमाइ ॥ इहु नाइका परकीया जो चेष्टा याकी
देषी है सो नाइक सषी सों कहै ॥ सवैया ॥ वेलि लिये कर आई अचा
नक कंचन बेलि सी बालि अकेली ॥ जोवन जोति जगी अति कोउ
ति लैतिन पाइन पेली ॥ ऊठ मैं सौ मति कै चितई मुसमनो मुसिकानि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

125

बिहा·
२२५

मैंमोहनिमेली॥ जामनुलेरसजानुदयोगईजियनेऊजभाइनवेली॥टी
का॥नाइककोवचनहैसषीकोवचनसषीसो॥ कहूकहियेंकाहू
वातकोफलकरिकैनाइकामुसिकाइकैचितई॥ तियजोनाइकासो
जाउनलेनआईहै॥ सोनेहकहियेंप्रीतिकोजमाइचली॥असंगति
अलंकार॥ इतौसुनाइककोउक्तिहैइसोवचनभाववस्तुतिसंचारी
तैंनाइकाकेंहर्षसंचारीमुसिकाइवोअनुभाउतातेंपूर्वानुरागध्वनि
नाइकापरकीयाजोसषीकोउक्तिहोइतोहेतुलछितासेअसंगतअ
लंकार॥ औरकाजआरंभियेऔरैंकीजैंदौर॥ कहतअसंगतनीसरोया
कौकविसिरमौर॥ ७२॥मूल:दोहा॥ मैहूंजान्योलोइननिःजुरतवाढि
हैजोति॥ कोहोजाननदीठिकोःदीठिकिरकलीहोति॥ इहनाइकाअ
पनेनैननकीआसक्तिसषीसौंकहतिहैअरुयहप्रगटकरतिहैकिजाव
वैआषींदिषीनवतेंऔरकाहूसंगनहीनाही॥ कवित्त॥ जादिननेंआलीव
होकोमनमोहनकेलोचनसलोनेदेषेअतिहितवाढिहै॥ तादिनतें
मोहूयहजानीचारिनैननभएजोतिकोप्रकाससवकाहूअधिकाईवाढि
है॥ जोरतहीनैननविथातननमैंवगारिगईमदनहुतासनवरतजाड़ि
जाढिहै॥ कौनयहजाननहोटीठिहीकोडीठिवीरहोतिकिरकटीको
कसवाननकाढिहै॥टीका॥नाइकाकोवचनसषीप्रती॥ मैंहूंजान
तिकिनेत्रनकोनैननिसोलागेजोतिवाढैगी॥ इसकोयहमतलवहै
किनेत्रनिकोवहुतसहैगो॥ यहकोनुजानतहैहहष्टिकोदृष्टिकिर
कटीहोतिहै॥विषमअलंकार॥ उक्तिपरकीयानाइककोवचनअ
नुभाउवितर्कसंचारीपूर्वानुरागध्वनिविषमालंकार॥ आनरंगकेका
रनतेंजहकारजआनरंगहैजाइउद्यमकीजैभलोजानिकैं॥तातैहो
इवुरोफलअनमिलतेकोसंगहोइतहजानिलीजीयोचित्तचलाइ
अलंकारयहविषमतीनविधिमैंसवकोंदीनोसमफाइ॥७३॥मूलदो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हा॥ जौन जगति पिय मिलन कौं ऽ रहत कन मोहु दीन ॥ जो लहियें
संग सुगम साजन कों ऽ धरकन रक हु कौन ॥ यहु परकीया विककश्रिती
उक्ति है दोहा ॥ कवित्त ॥ वहै ठौर नीको जहां मिलिवो है पी को मीतय
है मत ठीक मेरे जी को अवदात है ॥ पायो जो मुकति पद दरसन प्रा
नप्यारे सरसो अधिक तु पदे ष्यो न सुहात है ॥ कहु न वनै न कैंहु ज्ञा
नन आवे कुभांति भांति प्रानन को त्रास अधिकात है ॥ रहिवे वने नम
नवने सो मिलाप तो पै नरक निवास हुं ने मन न सकात है ॥ टीका ॥ ना
इका कौ वचन सषी प्रती ॥ पिय जो नाइक ॥ ताके मिलने की जुगत न (
हो है ॥ ता मुक्ति के सुष में प्रीति दई ॥ इसका यह मतलव है ॥ कि नाइक न
मिलै और मोक्षु होइ तो मो न भलो नहीं ॥ और सजन जो नाइकु ॥ (
ताके संग मिलै तौ नरक हूं को धरका नहीं ॥ इसका यह मतलव है ॥ न
रक हू मैं नाइक हू मैं नाइक को साथ भलो है ॥ अथवा साधु को वचन सा
धु प्रती ॥ मुक्ति जाके सुष मैं दई है ॥ ऐसो पिय जो नारायण ॥ ताके मिल
वे की जो जुक्ति नहीं है तो पुरि है ॥ और सजन के है साधु ताको संग पाइयें
तौ ता पुरुष कौ काहू को धरक कै डर नहीं है ॥ नरक संवाध न जानियें ॥ (
संभावना काव्यलिंग अलंकार ॥ उक्ति नाइका की वचन अनुभाव अ
भिलाष संचारी तें एवं न राग वक्ता की उक्ति तें व्यंग है ॥ काव्य लिंग (
अलंकार ॥ अर्थ समर्थन कीजिये जहां युक्त सो मित्र ॥ काव्य लिंग भू
षन तहां भाषत वुधि विचित्र ॥ ७४ ॥ मूल दोहा ॥ मोहु सौं तजि मोहु
दृग ऽ चले लागि उहि गैल ॥ छिनकु छ्वाइ छवि गुर डरी ऽ छले छवीले
छैल ॥ इहु दोहा मैं राग है नाइका को देषि नाइका को अनुराग उपज्यो है
सो नाइका सषी सौं कहति है ॥ नाइका परकीया है ॥ कवित्त ॥ जा छ (
वीते मोहनी को मंत्र डारि दीनो उन रूप की मिठाई ता छवि तें कुलम (
लै है ॥ जैसी जैसी हठि करि रोकि रही और अंचल मैं सौ तैं सौ अति वल

करिउनहींकोकहेलैहै॥मोहमैंजोकहेतोनीतोपलकमैंकरिदीनोतोके
तुमसबनातोवाकीगैललगिचलेहै॥नंदकोकुमारआलीबीस
बिसेठगहैरीदेषनहुदेमैरेदोउनैनछलेहै॥टीका॥नाइकाकोव
चनसषीप्रती॥मोसौंमाहकोनजिकोनजिकैमेरेदृगजोनेत्र॥
तेउसनाइककीगैलकहियेराहताकोचलेगए॥छबीलोकहिये
सुंदरजोनाइकतिसने॥छबिकहियेसोभामोसोईभईठगकीबुटी॥
ताकेछिनमात्रछुवाइकैमेरेनेत्रछले॥रूपकालंकार॥परकीया
नाइकाकीउक्तिसषीप्रतिपूर्वानुरागवचनअनुभावतेंव्यंगिरूप
कछेकानुप्रासकोसंसृष्टिउपमानकहुउपमेयमैं॥भेदपरैनलषा
इ॥तासोंरूपककहतहै॥सकलस्तुकविसमुदाय॥वीचनपदए
पदजिहांअछरसममताहोइ॥सोछेकानुप्रासहै॥कहतसयानेलो
इ॥२५॥मूलदोहा॥कोजानैहैहैकहाब्रजउपजीअतिआगि॥
मनलागेनैननिलगैंचलैनमगलगिलागि॥इहनाइकअथ
वानाइकाकेदृढानुरागतेंविरहभयोहै॥सोविरहकीअवस्थानिसोंम
मुछाकहेहैसोसषीसषीसोंकहेहै॥सवैया॥दीसैनधूमबरैबि
नईंधनउन्नतहैप्रगटैनसिषाहै॥नेमकुनेननलागतहीमनआ
नलगैसबअंगनिदाहै॥लोचननीरढरेंनबुझेउपजीब्रजमैंको
उआगिमहाहै॥देषहुडीठिपरैनकहूंअबजानैकोआगिगयेहैहै
कहाहै॥टीका॥नाइकाकोवचनसषीप्रती॥ब्रजमैंअतिबडीआ
गिउपजीहै॥तानेकहाकहानीहै॥इसनकोकोनजानै॥मनकेलगे
तेंनेत्रनहीलागतहै॥सोमनुमारगनहींलगतहै॥इसकोयहमत
लबहै॥किमोकोनिद्रानहीपरतिहै॥औरमेरोमनराहनहींपरत
है॥असंगतिअलंकार॥परकीयानाइकाकीउक्तिसषीप्रतिवच
नअनुभावतेत्राससंचारीतेंपूर्वानुरागव्यंगि॥असंगतिअलंका

र॥ कारनश्रौरठौरहै॥ कारिजश्रौरठौर॥ भेदश्रसंगतनकोप्रथम
भावतनकु विसिरमोर॥ ७६॥ मूलदोहा॥ लईमोहमीमुनननवोःन
जिमुरलीधुनश्रान॥ कियेरहतिनितरातिदिनःकानहीसोंका
न॥ इहमुरलीसुनीहैतवनैंश्रौरकछुसुननतिनाहीसो.सखीसखीसोंक
हतिहै॥ सवैया॥ मोहनकीमुरलीकीश्रलीजबतैंधुनिश्रानके॰
कानपरीहै॥ बालिभईतनकीनेलहूग्रहकाजसमाजसबैविसरी
है॥ कानतुकाननश्रौरकीयेरहैकामेषरीकलकानकरीहै॥ बान
सुहातनश्रानकछूसुनिबेकोमनोमनश्रानकरीहै॥ टीका॥ स॰
षीकोबचनसषीसों॥ मुरलीकहियेबांसुरी॥ ताकीधुनिकहिसब
द॥ ताकोतजिकै॥ श्रानकहियेश्रौरवस्तुसुनिबेकीसोगाधिमील
ईहै॥ इसकोयहमतलबहै॥ किबासुरीकोसुननतीहै॥ नितमहीदि
नरातिवनकीश्रोरकाननिकोलगायेरहतिहै॥ उत्प्रेक्षाश्रलंकार
सषीकीउक्तिसषीसोंनाइकाकौहेतुलछितकीयोहैसरतिश्रभि
लाषसंचारीकोइकअनुभाउतेरवानुरागमागिनाइकापरकीया
श्रहयाश्रभिलाषदसानाकोंप्राप्तभयोहै॥ तोतैलालसांदसाक
हियेश्रहनाइकाहैलालसमतीकहियेउप्रेलालंकारलंकारहेउ
महकीजतिसंभावना॰॥ ७७॥ मूलदोहा॥ श्रटकीमटकनिपीतपटः
चटकलटकनीचाल॥ चलचषचितवनिचोरिचितःलियोबिहा॰
रीलाल॥ इहनाइकाश्राछोहैनाइकीसोभादेषिकैमोहितभईहैसोश्र
पनेचित्तकीवृतिसषीसोंकहतिहै॥ कवित्त॥ कहीयेकोतोकहै॰
रीपकबातकाहूकिवातिपहीतुनिवातिकेमांकाहूइनहैगायो॥ सा
मैरीसलैनोनतनुसुंदरवदनसोभादसनविलोकिनश्रैसोमउ
नैगयो॥ चलनकोलटकनिपीतपटचटकनिमोहनकोपटक
निचटकसोंकैगयो॥ चपलचषनिचहचहीचितवनिचाहिश्रली

री बिहारीलाल चोरि चित्त लै गयौ ॥ टीका ॥ नाइका कौ वचन सषी
प्रती ॥ मकुटी कहियें मोर है ॥ तिनकौ मटकनि कहियें चलाउनौ
ता सौं अरु पीत पट कहियें पियरो कपरा पेधिकै ॥ चटक कहि
यें सोभा ॥ सो लटकनि कहियें लचिकै चालिबो कहियें चलनौ ॥
ता सौं अरु चंचल जे नेत्र तिनकौ चितवनि कहियें देषनौ ॥ ता
सौं बिहारीलाल कहियें श्रीकृस्न ॥ तिन मेरौ चित्त चोरि लयौ ॥
इसकौ यह मतलब है ॥ कि मेरौ मन वस करौ है ॥ स्वभावोक्ति अ
लंकार ॥ उक्ति परकीया नाइका की सषी प्रति वा सौं हूं तनक करायौ
चाहति है अरु वचन अरु भाउ तें पूर्वानुराग व्यंगि गुन कथन द
सा ॥ स्वभावोक्ति अलंकार ॥ जाकौ जैसो रूप गुन ॥ वरनत ताही
रीति ता सौं जानत स्वभाव कवि भाषत है करि प्रीति ॥ ७८ ॥ मूल:
दोहा ॥ दृग उरझत टूटत कुटुंम: जुरति चतुर चित प्रीति ॥ परति
गांठि दुरजन हियें: दई नई यह रीति ॥ यह असंगति वरनत हष्ट अनुराग
नाइक अथवा नाइका कौ वचन सषी सौं ॥ सवैया ॥ लागी रहै मन मैं
रिष साध रई यह रीति नई दुरुघानौ ॥ लोचन पीतम कौ छवि सौं उ
रकै सब छूटै कुटुंब कौ नातौ ॥ कुसल कहै अति चोंप के चाइ जुरै हिय
को हित होत न हातौ ॥ वैरिन के उर मैं परै गांठि अनोषो निहारौ सो
सनेह कौ नातौ ॥ टीका ॥ नाइका कौ वचन सषी प्रती ॥ मेरे नेत्र उर
झत है अरु कुटुंम टूटत है ॥ इसकौ यह मतलब है ॥ कि घर के लो
गन सौं बुरा कहत हैं ॥ चतुर कहियें नाइक ता के चित मैं प्रीति जु
रति है ॥ अथवा चतुर कहियें प्रवीन ॥ जो मेरौ चित्त ता मैं प्रीति जुर
ति है ॥ दुरजन कहियें सौति ॥ तिन के हिये मैं गांठि परति है ॥ जह
रीति नई दई है ॥ अथवा दई दुष वाची पद जानियें ॥ जह रीति नई
है ॥ असंगति अलंकार ॥ परकीया नाइका की उक्ति वचन अन्त

भाव वितर्क संचारी तें र्स्वानु रागा ध्वनि॥ असंगति अलंकार॥ कारन ओ
रैं ठौरहै काजि औरैं ठौर॥ भेद असंगति को प्रथम भाषत कवि सिरमोर॥
१५॥ मूलदोहा॥ लाज गहौ बेकाज कत घेरि रहे घर जाहि॥ गोरस
चाहत फिरत हौ गोरस चाहत नाहि॥ यह दानलीला वर्नन जानौ ॥
कवित्त॥ लाज कौन गहौ बिन काज मग घेरि रहे काहे इतराइ बोल क
हत अनैसे हो॥ गोरस न चाहत हौ गोरस को चाहत हौ कहै कहाव
त हम काहू तुम जैसे हो॥ हम प्रान प्यारे ब्रजबिहित निहारो गुनमाध
न के चोरि बिकोगरही मैं पसे हो॥ अब इहु बन ऐसे चलन चलावत हो
मोहै लषि हम न लसन मनु लैसे हो॥ टीका॥ नाइका को वचन नाइ
क प्रती॥ तुम लाज को गहौ कहिये पकरो॥ बेकाज कहिए वृथा॥ कत
कहिये क्यो घेरि रहे हो॥ हम घर जाहि॥ इस को यह मतलब है॥ कि हम को
घर जान देहु॥ तुम गो कहिये इंद्रिय॥ तिन को रस चाहत फिरत हौ॥ गोर
स कहियें दही इध ता को तुम नहीं चाहत हौ॥ जमक अलंकार॥ ८०॥

मूलदोहा॥ चलत देहि घर घर घरन ऊः चरी न घर ठहराई॥ समझि उही घर
कौ चलै ः भूलि उही घर जाइ॥ इहतनाइका को प्रोढा परकीया है॥ जहां चित्त
ग्यो है जहां जाति है सषी सषी सौं कहति है॥ सवैया॥ बालि बिधी रसकै च
सकै बसकै न सकै मन को समझावै॥ दौलत है न चाहे तन ऊधर एक ठ
मैं रहि बौन हि भावै॥ रैन दिना कलकानी फिरैन कहूं कुलकाफल षैवि
न पावै॥ जानि चलै तो उही घर आवु तिभूलि परै तो उही घर जावै॥ टीका
सषी को बचन सषी प्रती॥ घरहु कहिये निदा सो घर घर विषे चलति है॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

इसकोयहमनुलवहै॥ किसबकोईनिंदाकरतहै॥ नहुकहियेंनघा
पिनाइकाचरीभरियुरमेंनहीठहरातिहै॥ समझिकेउसचरकोच
लतिहै॥ औरमलिवेकुउसचरजातिहै॥ विशेषोक्तिअलंकार॥ उक्ति
सषीकोसषीसोंपरकीयानाइकाकोप्रेमलछिनकीयोहै॥ अरु॥१
नाइकाकेहायाअनुभावतेंमोहसंचारीतेंहवानुरागव्यंगिविशे
षोक्तिअलंकार॥ सवकारनकाजनसरे॥ उक्तिविशेषसहीयेधरे॥१
८१॥ मूलदोहा॥ जकनदरैनिदनापरैःहरैनकालविपाक॥ छिनछा
केउछकेनफिरिःषरोविसमछविछाक॥ इहनेअलगनिकैसो
नाइकाअपवानु...सषीसोंकहेहै किछविकोछाकुषरोविषमन
वनेनकरेहै॥ कवित्त॥ सुधिकोनधरैनीदनेमकोनपरैमहाभयनेन
टरैसुषनिकरैनवाकुहै॥ कहुकविहुलसबोहुएकबेरछकेसुनो
उछकैननेकोनममेकोपरिपाकुहै॥ सौंहालागेबुरीनिसदिननरफ
रैपलकनिगतिहरैधरेकाहूकोनधाकुहै॥ औरमनवारितेंतूमेरेन
नवारेयहसवहींतेंविकटविषमछविछाकुहै॥ टीका॥ सषीकोवच
नसषीसों॥ ज्वरनाइकाकोदरतुनहीहै॥ औरुनाइकाकोनीदनहीप
रतिहै॥ औरकालकोविपाककहियेंसमय॥ सोनाइकाकोहरतुनही
है॥ छिनमात्रनाइकाकोछविकोजोछाक॥ सोनाइकाकोउछकेकहि
येंहरिनहिहोतुहै॥ तातेंछविकोछाकषरोविषमहै॥ व्यतिरेकाअ
लंकार॥ जोनाइकाकीउक्तिहोइतोवचनअनुभावतेंमतिसंचारीतें
हवानुरागव्यंगिजोसषीकीउक्तिनाइकप्रतिहोइ॥ तोनाइकाकोवि
रहनिवेदनअरुनाइकाकेसरतिदसाव्यंगिअरुनाइकतोदोऊउ
क्तिमेंपरकीयाजानिये॥ व्यतिरेकालंकार॥ जानिपरैउपमानतें॥१
जिहांअधिकउपमेयनहभावतेंव्यतिरेकहैकविपंडितआधेय॥८२
मूलदोहा॥ झमकिचढतिउतरतिअटाःनेकुनथाकतिदेह॥ भईरह
तिनटकोवटाःअटकीनागरनेह॥ इहनाइकाप्रौढानाइककीसोभा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

देषिग्रामक्रिभईस्हदेषिवेकोचहतिउनारनिहैस्हयाकीषिवस्यासषी
सषीसेंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ काहूरकोवनकवि— विकैषिवानीचाल
नादिननैंदेषिवेकोजतनकरतिहै ॥ स्हरभिचराइब्रजआइवेकीव
रजानिरसबसह्वैनिस्वकामविसरानिहै ॥ सांकगुरुजनकीनि
सांकहैनठाढीरहैछिनइनछिनउतियाविथरतिहै ॥ नटकेवरा
जैसेंनटनागरकेनेहपागीहचेअटाउमगिचहतिउतरतिहै ॥ टीका ॥
सषीकोवचनसषीप्रती ॥ नाइकाकमकिकैंअटाकेऊपरचहति
है ॥ नागरकहियेंचतुरनाइक ॥ ताकेनेहकहियेंप्रीति ॥ तामैंअ
टकीजोनाइका ॥ सोनटकोवटाभईहैरहतिहै ॥ [illegible]अलं
कार ॥ उक्तिसषीकीसषीसेंपरकीयानाइका ॥ वेहृयाअनुभाव ॥ च
पलतासंचारीतेंपूर्वानुरागगंम्रितिविरोधाक्तिरूपकाअलंकार ॥ उ
पमानउपमेयमैं ॥ भेदपरेनलषाइ ॥ तामैंरूपककहतुहै ॥ मूल
दोहा ॥ लोभलगेहरिरूपकैंकरीसांटिजुरिजाइ ॥ हौंइनवेचीबीचही
लोइनवडीवलाइ ॥ उक्तनाइकापरकीयाप्रौढानाइकसौंनेत्रम्
क्रिभयेहैसोसषीसेंकहतिहै ॥ सवैया ॥ नंदकिसोरकीमोहनीमूर
तिदेषतहीअतिमोमनभाई ॥ लोलगलोभलगेउतजाइकेनैनमिले
मिलसांटमिलाई ॥ आपनोस्वारथसाधोसभेविधिहौंइनवीचही
वेचिरीमाई ॥ कैसीकरौंनकछूवनिआवतनैननकेमतमैंठगाई ॥
टीका ॥ नाइकाकोवचनसषीप्रती ॥ हरीकहियेंश्रीकृष्णताकेलो
भलागेजेमेरेनेत्रतिनजुरिकै ॥ सांटीकहियेंसोदासोकरिकै ॥ इनने
त्रनिहौंवीचहीविचि ॥ तातेंनेत्रवडीवलाइहै ॥ समासोक्तिअलंकार ॥
उक्तिपरकीयानाइकाकीसषीसोंवचनअनुभावतेंपूर्वानुरागगंम्रि
समासोक्तिअलंकारहै ॥ जहंअप्रस्तुतप्रस्तुतहै ॥ प्रस्तुतवर्ननमां
हि ॥ समासोक्तितासेंकहतदेषोग्रंथनमांहि ॥ २४ ॥ मूलदोहा ॥ न

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ई लागन कुल की सकुच: विकल भई अकुलाइ ॥ उहु ओरै यैं चौपि
रै: फिरकी लौं दिन जाइ ॥ इहां नाइका मध्या लाज काम सम मानी है प
रकीया काहू यै तैं काहू होये ॥ नई लगन कुल की सकुच या पद तैं म
ध्या सखी सौं कहति है ॥ कवित्त ॥ नई लगी लगन रस कमन मोहन
सौं उर अभिलाषन कौ उमग भरति है ॥ कुल को सकार की सकुचति
अैसी री हौं नितप्रति हौं विकल जिय कलन धरति है ॥ देषवे को हर
ति हरति मन हौं मन मैं मरति उसासपै प्रकासन करति है ॥ चाह औ
कुल कानि बीच फिरकी लौं बाल वधू उत इत अैचि अैचि फिरि वो
करति है ॥ टीका ॥ सषी कौ वचन सषी सौं ॥ नई कहियें नवीन लग
नि है ॥ औरु कुल की सकुच कहियें लाज है ॥ इस तैं अकुलाइ कें
विकल कहियें विह्वल भई है ॥ सो नाइका प्रीति औरु कुल लाज ॥
इन दोउ की नरफ ॥ फिरकी ल्लौ यैं चौपि रन दिन बीतत है ॥ उपमा
अलंकार ॥ सषी कौ उक्ति नाइका प्रति है ॥ इनो नाइका कौ विरह नि
वेदन हू तन अंगि जो सषी सौं कहति है ॥ तौ प्रथम ही वाकौ प्रेम
लछिन कीयो है ॥ अरु परकीया नाइका कौ हीया अनुभावतैं व
पालाल साप चपलता उदवेग सैं वारी तैं पूर्वानुराग व्यंगि उपमा
लंकार ॥ उपमान रु उपमेय साधारन वाचक होइ ॥ एचारयौं पद
पूजिहां परन उपमा सोइ ॥ ८५ ॥ मूलदोहा ॥ इत तैं उत उत तैं इतै:
छिनु न कहूं ठहराति ॥ जक न परै चकरी भई: फिरि आवति फिरि
जाति ॥ इहां नाइका मध्या परकीया है स्वयां की विवस्था सषी सषी
सौं कहति है ॥ जो सषी नाइका सौं कहै नहू संभवै है ॥ सवैया ॥ जब तैं
अस्को न बनाग रिसौं न वतैं न कहूं मन लागति है ॥ ठहराति न हौं
छिन एक कहूं निसि वासर ज्यौं बहरावति है ॥ कबहूं उत तैं इत धाव
ति है कबहूं उन वैंइत आवति है ॥ चकरी जिमि आवति जाति व रूप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लकौंन कहूं कलपावतिहै ॥टीका॥ सषीको वचन सषी प्रती ॥ इहां
ते उहां उहां ते इहां फिरतिहै छिनमात्र कहूं नहीं ठहरातिहै ॥ सोना॰
इकाकी जकक हियें त्र्जी ॥ सोन होजातिहै ॥ नाइका चकई भई फि
रझ्यावतिहै फिरिजातिहै ॥रूपकातिसयोक्तिअलंकार॥ सषीकी
उक्ति नाइकप्रतिहै ॥ इहां नाइकाको विरह निवेदन है तनत्र्यंगि जो स
षीसां कहतिहै तो प्रथम हीं वाको प्रेम लछिनकीयोहै ॥ अरूपर॰
कीया ॥ नाइकाकें हृया अनुभाव तें लाल सा चपलता उदवेगा सं
चारी तें पूर्वानुराग व्यंगि रूपकातिसयोक्ति॰ ॥ उपमेय उपमान॰
तें जानिलेति ज्ञि फिठौर ॥ अतिसयोक्ति रूपक यहै भाषत कवि॰
सिरमोर ॥८६॥ मूलदोहा ॥ नजीसंक सकुचति नचित नःबोलति॰
वाकुकुवाक ॥ दिनछिन राजाकी रहतिः छुटत न छिन छविछा॰
क ॥ इहं नाइकाको अपनी छविको गर्वहै सो सषी सषीसों कहतिहै ॥
मदनमो नाइककी छविकी कहीपेनालछिनाहे घा ॥ सवैया ॥
कछ्हरकति वात न हिउतउदे तिन लाइटकी अनि मेषतहै ॥ अरकावि
वौरैन अलीगनकौ मनजिलाजगरोषतिहैं उंतकें ॥ सर्व संकुतजी सकु
चेन हियें महदत्र्यावै हुवाकु उवाकु वकें ॥ रहै रैनि दिना वृषभानसु॰
ता छविछाक छकी नछिनो उछकें ॥टीका॥ सषीको वचन सषी प्र
ती ॥ संक कहियें भय सो नजैसो ॥ और चितमें सकोच नहीं करतिहै
वाकबुवाक कहे उर वचन बोलतिहै ॥ नाइका दिनराति छविकी रह
तिहै ॥ छविको छाक कहे विषमहै ॥व्यतिरेकाअलंकार॥ सषीसं॰
षीसों अथवा नाइकसों नाइकाको विरह निवेदन करतिहै ॥ प्रलाप
उनमाद दसातें पूर्वानुराग परकीया नाइकाको व्यंगि ॥ व्यतिरेकाले
कार ॥ जानिपरै उपमानतें जहां अधिक उपमेय ॥ नहभाषतिव्यति

130

विहा॰
२३॰

रेकहै॥ कविपंडितन्प्रायेय॥ ८७ ॥ मूलदोहा॥ ढरोहारत्यौंहीढरैंर
नैहाररहैरैन॥ कैयोंहूंआननआनसौंनैनालागतहैन॥ इहांनाइकअप
नेनेंचनकीआसक्तिकहतुहै॥ अरुनाइकाकेभ्रमहैकिनाइक
औरसोंआसक्तिहैसोनाइकनाइकाकोभ्रमदूरिकरतुहै॥ ज्ञाना
इकानाइकसोंकहैतोउपाहुनोसंभवै॥ सवैया॥ औरनैंबानिपरी
रूपरीनटरेवहकोटिउपाइकीयेहूं॥ कूलकहैजिनवीजरचेनित
नैनलचेनकहूंललचेहूं॥ त्यौंहीहरैजिहिहाररहैरैनफिरैसबिहाररहै
रैसपनेहूं॥ आनकीयेंकहूंआननआनसौंनैंइनैकनलागतए
वैयोंहूं॥ टीका॥ जाहारसोंहरेहैताहीहारमेरेनेत्रढरतकेहैचलत
है॥ इसरेहारनहींचलतहै॥ इसकौंयहमतलबहै॥ किमेरेनेत्रज
हांलगेहै॥ तहांतेटरतननहींहै॥ वेचाहूंकाहियेकेसेहूं॥ आनकहैअ
ठिरआनजोमुषमासोनहींलागतहै॥ [illegible]॥ सषीसषी
सौंअथयानाइकसोंनाइकाकोविरहनिवेदनकरतीहै अलाय
मनस्वमानैंबेवोनुसामपरकोयानाइकाकोबांसि॥ बानिसेकालेका
र जानिवेरउपमाननतेंजहांअधिकउपमेयनहभाषति॥ वरको
यानाइकोसषीप्रतिउत्तरएवोनुरागवचनअनुभावतेंबांगिम
बीकैंसोत्रामतिनावधनिहैछेकानुप्रासहैउत्तरालंकारकोसं
सृष्टिहै॥ जहांवीचपददेपरेअवरसमनताआइ॥ तहछेकानुप्रास
हैकहतसकविसमुदाय॥ उत्तरदेवैजहांप्रसोपवनुलषाइ॥ प्र
मोत्तरकोप्रथमयहभेदकहतकविराज॥ ८८ ॥ मूलदोहा॥ वकी
जकीसीकुंवरहोःदूजेवालनिनीठि॥ कहूंडीठिलामीलगीःवैका
हूकीडीठि॥ इहनाइकाकीअवस्थासषीसषीसोंनिवेदनकरतिहै॥
सवैया॥ जाननकोयहआजभईगतिश्रीवृषभानसुताअकुलानी

बूझनउत्तरदेतिनहीकरहीबहुतेंउपचारनिदानी ॥ चहूंनहोइरही॰ काहूयोंकविरहसुकहैमनमेंसरमानी ॥ काहूकोदृष्टलगीजुनिहैकि तोकाहूकेदेषवेकोसरसानी ॥ टीका ॥ सषीकोवचनसषीप्रती ॥ ना इकाचुकीचकीसीकहियेंटकटकीसीलगाइरहीहै ॥ बूझेतेंनीठिक हियेंबड़ेकष्टसोंबोलतिहै ॥ सोकहूनाइकाकोडीठिलगीहै ॥ कैऔर काहूकोदृष्टिनाइकाकोलगीहै ॥ संदेहाअलंकार ॥ उक्तिसषीकीनाइ कासोंअथवासषीसोंअथवाविनकेंपरकीयानाइकाकेंसरतिदसा तेंचिंतासंचारीतेंआकृतिअनभावतेंरवानुरागव्यंग्यसंदेहालंकार ॥ लोनजहांसंदेहजहसोसंदेहवषानि ॥ मूलदोहा ॥ पियकेध्यानगहो गही॰ रहीवहीह्वैनारि ॥ आपुआपुहीआरसी॰ लषिरीझतिरिझवारि ॥ इहनाइकाकोकीलागननन्मयतासषीकोवचसषीसों ॥ सवैया ॥ नेहलगेपीय नभावनसोंउहितोंअगाईइहूवानिनईहै ॥ ध्यानहीध्यानमेंआजकहूबृ षभानसुतामईकाहिमईहै ॥ आरसीमेंलषिआपुनोमूरतिआपुही॰ रीझनिहालमईहै ॥ रसनप्रेमकोजोतिनगीवरआनिसवेसुधिभूलि॰ गईहै ॥ टीका ॥ सषीकोवचनसषीप्रती ॥ नाईकहियेंनाइकासोंपिय केध्यानकोगाहिगाहिकरहैलेलेके ॥ वहीकहैनाइकाहूहैरही ॥ सोनाइ॰ कारिझवारकहियेरीझनवारीसो ॥ आपुआरसीकोलषिकेआपुही॰ रीझतिहै ॥ तद्गुनाअलंकार ॥ उक्तिसषीसोंसषी ॥ परकीयानाइकासर तिदसातेंरवानुरागव्यंगि ॥ तद्गुणलंकारनिजगुणकोंतजिवसंज हसगीकोगुनलेइ ॥ अलंकारतद्गुनतहांनिरषतकविकहिदेइ ॥ ५॰ ॥ मूलदोहा ॥ ह्यांतेंह्वांह्वांतेंइहां॰ नेकौधरतिनधीर ॥ निसदिनडाढीसी फिरत॰ वाढीगाढीपीर ॥ इहनाइकाकोचित्तमेंलगनिलगीहैसोयाकोम नुवाहूकलपावतनाहीयाकीदसासषीसषीसोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ सोभामनमोहनकोपरमरसालचित्तचुभीब्रजबालिकेनछिनविसरे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

131

बिह·
२३१

काहू॥ बरसतहै जलनरसतऊ गदेषिवेको कहो कैसी लगनि उरापतैं
उरैकहू॥ घरनैबगारत्र्प्रावैवगारनै घरधावैफिरै सौंविकलपलकन
लहैकहू॥ वाहीमनमथपीरनैसकोनधरैधीरजाढौसीफिरतिठाही
छिननरहैकहू॥ टीका॥ सषीकोबचनसषीसती॥ वाहीजोहैगा
ढीपीर॥ तासोनाइकादिनरातिइहानैउहातैइहाडाढीसीकहियै
जरीसीफिरतहै॥ सोनाइकानेकुधीरकहियैधीरज॥ ताकोनेकुकै
हेननकनहूंधरतीहै॥ उत्प्रेक्षाअलंकार॥ उक्तिसषीकोसषीसोंप्र
षवानाइकसोंविरहनिवेदननाइकापरकीया॥ उदवेगचपलता
संचारीक्रयाअनुभावतेंपूर्वानुरागव्यंगि॥ उत्प्रेक्षालंकार॥ जहकी
जनिसंभावना॥ [illegible] उरउरझ्यौचितचोरसोंगुरगुरुजनकीलाज॥
चढेहीडोरैमेरहीकियेंबनेगुरुकाज॥ [illegible]
[illegible]॥ नेहकिसोरकेचपलभ्योवितयेयोंउ
रजोसमकरैनहीमोरै॥ संकहीयेंगुरलोगनकोगुरुकाजकोप्र
मिलाजनिहोरै॥ मैनमहूरतनसोंमूरछातिकछूनबसातिकसीवि
वश्रारै॥ बामगलोचनिकोदिनहुतेंचढेगचितवाहविचारकहि
डोरै॥ टीका॥ नाइकाकोबचनसषीसती॥ मेरोउरकहियेंहियो॥
सोचितचोरकहियेंनाइक॥ तासोंउरझ्योहै॥ गुरुजनकहियेंबडे
बडेलोग॥ तिनकीगुरुकहियेंभारीलाजहै॥ सोमेंहिंडोरोसोंजो
क्रियातापचढीहै॥ सोघरकोकाजकौरबनतुहै॥ उत्प्रेक्षाअलंकार
परकीयानाइकाकेहेतलछितकीयाहै सषीनेसोंसषीसोंकहति
हैयाअवहिथ्यासंकाचारीतेंपूर्वानुरागव्यंगित्रपाश्रोत्सुक्यभाव
कोसंधिउत्प्रेक्षालंकार॥ जहकीजतिसंभावना॥ ५२ ॥ [illegible]
उरलीनीअतिचटपटीःसुनिमुरलीधुनिधाई॥ हौनिकसीडुलल
सीसुतोःगोडुलसींहियलाई॥ यहमुरलीसुनिसबकामसेघाइ

हलसिनिकसीवहनहीदोष्योनवजोकछन्नवस्याभईहै॥सोसवैमेः कट
निहै॥सवैया॥भौनकेकौनमैंबैठीहुतीहांकाहूअहकाजकेसाजपगी
री॥ वावककाऊकहीनवहीसुरलीधुनकाननआनिषगीरी॥ हैल
षिवेकोउछाहभरीनिकसीवहडीठिपरेंनटगीरी॥ नैननकोअरु
काननकोमनवौनवेनतलावेलीलगीरी॥टीका॥ नाइकाकोवचन
सषीप्रती॥ वांसुरीकीधुनिकानानिकैमेरेउरमैचटपटीकहियेंदेष
नेकीचाहनासोलइ॥ हौंदुलसीकहियेंदेषीहोंकेनिकसी॥ सोनाइ
कुसोकोहलसीलाइगयो॥विषमउनमेलहास्यलंकार॥उक्तिनाइकाकी
सषीप्रतिवासोंहूतनवकरायोवाहतिहवचनअनभावतेंहवोनुराग
वागिइनीवर्जितपरकोयाजानिये॥ विषमाउनमेलताकीसंसृष्टि॥ या
ठौरअसामर्थ्यदूषनहै॥ आनंदकेकारननेंजहकारजआनंदगहैजा
इ॥ उद्यमकौजेभलोजानिवौ॥ नातैहोइबुरोपालआइ॥ अनमिलते
कोसंगहोइ॥ वहजानिलीजीयोचित्रचलाइ॥ अलंकारयहविषम
तीनसवकोंदीनासमझाइ॥ धरैजोज्ञपदजाकेअरथनहीनताकेसक्ति
सोअसमर्थज्ञहोतहै॥ प्रगटतनहीअसक्ति॥ ४३ ॥मूलदोहा॥ नवनव
होनिदिषादिषीअमीभईइकआक॥ लगीनिरीछोडीठिअबःहैवि
छिनकोडांक॥

टीका॥ नाइकोवचनसषीप्रती॥ नवनवमेरीनाइकाकेसाथदेषादेषी
होतिहै॥ एकआकआककहियेंनिहचेकैअमृतभयो॥ इमकोयहमनल
वहै॥ कि नाइककोदेषनोअमृतवरोवरीभयो॥ इसकोयहमनलव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

132
विह॰
१३२

है॥ कि नाइकमोकोप्रेमसौनहीदेषतुहै॥ तातैंदुषदाईभयौ॥पर्जा
योक्तिअलंकार॥ उक्ति नाइकाकौसषीप्रतिवचनअनभावतें॥ उहै
मदसातेंपूर्वानुरागअंगिपरकीयाहूमीवर्जितहै॥ पर्यायअलं
कार॥ द्वैपर्यायअनेककोक्रमतेंआश्रयएकफिरिक्रमतेंजहरूप
वकोंआश्रयहोतअनेक॥ ९४॥मूलदोहा॥ लालतिहारेरूपकी:
कहौरीतियहकौन॥ जासौलागतपलकपल:लागतपलकपलौ
न॥ इहनाइकाकीअंषष्यासषीनाइकसोंकहतिहै किअवतेंतुमदेषे
होतबतेवाकेपलकहूनहिलागत॥ नाइकानाइकसोंकहैतेंहूंसेंभवे
सवैया॥ वारकदेषेसुधौतनहै दिषसाधलगेजूलकानिभगै॥ मो
हनीरीतिकछूमनमोहनबावरीरूपकीयोउमगै॥ कौनठगोरीलं
ईकितकाकरमेंनवसीकरमंत्रपगै॥ जाकीकहूंपलकलगेपलना
कोपलौपलकैनलगै॥ टीका॥ सषीकोवचनअथवानाइकाको
वचननाइकप्रती॥ लालसंबोधनहै॥ तुम्हारेरूपकीयहकौन
सीरीतिहै॥ सोतुमकहौ॥ तुमारोरूपजाकेपलकनसौपलकैकहि
यैछुनभरिलागतुहै॥ ताकेपलकपलभरिनहींलागतहै॥ विरो
धाभासअलंकार॥ जोसषीकीउक्तिनाइकप्रतिहोइतौपरकीया
नाइकाकोविरहनिवेदनजानियेपूर्वानुरागहै॥ अथविरोधाभास
अलंकार॥ जिहिंथलसहुविरोधहै॥ अर्थनमाहनविरोध॥ सहुविर
रोधाभासकहि॥ जोहीयेप्रतिबोध॥ ९५॥मूलदोहा॥ वसिसकोच
दसबदनबस:सांचुदिषावतिबाल॥ सियजेंपासौधतितियनहौ:ल
गनिअगनिकीज्वाल॥ इहनाइकाकेलगनिकेलगेतेंसनेहकीअधि
काईहैयातेंअगनभईहैसुयाकीदसासषीनाइकासौंकहतिहै॥ कवित
जादिनतेंलग्यौनवनेहमनभावनसौंतादिनतेंमेनकौमहूरति
मरतिहै॥ त्रासमगरलोगनिकेसासनसकतिभरिएकआसलागी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निसवासरभरतिहै ॥ वृषनिसकोचंदसवदनकेवसयातेंकछुनवसा
निध्यानपतिकोधरतिहै ॥ लगनिकीज्वालनिजदेहीकोस्यालैसो
सीतलवृहसोधनकरतिहै ॥ टीका ॥ सषीकोवचननाइकप्रती ॥ कै
सषीप्रती ॥ अथवानाइकाप्रती ॥ सकोचककहियेलाजसोईभयोद
सवदनकहियेरावन ॥ ताकेवसमेंवसिकै ॥ बालकहियेनाइका ॥ सो
अपनोसाचुटिवावतिहै ॥ सोनाइकासियजोकहियेंसीता ॥ ताकेस
मान ॥ अमनैननकहियैंदेह ॥ ताकोलगनिकहियेनाइकसोप्रीति ॥
सोईभईअग्निकीज्वालातामेंसोधनिकहियेंसुद्धकरतिहै ॥ इसकोप
हरुनलवहै ॥ जिनैसेंसीतारावनकेघरवसिकै ॥ अपनीदेहआगिमें
सोधी ॥ तैसेंनाइकानुरागीनगनिमेंदेहकोसोधतिहै ॥ रूपकमाल
लंकार ॥ इतीकीउक्तिनाइकप्रतिपरकीयाकोविरहनिवेदनवर्वानुरा
गलाजसंचारीहैरूपमाछेकानुप्रासकोसंसरष्टिहै ॥ उपमाअरुउपमे
यसाधारनवाचकहोइएचारोंपाइए जिहांपरनउपमासोइ ॥ जहां
वीचपददैपरैअछरसमताआइनहछेकानुप्रासहै ॥ कहुतसुकविस
मुदाय ॥ २८ ॥ मूलदोहा ॥ होमतिसुषककरिकामनानुसहि मिलन
कीलाल ॥ ज्वालमुषीसीजरतिलषिलगनिअगनिकीज्वाल ॥ सुक
नाइकाकेलगनिकीज्वालकीअधिकाईसोंसषीनाइकसोंकहतिहै ॥ कवि
त्त ॥ कहप्रानप्यारेलालजवहीतेंलगनिभईतवतेंप्यारीपलकलगन
धरतिहैं ॥ ससकिससकिअतिदीरघउसासलेलैतिलपितलछिनछि
नुद्धिविसरतिहै ॥ विरहहुतासनकीनिरषिप्रचंडज्वालनिकचेके
होमैंज्वालमुषीकोधरतिहै ॥ मिलिवेकीकामनाकहियेमैंकरिइंदनु
षीअवसवसुषनकोहोमसोकरतिहै ॥ टीका ॥ सषिकोवचनना
यकप्रती ॥ लालसंवोधनहै ॥ तुम्हारेमिलिवेकीकामनाकरिकै ॥
सुषनिकोहोमकरतिहैसोनायकानुरागीजोलगनि ॥ सोईभईअ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गनिज्वालानासौंज्वालासषीकेसमाजरातिहै॥ सोलषमलषि
कहियेदेषो॥ उपमाविचित्ररूपकालंकार॥ दूतीकीउक्तिनाइकप्र
तिपरकीयानाइकाकोविरहनिवेदनपूर्वानुरागविचित्रालंका
र॥ अरुउपमारूपककेसंकरकीसंसृष्टि॥ उपमानरुउपमेयमैंभे
दुपरैनलषाइ॥ ताकोंरूपककहतहैं॥ ४०॥ मूलदोहा॥ ताकी
जतनअनेककरिनेकुनछाडतिगेल॥ करीषरीतुवरीसुलगिहेरी
चाहचुरैल॥ दूतनाइकाकीलगनिसषीकोवचननाइकसें॥ सवैया॥
पमरिवमैंनिभाइगईहियमैंधसिग्राननुमांहुबसीहै॥ हेंकुरिया
कीउपाइसवैहरिमंत्रनिहूंकीप्रभानडसीहै॥ देहसुधाइकरीतुव
रीइरीबावुरीज्यौंसभवुद्धिभगीहै॥ पइनताकीनछाडतिगेलचुरे
लहुरावरीचाहलगीहै॥ टीका॥ सषिकोवचननाइकप्रति॥ हम
अनेकजतनकहिपेउपाइ॥ ताकोकरिकेथकी॥ नअनेकोगेलकहि
येराह॥ ताकोंछाडतिनहीहै॥ सोतेरीजोचाहसोइसइचुरेलकहि
येंभूतनी॥ ताँनेलगिकेनाइकाषरीतुवरीकरीहै॥ रूपकालंकार
उक्तिदूतीकीनाइकप्रतिपरकीयानाइकाकोविरहनिवेदनपूर्वा
नुराग॥ रूपकालंकार॥ उपमानरुउपमेयमैंभेदपरैनलषाइता
सोंरूपककहतुहैं॥ उपमानरुउपमेयमैं॥ ४८॥ मूलदोहा॥ सनि
कज्जलचषझषलगनउपज्योसुदिनसनेह॥ क्योंननृपतिह्वैभो
गवैलहिसुदेससबदेह॥ दूतदूतीवाचहै नाइकाकेनेत्रअंजनस
हितदेषिनाइककेअनुरागउपज्योतासूंदूतीनाइकासेंकहतिहै
नाइकापरकीयानाइककहंसवीतिकहतेसंभवै॥ कवित्त॥ देषीप
कवनिताविचित्रवरताविकसोंजाकीदुहजाहिमगिरस्योगेअैसो
गहुहै॥ विहसिविहसिमरडेवालतिसरसवानीवरसतमानोअ
वृंदनकोमहुहै॥ कहतकविहकसमक्योंनभूपतिह्वैभोगकरैरजथा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

री सकल सुदेस पाइ देहु है ॥ नैन मीन लगन पै अंजन लसत स्मनि-
ऐसें स्यभ जोग समै उपज्यो जुनेहु है ॥ टीका ॥ सषि को वचन सषी
प्रति ॥ का जु कज्जो है सोई सनी सुधरेहु ॥ और चषु कहिये नेत्र ॥ तेई रू-
प लगन कैं है ॥ मीन लगन है ॥ तामें सनेह जो प्रीति सोई भलो-
दिन जन्म्यो है ॥ सो राजा है कै संवरन देह कहिये अंग सोई भयो देस
ता को पाइ कै भोग कोंन करै ॥ रूपकालंकार ॥ उक्ति सषी की नाइ-
का सों वा के वचन अनुभाउ सकंप गिहे ना तें रवीनु रागकंप गि उत्तरा-
लंकार रूपकालंकार की संसृष्टि ॥ ५५ ॥ मूल दोहा ॥ चितलल-
चौंहें चषनि कै डटि घूंघट पट माह ॥ छबि सौं चली छुवाइ कै छिन-
कु छबीली छांह ॥ यह नायका परकीया है चेष्टा को करणि है सो ना-
यक सषी सों कहत है ॥ कवित्त ॥ पंचन सुधा नीधी सें वदन दीषाइ क-
रि घुंघट कि ओट कि नीकहु चल आई कैं ॥ घुंघट के पट में हुती र घोन-
संक चीन वतिलल चोंहों चाह ची कनी जिताई कैं ॥ कहें कवि कुल मर-
हमल कि अलि किसोर चलि का हू छल सों छबि लिलों है छाई कें ॥ -
हारा वा ही को हि जाहि प तौ छवि सों हौं वहु मो हितें न रसनिरसौ छुरी-
र छाई के ॥ टीका ॥ नायक को वचन सषी प्रति ॥ अथवा सषा प्रति ॥ -
लालच भरे चितनसों चषकहिये नेत्र तिनकरिकें ॥ छबीली कहिये -
नायका ॥ सो घूंघट के कपरा में देषि कें छबि सों कहियें सोभा सो ॥ छि-
नमात्र अपनी छाया छुवाइ कें चली गई ॥ स्वभावोक्ति अलंकार ॥ उक्ति
नाइका कौ हू नी सकि सर्वानुरागक्रयावचन अनुभाव अभिलाष-
संचारी नाइका कृया वचन विदग्धा कें स्वभावोक्ति ० ॥ जाको जैसो
रूप गुन वरनन ताही रीति ॥ ता सों जानत सुभाव क विवरन न है कवि
प्रीति ॥ ५६ ॥ मूल दोहा ॥ ना सा मोरि नचाइ दृग करी कका की
सोंह ॥ कांटे सी कसकति हियें गडी कटीली भौंह ॥ यह नायका के

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हनचाइवेकीचेष्टादेषिनायकसषीसोंकहतुहै॥सवैया॥मोतिनहेरि।
येरोसिनिसोंवनरानिकबूवनिनारसङ्घाकी॥एकरतीरतिकीउतिहे
तिनिवाकिनिवाईलैषसमजाकी॥नाकचढाइउचायकैओठन
चायकरीहगसोहकवाकी॥वाहूविकीवेकरीलिसिभोंहकरेजे
मेसलसीसालनिवाकी॥टीका॥नायककीउक्तिसषीप्रति॥नाइका
नेंनासीकाकहियेनाक॥ताकोंमोरिकहियेमरोरिकैं॥हगकहियेने।
त्र॥तिनकोंनचाइकैं॥कवाकीसोंगंधिकरी॥नोंनायकाकीकटी।
लीकहियेटेढीजोभोंह॥सोमेरेहियेमेंगडिकैकांटेकेसमानकस
कतिकहियेषरकतिहै॥स्वभावोक्तिउपमालंकार॥उक्तिनाइककोसं।
चारीस्वरनिनाइकापरिकीयास्वभावोक्तिउपमालंकारकोसंसष्टि॥
उपमानरुउपमेयमैंभेदपरैनलषाइ॥तासोरूपककहतुहै॰॥१॥मू
लदोहा॥षोरिपनिचभ्रकुटीधनुषवधिकसमरतजिकानि॥हनत
तरुनमृगतिलकसरसुरकभालिभरिजोंनि॥यहनाइकाकुलटाल।
ताहसंगारहै॥सोसषीनाइकसोंकहतहैनाइकनाइकासोंकहैहै॥सवैया
जोचितभोहकमानलसैतिहिकोंजिहकेसरषोरिवनाई॥ताको
लेतीहकरोतिलवैरंगहितापरभालल्लगाई॥षेलतजोवनके
वनमैंरहिसाजसिंगारमनोजुअवाई॥हेरिहरैजुप्रवीनकुरंगनि
हीनदयाडरकेकठिनाई॥टीका॥नाइककोवचनसषीप्रती॥केस
षाप्रती॥षोरिजोहैसोईभयोपनिजरादे॥ओभ्रकुटीजोहैसोइभयो
धनुष॥तामैसमरकहियेकामदेव॥सोईभयोवधिककहैवहेलि
या॥तिलकजोहैसोईभयोसरकहियेवान॥सुरकजोहैसोईभ
ईभालि॥ताकोभरिकहलगाइकै॥तानिकहियेषैचिकै॥तरुन
जोहैज्वाननेईभएमृगाकहियेहरन॥तिनकोहननकहियेमारत
है॥सांगरूपकाअलंकार॥उक्तिनाइकाकोस्वरनिसंचारीपरकीया

नाइकासर्वांगरूपकालंकार ॥ २ ॥ मूलदोहा ॥ फिरिफिरिचितउ
नहीरहतु: टुटीलाजकीलाव ॥ अंगअंगछविझोरमैं: भयोभोरकी
नाव ॥ इहनाइकु.नाइकाके अंगअंगछविविषैजोहैसोअपनेचित्तकोअ
रुमिसषीसोंकहतुहै ॥ कवित्त ॥ जोवनुमहानदमैं रूपकोसलिलभ
र्योतरलतरंगहावभावनकोभाउहै ॥ अंगअंगछविकीउमंगझो
रभारीभोरचपलकटाछजहांफस्योमनुनाउहै ॥ चलनिसकतु
है भ्रमतुनरहैंवाहीठोरतनरकिनिनुकाजिमिटूटीलाजलाउहै ॥ (
लागतिनिवेंहूउलकानिकीविसालवलीधीरजसबलपत (
वारीकौनहराउहै ॥ टीका ॥ नाइककोवचनसषीप्रती ॥ फेरिफेरिमेरे
चितउहांतेंरहतुहै ॥ लाजकीलावकहियेरसरीसोटुटीहै ॥ ताको
अंगअंगकीजोछविताकोजोरकहियेसमूह ॥ तामैंमेराचितुभो
रकीनाउभयो ॥ इसकोयहमतलवहै ॥ किजेसैंरसाकेटूटेनाउभो
रमैंनतनहीनिकसतिहै ॥ तैसेंताकेअंगकीसोभामैंतेमेराचितुन (
हीनिकसतुहै ॥ रूपकालंकार ॥ परकीयानाइकाकीउक्तिअंतरवे (
र्तिनीसषीप्रतिताते पूर्वानुरागअरुस्मृतिसंचारीभावगर्भितरूपका (
लंकार ॥ उपमानअरुउपमेयमैंभेदपरैनलषाइ ॥ उपमानअरुउपमेय
मैं. नाहिंसरूपकहतहै ॥ ३ ॥ मूलदोहा ॥ हरिछविजलजवतैपरे: नव
नैछिनविछुरैन ॥ भरतढरतबूडततरत: रहटघरीलौंनैंन ॥ इहना
इकाअपनेनैनकीअवस्थासषीसोंकहतिहै ॥ कवित्त ॥ आजुगिरधौ
मैंव्रजराजकोउकवारकाहूजाकेअंगअंगअलीमनहिहरतहै ॥
तासमानप्यारेकोतुहाईयहऐसोदेख्योदेषकोविरतिपतिलाजन
भरतहै ॥ जाकीसोभासलिलमैंजवतैंनयनपरेतवतैंचरीलौंछि
नहूनविछुरतहैं ॥ ऐसैंभरनवहीकरतहैंअनेकभाइभरतढरतवू
निवडेतरतहै ॥ टीका ॥ नाइकाकोवचनसषीप्रती ॥ हरीकहियेश्री

135

बिहा॰
१३५

हास्य॥ ताकी छवि कहिये सोभा सोई भयो जल॥ तामैं जब तैं मेरो
नैन परे है॥ तब तैं छिन मात्र बिछुरत नहीं है॥ मेरे नैत्र भरत है॥ और
बूडत है॥ रहत कछुरी याके समान॥ उपमा रूपकालंकार॥ उक्ति
परकीया नाइका को अनुभाव स्मृति संचारी तैं पूर्वानुराग व्यंगि सो
सषीसों कहति है॥ तासों रूतन्व करायो चाहति है॥ उपमालंका
र॥ उपमान रु उपमेय मैं॥ ४ ॥मूलदोहा॥ रहि न सक्यौ कसु करि
रह्यौ बस करि लीनो मार॥ भेदि दुसार कियौ हियौ तन दुति भेदा
सार॥ इहां नाइका की तनदुति पै अपने मन की आसक्ति नाइक नाइका सौं
अथवा सषी सौं कहै॥ सवैया॥ राधिका रंग भरी को मनो विधि तीन हूं
लोक को रूप रियो ई॥ ताहि अली अवलोकत ही वियनै नन प्रेम
पियूष पियोई॥ जद्यपि के तौ रह्यो कसि कै धरि कै अति धीरज मैं रोहि
योई॥ जद्यपि वा तन की दुति भेदि दुसार तें भेदि दुसार कियोई॥ टी
का॥ नाइका को वचन अथवा नाइक को वचन सषी प्रती॥ मेरो हि
यो रहि न हि सक्यौ॥ कसु करि कहिये कष्ट करि रह्यौ मार कहिये
कामदेव तिसनें बस करि लयो॥ तन दुति कहिये देह की सोभा
सोई भयो भेदासार कहिये जवाहर॥ ताके भेदनें को वरमा जो तिसनें
मेरो हियो॥ दुसार कहिये उरार पार सो छिद्र कियो॥ बिभावनालंका
र॥ उक्ति दुव पति वै परकीया की असामर्थ्य रूपन विभावलंकार सम
मिश्रकार तैं जहां कारज प्रगट होइ॥ चौथो भेद विभावना को जानत
सबकोइ॥ धरयो जु पद जाके अरथ तहां न ताकै सक्ति सो असमर्थ जु है
तहि प्रगट मत तहां असक्ति॥ ५ ॥मूलदोहा॥ त्यों त्यों प्यासेई रहत ज्यों
ज्यों पियत अघाइ॥ सगुन सलोने रूप की जु न चष त्रिषा बुझा
ई॥ इहां नाइका के नेत्र लगे हैं सो सषी मषी सौं कहै॥ कवित्त॥ रहि मे
बबंदत्यौं चकोर है रहति जानि लोचन कमल गति भोरन की गत है॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

देषतहूंदेषनरहतदिषसाधलीकीहोनअनिमिषयौंसेषउमहतहै॥१
टेरेकाहूकसप्रानप्यारेकोसलोनोरूपमानोंनैनवुझतित्रषाकुलन१
लहतहै॥ रूपतिनहोनतैंपाहूमाईरीनैनमेरेपियतअघाइमोंनैंयोंप्यासे
ईरहतहै॥टीका॥नाइकाकोवचनसषीप्रती॥ जैसेजैसेअघाइकरि
येइछाभरिकेपियुतहै॥ तैसेतैसेप्यासेईरहतहै॥ सलौनेरूपकोसगु
नहै॥जोचषककरियेनेत्र॥ त्रिषाकरियेप्यास॥ सोवुझतिनहीहै॥विभा
वनाअलंकार॥उक्तिपरकीयानाइकाकी॥अथवानाइककीवचनअनु
भावतेवितर्कसंचारीतैपूर्वानुरागव्यंगिहै॥ विषेषोक्तिश्लेषकोसंकर
सवकारनकालजनसरै॥उक्तिविषेषहलीयेधरैंएकप्राह्नकेअर्थजह
भासतआइअनेकसहश्लेषसंकरहतहै॥ जितकेबुद्धिविवेक॥द
लःसोरठा॥नेननअधिकअनूपःरूपलग्योसवजगतको॥ मोह१
गलाग्योरूपः दृगनलगीअतिचटपटी॥प्रहनाइकाकोवचनसषीसों
अपनेमनकीआसक्तिकहतहै॥सवैया॥संहरताकीनहीपरमावधि
नैरतिकीदुतिपाइनपेली॥कोरमनीकमनीयतिहूपरनेसमहेराइञ
राधिकाहेली॥तानतसोहेहुनाईकीषानिलग्योनितहूलोककोरू
पनवेली॥त्योंतियरूपलगेममनेनलगीममनेननत्योंतलावेली
टीका॥नाइककोवचननाइकाप्रती॥अथवानाइकाकोवचननाइक
प्रती॥तेरेनैनकरियेंसरीरहोअनूपकरियेंसुंदरताकीअवधैहै
सिगरेजगतकोरूपतेरेरूपसोलग्योहै॥सोतेरोरूपमेरेनेत्रसोल
ग्योहै॥सोनेत्रनिकौचटपरीकरियेंउत्कंठासोअतिलगीहै॥मा
लादीपकाअलंकार॥उक्तिनाइककीपरकीयानाइकसोंपरोछपूर१
वानुरागसरतिलालसासंचारीतैवचनअनुभावव्यंगि॥माला१
दीपकअलंकार॥अगिलेअगिलेजोगाजहप्रथमअधिकगुनहोइ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नहमालादीपकजिन्हेंनेपंडितनकविलोइ ॥७॥ मूलदोहा ॥ त्रिव
लीनाभिदिषाइकै : सिरढकिसकुचसमाहि ॥ गलीअलीकीओ
टदै : चलीभलीविधिचाहि ॥ इहनाइकापरकीयाहैयाकीचेष्टा
देषिनाइकसषीसोंकहतुहै ॥ कवित्त ॥ आजुमैंअचानकबिलोकी
ब्रजबालएकवाकीदुतिरहीमेरेउरमैंबिहारिकै ॥ दामिनीलहै
नचारुचातुरीकलाककामकामहकीकामिनीकरोरदुरेंवारि
कै ॥ त्रिवलीउघारिकैदिषाइकैगंभीरनाभिहूंघटनिदुरिवोना१
सकुचिसम्हारिकै ॥ भांतिभलीसाकरीगलीमैंगजगामिनीअली
कीओटगहैचलीगईयोंनिहारिकै ॥ टीका ॥ नाइककोवचनसं
षीप्रती ॥ त्रिवलीकहियेंपेटकीलोटैंऔरनाभिकोदिषाइकै ॥१
नाइकासंकोचमैंसमाइकै ॥ माथेकोढांकिकै ॥ गलीमैंसषीकीओ
टदैकै ॥ भलीविधिसोंदेषिकैचली ॥ स्वभावोक्तिअलंकार ॥ नाइ१
काकीउक्तिहोइतोसरतिगुनकथनतेंपूर्वानुरागअगिनाइकाअ
याविदग्धाहै ॥ अथवाजिनसषीनेंलषीहैसोसषीसोंकहतिहै ॥१
तोनुलक्षितापरकीयास्वभावोक्ति ॥ जाकोजैसोरूपगुनवरन
नवाहीरीति ॥ तासोंजानसुभावकहिभाषतहैकविप्रीति ॥८॥
मूलदोहा ॥ कौंकहूंकोरिकजतनन : अबकहिकाढ़ैकौन ॥ मोमन
मोहनरूपमिलि : पानीमैंकोलौन ॥ इहवचनकीआसक्तिस
षीसोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ जादिनतेंबरवानिकसोंनिरष्योबलवीर१
कलिंदीकेतीरमैं ॥ तादिनतेंनसुहातकछूसुधिकोलचलेसरस्यो
नसरीरमैं ॥ नैननिमांरुवसीवहमूरतिजाइपरयोमनयोंछबिभी
रमैं ॥ कोटिउपाइकरौयिंकहैकैसैंबिलाइयोंहैसषीलोनज्यौंनीरमैं ॥१
टीका ॥ नाइकाकोवचनसषीप्रती ॥ कोरिककहियेंकरोरिनजतननक

हियेंउपाइनेकोरहे॥सोतुकहाअबकोनुकाढै॥मेरोमननमोहनकहियेंश्री
हरूप॥ताकेरूपमेमिलिकैपानीमैकोमैलोनुभयो॥मेरोमनहुताकोकोइ
उपायनहीहे॥इसकोयहमतलवहे॥किपानीमेडारेलोनुनिकसन
नहीहे॥तैसेमेरोमनश्रीहरूपकेरूपमेतेनिकसतनहीहे॥दृष्टांता
अलंकार॥उक्तिपरकीयानाइकाकीजोजीसोंहोइतेचिंतासंचारीहो
इर्षानुरागतोहोईदृष्टांतालंकार॥उपमानरुउपमेयगुनवाचकध॰
मेहजान॥होतबिंबप्रतिबिंबहेदृष्टांतसुपरिमान॥४॥मूलदोहा॥नै
ननैननकोकहूःउपजीवडीबलाइ॥नीरभरैनितप्रतिरहैःतऊनप्यास॰
बुझाइ॥यहनाइकाअपनेंनेननकीअवस्थाआसन्नासषीसोंकहे॥स
वैया॥वयाकहियेकहिवेकीकहनहिऐसीवडीउपजीजबिथाहे॥हृत
केहेउपचारनसोधनअंतननपावतहारोवहथाहे॥नैननकोइहनेहलग्यो
हमनोजकीआंचनपावतथाहे॥नीरभरेसवासरदीसतनेकनप्याससु
झातमहाहे॥टीका॥नाइकाकोवचनअथवानाइककोवचनसषीप्रती
यहनेत्रमिकोनेहुनउपजावतिहे॥काहुकवडीवलाइउपजीहे॥पर्मेरेने
त्रपानीभरेनित्यहीरहतहे॥तऊइनकीप्यासनाहीघटतिहे॥विशेषो
क्तिअलंकार॥उक्तिउपपतिका॥अथवापरकीयानाइकाकीवितर्कसंचारी
वचनअनुभावनेंपूर्वानुरागमांगिविशेषोक्ति॰॥सवकारनकाजनसरे
उक्तिविशेषसुहोयधरे०॥१०॥मूलदोहा॥ज्यौलाजबीलेलालकौःनवल
नेहललिनारि॥चाहतिचूमतिलाइउरःपहिरतिधरतिउतारि॥इहना
इकाकोअलेषनाइकमेंअधिकहे॥वाकेदुलाकोपाइवाकोमिलेकोउ
पमानतिहे॥लालनेंमिलवेकोप्रयासतनाहीकरतिनाइकामध्यापर
कीयाहाइनोहाइसषीसोंकहतिहे॥सवैया॥नागरसोंनवनेहलग्यो
नवनागरिआलिनऊरुसेगुराचै॥देषिवेकोअकुलातिहियेंअतिलाज
निसोंविनितयेनहियावे॥नंदललाकोदुलालहिकेतकिताहिरहीन

नैमषलगावै॥ चूमनिछावनिआंषिनसौंकवहूं पहरैकवहूंउरलावै॥
टीका॥ सषीकोवचनसषीसौं॥ नारीकहियेंनाइका॥ सोछबीलीकहि
येंसुंदरजोलालकहिनाइक॥ ताकौछलाकहियेंमादीअगुठी॥ ता
कौनवलनेहकहियेंनईप्रीति॥ तासौंलहिकहियेंपाइकै॥ चाहतिकहि
येंदेषतिहै॥ औरचूमतिहै॥ औहउरकहियेंछाती॥ तासौंलगाउतिहै॥
औरपहरतिहै॥ फिरिउतारिधरतिहै॥ स्वभावोक्तिअलंकार॥ उक्तिसषी
कीसषीसौंपूर्वानरागसृंगाररूषसंचारीक्रियानुभावपरकीयानाइका
स्वभावोक्तिअनुप्रासकीसंसृष्टि॥ वीचनपैयेपदजिहां॥ अक्षरसमता
होइ॥ सोवृत्यानुप्रासहैकहतसयानेलोग॥ ११॥ मूलदोहा॥ सषसौं
बीतीसवनिसाःमनसोएमिलिसाथ॥ मूकामेलिगयोजुछिनः
हाथनछोडैहाथ॥ यहपरस्त्रीविककविकीउक्तिनाइकामैंदमैंपरकी
याहैहाथसपर्शकौसुषमान्योनाहीमौंरात्रिवेषमैंहीबीतीसषीसौं
कहै॥ सवैया॥ रैनिवितीनभईसिगरीअतिचाइचहेचितचैनअहैहैं॥
दोउनकेमनमोदबढ्योअभिलाषनकेदृढवंधनछूटे॥ सोएमनोमि
लिकैइकसाथहियोंवहुभांतिहियेंसुषलूटे॥ मूकामैंमेलिगोहैइक
वारसुहाथसहाथछिनानहिछूटे॥ टीका॥ नाइककोवचनसषीप्र
ती॥ मानोसाथमिलिकैसोएयेंसिगरीरातिसुषसोंबीती॥ बीचकी
भितिकैमूकाकहियेंछिद्र॥ तामैहाथमेलिकै॥ हाथसोंपकरो॥ सो
हाथछिनमात्रसिगरीरातिनछोडो॥ उत्प्रेक्षाअलंकार॥ जिनिलछि
नकीयेहैतासषीकोउक्तिकैपरकीयानाइकाकोउपपतिनाइकसषी
सौंकहतहैक्रियावचनअनुभावहर्षसकलसंचारीलेंपूर्वानुराग
ज्ञेयि॥ उत्प्रेक्षालंकार॥ जहकीजतिसंभावनावस्तहेतुफलमधिनी
नभांतिउत्प्रेक्षाहै॥ १२॥ मूलदोहा॥ उडीगुडीकहिलालकीआईआई
आंगनमाह॥ बौरीलौंदौरीफिरतिःछुवतिछबीलीछाह॥ इहनाइका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

परकीयाहै प्रौढा सु नाइका की चंगा की छूटि है ऐं तें नाइक के मिलें हीको स्वा
मानिनि है सषी सषी सों कहति है ।। सवैया ।। नंद ललान चना गरि पैनिज्ज
रूप दिषाइ कै गोरी सी नाई ।। वाहि रजात वने प्रहुते न विलोकि वे कों अ
तिही अकुलाइ ।। प्यारे की चंग इतै मैं उडी लषि मोद भरी निजु आंगन
आइ ।। हेति गुडी की जितै जित छुटतिनैं तितन छोवे कों डोलति धाइ ।। टी
का ।। अंगनाक हियें नाइका ।। सो आंगन मैं नाइक की गुडी कहियें चंग
ताकों उडी देषि कैं ।। वाउरी लोंदौरी फिरति है ।। छबीली सुंदर नाइका कों
नाम है ।। उपमा अलंकार ।। उक्ति सषी कों सषी सों परकीया नाइका केंच
पलतासंचारी उदमाद दर्षा तें एवानु रागा व्यंगि उत्प्रेक्षा ।। जहु की जति
संभावना ।। २३ ।। मूल दोहा ।। देषो जागति वे सियें सांकर लगी कपा
ट ।। कित है आवत जात भजि को जानें कहिं वाट ।। इहु नाइका स्वप्र दर्सन
सषी सों कहति है ।। नींद की निंदा करति है ।। सवैया ।। रंच कनींद परे जब
हीं तव ही हित गभ्या निटि कै षगि कैं ।। हेरि हसे रस कों वरसे वतराइ मना
हित सों षगि कैं ।। जागें तौ डीठि परैं न कहूं अह न्यो हो कपाट रहें लगि कैं
यह जाने कु आवत चौकि तहे पुनि जात कवै कित है भगि कैं ।। टीका ।। ना
इका को वचन सषी प्रती ।। स्वपन दर्षन वर्ननं ।। जो मैं जागि कैं देषो हों तो
वैसी ये सांकर किवार मैं लगी है ।। नाइक कित हैं आवत हैं ।। नाव
न कैं को न जानें ।। विभावना अलंकार ।। परकीया नाइका की उक्ति वित
र्क स्वप्न मोह चिंता चपलता स्मृति संचारी ।। वचन अनुभाव तें एवानु
राग व्यंगि स्वप्न दर्षन जानियें विभावनालंकार कारन नाहि पै कारिज हो
इ कै कारज कारन तें उपजावै ।। कारज होइ अकारन तें कि अपूरन कार
न कान वनावै ।। कै प्रतिबाधक होत हु कारज होत न हो रस सोत वहावै
हेतन तें काज विरुद्ध विलोकि बुधे सव भांति विभावना गावै ।। २४ ।। मूल
दोहा ।। कवन जात जेती कहति वहि रस सरिता सोत ।। आलवाल उर प्रे

मनरूः तिनैतितैनेहूहहोव ॥ यहस्नेहकेश्रंकमैंहूढतानाइकाकोश
थवानाइककोवचनसखीसोंनाइकानाइकाहूसोंकहै ॥ कवित्त ॥ आल
वालउरमैंमनोजबयोनेहदवीनुतातेंभयोश्राली प्रेमअंकुरउदोतहै
हरतिसलिलसींचौयाहीतेउमगिउठ्योफूलफलप्रगटेगाविरह्यो
नयोतहै ॥ कहूकविहूललज्योंज्योंउमगिप्रबलहरकरतकठिनरससु
रिताकोसोतहै ॥ नेकनठिगातबाकीत्योंहीत्योंजघतिजरफालउतफो
रतनुघरोइडिहहोतहै ॥ टीका ॥ नाइकाकोवचनकैनाइककैवचनसखीप्र
ती ॥ रसकोसरितानाकहियेनदी ॥ ताकोसोतुकहियेप्रवाउसोवढिकैं
जेनोकटाउकरतुजातहै ॥ उरकहियेहृदयसोईभयोश्रालवालकहि
यें ॥ थरहारातामैप्रेमरूपीजोतरुकहियेंवृक्षसोतेनोहढहोठहै ॥
विभावनारूपकाश्रलंकार ॥ स्वतःसंभवीनाइकाकोश्रथवानाइककी
उक्तिवितर्कसंचारीवचनश्रनुभाउतेंपूर्वानुरागव्यंगिपरकीयानाइका
रूपकालंकार ॥ २९ ॥ कलदोहा ॥ बलबढ़ईबलकरिथके:कटैनकुम
तिकुठार ॥ आलवालउरफालरी:बरीप्रेमतरुडार ॥ इहस्नेहकोदृढता
सखीसोंनाइकाश्रथवानाइककहै ॥ कवित्त ॥ देखनहीमूरतिमधुरमनमो
हनकीनैननुकेमिल्योमनुश्रतिश्रवदातुहै ॥ आलवालउरतेंप्रगटभयो
प्रेमतरुदिनफालरतुश्रतिसरसातुहै ॥ नाहिहरिवेकोकितनेबलनिब
गजुठनिकुठारगहिकीनोउत्पातहै ॥ कहैककविसूलसवैसाथुकेश्रव
लकरिनेकनघरतत्योंत्योंहटहदोवहैजातहै ॥ टीका ॥ सखीकोवच
नसखीसों ॥ बलकहियेंउर ॥ नेईभएवढ़ईतेवलकरिकेथके ॥ तिन
कोकुमतिकहियेंदुर्बुद्धिसोईभईकुठारीतासोंकटतिनहींहै ॥ उर
श्रोहेसोईभयोथरहाः ॥ तामेंप्रेमरूपीजोवृक्षताकीडारैबरीबरीफ
लरतिजानिहै ॥ रूपकविशेषोक्तिश्रलंकार ॥ परकीयानाइकाश्र
थवानाइककीउक्तिहोइतोवचनश्रनुभाउधृतिसंचारीतेंपूर्वानुरागव्यं

गिरूपकविषेषातीन्यअलंकारकोसंभूरा ॥ १६ ॥ मूलदोहा ॥ खंजननैन।
पैयनछिनकुंबसिःनेहनगरजहचालि ॥ मारेहोफिरिफिरिमारियें:
खूनीफिरैखुसाल: ॥ इहलगनिकोवचनहै जाकोलागनिहैताकोअ
धिकदुखहै जाकीलागनिहैताकेकछुमननहिमैं नाफिजावचनसोना
इकाअथवानाइकसषीसौंकहै ॥ कवित्त ॥ छिनवसैकहूंदीयेनविनवसै
चरपरीमेहननगरमैंथहअटपटीरीतिहै ॥ लीजतकछुडारमनरतअन
ननननाहिंयननमहीपनहांअधिकअनीतिहै ॥ मोसेंहीकोमारीयेष
नीफिरैषुसीभयोजीनेहीकीहाहिआरहारेहीकीजीतिहै ॥ सबुब
सहीजेनऊपरवसवरीषतनहांऔरकछुलोकपरलोककीनभी।
तिहै ॥ टीका ॥ नाइकाकोवचनअथवानाइकाकोवचनसषीप्रती ॥ ने
हनगरमैंवसिवेछनमात्रखंजननैनपैयतहै ॥ जहचालिपरीहै ॥ मा
रेहोजेमनतेकोफिरिफिरिमारियतहै ॥ खूनीजेनैनतेखुसालफिरत।
है ॥ रूपकअसंगतिअलंकार ॥ उक्तिनाइककीअथवापरकीया
नाइकाकीत्रासमंचारीवचनअनभावतेंएवानुरागव्यंगि ॥ रूप
कअसंगतिकोसंवकर ॥ कारनऔरैठौरहैकारजऔरैठौर ॥ औरहकाजआ
रंभियैऔरैकीजैदौर ॥ औरठौरहीकीजिये ॥ औरठौरकोकाम ॥ तीन
असंगतनकोकहत ॥ भेदसुकविमतिधाम ॥ उपमानरुउपमेयमैंभेदप
रैनलषाइ ॥ तासोरूपककहतहै ॥ सकलसुमतिकविराज ॥ १७ ॥ मूल
दोहा ॥ निरदयनेहनयोनिरषिःभयोजगतभयभीत ॥ जहअवलौंन
कहंसुनीःमरेमारियेंमीत ॥ यहमानविरहसषीकोवचननाइकासें ॥
नाइकाकेपछकोसषीहै ॥ नाइकापरकीयाकहींनेसंभवै ॥ भीतयापदतें
सवैया ॥ ऐसेसोअधीनभयोमननेमोहनलोचिनतेकतअंगसभारहि
नाहिरतौनरसावनिचावरीकैपानकरैमिलिकैजविहारहि ॥ तैसेभ
योनिरदैहिनहेरिउसोजगहाहभरीभयभारहि ॥ आजुलौऐसी।

139

विहा॰
२३९

मनीनकहूं गतिश्रापुमैरेश्ररुमीनकोमारहि ॥टीका॥ नाइका॰
कोवचनकैनाइककोवचनसषीप्रतोकैसषाप्रती ॥ निर्दई नृप
नेहकौदेषिकैजगतभयभीतभयोहै ॥ मीनसंबोधनहै ॥ जोमनैंघ
जहवानश्राजुलोकहूनहीसुनीहै ॥ किमेरेकौमारियैं ॥विभावना
अलंकार॥ जोसषीदूतीकीउक्तिनाइकाप्रतिहोइतोनाइकाकोएवा
नुरागव्यंगिदूतीकोवचनसुनिबोयहैजोअनुभावहैतातेनाइका॰
हकैएवानुरागव्यंगिजोनाइकामानवतीहोइतोईर्षासंचारीक्रया
अनुभाउतेईर्षाविप्रलंभव्यंगिनाइकानैसामोपायकीयोहै॥विभा
वनालंकार॥ कारननाहिपैकारजहोइकैकारजकारनकोउपजावै
कारजहोइअकारननैकिअपूरनकारिजकाजबनावैकैप्रतिबाधक
होतहूकारजहोतयहोरससोतुवढावैहेतुनैकाजविरुद्धविलोकि
वुधेरुछे ॥भांतिविभावनागावै ॥२८॥ मूलदोहा ॥ कौनवसियैंकोनि
वाहियैं नीतिनेहपुरनाहि ॥ लगालगीलोइनकरैंनाहकमनवं॰
धिजाहि ॥ इहलगानिहैनेत्रनकेलगेमनबंधिजाहियहअद्भुतिनीति
है॥ सोनाइकाअथवानाइकसषीसोंकहतुहै॥ कवित्त॥ पावकप्रचंड
जोंनेभागेहूनछूटियतचरियतज्योंज्योंउपचारकीजियतुहै॥प्रबल
कजावकतुपैमगनचलनपैयेचितवनदीजैतऊहितभीजियतुहै॥ ऐसे
प्रेमपुरकैसेंवसियेनिवहियेवोंदेषिएअनीतिछिनछिनछीजियतु
है॥ लागनिकारतथाइनेनमैनमनवारेनाहकविचारोमनवांधिली॰
जियतुहै ॥टीका॥ नाइककोवचनअथवानाइकाकोवचनसषीप्रती
नेहकहियेंप्रीतिताकेपुरकहियेंगाउतामैंनीतिनहिहै॥ तातैकैसें
वसियेंश्रौरकैसैंनिवाहुकैंरिवाधिजातहै ॥असंगतिअलंकार॥ उ॰
क्तिनाइककीअथवापरकीयानाइकापरकीयाकीत्रासंसंचारीवचन॰
अनुभावतेएवानुरागव्यंगिअसंगतिअलंकार॥ औरठौरहीकीजियै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

और ठौर को काम तीन असंगत हू कहत भेद सुकवि मति धाम ॥ २५ ॥ मू-
ल दोहा ॥ देहु लग्यो हिय गेह पति : तऊ नेह निरबाहि ॥ ढीली अंखियन ने-
ह सौं गई कनखियन चाहि ॥ इह नाइका परकिया की चेष्टा नाइका स-
खी सौं कहत है ॥ सवैया ॥ मो पै बहू कहते न बनै चितु री जैसी बिहारि ग
ई है ॥ मैं जब तें निरखीन बतें उर मैं न के सा इक मारि गई है ॥ पास भऊ प
ति देह लग्यो न उठी तिसनेह की पारि गई है ॥ नीचियै आंखिन सौं इहि और
कनोखी चितै निनिहारि गई है ॥ टीका ॥ सखी को वचन सखी प्रती ॥ गेह प
ति कहिये आपनो स्वामी ॥ सो हिय सरीर सौं लग्यो है ॥ तऊ नेह कहियें
प्रीति ताकौ निरबाहु तिहि ॥ ढीली आंखिनि तौ सौं अपने यार की और क
निखियन चाहि कहियैं देखि गई ॥ विभावना अलंकार ॥ उक्ति उपपति को
नाइका ह्वा या विदग्धा होउ तिके पूर्वानुराग अंगि नाइका के हर्ष संचारी व
चन अनुभाव उतें नाइका के औत्सुक्य संक संचारी कटाक्ष विक्षेप अनु-
भाव तें विभावनालंकार ॥ प्रतिबाधक के होत हू कारज सरनेहाइ ॥ तीजो
भेद विभावना को भाषत कवि लोइ ॥ २० ॥ मूल दोहा ॥ हे हियरहति हई छ-
ई : नई जुगति जग जोइ ॥ आंखिन आंखि लगै दई देह दूबरी होइ ॥ इह नाइ-
का बैन अनाइक को देखि के लगे अरु देह दूबरी होति सो नाइका सखी सौं
कहति है ॥ सखी सखी हूं सौं कहै नौं बिनै अद्भुत कहै ॥ सवैया ॥ देखन देखन हूं
नलहै कल पै मम हू उहि है अति भारी ॥ देखि विना न सहाइ कछू पुनि हाइ-
र है अति हीन दुखारी ॥ व्याकुल हूं मन लाइ मनोहर जाइ रहै निसि नींद बिसा-
री ॥ नैन लगे तन दूबरो होइ अनोखी सनेह की रीति निहारी ॥ टीका ॥ नाइ-
का को वचन सखी प्रती ॥ जहन ई जो जुगति ताकौ देखि कहियै मैं हइ छ-
ई कहियें मोहयपरो रहत है ॥ आंखिन सौं आंखि लगति है ॥ देह दूबरी हो-
ति है ॥ विसेषोक्ति अलंकार ॥ परकीया नाइका कौ उक्ति वचन अनुभाव-
त्रास संचारी तें पूर्वानुराग अंगि जानियै असंगति अलंकार ॥ कारन और

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बोरहैं ॥ कारिजग्रोरैंठोर ॥ भेदग्रसंगनकोप्रथमभाषतकविसिरमोर
२१ ॥ मूलदोहा ॥ नैनलगेतिहलगनिजूतनः छुटैछुदेहू प्रान ॥ कामन
आवैएकहूः तेरेसोकसयान ॥ इहनाइकाप्रौढापरकीयासषीसिंछा
देतिहै ॥ ग. सोंग्रहटन ॥ सवैया ॥ नैननुग्रैसोलाग्योहितकोपनुचैनल
हजवलोहतिहैरे ॥ प्रानहूदेहतजवानिछुटैजगवौनहसैउपहासचवै
नै ॥ कोउकुलकानिकहोवपरीइहसौंकसयाननकामकरैरे ॥ लाजलल
जाईनपैनकछूकइंएकहूकामनग्रावतमेरे ॥ टीका ॥ नाइकाकोवच
नसषीसौ ॥ मेरनेत्रतालगनिसोलगेहै ॥ जोप्रानछूटेदेहतेनैननहीछू
टतेहै ॥ सोतेरएसीकुसयानकहूकामनहीग्राउतहै ॥ ग्रथवासौकस
यानमेएकोसयानकामनहीग्राउतहै ॥ ग्रनुक्ति ग्रलंकार ॥ परकीया
नाइकाकीउक्तिसषीसौंवचनग्रनुभावधृतिसंचारीतेंश्रवानुरागव्यंति
ग्रत्युक्तिग्रलंकार ॥ २२ ॥ मूलदोहा ॥ प्रेमग्रडोलडुलैनहीः मुषबोलै
ग्रनषाइ ॥ चितउनकीमूरतिवसीः चितउनिमहलषाइ ॥ इहनाइका
परकीयाहेतहलछिनाहेसषीकोवचननाइकासों ॥ सवैया ॥ बोलैनः
बैनंनवितैग्रनषाइकैहोतकहाग्रवसाधेलषाइ ॥ तेरहीयैंथिरप्रेम
कीवानीसुजानपरीरीझुरैनडुराई ॥ तूहरिकेहीयेमाहिरहीपुमितेरा
ईनामरटैसषदाई ॥ प्यारेकीमूरतितेरोचितमांहवसीसचितैनानिमैंदे
तिदिषाई ॥ टीका ॥ सषीकोवचननाइकाप्रती ॥ तेरोग्रडोलकहियेस्थि
रजोप्रेमसोडुलेवकहियेचलैनहीं ॥ जद्यपितूमुषसोंग्रनषाइकहियें
क्रोधकरिकेंबोलतिनहीहै ॥ उनकोकहियेंउसनाइककोमूरतितेरे
चितमैवसीहै ॥ सोतेरीचितोनिमैदिषातिहै ॥ विभावनाग्रलंकार ॥ उ
क्तिसषीकीसषीसौवितर्किसंचारीकरिनाइकापरकीयास्मरतिदशा
चितासंचारीग्राहुतिग्रनुभावकरिश्रवानुरागव्यंगतिविभावनाग्रलंक्य
मकालंकारकीसमस्टि ॥ कारनविनुहीकाजकोउदयहोइजिहिठोर

परि लोभे हू विभावना को कहि कवि सिरमोर ॥ बहो अरथ पद फिर परै भि
न्न भाव कछु होइ ॥ तहु जमकालंकार है भाषत पंडित लोग ॥ २३ ॥ मूल
दोहा ॥ अलि इन लोइन सार कौं ऐसे विषम संचार ॥ लगे लगायें एक
से होइ नवरन सुमार ॥ इहां अपने मैन की अवस्था सखी सौं कहति है
नाइका कहै अथवा नाइका कुं कहै ॥ कवित्त ॥ सहज के लागे नाहि साधि न रह
ति कछु जो हम मनाके उर रंच कवि थान है ॥ तिन तें अधिक कुसुमायुध
के पांचु बान जिन के लगे तें देह मन तिनु के ध्यान है ॥ हलसान प्यारे की
हूं होइ जिय जानि आली सब ही तें विषम विसेष बीषम बान है ॥ इहु नै
विकल करै जतन लगे न आन जुहू भांति रीगल हू लगाए हू समान है ॥ टी
का ॥ सषी को वचन नाइका प्रती ॥ अथवा नाइका को वचन सषी प्रती ॥
अली सिवा धन जानियें ॥ पलोइन कहियें नेत्र तें ई भए सर कहियें बान
तिन को षरो विषम कहियें उलटो संचार कहि चलनो है ॥ लगे तें आ
हल गाएं तें एक से है ॥ दोउ नु कहियें लगन वारो लगाउन वारो ॥ इन दो
उ कौ सुमार कवे हासक रन है ॥ व्यतिरेकालंकार ॥ उक्ति सषी कौं स
षी सौं दंपति दसा देषि के उनि को पूर्वानुराग व्यंगि जानियें ॥ व्यतिरेका
लंकार जानियें उपमानि तें ॥ जिहां अधिक उपमेय तहु भाषत ति व्यति
रेक है ॥ २४ ॥ मूल दोहा ॥ लागत कुटिल कटाछु सर क्यों न होइ बे
हाल ॥ कढत जु हियो दुसार करि तऊ रहत नट साल ॥ इहां नाइका के
नैन नाइक के हृदै मैं चुभे है ॥ सो सषी नाइका सौं कहति है ॥ नाइक सषी
सौं कहै नाइका सौं कहै ॥ कवित्त ॥ भिदें हूं सुधे तीर तें तौ तन को वहा वें
पीर जानियें है बात जिय सकल उरात है ॥ लागे ब्रजनागरि के कुटिल
कटाछु सर वे गान हो हि विकल विहाल सुभगात है ॥ विक्रम निधा
न अनि पाघर के बान हू तें मेरे जान इन के अनोषे उतपात है ॥ देषिए

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१४१

विहा॰
२४१

साउउरकहतनुसारकरिपतेपरदेषोमनुरसालरहिज्यानहै ॥टीका॥ नाइ
काको वचन सषी प्रती ॥ अथवा नाइका को वचन सषी प्रती ॥ कुटिल क
हिये है जे कटाछ ते ई भए सरः कहिये बान तिन के लागत कौन वि
हाल होइ ॥ हियै कोइ सारफेरि के कहतनहै ॥ नउ अटलु रहत है ॥ का
व्यलिंगविभावनाअलंकार ॥ उपपतिनाइककी उक्ति विनर्कि सं
चारीतें हर्षानुरागव्यंगि परकीया नाइका ॥ काव्यलिंगअलंकार ॥ अ
र्थसमर्थन कीजिये जहां युक्त सो मित्र ॥ काव्यलिंग भूषन तिहां भाष
न बुद्धि विचित्र ॥२५॥ मूलदोहा ॥ नवरु चिचुरन डारिकैः ठगलगाइ
निज साथ ॥ रह्यो राषि हठ लै गयौः हथहाथी मनु हाथ ॥ यह हाथ
कीसे भाअपने मनकी आसक्ति सषीनाइकसोंकहे ॥ सवैया ॥ तू
दलसै मेहदी के सुरंग उहि अरुनाई के रंग चके ॥ रेष बसी कर मंत्र हि
थाइ के साथ लगाइ लिये अपने कै ॥ चाहन चषु विचूरन डारि अधी
न कीयो बहु भांति भरे कै ॥ राषेहु पैन रह्यो मम हाथ हथ्या हथ्यौ हा
थु गये मनु लै कै ॥टीका॥ नाइका को वचन सषी प्रती ॥ ठगक हियें
नाइक सो न बकी जो रुचि कहियें सो आसोइ भयो चूरन ताको डारि
कै ॥ अपने साथ लगाइ के हाथसे ॥ मेरे मन को हथ्या हथ्यी लै गयो ॥।
ए कह ठ को राषि रहै ॥ रूपकाअलंकार ॥ उक्ति उपपति नाइक को वच
न अनुभाउ ते स्मरति संचारी हर्षानुराग व्यंगि परकीया नाइका रूप
कालंकार ॥ उपमान रु उपमेय मैं भेद परैन लषाइ ॥ तासों रूपक क
हत है सकल सुकवि समुदायः ॥२६॥ मूलदोहा ॥ कनननैनिक
सनलसनः हसनहसनइ नआइ ॥ हगवंजन नगहिलैगयोः चितव
निचेपुलगाइ ॥ इहनाइका प्रौढा है जैसी छवि सो पीकस देषैहै ते
ही छविसों अपनेनैन कौ लगनि सषी सों कहति है ॥ सवैया ॥

आजुकहैंगोवननैंकोंइतनैंहुनिवानिकसोजसुधाकोकन्हाई॥मारें
किरीटलसैमुरलीलकुटीरुपपीतिपटीछविछाई॥सोहिताआइ
भयोरसभाइहरैमुसिकाइमनैंसोमुषदाई॥चौंपकीजोंहनिवेधु
लगाइकैलैगयोमैंननिमोलनिमाई॥टीका॥नाइकाकोवचनस
षीप्रती॥वननतनतैंकहियेंवनकीओरतैंनिकसोजोनाइकु॥सोहं
सतहसतइहांआइकैमेरेहगाकहिनेत्रतेंईभएषंजन॥कहियेंमि
मोलापकुरीतिनैंकोंचितवनिजोंहैंसोईभयोवेधु॥ताकोंलगा
इगाहककहियेंपकरकैलेगयो॥रूपकजातिवर्ननाख्यलंकार॥
उक्तिनाइकाकीसषीप्रति॥वचनअनुभाउतेंसंचारीहर्षानुराग
संगिपरकीयानाइकाकेकटाक्षविक्षेपअनुभावतेंजानियेंरूपका
लंकारजातिवर्ननकोसंकर॥२७॥मूलदोहा॥चितविन्हुवचनन
रहतहरिःलालनहगवसजोर॥सावधानकेवटपराःयेजागतके
चोर॥इहनाइकाकेनेत्रनयाकेमनकोंजोरावरीहरनोहैं॥सो
नाइकासषीसोंकहतिहै॥कवित्त॥राषतसल्लकमिलेमदन
महीपतिसोंसूतनसरकिजातकाननकीओरहैं॥चपरिहरतब्रज
वालनकेमनधनमारतमरोरभरेजोवनमरोरहैं॥जागतहूंसेसा
वधानकोविचसुकरेचपलचितैतिमरवेधतमजोरहैं॥मोसोंकहि
आलीब्रजलाडलेकेलोलहगठगहैंकिजाकहैंडकैतहैंकिचोरहैं॥
टीका॥नायकाकोवचनसषीप्रति॥मेरोचितजोहैसोइभयोवि
त्रकहियैधनुसोवचतिनलालनकहियेनायकताकेहगाकहि
यैनेत्रतेंईभयेजोरावरतेरुठकरिकैहरतहैं॥सोनेत्रसावधानकेब
टपारेहैं॥औरजगतकेचोरहैं॥व्यतिरेकालंकार॥उक्तिपरकीया
नाइकाकीसषीप्रतिवचनअनुभावतेंस्म्रतिसंचारीहर्षानुरागव्य

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गिनाइकाकैंकराछविछेपअनुभावतेंजानियें॥व्यतिरेका॥जाति
मैंउपमानतैंजहांअधिकउपमेय॥तहभाषतव्यतिरेकहेकवि
पंडितआधेय॥२८॥मूलदोहा॥इहिकांटेमोपाइलगिलीनीमर
नजिवाइ॥प्रीतिजनावतिभीतिसोंमीनजुकाढेआइ॥इहनाइका
प्रौढाप्रकीयानाइकाकोवचनसषीसों॥सवैया॥जादिनतैंमिलि
मैनकीहूरसीडारिगयोवहछैलसुहायो॥तादिनतैंअकुलात
हैलोचनदेषिबेकोकहूंदावनपायो॥मोपगमैंमगमैंलगिकेइहि
कांटिनआजुमीवरसायो॥प्रेमजनावतपैभयभीतसोंमोहनमी
नजोकाढनआयो॥टीका॥नाइकाकोवचनसषीप्रति॥इसकांटे
मेरेपांइमैंलगिकेमोकोंमरेतेंजिवायो॥भयसोंप्रीतिकोजनाउ
निहै॥मीतकहियेनायककोतिसनेकांटोआइकेकाढो॥विभावना
लंकार॥उक्तिनाइकाकीअंतवर्तिनीसषीप्रतिउपपतिकोप्रेमनि
वेदनवचनअनुभाउतें॥हर्षसंचारीपूर्वानुरागभायेगिनाइककिरू
याकायक॥अरुभयमात्तिसिकअनुभावतेंसंकसंचारीपूर्वानुरा
गव्योगिव्याधिकोमिलन॥विभावनालंकारनकोउपजावे॥कार
नहोइ॥अकारननतैंकिअएरनकारजकाजवनावैकेप्रतिबाधक
होतहूंकारजहोतयहोरससोतवहावै॥हेतुतैंकाजविरुद्धविलो
किबुधेसछैभांतिविभावनागावै॥२५॥मूलदोहा॥जानसयानअया
नहूंवेरगकाढिठगैन॥कोललचाइनलालकेलषिललचौ
हैनैन॥इहनाइकाप्रौढाहै॥सषीसिक्षादेतिहै॥ताकोउत्तरकहतिहै॥
कौनिअदेषिबेकोनललचातनाहीहैकोअधिकनाइकाकोवचन
सषीसों॥सवैया॥कोनरहेठगमरिसीषाइकेभलनकोनविवेकव
लै॥काहिनवोविसरावैसवैसुधिमोहनवैंकहिकाअवलै॥होत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सयानअयानसवैचतुराईअनेकनएकचलै ॥ आलीरीमोहनलालके
लोलविलोचनदेषतकौनछलै ॥ टीका ॥ सषीकोवचननाइकाप्रती ॥ ।
अथवानाइकाकोवचनसषीप्रती ॥ सयानकहियेचातुरीऔअयानहे ।
जानहे ॥ वेठगकिसकोनठगे ॥ लालकेललचौनेत्रदेषिकेकोननहीं
ललचाइ ॥ व्याजस्तुतिअलंकार ॥ उक्तिनाइकाकीवचनअनुभावतेवि
नकिसंचारीएवंअनुरागव्यंगियाकोउक्तिते ॥ नाइकाहकेकटाक्षविक्षेपअ
नुभावतेलालसाएवंअनुरागव्यंगिजानियेव्याजस्तुतिअलंकार ॥ स्तुति
मिसनिंदाहोइकेनिंदामिसस्तुतिहोइ ॥ व्याजस्तुतिजानियेसवेसषा
नेलोग ॥ २० ॥ मूलदोहा ॥ जहांजहांठाढोललष्योःस्यामसुभगसिरमो
र ॥ विनहूंउनिछिनुगहिरहतिःदृगनिअजौवहठौर ॥ इहएवंअनुरागहै
हसदेषहैनेईठौरश्रीकृष्णकीभावनाकरिकेनेत्रनकोआग्रहनकरनि ।
हैसोनाइकासषीसोंकहै ॥ कवित्त ॥ केलिरससारमैंजोलिननरंगरलीप
तिरसनविविधकरतमनोरथनु ॥ तनमनवारतेौअनुरागभोगलाग
नेहोमहावासचीकोतोअननतनहनेअपनु ॥ कृष्णप्रानप्यारेकोंदुहाईअलि
षविछायोजिनजिनकुंजनिमिलनहोरीस्यामघनु ॥ तईतेईकुंजनअबउ
नहूंविलोकिविनमाईगहिराषतिहोचरीकलोंअजोंदृगनु ॥ टीका ॥ ना
इकाकोवचनसषीसो ॥ जहांजहांसुभगकहियेसुंदरतिनकोसिरमो
रजोस्यामकहियेश्रीकृष्णसोठाढोदेष्यो ॥ श्रीकृष्णविनहूंवहठौरने
त्रनिकोपकरिरहतिहै ॥ इसकोयहमतलवहै ॥ किमानोश्रीकृष्णअ
वहूंवैठेहै ॥ विभावनाअलंकार ॥ नाइकाकीउक्तिवचनअनुभावस्मृ
तिसंचारीएवंअनुरागव्यंगियहदोहाव्रीडाश्रीलहूकोउदाहरनजानि
यतुहै विभावनालंकार ॥ कारनविनहीकाजको ॥ उदयहोइजिहिठौ
र ॥ पहिलोभेदविभावनाकोकहिकविसिरमोर ॥ २१ ॥ मूलदोहा ॥ ज
सअपजसदेषतनहीःदेषतसामलगात ॥ कहाकरौलालचेःचपल

नैनचलिजात॥इहनाइकाकोसषीसिषादेतिहैतामेंअपनेनैनकी
आसक्तिकहतहै॥सवैया॥सासरिसातिहुकैननदीजिऊंतेसिषवे
सषिसीषकवैना॥हैब्रजवासचवाईमईचहूंऔरचलैअपहासकीसे
ना॥देषतसुंदरस्यामसरीरतिलोकअलोककीलीकलषैना॥कैसो
करौंहटकेनरैहैचलिजाततऊकचिलालचीनैना॥टीका॥सषीको
वचननाइकाप्रती॥अथवानाइकाकोवचनसषीप्रती॥तेरेनेत्रजस।
औरहुअपजसइनकोनहींदेषतहै॥स्यामगातकहियेसरीरतिनकोदे
षतहै॥मैकहाकरौंचंचलपनेत्रचलेजातहै॥अत्रकाव्यलिंगाअलं।
कार॥अत्ररसषीप्रतिनाइकाकोवचनअनुभावतेनाइककोसौदर्यउदी
पनऔत्सुक्यचपलतासंचारीपूर्वानुरागव्यंगिहैं॥उत्तरालंकार॥का
व्यलिंगकीसंसृष्टि॥अर्थसमर्थनकीजिये॥नहिंयुक्तसोमित्र॥काव्य
लिंगभुषनतिहां॥३२॥मूलदोहा॥नषसिषरूपभरेषरेःपैमांगतमु
सिकानि॥नजततनलोचनलालचीःएललचौंहीवानि॥इहनाइका
अथवानाइकमुसिकानिदेष्योचाहतहैसोअपनेनेत्रनकीआसक्तिक
हतहै॥सवैया॥देषतहीअनमेषरहेउमडेसेपरेनविचारतगोहं॥राव
रेरूपअनूपसौंपूरिरहेहैंतऊनषतेंसिषलोंहं॥मांगतहेइनकेपर
तौमधुरीमुसिकानअघातनसौंहं॥नैनभएअतिलालचीएललु
चानिकबानिनछाडतकौंहं॥टीका॥नाइकाकोवचनसषीसौं॥न
षसिषलोंषरेरूपसोंभरेहै॥तापैमुसिकानिकहियेमंदहास॥ता
कौमांगतहै॥एलालचीमेरेनेत्रलालचकीबानिकहियेसुभाउता।
कौनहींछोडतहै॥काव्यलिंगाअलंकार॥उक्तिनाइकाकीसषीवच।
नअनुभावतेंहर्षऔत्सुक्यरीलालसादपापूर्वानुरागव्यंगि॥का
व्यलिंग॥अर्थसमर्थनकीजीये॥३३॥मूलदोहा॥छुटिछिगुनीपहु
चोगिलतःअतिदीनतादिषाइ॥वलिवामनकोव्योतसुनिःकोलि

नहैंसैपत्याइ॥इहनाइकाकेचित्तकोछुमिलललचौंहदेषिनाइकाप्रीति
बढाइवेकोकहतिहै॥अरुअपराधबोधकैतनहोइनोसंभवै॥सवै
या॥जानतहैसबकोऊसभैगुनआगरेहोठमजेसेविहारी॥दीनहूं
आवनदेतपहलेमनहारिकरोअतिहैमनहारी॥कैसेहुंकैपरसौंछि
गुनीपुनिवांहगहोयहरीतिनिहारी॥ज्योंतहनैवलिवामनकोवं
लिकैतनकैरपरतीतनहारी॥टीका॥नाइकाकोवचननाइकप्रती॥
अतिदीनताकहियेअतिगरीबीताकौदिषाइकैछिगुनीछुवतपहु
चापकरतहै॥वलिकोआहवामनकोयातहतिकेवलिनाइकको
संबोधनहै॥तमकोकोतपत्याइ॥लोकोक्तिअलंकार॥परकीया
नाइकाकीउक्तिनाइकप्रतिवचनअनुभावकरिहर्षसंचारीतेंएवा
नुरागव्यंगिलोकोक्तिअलंकारकहतावतिहैलोककीलोकोकति
हिसोइ॥३४॥मल्लदोहा॥नैनानेकुनमानईः कितोकह्योसमझाइ
तनमनहारेहूंहसैःतिनसोकहावसाइ॥इहनाइकाअपनेनेत्रनकी
आसक्तिकहतिहै॥सवैया॥मोहियेजगकेउपहासनितेंरहीयेगुर
लोगनिमांझरासैं॥उहत्यानियहैअपनेउरहोंसमझाइरहीनहिएक
चसैं॥अहरंचकमैरोकस्योनकौतनहूमनहारितऊहुलसै॥इहनेमं
गस्यासजनीइननैननपैंहरिहेरिहसेंइहसै॥टीका॥नाइकाकोवच
नसषीप्रती॥अथवानाइकप्रती॥मेरएनैनत्रनोकुनहींमानतहै॥मैंकि
तनेईसमझाईकैकह्यौ॥तनअोठमनहारेहै॥नापरहसतहै॥तिनते
त्रनिसोकाहावसातिहै॥पर्यायोक्तिअलंकार॥उक्तिपरकीयाअथवा
उपपतिकीसषीप्रति॥वचनअनुभावतेंविषादसंचारीतेंएवानुरा
गव्यंगि॥अर्थांतरन्यासः॥कह्योअर्थजहपोषियेअर्थअर्थसोमित्र
सोअर्थांतरन्यासहैबुधजनकरेप्रतीत॥३५॥मल्लदोहा॥लटकिल
टकिलटकतचलतुः डटतमुकटकीछांह॥चटकभरोनटमिलि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गयोअटकभटकावनमाह॥इहांस्वाधीनदरसनजाकुविसोंनाइकदे
षीहैसोनाइकासषीसोंकहतिहैपूर्वानुरागहैजानिये॥कवित्त॥
लटकिलटकिचलनिरषतवारवारफेरिफेरिग्रीवांछांहमनजुल
मुकटकी॥केसरकीषोरिपरकलितरुचिरभालकुंडललिलितः
सोहैंवनमालटटकी॥ह्वैगईविपिनमगअटकभटकमेंटनवहौतेनै
ननुमैंषुभीसोभानटकी॥भूलीगृहधंधटकीरीलोकलाजपटकीरी
अटकीहीयेमैंफहरानिपीरेपटकी॥टीका॥नाइकाकोवचनसषी
प्रति॥लटकिलटकिवेलरकतचलतहै॥औरमुकुटकीछांहकौ
उटतकहियेदेषतहै॥चटककहियेसोभातासोंभरेनटकहियेश्री
हरिसोअटकभटककहियेअचानकवटमांहकहियेराहमैंमिलि
गयो॥स्वभावोक्तिअलंकार॥उक्तिपरकीयानाइकाकीसषीप्रतिव
चनअनुभावतेंसरतिसंचारीपूर्वानुरागवर्णिमस्वभावोक्तिअलंकार॥
जाकौजैसोरूपगुनवरननवाहीरीति॥तासोंजानस्वभावककविभा
षतहैंकविप्रीति॥३९॥मल्लदोहा॥फिरिफिरिचितवतिकहिकहाक
हौसामरेगात॥कहाकरनदेषेकहाअलीचलीकहवात॥इहांपूर्वा
नुरागनाइककोवचनसषीसों॥कवित्त॥मदनगुपालकीविलो
किकविहसिवोवालपगीप्रेमपरनमर्यादविसराईरी॥वेईवातेंहूकि
फिरिहूकिफिरिहूकिफिरिहूफिरिहूकिवेकोरटसीलगाईरी॥हा
हाकहिसांवरेकुंवरतोसोंकहाकह्योकैसोहैसमाजवाकेसंगलह
षदाईरी॥करनकहाहोंकिहिठौरकौनवानिकसौंकैसीकैसीभां
तिमेरीचरचाचलाईरी॥टीका॥नायकाकौवचनसषीप्रति॥साम
रेगातकहियेश्रीकृष्णतिनकहाकही॥औरकहाकरनश्रीकृष्ण
देषीअलीसंबोधनहै॥तहांकहावातचलीयेमेंनाइकापेरिफे
रिपूछतिहै॥लेकछिलावानुप्रास॥इतीप्रतिपरकीयानाइकाकीउ

क्तिवचनअनुभाउतेंअभिलाषसंचारीरूपांनुरागअंगिलाटानु
प्रास॥ वहीअर्थपदफिरपरैभिन्नभाउकछुहोइ॥ सोलाटानुप्रास
हैकहतसयानेलोइ॥३७॥मूलदोहा॥ दुषहाइनिचरचानहीआनन
आननआन॥ लगीरहतिहूकादियेंकाननकाननकान॥ इहकाइक
भोहानाइककोवचनसषीसोंपरकीयाहैसोइ॥कवित्त॥ लालमन
मानसोंमिलिकरिआपुरसकेलिकेमनोरथविविधिविधिमानहीं॥
हसआनप्यारेकोनेकुमेरीओरहसैतातोचहचाहमेरेईचवानको
हानहीं॥ कुंजवनवीथीमसकापिरकाकिवारद्वारलागीरहैनिसदि
नहूकादियेंकानहीं॥ देषौमाईइनदुषिहाइनकेउलटनआननआन
नप्रतिआनचरचानहीं॥टीका॥नायकाकोवचनसषीप्रति॥दुषहा
इनकहियेदुषदेनवारीतिनकेआननआननकहियेमुषमुषमेंआ
नकहियेऔरचरचानहीहै॥इसकोयहमतलबहै॥कीमेरीयेचरचा
करतीहै॥औरकाननकाननकहियेवनवनमेंकानदएहूंकाकहिये
दुवीलगीरहतिहै॥इसकोयहमतलबहै॥किमेरीयेबातैसुनोक
रतीहै॥लाटानुप्रास॥उक्तिपरिवादसंकितापरकीयाकीवचन
अनुभावसंकाअमर्षसंचारीतेंरूपान्नुरागअंगिलाटानुप्रासवही
अरथपदफिरपरै॥३८॥मूलदोहा॥ वहकेसवजियकीकहत
ठौरकुठौरलषैन॥ छिनुऔरैछिनुऔरसेपढविद्याकेनैन॥इह
नाइकालछितासषीनाइकसोंकहतिहैजोनाइकानाइकसोंक
हैनाधिडिनाहोइ॥सवैया॥ देषतनाहिनठौरकुठौररहैजितहीतित
नाहिचकेहैं॥औरचरीपलओरहींदीसतहमतआरसमैंलिपके
हैं॥लाजतजैंपिघलाइगयेंहैंअपनेवसनाहिनयोंचवकेहैं॥देनकहैं
जियकीसववातविलोचनपढविद्याकछुकेहैं॥टीका॥सषीकोव

145
चित्र॰
१४५

चननाइकाप्रति॥ वहकेजेनेत्र सवजियकीकहतहै॥ ठौरकुठौर नहिदेषतहै॥ एव विसोहूके कहियेमतवारे भएजेनेत्रतेछिनमे औरहोतहै॥ उत्प्रेक्षालंकार॥ उक्ति सषीकीपरकीयानाइकाप्रति सीढामतिव्यंगिनाइककेकटाक्षविछेपअनुभावतें चपलता॥ औत्सुक्यसंचारीएवीनुरागव्यंगि॥ उत्प्रेक्षालंकार॥ जहकोजा तिसंभावना॥ वस्तुहेतुफलमधितीनभांतिउत्प्रेक्षा॥ ३९॥ मूल दोहा॥ कहतसवैकविकमलसेमोमतनैनपषान॥ नतरुकनतइ नवियलगतउपजतविरहकिसान॥ इहनैनवलगनितेंहि आविल भनेविरहरूपीअगनिकोहोतिहै॥ इहवचननाइककहैनौवनेनाइ काकेहैनौवने॥ कवित्त॥ वरनिवरनिहरिकहतसकलकविक मलकुरंगमीनषंजनसमानहै॥ कहैंकविहूलसइचपचिचनरा ननतेलोचनएपाहनवनाएमेरेज्ञानहै॥ कमलसोकललगाइ देषोकियोवेरएकआकवैयोंहूउपजतनहूमानहै॥ लागतहीं विपनैननतवहीउपजिउठैलगनिअगनियातेंप्रगटहुसानहै॥ टी का॥ नाइकाकोवचनसषीप्रति॥ सवकवीसुरनेत्रनिकोकमल सेकहतहै॥ सोमेरेमतनैनपषानकहियेपाथरहै॥ जोपथरन हीहै॥ तोकतनकहियेकेंाइनदोउनेत्रनिकोलगेतेविरहरूपी आगिउपजातिहै॥ हेतूत्प्रेक्षालंकार॥ उक्तिउपपतिकीकेपर कीयावचनअनुभावतेंवितर्किसंचारीएवीनुरागव्यंगिजाति येहेतूत्प्रेक्षा॥ जहकोजतिसंभावना॥ ४०॥ मूलदोहा॥ लाज लगाममनमानईनैनामोवसनाहि॥ एमुहजोरतुरंगलोपेचत हूचलिजाहि॥ इहनाइकाअपनेनेत्रनकीआसक्तिसषीसों कहतिहै॥ सवैया॥ देषतवानटनागरकीछविफांदिपरेहट

कै नाहहीं ॥ लोचन लोल लरी मरुझोर है लाज लगाम को मानन॰
नांही ॥ एचलि है अपने रनको बलिऐवलि कै उनकौ चलिजांहीं ॥ कै
सी करौं नहि मो बस एकु लकानि के चाबुक नेन डरांही ॥ टीका ॥ ना
इका को बचन सषी ॥ लाज रूपी जो लगाम ताकौ नही मानत है ॥ मेने
मेरे बस नही है ॥ एनैं नु मरुझोर ह्यो रालोयें चन हूं चले जात है ॥ उप
मालंकार ॥ परकीया को उक्ति सषी प्रति हूतत्व करायो चाहति है ॥ ब
चन अनुभाव चपलता ॥ औत्सुका संचारी तें पूर्वानुरागम्याति ॥ उप॰
मालंकार ॥ उपमा अरु उपमेय साधारन वाचक होइ ॥ पचारैं पद पूजि
हो पूरन उपमा सोइ ॥ ४१ ॥ मूलदोहा ॥ इन्है दुषिया अंषियानि को सुष॰
सिरज्योई नाहि ॥ देषत वनै न देषते अन देषें अकुलाहि ॥ इहनें आउ
पालंबना नाइका अथवा नाइका सषी सों कहै ॥ कवित्त ॥ लागति न लल
कपल कहूं पल छिव की वाही ध्यान पगी जागति दिन रातिहिं ॥ जैंसें ज्यौं
निरषति त्यौं त्यौं उमहति अभिलाषी वैयां हू रहे तिन अरुषी बरी बरी ललचा
तिहैं ॥ और भये बरनि बिषम विरहागनि मैं मीन जल हीन कौ सी गति
दरसाति हैं ॥ सिरज्यो न सुष इन दुषिहाई अषिन को देषें न अघाति अ॰
नदेषें अकुलाति हैं ॥ टीका ॥ नाइका को बचन सषी प्रती ॥ ए दुषभरी॰
मो मेरी आंषि तिन को सुष जन्म्यो नही देषें तेला ज करि देषत वनत नहि ॥ औ
र विना देषे अकुलाति है ॥ विसेषोक्ति अलंकार ॥ उक्ति परकिया नाइका
को बचन अनुभाव निर्वेद विषाद संचारी तें पूर्वानुरागम्याति विशेषो॰
क्ति अलंकार ॥ सब कारन काज न सरै उक्ति विशेष कहि ये धरै ॥ ४२ ॥
मूलदोहा ॥ लरिका लैबे के मिसनि लंगर मो ढिग आइ ॥ गयो अचान
क आंगुरी छाती छैल छुवाइ ॥ इहनाइक अथनाइक की कथ नाना
इका सषी सों कहति है ॥ सवैया ॥ गोरस के मिस रोकि नहैं बन गैलन॰
छाउन छैल चवाई ॥ मान भरे मैं कहां कहौं जै सी करी जसुदा के लला ल

गराई॥ मोहिराआइफेरेईहवेकेंकुकीनीसनेहसनीचतराई॥ छोडहेरो
लैबेकोऊठमआनिअचानककोंआगुरीछातीछुवाई॥टीका॥ नाइका
कोवचनसषीप्रती॥ लंगरकहियेनायकुसोंलरिकाकेलेवेंकेमि
समैंमोमेरेढिगकहियेसमीरामेंआइकैछुलकहियेनाइकुसोंआवा
नककहियेवेषवरिअंगुरीआकोंछातीसोंछुइचलोगयो॥पर्यायो
क्तिअलंकार॥ नाइकाकोउक्तिअंतरवक्रीसषीसोंवचनअनुभावतें
हर्षसंचारीपूर्वानुरागवंगिपर्यायोक्तिः पर्यायोक्ति· प्रकारहैकछु
रचनासोंबातमिसुकरिकारिजकीजीयें॥जैसैंचित्रवृतान॥ ७३॥स
लदोहा॥ चिलकचिकनईचटकसोंलफनिसटकलौआइ॥नारि
सलौनीसामरीनागिनिलौडसिजाइ॥इहनाइकाकीसांवरीछविदे
षिनाइकआसक्तभयोसोसषीसोंकहतहै॥कवित्त॥ चिलकनि।
चारुचिकनाईकीचटकभरीचलतिलफतिजैसेंलगलचकनिहै
सांवरीसलौनीअतिलौनीअजोहोनीवेसमसोभासतीसीसमनिस
फिनलमनिहै॥कुटिलसुभाइचितवनिप्रेमविषभरीनागिनिज्यौंइ
हब्रजनागरिवसतिहै॥ मनकोउमतिओरतनकोंलहरिआवेला
गतिनजंत्रमंत्रअरुतियोगनिहै॥टीका॥ नाइककोवचनसषीप्र
ति॥ चिलककहियेचमकतोकोचिकनाईकहियेचटकसोंसट
कलौकहियेसाटकेसमानलफलफातिहै॥सलौनीकहियेसुंद
रसामरीनागिकहियेनाइकासोंसापिनिकेसमानडसतिहै॥उपमा
लंकार॥ उपपतिकीउक्तिवचनअनुभावतेंस्मरतिसंचारीगुनक·
थनतेंपूर्वानुरागवंगिउत्तमकावापरकीयानाइका॥ उपमाअरु
उपमेयसाधारनवाचुकहोइ॥एचारोंपदपूरजिहांपूरनउपमासो
इ॥ ७४॥सलदोहा॥ चितवतिभोरेभाइकीगोरेमुहमुसिकानि॥।
लगतिलटकिआलीगरेंचितषटकतिनितआनि॥इहनाइकाकी

चेष्टानाइकसषीसौंकहतहै॥पूर्वानुरागहूहोतहैश्रोमदनदसम्रवस्थान
केभेदमैंसुमिरनजानीयें॥कवित्त॥भूलतिनवैयोंहूं व्रषभानतनया॰
कोवानवसंगरानिश्रंगरीनचरकाइकै॥वहगोरेवदुरगेरेवदनकी
मुसिकानिवहचहचहीचितवनिभोरेभाइकै॥चूंघटकरनिकर
कमलउसारिवहललटनिमिलतिसजनीसोंलपटाइकै॥ऐसीभां॰
तिजवतेमैंनिरषीहैतवहीतेंपलपलमांझषटकतिचितश्राइकै॥
टीका॥नाइककोवचनसषीप्रतिकैसषाप्रति॥भोरेभाइकीजोहु॰
चितौनितिनासोंश्राकगोरेमुहकीमुसिकानिकहियेमंदहासतासों
नाइकासषीकेगरेमेलटकिकैलगतिहै॥सोनाइकाकोगरेसोंल
गनिमेरेचितसोंनितषटुहुश्राइकैषटकतिहै॥सुभावोक्तिश्रलंका
र॥उपपतिकीउक्तिवचनश्रनुभावतेंसरतिसंचारीगुनकथनदर्शनतेंपू
र्वानुरागव्यंगिपरकीया॥नाइकाकेंहर्षसंचारीचेष्टाश्रनुभावसुवते
छ्यांगि॥सुभावोक्तिश्रलंकार॥जाकोजैसोरूपगुनवरननवाहो
रीति॥तासोंजानसुभावककविभाषतहैंकरिप्रीति॥७५॥अलदोहा
षिनषिनमैंषटकतिसुहियभरीभीरमैंजान॥कहिजुचलीविह॰
सीचितैश्रोठनिहीविचवान॥अहनाइकापरकीयाकैकहंभीरमैंनाइक
देषीहै॥वानेजोक्रियाकीनीसोउनदेषीपैवानकहूनीसोसषीसोंकहै
सवैया॥आजुमिलीब्रजवालिश्रचानकसोंमनिवाकेसनेहगहीहै॥॰
जातिहुतीश्रतिभीरमैंसुंदरमोतननेहितिहियेंउमहीहै॥लाजतेपैनवि॰
लोकिसकीउनकीनीतऊसररीतिसहीहै॥श्रोठनहीमैंगईजुकछूक
हिमैनसुनीपछितायोयहीहै॥टीका॥नाइककोवचनसषीसों॥ना
इकाभरीभीरमैजानविनावितयेश्रोठनिकेवीचवानकहीचली॥सो
हियेमैछनछनमेषटकतिहै॥स्मतिश्रलंकार॥उपपतिकीउक्ति
वचनश्रनुभावतेंसरतिसंचारीश्ररूपादतेंपूर्वानुरागव्यंगिनाइका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बिहा॰
१४०

147

परकीयासमतिम्रलंकार॥ जहरूथिकीजैमित्रस्मरणजानतहचि
त्र॥४६॥ मूलदोहा॥ चुनरीस्यामसतारनभमुषससिकीउनिहा
रि॥ नेहुदवावतनींदलौनिरषिनिसासीनारि॥ इहसाक्षातदरस
नजेमेंनाइकादेषीहैनेसेंहीनाइकसषीसोंनिवेदनुकरतिहै॥ स
वैया॥ उन्नतपीनउरोजनकोजगकोंकनुकीछविपावतुहै॥ मुषसे
हतुसोमजुकैयासीउतिदीपतुमोदबढ़ावतुहै॥ कविहसविराज
तिचूनरीस्यामसतारकबोमलपावतुहै॥ वहजामिनिसीनववनारि
हिदेषतनींदजैयोंनेहदवावतुहै॥ टीका॥ नाइककोवचनसषीसों॥
स्यामजोचुनरीसोईसतारकहियेनछत्रसहितनभकहियेआकास
है॥ मुषचंदसमानहै॥ नेहुकहियेप्रीतिसोनिद्रालो॥ रातिसीजो
नाइकानाकोंदेषिकेदवाउतुहै॥ रूपकउपमालंकार॥ उक्तिउपपति
कौवचनअनभावतेगुनकथनकरिहैवांतरागकोंजिनाइकाकेंको
ऊभावनहींभासतुललितहावहैपरकीयारूपकालंकार॥ उपमा
नउपमेयमेंभेदपरैनलषाइ॥ तासोंरूपककहतुहै-॥४७॥ मूल
दोहा॥ देषतकछुकौतुकइतैदेषोनेकनिहारि॥ कबकीइकटकउटि
रहीटटियाअंगुरिनुफारि॥ इहनाइकादेषतिहैसोसषीनाइकको
बहकावतिहैसषीकोवाकिनाइकासोंप्रीतिकरवाइकोप्रयोजन॥
कवित्त॥ मैनहूंतेअैनमनमोहननिहारीछविनैननमैंसुभीव्रजबा
लरिझवारिकै॥ नगरकोवासहमासनंदकोग्रामुतातेंनिरषिसकैन
प्यारीवदनउघारिकै॥ विनदेषेकलनपरतियातेंइषिवेकोकरोहेउ
पाउइनदेषोधोंनिहारिकै॥ कबकीनिमेषभूलिलोचनलगाइइन
डाटिरहीटाटीकरिपल्लवसोंफारिकै॥ टीका॥ सषीकोवचननाइक
प्रति॥ तुमकछुककोतुकइहांदेषतहो॥ तातेंतुमविनकैकेनेकुदे
षो॥ कबकीइकटकसोंटटियाकोंअंगुरीसोंफारिकेनाइकातुमकों

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

देषि रही है ॥ स्वभावोक्तिलंकार ॥ इसी कौ उक्ति नाइक प्रति याके कहिवे तैं ।
नाइक कै पूर्वानुराग भासत है नाइका परकीया है स्वभावोक्तिलंकार ॥ जा
कौ जैसो रूप गुन वरनन ताही रीति ना मैं जात स्वभाव क विभावत है क
वि प्रीति ॥ ५८ ॥ मूलदोहा ॥ मन न धरति मेरो कह्यो तूं आपनैं सयान ॥ अहै
पर प्रेम कौ परहथ पारि न प्रान ॥ इह सषी नाइका सौं कहति है कौ प्रीति के प्र
संग तैं प्रान पराए हाथ परत हैं ॥ सो तू मनि कर इह प्रश्न है ॥ कि सषी की प्रीति ।
करनि तें मन ने वैसो करति है ॥ सो मन ने नाही करति प्रीति निहारावति है की प्रान पु
राए हाथ परेगो ॥ जो तो मैं इसौ कहिह ताहि तो करि मान ब नीके प्रसंग मैं सषी
नाइक सौं कहै ॥ तो यह वनाकि प्रेम की परनि मैं तूं पर अरु प्रान स्वहै नाइक ।
ताहि पराए हाथ पारे मति ॥ सवैया ॥ तूं न कहि मानति मेरो कह्यो अपने मन
माहि सयान घुभारी ॥ देषिवे कौ ललचवत ज्यौं कछु यौ सनितैं यह रोस ।
निहारी ॥ नेहु कछू नंदनंदन सौं लगि जैहै तो पेरि न छूटहै छुटारी ॥ वेचति प्रा
नन वैसो पर हाथ प्रकेसे मति प्रेम फंद ब्रजनारी ॥ टीका ॥ सषी को वचन नाइका
प्रती ॥ मेरे कहे कौ तूं आपनैं सयान सो मन मैं न ही धरति है ॥ ता तैं अहै संवोध
न है ॥ पराए प्रेम की परनि सो पराए हाथ प्रानन कौ मति पाउ ॥ स्वत्यानु
प्रास ॥ उक्ति सषी की परकीया नाइका प्रति सौ ब्रामति भाव धुनि है नाइ ।
का के पूर्वानुराग है सुलछिन कह्यौ है यातैं हेतु लछिना कहियै स्वत्यानु
प्रास वीचन पद पद जिहां अक्षर सम मता होइ सो स्वत्यानुप्रास है कहन स ।
याने लोइ ॥ ५९ ॥ मूलदोहा ॥ मै तो मो कैवा कह्यो : तू जिनि इन्हें पत्याइ ॥ ल
गालगी करि लोइननि : उर मैं लाई लाइ ॥ इह लगनि है नाइक अथवा नाइ
का अपने मन सौं कहै है सषी सौं कहिवे कौ संभवे नाहि ॥ कवित्त ॥ तो सौं
मैं कहो है के ऊ वार समझाइ मन मैं ननके मनेलाग भारी घनाघाइ गो ॥ ।
नव तौ न सिष मानी इनहू की मति ठानी अव कहा होत परवस पछिता
इगो ॥ लगालगी इन कीनी उर कौ लगाए दीनी लगनि अगनि तातैं कहा

भगिज्ञाइयौ ॥ कौजवबजनुनसीरोत्योंत्योंहोतहुपनीरौनिसदिनयेननन
सनावैननुनाइयौ ॥ टीका ॥ सषीकोवचननाइकाप्रती ॥ मैनौसौकेवा
रकस्योहै ॥ कितेइनकौविस्वाससमतिकर ॥ मुनेत्रनिकौलगालगी
करिकैअवउरकहियेंहियो ॥ तामैलईकहियेंआगिलाकौलाई ॥ वि
भावनालंकार ॥ सषीकीउक्तिपरकीयानाइकामैंपूर्वानुरागरूपका
तिशयोक्तिअलंकार ॥ उपमानकउपमेयतेंउपमानकउपमेय ॥ अह
नकरोतिनरूपकौअतिशयोक्तिलिषिलेउ ॥ ५० ॥ मूलदोहा ॥ वेठाहे
उमदातिइनः जलनवुझैवडवागि ॥ जाहीसौंलागेपाहियेंः ताहीके
हियलागि ॥ इहनाइकाकोंईषिकैसषीकौंआलिंगनकरतहैसोस
षीप्रगटकरतिहैनाइकसों ॥ सवैया ॥ अंगनमोरिभुजाभरभेटति
मोसेंअकहाउइसातिहैठाली ॥ पानीकोआगिमिराइजुपानीसेंरीति
करोकवतेंइहचाली ॥ जोहैतोउतेंउमदाहभलीविधिगहेहैंदेषिवहे
वनमाली ॥ जाहीसोंतेरोलग्योहियकौहितकेहियेंकिनिलागतिआ
ली ॥ टीका ॥ सषीकौवचननाइकाप्रती ॥ वेकाहियेतलारोमीतसा
उतठाहेहै ॥ तेइनकाहियेउमदातिकहिपउमदाहटकरतीहै ॥ सोज
लसैवडवाग्निनहीवुझतिहै ॥ इसकोयहमतलवहै ॥ किमेरेलपटे
तेरेकामसांतिनहींहोतीहै ॥ तातेजिसनाइकसौतेरोहियोंलग्योहै ॥
ताहीकेहियेंसौलगाइः इसकोयहमतलवहै ॥ किनाइककेमिलते
कामसांतिहोइगी ॥ अर्थांतरन्यासअलंकार ॥ सषीकीउक्तिनाइ
काप्रतिनाइकठाहेहैतासौंचेष्टाकरतिहैतातेंपूर्वानुरागव्यंगिसोउ
निलछिनकसोहैयातेलछितलाहै ॥ अर्थांतरन्यासकस्योअर्थजह
पोषिए ॥ अर्थअर्थसोंमित्रसोंअर्थांतरन्यासहैवुधजनकरतप्रमी
न ॥ ५१ ॥ मूलदोहा ॥ मोहिभरोसौरीझिहैः उझकिझांकिइकवार ॥ रू
परिझावनहारजहः वेनैनारिझवार ॥ इहनाइककोरूपसषीनाइक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कोंनिवेदनिकरनिहैसषीकोप्रयोजनप्रीनिकरवो॥सवैया॥सुंदरमैं
कहूंयेनोनिहपुरमैंइकनंदकुलारोइहै॥यामैंकहाकहनावतिहैक
छुप्रेमकोपंथनिरारोइहै॥नेकहरोषानिजाकिचलाइलैमोहिभ
रोसोनिहारोइहै॥रीफिवारहैनोहहगरीफेजुरैवहरूपरिफावनवारो
इहै॥टीका॥सषीकोवचननाइकाप्रती॥मोहिकहियेमोकोइसवात
कोभरोसोहै॥किनाइकुनेकोएकवारउकफिकैफांकिकहिएदेषिवे
रीफैगो॥काहेतेसोकहतिहै॥तेरोजहरूपरिफावनवारोहै॥ओकहवे
नैनाकहियेनाइककेनेत्ररिफावारहै॥समुच्चयालंकार॥हूतीकीउक्ति
परकियानाइकाप्रतिसीछामनिभावधनिकरिएवानुरागव्यंगिहै॥स
मालंकारकारणअंगकाजमेचहेश्रमविनुकारजसिद्धिचहै॥तथाः
जोगकोलषिसंगत्रिविधिसमालंकारअभंग॥५२॥मूलदोहा॥अरु
निउचिमहभीतिदैःउलविचितैचपलोल॥रुचिसोउहूंउहनकेःचू
मेचारकपोल॥इहजातिवर्ननस्वभावउक्तिनकीमनसाइनाइकाप्र
तीयासषीकोवचनसषीसों॥सवैया॥आजुउहूकोविलासअलीमैं
देरैदरसोकहतेनदिखावत॥नंदललाअनिहिहठकैव्रषभानकुवाः
रिकोपानषवावत॥ओठनसोंवियअंगुलिछ्वैसोनासिकाइकेनैननने
नमिलावत॥नासिकामोरिमरोरिकेभौंहकरैनियनाहिसोंसोसुष
पावत॥टीका॥सषीकोवचनसषीप्रती॥पाइनकीआंगुरीनकेभारः
सोउचेहूकेअपनोभार॥भीतिपैदेकेउलविकहियेलवहूकेलोः
लकहियेचंचल॥चमककहियेनेत्रनिनसोचितेकहियेदेषिवे॥रुः
चिकहियेप्रीति॥सोनाइकनाइकानेपरस्परचारुकहियेसुंदरजेः
कपोलनेचूमे॥जातिवर्ननसमालंकार॥जिनिलुछिनकीयाहसोः
सषीसषीसहकहतिहेदंपतिकेचुंवनअनुभावतेआनंदवमहर्षसः

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चारीतें संजोग सिंगार प्रगट परकीया नाइका है जाति वर्नन अलं॰
कार ॥ जाको जैसो रूप गुन वरनन वाही रीति ॥ तासों जानत स्वभावक
विभावत हैं करि प्रीति ॥ ५३ ॥ मूलदोहा ॥ रही पैज कीनी जु मैं दीनी
तुम्है मिलाइ ॥ राषहु चंपक माल ज्यों लाल हिये लपिटाइ ॥ इहनाइ
का सखी को लै आई है नाइक सों कहति है ॥ सवैया ॥ जाको प्र
मान के पुंजनि सों जगि जोति रही सभ जगली ॥ कोटि उपाइ निदा
इ निसों मिलई तुमको ब्रषभान लली ॥ मैं जु कही सु सही रही पैज मि
लैं रस केलि करौ सफली ॥ चंपक माल ज्यौं लाल लगाइ कै राषौ हि
ये यह रूप रली ॥ टीका ॥ सषी को वचन नाइक प्रती ॥ जो मैं तुम्हारे मि
लाइवे की पैज कहिये प्रतिज्ञा ॥ करी सो मैं तुमको मिलाइ दई ॥ तातें
मेरी प्रतिज्ञा रही कहिये पूरि भई ॥ लाल संबोधन है ॥ तातें तुम चंपे की
माल के समान नाइका को हिये सों लगाइ राषो ॥ उपमालंकार ॥
वा एह दूती की उक्ति उपपति नाइक सों नाइका परकीया उपमालंकार
उपमा अरु उपमेय मैं भेद परै न लषाता ॥ एचा कौ पद प जिहां दूरन उ
पमा सोइ ॥ ५४ ॥ मूलदोहा ॥ लाई लाल विलोकिये जिय की जीवन
मूलि ॥ रही भौन के कौन मैं सोनजुही सी फूलि ॥ इह नाइका को स
षी लै आई है नाइक सों कहति है ॥ सवैया ॥ जाहि विलोकिये प्या
री विहारी सम्हार तुम्है सभ भूलि रही है ॥ आई सु जीवनि मूलि वि
लोकियें तो हित सों अनुकूलि रही है ॥ बैठि दुकूल मैं अंग दुराइ
इत उनन की दुति फूलि रही है ॥ चौंधन लोचन भौन के कौन मैं
सोनजुही मानो फूलि रही है ॥ टीका ॥ सषि को वचन नाइक प्र
ति ॥ लाल संबोधन है ॥ जिय की जीवनि मूरि जो नाइका सो लाइ
कहिये आनी है ॥ सो विलोकिये कहिये देषिये ॥ सो नायका भौन

कहिये चूंबना के कौंन मैं सोंन जूही सी फूलि रही है ॥ उपमालंकार ॥ बा
ण इती को उक्ति उपपति नाइक प्रति नाइका परकीया अभिसारिका उक्ते
हा ॥ जहकी जति मैं भावना वस्तु है नफलमधि ॥ ५५ ॥ मूलदोहा ॥
नहि हरि लौं हियरा धरौ न हि हर लौं अरधंग ॥ एकत ही करि राषियै
अंग अंग प्रति अंग ॥ इह नाइका अनकूल है सोन [illegible] षि [illegible] वि
चारु जानीयें ॥ सवैया ॥ राषियै जो हरि लौं हियरा धसि और सवै अंग गहो
नउ षारी ॥ जौं हर लौ धरीयै अरधंग तौ एक हि और रवै है सुष भारी ॥ तो नै य
है जिय आवति है करियै नहि एक छिनौ विछुरन्यारी ॥ अंग मैं अंग मिलाइ कै
एक ही करि राषियै प्रान पियारी ॥ टीका ॥ सषि को वचन नाइक प्रति ॥ ह
रि कहियै विस्नु ता लौं नाइका कों हियै मैं मति धारो ॥ इस को यह मतलब है
की जैसैं विस्नु कै हियै मैं राषी है ॥ तैसें तुम नाइका कों हियै मैं मति राषो ॥ औ
र तुम हर लौं कहियै महादेव लौं अरधंग कहियै आधे अंग मैं मति राषो ॥ इ
स को यह मतलब है ॥ की नाइका के सब सों अपने सु मिलावो ॥ औ ना
इका कौं छाती लगावो ॥ उपमालंकार ॥ सषी हुती की उक्ति नैं परिहास नाइ
का को अभिलाष नाइका परकीया व्यंगि जो षंडिता नाइका की उक्ति है इहां
अधीरत्व नाइका स्वकीया नाइक सापराध वक्रोक्ति व्यंगि करि व्यंजति है ॥
उपमा उपमा अरु उपमेय ॥ ५६ ॥ मूलदोहा ॥ लहि हि सूनो ग्रह करगह न दि
षा दिषी की ईठि ॥ लगी [illegible] चित नाही करन करि ललचौ ही डीठि ॥ इहल
रति आरंभ नाइका जु क्रिया कीनी है ॥ सो नाइक सषी सौं कहतु है ॥ [illegible]
[illegible] जानीयें दशा [illegible] होइ ॥ सवैया ॥ हे विदिषाई की ईठ अचानक डी
ठि परी अकिली ग्रह मां ही ॥ साहस कै अपने उर मैं अति मो हित जाइ लही
गहि वांही ॥ लै मिस को गहु राइ करे उहि चंचल मैन कियें वहु चांही ॥
कै लल चावनि डीठ करी वह नाही ही यै तेहि रेवहुता ही ॥ टीका ॥ नाइक
को वचन सषी प्रति अथवा सषा प्रति ॥ सूनो कहियै मनुष्य न करिकै रह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नचरकोलहिकहियेदेषिकै॥ दिषादिषीकहियेदिषाभारीनाकीईठि
कहियेमित्रिनीजोनाइकानाकोकरकहियेहाथनाकोगहनकहियेप
करन॥ ललचौंहोकहियेलालचभरीजोडीठिकहियेदेषनौंनाकरि
कैनाइकाकोनाहीकरिवासोमेरेचितकोंलगो॥स्मृतिलंकार॥नाइ
काके[illegible]मेंसषीकैसषाप्रतिवचनअनुभाउस्मृतिसंचारीतेंप्रवासानुरा
गव्यंगिउत्तमकाम्यस्मृतिअलंकार॥५७॥मूलदोहा॥गलीअंधेरी
सांकरीभौभटभेराआनि॥परेपिछानेंपरसपरदोऊपरसपिछानि॥
इहगलीअंधेरीमैंकौंषकाभटभेराभयोहैसोपरस्परपहचानिपरे
दोऊआगमिलेहैंयहव्यंग॥सवैया॥ रैनअंधेरीचलैंहुमईछनहुमि
महातमपुंजछपहे॥ तैसीवैसांकरीलांबीगलीभटभेरअचानकदो
ऊभएहै॥ गातसौंगातहिंलागतहीजियजानिहियेलपटाइगएहै॥रा
धिकामाधौजूमाधौजूराधिकाआपुहितैपहचानिभएहै॥टीका॥स
षीकोवचनसषीप्रति॥ अंधेरीकहियेअंधकारयुक्तऔरसांकरीकहि
येसकरीजोगलीतामैंआइकेभटभेरीकहियेमिलापसोभयो॥दोऊक
हियेनाइकनाइकातेपरसकैसोपहिचानिकैपरसपरपहिचानेपरे॥इ
सकोयहमतलवहै॥ किदोऊअंगकौंछुकैपहिचानेगए॥उन्मिलिता
लंकार॥ सषीकीउक्तिसषीसांस्पर्शअनुभाउतेंशृंगारव्यंगिनाइका
परकीयाउन्मिलितालंकारहै॥उन्मीलितसोजानजह॥ सादृश्यव
स्तमिमिलाइपैपाइहइकभाउसौंभासैंभेदवनाइ॥५८॥मूलदोहा॥ह
रषिनबोलीलषिललनतिरषिअमिलसंगसाथ॥ आंषिनहींमैंहसि
धरौसीसहियेधरहाथ॥ इहबोधकहावनाइकाभैहापरकीयानाइ
काकौचतुराईसषीसषीसौंकहतिहै॥सवैया॥ ऊषिलसाथमैंदेषि
गुपालहिगोपकुवारिकरीचतुराई॥ वैनकुछूनकहैसपतैंलषिएक
लीमनौनिधनीनिधपाई॥ हाथधसौपहलंहसिकेहियसौंसछियै॥

रहतीतिवताई॥ औ षिनहींमैंकछुविहसीपियकौजियकीसभवान
कताई॥टीका॥सषिकोवचनसषीप्रति॥नाइकाअमिलकहियेउ
षिलजैऔरनाइकातिनकेसंगकोसाथनिरषिकहियेदेषिकैनाम
मैललनकहियेनाइकमाकौलषिकहियेदेषिकैहरषिकहियेखुसी
करिकैनबोली॥तबनाइकाअंषिनमैंहसिकैसीसकहियेमाथोता
परहियेपरकहियेछातीपरहाथधरयो॥इसकोयहमतलबहै॥कि
सीसकेछुवनेसौंगानिजनाइ॥औरछातीकेछुवनेसौंमाहादेवकीसौ
गंधषाई॥किमोकौमहादेवकीसौगंधहै॥मैंतुमकौंरातिकौंमिलौं
गी॥अथवामाथेपरहाथधरिकैप्रनामजनायो॥औरछातीपरहा
थधरिकैसोतुममेरेहियेमैबसतेहौ॥जहबतजताइवोबधकहावहै॥सू
क्ष्मालंकार॥सषीकीउक्तिसषीसौंपरकीयानाइकानेंहेवेरधरयोहै
तातैनिशिवकौसौगंदव्यंजितहै॥सूक्ष्मालंकार॥सूक्षमपरआसेल
षैसैननमैंकछुभाइ॥५५॥मूलदोहा॥सरससमिलजोचिततरंगःक
रिकरिअमितउठान॥गोइनिवाहैजीतिये:षेलुप्रेमचोगान॥हहूस
षीनाइकाकोअभिलविवीरहतावनावनिहै॥अरुप्रेमप्रयोजननाइकेसें
मिलायवकानोचापतिसषीकोवचननाइकासों॥कवित्त॥सरसतुरं
गचढिवहमिलुविमलचितताहिचढिसौतेंसोचुटकचलाइवौ॥लो
कलाजवागसोंधिहठअनरागकरिआरितउठावनिनकरिकरिधा
इवौ॥कहैकविकुसअभिलाषछुरीहाथगहिगोइनिरबाहैनबजी
तिपदपाइवौ॥षेलिवौकठनयहप्रेमचोगानषेलचतुरषिलारमैन
नृपतिरिझाइवौ॥टीका॥सषीकोवचननाइकाप्रती॥सरसमिलजो
चित॥सोईभयोतुरंगकहियेघोरा॥ताकेअमितकहियेंबडेउठानक
रिकै॥गोयकहियेंमित्रताकोनिबाहिकैप्रेमरूपीजोगनताकोषेलु
जीतियें॥रूपकाअलंकार॥इतीसषीकीउक्तिसीछाभावधनिताना

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

151

विहा॰
१५२

इका परकीया रूपकालंकार॥ उपमान रु उपमेय मैं भेद परै न लषाइ॥
ता सौं रूपक कहतु हैं सकल सुकवि समुदाय॥ ६८॥ मूलदोहा॥ दा
ऊ चोर मिहीचनी षेल न षेलि अघात॥ दुरत हियें लपिटाइकैं छु
वत हियें लपिटात॥ कृष्णा निवर्तन सषी को वचन सषी सों॥ सवैया
पाइन हो पैवनै दिन को गन औसी कहूं अबलौं न लही है॥ ऊष घरै
आनि चाइ भरै निसद्यौस रहै उमहै चित हो है॥ चोरमहीचनी षेल हि
षेलत कौं न कहूं भांति अघात न हो है॥ जो दुरे तो उर सौं लपटाइ कै जो
छुवै तो लपटे उर ही है॥ टीका॥ सषी को वचन सषी प्रति॥ दोऊ कहियें
नाइकु नाइका॥ ते चोर मिहीचनी कहियें आंषिमीचुना॥ ताको षे
ल षेलि कै न हो अघात है॥ हियें मैं लपटि कै छिपत है॥ और जब छु
वत है तब हियें मैं लपटत है॥ विशेषोक्ति अलंकार॥ उक्ति सषी की
सषी सौं दंपति कै क्रिया अनुभाव रु षं संचारी संयोग श्रृंगार नाइका ल
छिता है परकीया विसेषोक्ति अलंकार॥ सब कारन काज न सरै उक्ति
विशेष सु हो यें धरैं॥ ६९॥ मूलदोहा॥ सुनी तिय चलत सुभाइ है
उही पैरा सिर हनाह॥ लसी नमासे की हरा नि: हासी सहवनि माह॥
यहु नाइका मंदिमा लै सो सषीया की चेष्टा सषी सों कहै॥ सवैया॥
बैठी हुती अति ही दिन सौं अपने गृह मध्य सषीन सभासी॥ ताछवि
कौं वरनैं कवि कोक विकल्प कहै वचनान प्रकासी॥ चौंन कहो सु
न पाइ न वै पियवो रूप रासि न को घरवासी॥ नैननतैं अरु वा हिं चलप
पुनि आननतैं निकस्यो सुष हासी॥ टीका॥ सषी को वचन सषी प्रती॥
तिय कहियें नाइका॥ सो ना रु कहियें नाइकु सो परासी के घरको वाफ
दे कै चले सुनि॥ ताके आसुन मैं नमासे की नेत्रन की डुलसी कहि
यें पसो हि निभई॥ नाइका मंदिता भासती है॥ प्रकर्ष नाम अलंकार॥
उक्ति सषी की सषी सौं परकीया नाइका के हरषोदय विषादाभास॥ प

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हर्षणालंकार॥ बिनाजतनवंबितफलहोइ॥ पहिलोंभेदकहतस
बकोइ॥ इछितहुतैंअतिफललहै॥ दूजोभेदसमतियहकहोजा॥
कोजतनतंहुँढियतहोइ॥ वस्तुहाथआवैकुनिसोइ॥ त्रिविधिप्रह
र्षणजानोमित्र॥ लछनलषिअवधारोचित्र॥ ६२॥ [illegible]॥ मैं
लषिनारीज्ञानः करिराष्यौनिरधारजहु॥ वहईरोगनिदानः वहैवैद
औषदिवहै॥ इहलगनिसषीकोवचनसषीसोंअंतरंगसषीकोकहि
वोहैअथनाइकोअघवानाइकाअपनीअंतरंगसषीसोंकहै॥ सवै
या॥ काहूकोहोरिचिनेहुतनमाहुहृष्याउपचारनकोननवारौ॥ मैंल
षिनारीकह्यौनिरधारलहैयहभेदनवैदविचारौ॥ जाकोस्वरूप
भयाउरमैंकिनिताहिदिषाइविथापरटारौ॥ औषदवैदवहैउपचारव
हैगुनिरोगनिदाननिहारौ॥ टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रति॥ नारी
कहियैंनाइका॥ अघुवानारीकहियैंनाइिका॥ ताकोज्ञानदेषिकैम
नेजहुनिरधारकरिराषोहै॥ वहईकहियैंनाइकुरोगकोआदिकारन
है॥ वहैकहियैंनाइकुसोवैदुहै॥ औरवहैनाइकुऔषदिहै॥ लाटानु
प्रासः॥ परकीयानाइकाकोएवानुरागलछितकीयोहैसोसषीसषी
सुंकहतिहै॥ यातैंहेतुलछिताकहियेउभयावर्नदीपकालंकार॥ व
हीअरथपदफिरपरैभिन्नभाउकछुहोइ॥ सोलाटानुप्रासहैकहत
सयानेलोइ॥ उपमावस्तुउपमेयसोंइकपदलागैजाइ॥ तासोंदीपक
कहतुहैसुमतिसकविसमुदाय॥ ६३॥ मूलदोहा॥ नहिअन्हाइनहि
जाइघरः चितचहुंच्योतकितीर॥ परसिफुरहरीलेफिरतिः बिहस
तिधसतिननीर॥ इहजातिवर्ननननाइकापरकीयाक्रियाविदग्धास
षीकोवचनसषीसों॥ सवैया॥ न्हाइबेकोजमुनागईबालनहांव
निताननिकीहैअतिभीरौ॥ तौंहींअचानककुलकहैकहुँडीठपर्यौ
नटनागरनीरौ॥ चाहिचुभ्योचितन्हाइहकौनगयोनहिजातकपी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निहा॰
१५२

152

लसमीरे॥ अंचुलनीरभरैमहिआरतिनाकसकोरिकैहैजलसीरो॥
टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ अकुलातिनहीहै॥ औरचरहै
नहिजातिहै॥ नाइकाकोचितनीरकहियेकिनारेमैनाइककौन
किकहियेंदेषिवेंचहुंद्योकहियेलागेहै॥ जलकोपरसिकहि
येंहवैकैफुरहरीलेकेफिरतिहै॥ विहसतिकहियेंहसतिहै॥ नीर
कहियेंपानीनामेंधसतिनहीहै॥ जातिबर्ननामअलंकार॥ जिम
सषीलछिनकरीहैसोसषीहूंकहतिहैनाइकाक्रियाविदग्धापर
कीयानाइकुनिकवाधत्यहै॥ विलासहाव॥ जातिवर्ननअलंका
र॥ जाकौजैसोरूपगुनवरननतवाहीरीति॥ तासोंजातसुभावक
विभाषतहैकरिप्रीति॥ ६४ ॥ अथदोहा॥ सषपषारिमुंडहकभि
जैःसीससजलकरन्हाइ॥ मोरउचैघोरेनिचैः नारिसरोवरन्हाइ॥
इहजातिवर्नकविकीउक्तिजानीयें॥ सवैया॥ वैठिकेतीरपषा
रिकेआननहाथभिजेजलकेसरिछैवे॥ हंसकहैकरसोंउरसा
इकथाधसोसीसकोचीरभिजैकें॥ ह्रकुरपंकजदोऊषपधरिमो
रउचेकरषीनुलचैकें॥ मोव्रजवालसरोवरन्हातिमहाछविसों
घरवातिननैकें॥ टीका॥ सषीकोवचनकेनाइककोवचनसषी
प्रतीकैसषाप्रती॥ मुषकोपषारिकहियेंधोइकैमुंडहलकहिये
सीसकेतरेताकोभीजैकेसजलकहियेंपानी॥ सहितकरकै
हियेंहाथनासोसीसकहियेंमाथोताकोन्हाइकै॥ मोरकहियेंम
रवातिनकोउचौकरिकेंघोरेकहियेंजानुतिनकोनीचोकरिकरि
कै॥ नाइकासोसरोवरमेंइहभांतिसोंन्हातिहै॥ जातिवर्ननअले
कार॥ उपपतिनाइकाकीउक्ति॥ सात्वानदर्शनवचनअनुभाउतेह
बोनुरागवंगितभरयोहत्रमतनाइकापरकीयाकहीयेजातिवर्ननं
६५॥ मूलदोहा॥ विहसतिसकुचतिसीदियेंः विचबाचरकुचवा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

है॥ भीजे पटनि कौ चली: न्हाइ सरोवर माह॥ इहां जाति वर्नन को विकीउ
कि सषी नाइका की सोभा नाइक को दिषाइवे को कहति है। नायक संभ्रमे॥ स
वैया॥ देव दिवाकर को कर विंदन हू सकहै मनकों मैं मनावति॥ वारुदी
ये उरवक्षे चल बीचल जाइ हियें हसि वैन निवावति॥ भीनि दुकूल र
है लपटाइ महा छवि कंचन सैननन छावति॥ यों ब्रजनागरि हू पउ ज्ञाग
रि न्हाइ सरोवर तीर को आवति॥ टीका॥ सषी को वचनु सषी प्रती अथ
वा नाइक को वचन सषी प्रती॥ नाइका विहसति कहियें हसति है॥ सकु
चति कहियें लाज करति है॥ कुचनि पे आंचर के उपर वांह दे कै॥ भीजे
पट कहियें वस्त्र ता सौं नाइका सरोवर कहियें ताल॥ तामें न्हाइ कै तट कौ
कहियें किनारे कौ चली है॥ जाति वर्नन अलंकार॥ जिन सषी लछिन क
री है सो सषी सौं कहति है॥ अथ भाव सम्मिलित अनुभाउ ते हर्ष संचारी शृंगा
र रस उपजति निकट नाइका परकीया बोधक व्यंगि करि सूझि जिन है॥ ललि
त हाव जाति वर्नन॥ ६६॥ मूल दोहा॥ चितवन जिनवन हियें: कि पतीरी
छै नैन॥ भीजे तन दोउ कपै: कैयों हू जप निवैन॥ यह दोऊ पर स्पर स्वसक्त है
सज्ज पुरत है सषी सषी सौं कहै नाइका परकीया॥ कवित्त॥ जमुना के तीर
रन नारिन की भीर भारी नद पिनिरषे विन हरषे रहे न है॥ कहूं कविकु
ल चित चौपसौं पगनि अनि प्रीति सौं लगनि उमगन मन मैं न है॥ यों ही
दिन वीत वन दियह तजिन वन चितवन चाइ सौं निरेछै की यैनैं न है॥ भी
जे पट कंपतन काहू ने चेपन दोउ अधिक जंपन वैयों हू जप निवरै न है॥ टी
का॥ सषी को वचन सषी प्रती॥ दोऊ कहियें नाइक नाइका तिरीछे नैन क
रिकै पर सपर चितवन कहियें देषत है॥ आक हियें मैं प्रीति हिंनजो तिस
को चितवन है जिनाउत है॥ इस भांति भीजे तन कहियें भीजी देह सो दोऊ
कांपत है॥ कैयाहू कहियें कै सेहू जपि कै निवरत नहीं है॥ जाति वर्नन अ
लंकार॥ जिन लछिता कीयौ है ताकौ उक्ति दंपति कै कटाछि विछेप अनु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

153

बिहा.
१५३

भाउतेंअनुरागव्यंगिपरकीयानाइकाजातिवर्ननं॥ जाकौजैसोरूप
गुनवरनतवाहीरीति॥ तासौंजानतस्वभावकविभाषतहैकरिप्रीति॥
६७ ॥मूलदोहा॥ देवरफूलहनेजुमिसुउठेहरषिअंगफूलि॥
हासीकरतऔषदिसषीदेहददोरिनभूल [illegible]
[illegible]दितादेवरसोंआलंबि[illegible]
[illegible]संचारी॥सवैया॥ षेलमैंदेवरनेकरकेवेजहीफूललगेनव
लातन॥ आनंदपुंजउमंगनहीमनिफूलिउठेअतिकोमलगातन॥
देहददोरनिभूलिअलीउपचारकरैलहैभेदकीवातन॥ जानतिजो
तियकीवतियारसविज्ञतियाहसहैरतिजानतन॥टीका॥ सषीकोवच
नसषीप्रती॥ मिसुकरियेबालकजोदेवर॥ पतिकोभाई॥ तानेफूल
नाइकाकेमारे॥ तासौंनाइकाकेअंगफूलिउठे॥ सषिनकौदेहमैंददो
राकोभूलिकै॥ औषदीकरतनाइकाहसी॥भ्रांतिअलंकार॥ सषी
कीउक्तिसषीसौंपरकीयानाइकाहर्षसंचारीतेंअनुरागव्यंगि सषी
केभ्रमभ्रांत्यअलंकार॥ भ्रमचित्तहोतआइभ्रमवनसंभ्रांतिगाइ॥ ६८
मूलदोहा॥ औरसवैहरषीफिरैंगावैभरीउछाह॥ तूहीवधुविलषीफि
रैंक्योंदेवरकेव्याह॥इहनाइकापरकीयागुरजनकोवचनदेवरसों
प्रीतियहव्यंग॥सवैया॥ एसवसाजअनेकसिंगारवनीठनीडोलैंउ
लासउमाहै॥ गावैहसैंहरषैवरषैसुषकाहूकीसंकधरैचितनाहै॥
भौनमैंमंगलसाजधरेवहसोहूलहैसवजोचितचाहै॥ देवरकेइहि
व्याहकहाविलषीसीतूडोलषियेकहिकाहै॥टीका॥ सषीकोवच
ननाइकाप्रती॥ औरसवैनाइकाषुसीफिरतिहैं॥ औउतसाहभरीगा
उतिहैं॥ वधूनाइकाकोसंवोधनहै॥ देवरकेव्याहभएतेंतूक्यौंविल
षीफिरतिहै॥ इसकहनावतिसों॥ नाइकाकीप्रीतिदेवरसाथव्यंजित
होतीहै॥मूढोक्तिअलंकार॥ सषीकोउक्तिपरकीयानाइकाप्रति

विषादसंचारीतेंअनुरागव्यंगि॥ गूढोक्ति॥ गूढोकतिमिसअंतरकैकी
जेपरउपदेश॥ ८४॥ मूलदोहा॥ वसिसकोचदसवदनवसः साचुदि
षावतिबाल॥ सियजोसोधतिनियमनकिः लगनिअगनिकीज्वाल
॥ अंतरवा [illegible] गनेंहीहकीअधिकाईहैयातेंअगनिमईहै
[illegible] कनिहै॥ कवित्त॥ जादिनतेंललचैपान
वेहमनभावनसोंतादिनतेंमैनकोमरूरनिमरनिहै॥ त्रासगुरलोग
निकेसासनसकनिभरएकआसलागीनिसवासरभरनिहै॥ वसनि
सकोचदसवदनकेवसयातेंकछुनवसानिध्यानपतिकोधरतिहै॥ ल
गनिकीज्वालनिमेंबालनिजदेहहूकोसियालोदेखवहूहोसोधन
करतिहै॥ टीका॥ सखीकोवचसखीप्रती॥ अथवाइकप्रती॥ बालक
हियेंनाइका॥ सोसकोचकहिलाज॥ सोइभयोदसवदनकहिरा
वन॥ ताकेवसमेंवसिकेअपनोसाचदिखावतिहै॥ नियजोनाइकासोसि
यकहियेंसीताकेसमानलगनिजोहैसोइभईअगनिकीज्वाल॥
तामेंतनुकैहअपनीदेहताकोसोधतिहै॥ उपमाअलंकार॥ स्वानु
रागसखीकीउक्तिसखीसोंविषादकरि॥ रूपकउपमाकोसंकर॥ इति
साधारणपरकीया॥ अथअनुसयाना॥ ७०॥ मूलदोहा॥ फिरिफिरि
बिलखीहैलखतिः फिरिफिरिलेतिउसास॥ सांइसिरकचसेतलैः बी
नोचुनतकपास॥ इहनाइकाअनुसयानाहैसहेटकीठौरबीतिजातवि
बिलखतिहै॥ सोसखीसखीसोंकहतिहै॥ कवित्त॥ वालमकेसि
रकेसिरोरुहज्यौंसेतभैसेंलेतिचुनिचुनिसिरधुनिमुरझातिहै॥ बी
नतिहैंतूलअैयेंसूलसंसलतहियेंमानितुषमूलफूलजिमिकु
मिलातिहै॥ वारवारकहतअलीसोंकैसीभलीरतिकेविलासकी
थलीयोंचलीजातिहै॥ विलखीविलखिकेउसासैंलेतिबालवधूल
खिवनवीथिनमनअनिअकुलातिहै॥ टीका॥ सखीकोवचनसखीप्र

154

प्रि.टी. १५४

नी ॥ फेरि फेरि बिलषी कहिये दुषी है कै लषनि कहिये देषनि है ॥ सो
रूपे रिफे रिउरमझलेनी है ॥ सांई कहिये नाइका ताके माथे के सपेद के
सलो ॥ कपास को चुगन नाइका को यह हास भयो ॥ इसको मत
लव है ॥ कि जैसें नाइका को सेतके सचुनावत देषि के [illegible]
षिन होती है ॥ तैसें कपास को चुगनदेषि के नाइका मुसें दुषित होती ।
है ॥ इस कहनावति सो ॥ वर्तमान स्थान विघटना नु सयाना नाइका
जानिये ॥ उपमाअलंकार ॥ सषी को उक्ति सषी सौं नाइका वर्तमान
स्थान विघटना अनुसयाना ॥ परकीया उत्तम का अउपमालंकार ॥ ।
उपमा अरु उपमेय साधारन वाचक हे ॥ एचारो पद एत्रिहाँ पूरन उ
पमा सोइ ॥ ३१ ॥ [illegible] ॥ मन ह को बीतो वनो : उषो लई उषारि ॥
हरी हरी अरहर अजौं : धरु धरहरि जियनारि ॥ इहनाइका अनसया
भाई केतकी ठौर जात जानि सो चकरति है सो सुषी समाधान करि
ति है ॥ अनुसैना ॥ सवैया ॥ बीनन फूल सहेली के संग चली मृग लोच
नि मोद भरी है ॥ केलि थली उजरी अवलोकि उसास भरी अलि सो
उचरी है ॥ बीति गयो बनसरको पास नो अरु उषो उषारि लई सगरी है ॥
यौं हरे मति धीर धरो अवहौ तो अरहरि प्यारी हरी है ॥ टीका ॥
सषी को वचन नाइका सो ॥ नारी संबोधन है ॥ मन को जो षेत सो स
बै गयो ॥ और वनक हियें कपास सो बीति गई ॥ ऊष कहियें कमा
दी ॥ सो उषारि लई ॥ हरी हरी जो अरहरा ॥ ता में तूं अपने जिय में धर
हरी कहियें धीरजता को धर ॥ इसको यह मतलव है ॥ कि जद्यपि ते
रे संकेत के ठौर दूरि भए है ॥ तथापि अरहर को वन भलो संकेत है
अथवा सनी कहै सनी चर कोन छत्र सो बीतो कहे अस्त भयो ॥ ।
सहकर कहियें सक्र कोन छत्र सो वनाक है उदै भयो ॥ और ऊष क
हियें प्रात समै ॥ ताउषारि कहै उतपति भई ॥ इसको यह मतलव

है ॥ कि भौर भयो ॥ सो हरी श्री कृष्ण तिन अपनी अरक छिपाई ॥ सो हृ
री कहियें नजी ॥ तातें तें अपनी अरु कौ न जु ॥ सो अपनें जियमें जिय
में धीरज धरु ॥ इस अर्थ सो नाइका मानवती जानियें ॥ टीका अनुप्रा
स ॥ अनरवञिनी सषी की उक्ति परकीया नाइका सों नाइका अनुस
याना वर्त्तमान स्थान विघटन है अन प्रासवी चन पद्र ष पद जि हा अ
ष रस मना होइ ॥ सो हृ स्थान प्रास है कहत स्याने लोइ ॥ ७२ ॥ मूलदो
हा ॥ केलि करै मधु मत्त यह: चन मधुपनि के पुंज ॥ सो तू न करि तो सा
हरे: सषी सघन वन कुंज ॥ यह नाइका संकेत थली को प्रभाव कहति है अ
नुप्रा ॥ सवैया ॥ केलि करैं मधु मत्त भये अलि देषति है हषहोन घनेरा ॥
सो जियमें सोच रहे निसवासर या विछुरेगन हौन सकेरा ॥ याम निकेत
षिउन्न है रहै कस्र कवी मन धीरज फेरा ॥ तो सम हारी रि विराजत चैनें कुं
ज चितन तोव चमानन है मेरा ॥ टीका ॥ सषी को वचन नाइका प्रती ॥ मधु
कहियें पुष्परस ॥ तासों मत्त कहियें मतवारे भए हैं जे भौर ॥ तिन के सम
ह नै जहां क्रीडा करत है ॥ सषी नाइका को संबोधन है ॥ तेरे साथ में सघ
न कहियें घने वनमें कुंज है ॥ तातें तूं साच मति करि ॥ इसको यह मत
लब है ॥ कि तेरे साथ है संकेत भले है ॥ काव्यलिंग अलंकार ॥ सषी की
उक्ति भावि स्थान संकेत हा अनुसयाना परकीया सों काव्यलिंग अलंका
र ॥ अर्थ समर्थन कीजिये जहां युक्ति सो मित्र ॥ काव्यलिंग भूषन तहां
भाषत बुधि चित्र ॥ ७३ ॥ मूलदोहा ॥ छरी सपल्लव लाल कर: लषि तमा
लकी हाल ॥ कुम्हिलानी उर माल धरि: फूलमाल ज्यों बाल ॥ यह नाइ
का संकेत विषें नाइकें किस्या यो सो नाइकानें देष्यो सो सषी सों कहति है
संकेत स्थल को चिह्न लषि ॥ सवैया ॥ सुंदर राजत कुंज महा घन गुंजत
भौरन की अवली है ॥ हस्त कहै वहु फूल भरे द्रुम डारि रही झुकि भूमि
ढनी है ॥ लीनें छरी कर पल्लव सो भर वा द्रुम की जन माल बनी है ॥ यों ल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

षिवैकुललाइगईसषिमालनिमालज्योंबालबनीहै॥टीका॥सषी
कोवचनसषीप्रती॥सपल्लवकहियैंपातनिसहितनमालहहलकी
छुरीकहैडारी॥नाकौलालकहियैनइक॥नाकेहाथमैनतकाल
कोदेषिकै॥बालककहियैनाइका॥सोउवकहियैंहिया॥नामेंमाल
कहियैंदुषनाकौधारिकै॥फूलनकीमालाकेसमानकुम्हिला
नी॥इसकोयहमतलबहै॥किनाइकसंकेतमेंहुँआयोमैंनगई॥या
तेदुषीभई॥रूपकमउपमाअलंकार॥जिनलछिनकरीहैसषीकी
उक्तिसषीसोंनाइकाश्वानधिरतिस्वलरवनगवनानुमानानुसया
नापरकीया॥सहमालंकारहै॥सरूपमपरस्यासेलषैसैंननिमैंकछुआ
ई॥२४॥इतित्रिविधअनुसयानावर्णनं॥अथलछितावर्णनं॥मूलदो
हा॥सुरतिदुराईदुरतिनहि:प्रगटकरतिरतिरूप॥छूटेपीकऔरेउ
ठी:लालीओठअनूप॥इहतरतिकेचिह्नदेषिसषीनाइकासोंक
है॥परकीयानाइकाजोसषीसोंकहैतोअन्यसंभोगितदुषिताहो
इ॥सवैया॥भूषनचारुबनाइसजेचकफूलगुहेफिरिआइबनाई॥
स्नानकहंपलटैपटराधिकेलीककपोलकीपोंछिकैआई॥रतिक
हैरतिरंगकीभांतिअनूपमकानिदुरैनदुराई॥पानकीपीककछूटेअध
रानिपैऔरककुप्रगटीअरुनाई॥टीका॥सषीकोवचननाइकाप्रती
केसषीप्रती॥दुनिकहियैंसोभासोछिपाइछिपतिनहींहै॥रतिकहि
यैंमैथुन॥ताकेरूपकोप्रगटकरतिहै॥पीककेछूटेतैंओठमैंअनू
पमलालीउठीहै॥इसकोयहमतलबहै॥किनाइकनैनाइकाके
ओठचूमेहै॥तातेपानकीलालीमिटिगई॥किकाटेतैंअधिकलाली
झलकी॥भेदकातिसयोक्तिअलंकार॥सषीकीउक्तिसषीसोंसुरल
छितानाइकाभेदकातिसयोक्तिअलंकार॥औरैयहपददीजियेंअधि
काईकैहैनअतिसयोक्तिभेदकयहै॥कहुतनसुकविविचारतैन॥२५॥

दोहा ॥ रह्यौ दहेंडी ढिग धरी नई मथनिया वारि ॥ उलटी करिकै रतिरई ः
नई बिलोवनहारि ॥ इह सषी को वचन नाइका सौं है अथवा सषी हू सौं कहै ॥ स
वैया ॥ पास दहेंडी धरी येरही जलसौं भरिकै नई मथानी लई है ॥ यांभ सौं
नेतीलपेटि लई उलटी करिकै रतिता मैं रई है ॥ सो हितो लागतिनी को
महाउर हरन प्रेमपुतीनि भई है ॥ सांवरी सूरति को रिझवारि नई तूं बिला
वनहारि भई है ॥ टीका ॥ सषी को वचन सषी प्रती ॥ दहेंडी कहियें दही
को पात्र ॥ सो हिग धरी रहैं ॥ मथनियां कहियें रही बिलाइबे को पात्र ॥ १
सो वारी कहियें पानी सौं भरी ॥ इसको यह मतलब है ॥ कि नाइका नाइ
क कौं देषिबे के रतिक हि बिलोवति है ॥ असंगति अलंकार ॥ सषी १
की उक्ति सषी प्रति है नलक्षिता की यो हैं सो कहति है ॥ नाइका के कृया
अनुभाउ मोह संचारी ते एवानुराग व्यंग्य अरु चैविनपता के सरतिनभ
ईवे नाइक देष्यो है यह ध्वनि हीनै बोधव्य है ॥ असंगति अलंकार ॥ औ
रठौर ही को ज्ञिये औरठौर को काम ॥ कहत असंगत हू सु सो कवि पंडित
मतिधाम ॥ ७८ ॥ मूलदोहा ॥ कोरि जतन कीजै तऊ ः नागरि नेह दुरैन ॥ क
हे देत चित चीकनो ः नई रुषाई नैन ॥ इह नेत्र देषि सषी नाइका सौं क
हति है ॥ लक्षिता नायिका ॥ सवैया ॥ नैमन मोहन सौं मिलयो मन मैं न
वही छबि दीह लषि पाई ॥ रूठ तितो हि कियें हित मानिक मो सों चला
वति तूं चतुराई ॥ कोरि उपाइ करौ कि नि नागरि नेह को डीठ दुरै न दुराई ॥
नैनन मांझ रुषाई नई यह देत कहै चित की चिकनाई ॥ टीका ॥ सषी को
वचन नाइका प्रती ॥ अथवा सषी प्रती ॥ कोरी जतन किए ॥ तऊ नागरि १
कहियें चतुर नाइका ॥ ताको नेह छिपत न ही ॥ अथवा नागरि सबोध
न है ॥ नेत्रन कि नई रुषाई चित को चीकनो वो कहदेती है ॥ विभावना अलं
कार ॥ सषी की उक्ति नाइका प्रति अवहित्था संचारी करिके कहति है वि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

156

विहा·
२५६

भावनालंकार॥ काकुकारमैंजहांकारिजहोइ विरुद्धपचश्रौभेद विभा
वनाकीभाषतमतिशुद्ध॥मूलदोहा॥ पूछेवैताहसषीपरतिः सगिवति
रहीसनेह॥ मनमोहनछविपकटीः कहैकहीलीदेह॥इहनाइका
लछिताहुपाईवारिकैसषीसोंदुरावतिहै॥पैरोमांचदेषिसषीप्रगटकरति
है सषीकोवचननाइकासों॥सवैया॥ पूछेतिवैवीवहरावतिवातनकहां
तैंअनोषीरुषाईतैंठानी॥प्यारेकेप्रेममैंपागिरहीअवहोनकहांमक
रैयहजानी॥ वैसेंउरअंतरकीदुरैप्रीतिसनेहकीरीतिरहैनछिपा
नी॥ तैंमनमोहनकीछविपैजुकटीसुकहैयहदेहकहानी॥टी
का॥ सषीकोवचननाइकाप्रती॥ तूपूछेतेवैताहसषीपरतिहै॥ तूंसने
हकहियेप्रीतिलासोंसगिवतिकहियेभीजिरही॥ तेरीकहीलीक
हियेरोमांचिजोदेह॥ सोमनमोहनजोश्रीकृस्नताकोछविपरक
टीकहतिहै॥काव्यलिंगाअलंकार॥ सषीकीउक्तिनाइकाप्रतिलछि
ताकोयोंहैहेतुसर्वानुरागअवहिथासंचारीरोमांचसात्विकअनु
भाउतैंलछितानाइकाहै॥ काव्यलिंग॥ अर्थसमर्थनकोजियेज
हांयुक्तसोंसित्रकाव्यलिंगभूषनतहां॥भाषतबुद्धिविचित्र॥२८
मूलदोहा॥ मैंजहंताहीमैंलषीः भगतिअपरववाल॥लहिप्रसाद
मालाजुभौः तनकदंवकीमाल॥इहसात्विकभावसषीकोवचन
नाइकासों॥नाइकापरकीयालछिता॥सवैया॥ कोरिकवारिनप्रेम
पगीरंगिलालनकेरंगलालभईहै॥ कौनछबीकीछविदेषिगुपाल
कीकोववितानविहालभईहै॥मैंनिरषीयहूतोतनआजअपरव
भक्तिरसालभईहै॥ मालप्रसादकीपावतहींसभदेहकदंवकीमाल
भईहै॥टीका॥सषीकोवचननाइकाप्रती॥ वालसंवोधनहै॥ मैंय
हतोमैंअपरवकहियेंनवीनभगतिलषिकैहैदेषी॥ नाइककेप्रसा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दखि दियें प्रसन्नता॥ ताकी जो माला ताकौ पाइकै॥ तेरी देह कदंबकी मा
ला भई है॥ इसकौ यह अनलव है॥ कि तेरे रोमांचित भई है॥ रसवत अ
लंकार॥ उक्ति सषी की परकीया नाइका प्रति अरु एवपद में रोमांच सिं
गार ही के जानियें॥ भक्ति पद तैं सांतरस वतालंकार है॥ यामें गुनी
भूत व्यंगि कहत हैं मध्यम काव्य है पकातिसयोक्ति॥ उपमान कि उपमे
यतें॥ उपमान कि उपमेय॥ ग्रहन करो न ह रूपका त्रतिसयोक्ति लषि
लेहु॥ २४॥ मूलदोहा॥ पलन चलै जकि सी रही॥ थकि सी रही उसास॥
अब ही तन रितयो कहै॥ मन पठयो किहु पास॥ इहु चित्र लगनि सषी
नाइका सों कहति है॥ कवित्त॥ सास न उसास अति है वास की सलाह तैन अ
सी है कैं कौन के धोंहि न में दिनै रही॥ कि तहे री तेरो मन री तो सों लगन
मन अव ही तो रहे षि बुधि कहि वैसो बिनै रही॥ चित्र की सी लिषी उरीज
कि न अचेत भई पलकन गति भूली चकित चितै रही॥ कहूं हेरि हेरी म
ति विसरी सबै हरति हो तो तेरी यह गति देषि थकित रही॥ टीका॥ स
षी को बचन नाइका सों॥ तेरे पलकन ही चलत है॥ अरु तन की सी कहि
यें स्तम्भ सी है रही है॥ अरु तेरी उसास थकी सी कहियें चंद सी है रही है
अब ही तैं तन कहियें सरीर सो रितयो कहियें षाली कियो॥ सो तें अ
पनो मन किस पास भेज्यो है॥ लुपतोत्प्रेक्षा अलंकार॥ सषी को उक्ति पर
कीया नाइका सों है यतो स्मरति संचारी स्तंभ सात्विक भों पूर्वानुराग व्यंगि
सो है इतो स्मरति संचारी स्तंभ सात्विकतें पूर्वानुराग व्यंगि सों लछित॥
कीयो है या तें है लछिता नाइका अथवा परिहास करति है॥ अन्योहा
नहू की जनि संभावना॥ ८॥ मूलदोहा॥ रहु मुहु फेरि कि हेरि उतः हित
समुहे चित नारि॥ डीठि परत उठि पीठि कैं पुलकैं कहत पुकारि॥ इह
नाइका परकीया स्वेद हराइबे को पीठि दै बैठी येरी मांच पीठि पै भए तें देषि
हु सषी कहति है॥ लछिता॥ कवित्त॥ हित कौ निरषि पुहु रषे हित

कौमनहूमनोंपसैरोईतनुप्रेमकोसनितिको॥ तिन्हैंतूंसुभावतिहै।
बानवहूगावतिहै।काहेकौदुरावतितिनवेलीनेहूनीतिको॥ भावैइतहू
रिभावैहूरिसुहूफेरितिरैराचितसन्मुषवीसविसेंरसरीतिको॥ डीठि
केपरसहीतेंउठीयहूपीठिपैपुलककाँतिप्रगटकहूतितेरीप्रीतिको
टीका॥ सषीकोवचननाइकाप्रती॥ तूंसुषकोपेरिषदु॥ तूंकैतरहि
तसैंउहानैआछेचितसोंसमूहैकहियेंसनमुष॥ फेरिकहूदेषिबा
इककौदीठिपरसकहूदेषत॥ उठोंजोपीठिकोरोमाच॥ सोहितकहि
येंप्रीतिताकोप्रकारनहू॥ विभावनाअलंकार॥ सषीकोउक्तिनाइ
कासेंपरिहासपूर्वककहूतलछितकीयाहेंमानाभासविभावनालं
कार॥ कारनबिनुहीकाजको॥ उदयहोइजिहिठोर॥ पहिलोभेद।
विभावना॥ कोकहिकविसिरमोर॥ ८१ मूलदोहा॥ नहिनसोंसरसा
वितभई:लुटीसुषनकीमोट॥ चुपकरियेंचारीकरतिःसारीपरी
सरोट॥ इहतरतिकोअनरगजीसारीदेषिसषीनाइकासोंकहतिहैल।
छिताजानीयें॥ कवित्त॥ रसकीउमंगभरीरंगभरीसोहतिहैंअंगकी
सिथलगतिश्रमजलछाईहै॥ हूमतिडुकतिअरगानिकसुहाति
मसिकातितिअरसातिसरसातिज्योंतिकाईहै॥ मोटैलुटीसुषकी
प्रगटभईतेरेसीसवैंनातेंमुकरतिमनमथुकोउहाईहै॥ अबचुप
करिराधेएतैतोकरनचारीजेतेआजसारीमैसरोटपारिआईहै॥
टीका॥ सषीकोवचननाइकाप्रती॥ तूंनटितकहियेंमुकरतिः
तैजोसुषकीमोटैलुटीहेतेतेरेमाथेपरसाविनभई॥ भईकहेजा
हरभईहै॥ तातेचुपकरिरहुकहेबालमतीनेरीसारीकहियेंअरहनी
तामैपरीजेसरोटकहियेंगुजलीतेचारीकहियेंचुगिलीताकोकर
तिहै॥ लोकोक्तिकाव्यलिंगअलंकार॥ सषीउक्तिपरकीयाप्रतिवा
केअबहिंयामेंकामेंचारीअरहूरतिलछितजानियेंकाव्यलिंग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सोकोउक्तिकोसंग्रहहि॥ अर्थसमर्थनकोजियेजिहांयुक्तसोमित्र॥१
काव्यलिंगभूषननितहांभाषतवुधिविचित्र॥८२॥ मूलदोहा॥ मोसो
मिलवतिचातुरी: तूहिमाननिभेव॥ कहेदेतयहप्रगटहो: प्रगट्यो
हसमपसेव॥ इहनाइकाखंडितलखिसखीसुरतभयोजानिकहतिहैलछि
नजानीये॥ सवैया॥ आजुवगीसुखपुंजमेंप्यारीनिकुंजमेंकेलिक
रीमनभाई॥ पीकगईछुटिओठनपैअगरीमुखमंडलपैअरुनाई॥ भे
दकीवातकहेकिनिभामनिमोसोंचलावनिकेंप्रचतुराई॥ तोतनुदे
कहैप्रगटैयहइसकेमासमपसेउमेंफाई॥ टीका॥ सखीकोवचननाइका
सौं॥ तैमोसौंचातुरीकरियेंप्रवीनता॥ ताकौमिलावतिकहियें
वरतिहै॥ सोहतेंआपनेभेउनहीमाननीकहियेंवताउतीहै॥ हम
महीनामेप्रगट्योउपज्योजोप्रसेवकहैयसीना॥ सोतेरेभेदकोकहै
देतहै॥ विभावनाअलंकार॥ सखीकीउक्तिनाइकासौंहैजोपसीनासु
रतकोहैतोनाइकालछितहै॥ जोसात्विकभावकोहैतासखीउपा१
लंभमिसपरिहासकरतिहैं॥ विभावनालंकार॥ कारननाहिंपैका
रिजहोइकै कारजकारनकोउपजावैकारिजहोइअकारननेंविरुधपू
रनकारिजवनावैं॥ कैप्रतिवाधहोतहूंकारजहोतयहोरससोंनुव
रावै॥ हेतुनेकाजविरुद्धविलोकिवुधेसछैभांतिविभावनागावे॥
८३॥ मूलदोहा॥ सहीरगीलीरतिजगेः जगीपगीसुखचेन॥ अलसौ
हैंसौंहेकियें: कहेंहसौहैंनैन॥ यहनाइकाकेनेत्रनकौंआउरेखि
कै सखीकहतिहै॥ लछिनाहोइ॥ कवित्त॥ मोहूसेंतुवीलीरसरी
तिकेंपाछपावतिहैअननपैउमगीअहनओपजागीहै॥ अंगअंग
मिथलअनंगसुखसंगमतेरंगमतीह्लअनुरागीउरलागीहै॥१
लसनहसौहैंअलसौहैंचपलचखसौहैंकियेंकहनप्रगटप्रेम१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पागीहै ॥ कहीन पाति अति अदभुत तिहु वियह सुहीतें रंगीलै रति जागै
आजु जागीहै ॥ टीका ॥ सषी को वचन नाइका प्रती ॥ तें सुहौ रंगी
लीक हियें रंगभरीहै ॥ और रती जगे कहियें राति को जागरन ॥ ता
मैं जगी जो तूं सो सुषचैन सौ पगी रही ॥ अलसौहै आलस भरे जो ते
रे नैत्र और हसौहै कहै हासी भरे जो नैत्र तें सौ गंध षाय कहतें है ॥ इ
सको यह मतलब है ॥ कि नाइकानैं नाइक सौ वडो सुषचैन कियो
काव्यलिंग जमका अलंकार ॥ उक्ति सषी की नाइका सुरत लछिता
कै आलस हर्ष संचारी आहृति अन भाउ काव्यलिंग जमकालंका
र की संसृष्टि जहां वहीं पद सुनि पेरै ॥ अर्थ और हीं होइ ॥ तहं जमका
लंकार है भाषित पंडित लोग ॥ ८४ ॥ मूलदोहा ॥ पट की ढिग कत ढ
ढांपियत सोभित सुभग सुवेष हदरद छद छवि देत यह सदरद
छद की रेष ॥ इस्त्री अगिको चिह्न नाइका दुरावति है ॥ सो सषी नाइ
का सौं कहै नौ लछिता नाइका ॥ सवैया ॥ आज भट्ट रति रंग के मंदिर
तूं मन मोहन के संग जागी ॥ केलि विलास हुलास नि के वड भागि
नि तें रिझयो अनुरागी ॥ ढांकति कैंपट की ढिग सौं अति सोहत चा
रु प्रभान सौं पागी ॥ देति महा छबि की हद को यह रेष रदछद की स
रलागी ॥ टीका ॥ सषी को वचन नाइक प्रती ॥ पट कहियें कपरा ॥
ताकी ढिग कहियें छोर ॥ तासौं दंतछत को चिह्न कौ कैंा ढांकति
है ॥ जहं दंतछतन की रेषा ॥ सुभग कहियें सुंदर ॥ सुवेष कहै भलौ रू
प सोहति है ॥ सदर कहियें ततकाल को जहर दछद कहियें दंतछत
ताकी रेष ॥ अथवा ओठ मैं हद कहियें वडी जो छवि ताको देति है
व्याजस्तुति अलंकार ॥ सषी की उक्ति सुरत लछिता नाइका प्रति
व्याजस्तुति अलंकार ॥ निंदा मिसि निंदा होइ कैं निंदा मिस निंति ॥

होइ॥ आजसकतिनहूजानियोसवेसयानेलोइ॥८५॥इतिलछि
ता॥ अथक्रियाविदग्धावर्नेनं॥ मूलदोहा॥ घरीभीरहूंभेदिकैः
किनहूंकहूंइनआइ॥ फिरैडीठिज्ञरिडीठिसोः सवकीडीठिवचाइ॥इ
हनाइकाकेचितवेकीचतुराईसपीसोंकहैहैहेनाइकापरकीया
सवैया॥ सोनेसेगातसुहाईसीवेसमनेहसनीरसकोवरसावै॥ चा
इकेचाहनकीचतुराइकहालौकहौकहनेनहिआवै॥ भीरभईअ
तिभारीनऊमनभायोकरैकोऊभेदनपावै॥ घातमहेज्ञरिडीठिसोंडी
ठिफिरैसवकीवहडीठिवचावै॥ टीका॥ सपीकोवचनसपीप्रती॥
अथवानाइककोवचनसपीप्रती॥ अथवासपाप्रती॥ वडीभीरकों
भेदिकैकिनहूंनैइनआइकै॥ सवनाइकाकोडीठिवचाइकै॥ मेरी
डीठिसोमिलिकैफिरतिहै॥ विभावनाअलंकार॥ नाइकाकीउक्ति
हूतीसोंक्रियाविदग्धानाइकाकहाछुविछेपानुभावतेंअनुरागको
विभावनालंकार॥ प्रतिवाधककैहोतहूंकारजपूरनहोइ॥ तीजो
भेदविभावनाकोभाषतकविलोइ॥८६॥ मूलदोहा॥ छाइपहिरिप
इउटिकियेः वैरीमिसपरिनाम॥ चाषैचलघरकोचलनः विदाकि
एयनसोंम॥ इहनाइकाक्रियाविदग्धापरकीयासोसपीकोवचन
सपीसों॥ कवित्त॥ छाइपटपहिरिसगाछोवाहचाहरीसोउटिमन
भावनकोंसुरिसुमिकानीहै॥ हूसकहैवैरीकेसुधारिवेकेमिसक
रिकीनीअनपनिअनतिहिलसुषमानीहै॥ कहांकहोंआलीकछुक
कहनवनेमवेंयाहूजैसीउहिसरससनेहरीतिठानीहै॥ घरकोच
लनचाहलोचनचलाचलकैचातुरीसोंचाहिविदाकीनोदधिदा
नीहै॥ टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रती॥ ढाइकेकपरापेंधिकेउठी
कहियेनाइककौदेषिकै॥ वैरीकेमिससोपरिनामकियो॥ नाइका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

159

बिह॰
१५५

उरकौजानतनेत्रचलाइवै॥ घनस्यामजोश्रीहरललनाकौविदाकियो॥
इसकोयहमतलबहै॥ कीनेत्रनिमैघनामककविकैनेत्रनहीविदा
ईदई॥ सूक्ष्मालंकार॥ सषीकीउक्तिसषीसोंक्रियाविदग्धा
नाइकासूक्ष्मालंकारसूक्षमपरआसैंलषैसैननमैकछुभाइ॥
इतिक्रियाविदग्धाअथवचनविदग्धा॥ ८७॥ अथवाकविदग्धा॥
मूलदोहा॥ घामघरीकनिवारियेंःकलितललितअलिपुंज॥
जमुनातीरतमालतरुःमिलतमालतीकुंज॥ इहनाइकापरकी
याबाकविदग्धास्वयंदूतनाइकाकोवचननाइकसों॥ सवैया॥
चारुतमालकलिंदकेतीरओसीरसुगंधसमीररहैमन॥ मालती
मल्लीनिकुंजनिमैंमिलिगुंजतमत्तमधुव्रतकेगन॥ फूलनकेभर
रूमिलनारहिबेलिलुभीलपटाइतमालन॥ कीजैबिरामघरीक
कहैंयहआनपनेकुनिवारियेंलालन॥ टीका॥ नाइकाकोवचन
नाइकप्रती॥ ललितकहियेंसुंदरभौरनिकैसमूहकलितक
हियेंव्याप्तहै॥ ऐसीजमुनाकेतीरमैंतमालवृक्षसो॥ मालतिक
हियेंचंवेली॥ ताकीकुंजमिलीहै॥ तामैंएकघरीभरिधूपकौ
कारियें॥ इसकोयहमतलबहै॥ किइहांसंकेतकोभलीजुगाहै
वाकविदग्धास्वयंदूतिकाएकैकरिजानियें॥ अलंकार॥ बोध
ब्यंगिकरिवचनविदग्धस्वयंदूतीपरकीयाकोउक्तिनाइकप्र
तिकोउपकसंजोगलालसमतीकहतिहैपर्यायोक्तिपर्यायोक्ति
प्रकारहै॥ कछुरचनासोंबातमिसकरिकारिजकीजियैंजैसेंचि
त्रमहितान॥ ८८॥ अथमद्यपानवर्ननं॥ मूलदोहा॥ रूपसु
धाआसवछकेआसवपियतवनैन॥ प्यालेओठपियावद
नःरहैलगायेंनैन॥ यहमद्यपानसमयनाइकाकीसो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

देखि नाइक छकि रह्यो सो सषी सषी सों कहत है ॥ सवैया ॥ वारु
निकौ वनि आयो सबै सो कहै नै नवनै कछु कौतिक भारो ॥ प्यावति रंग
भरी मृगनैनि रह्यौ तु निकौ भरि मौन उजारो ॥ आसव रूप सुधा कौ छ
कैयो मतु पीवै कौ भुलि गयो सुधि प्यारो ॥ प्याले सौं ओठ पिया सुष नै
न लगाइ रह्यो वह्नि कौ मतवारो ॥ टीका ॥ सषी को वचन सषी सों ॥ ना
इका की रूप सुधा जो है तेई भयो आसव दारु ॥ ता सौं छकौ कहियें मत
वारे भयो जो नाइक ॥ ता कौ आसव कहियें दारु सो पियत वन तन न
हीं ॥ सो नाइक नाइका के सुष कौ नेंन लगाइ के दारु कौ प्यालो ओठन
हीं में लगाइ रह्यो ॥ तुल्ययोगितालंकार ॥ सषी की उक्ति सषी सों
संजोग श्रृंगार रस लंभसाक्षिक तुल्ययोगितालंकार ॥ कि उपमान उप
मेय के हैं अनेक इक भाइ तुल्य जोगिता कौ न कहूं जो भेद गनाइ ॥ ८५
मूलदोहा ॥ ढीठौ दै बोलनि तिहूं मतिः प्रोढ विलस अप्रोढ ॥ त्यों त्यों चल
न न पियन यनः छकत छकौ न वोढ ॥ इह मदपान समय सषी को वच
न सषी सों ॥ कवित्त ॥ आजु वारुनी की वारुनी को मैं विलोकी वह सोभा
मेरे नैनन मैं अबलौं वसति है ॥ ज्यौं ज्यौं वह डीठ रातें दै दै बोलति सरस
वैन नागर नवेली हेरि हेरि कै हसति है ॥ कहै कवि हृकम उरला भिवे
कौ ललक नि प्रोढा कै से सकल विलास विलसति है ॥ त्यों त्यों छकी ति
य नै छकाय पी अंसें पीवे नैन पलकन हू की गति भूली द्रसति है ॥ टीका ॥
अप्रोढ कहियें मुग्धा नाइका ॥ सप्रोढ विलास कहियें प्रोढा नाइका के
विलास ॥ सो यह ना टेक रि बोलति है और हसति है ॥ छकी कहियें दा
रु सौं मतवारी भई जो नवोढा नाइका ॥ ता नै छकाय जे पिय के नैन ॥ ते
मैं तैसें चलत न हीं ॥ इस कौ यह मतलब है ॥ कि नाइक नाइका कौ हि
ठाइ देषि छकि रह्यो ॥ स्वभावोक्ति अलंकार ॥ उक्ति सषी की सषी सों
नाइका मुग्धा को मद्यपान में चेष्टा नाइक के हर्ष संचारी स्वभावोक्ति
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अलंकार॥ जाकोजैसोरूपगुनबरननसवाहीरीति॥ ताकोंजाननसुभा
वकविभावनतेंकरिप्रीति॥५९॥ मूलदोहा॥ मानोंनमभ्योकरि
रही: विवसवारुनीसेंई॥ झुकनिहसनिझुकिझुकिहसनि: हसि
हसिझुकिझुकिदेई॥ इहमदपाननाइकाकीसोभासखीनाइकासों
कहतिहैसखीहरसीहौंसोकहै॥ कवित्त॥ वारुनीविवसमनमोह
नसोंमानठानिआजमृगलोचनितमासेकौलसतिहै॥ चारुतरु
नाईमेंनिकाईछबिछाईत्यौंत्यौंगोरेमुखपेअरुनाईसरसतिहै॥ क
बहूंकवदनपटछेचटकेढाकिलेतिकबहूंउघारिदेतिरंगवरस
तिहै॥ झुकनिहसनिहसिझुकनिझुकिहसतिहसिहसिझुकत
कझुकिकैहसतिहै॥ टीका॥ सखीकोवचनकैनाइकैनाइकैसोंवच
नसखीप्रती॥ नाइकावारुनीकहियेंदारु॥ ताकोसेइकहियेंपीक
रिकै॥ विवसकहियेंदारुकेवसह्वैकै॥ मानोतमासोकरिरहीहै॥
झुकतीकहियेंडरावतिहै॥ औरहसतीहै॥ हसिहसिकैफेरिझुक
तीहै फेरिझुकिझुकिकैहसतीहै॥ समुच्चयाअलंकार॥ सखी
कीउक्तिनाइकसोंमद्यपानवर्ननं॥ जातिवर्ननअलंकार॥ ५१॥
मूलदोहा॥ हसिहसिहेरतिनवलत्रिय: मदकेमदउमदाति॥ ब
लकिबलकिबोलतिबचन: ललकिललकिलपिटाति॥ इह
मदपानकोसमयसखीकोवचनसखीसों॥ कवित्त॥ मोहनके
संगमधुपानकेनबेलीबालकरतितमासेकछुसोभासरसाति
है॥ हसिहसिहेरतिविथेरतिदुकूलकचफकिफकिपरतिनका
हूतेमकातिहै॥ वारुनीउमंगभरीजोबनकेरंगभरीमदनतरंग
भरीअतिउमदातिहै॥ बलकिबलकिबालेबोलतिमयंकमुखीलल
कितलकिललकिलालउरलपटातिहै॥ टीका॥ सखीकोवचनअथवा
नाइकाकोवचनसखीप्रती॥ नवलत्रियकहियेंनवोढानाइका॥

सो मद कहियें दुह ॥ ताके मद सों उमदाइबो ॥ हसि हसि के नाइक कों
देषति है ॥ वलकि वलकि कहियें उपटि डपटि कै वचन वोलति है ॥ औ
र ललकि ललकि कहियें चाह नाकरि कै लपटति है ॥ जातिवर्नन
[illegible] ॥ सषी की उक्ति सषी सों मद्य पान वर्नन जा
ति वर्नन अलंकार जाकों जैसों रूप गुन ॥ ५२ ॥ [illegible] ॥ षलित व
चन अधषुलित दृग: ललित स्वेदकन जोति ॥ अरुन वदन छवि म
द छकी: षरी छवीली होति ॥ इह मदपान समय नाइका की सोभा
सषी सषी सों कहै ॥ सवैया ॥ नैनन कछु उघरे से मदे अरु वैननमें मिथ
लाई रसीली ॥ स्वेद के बूंदनि सों फल कै अरु नैनु निआनन पै चटकी
ली ॥ तैसी यह रूप उजागरि सों रुतिली की है सोभा सनी गरवीली ॥ चा
रु जगीनन जोवन जोति छकै मद है तिषरी है छवीली ॥ टीका ॥ सषी
को वचन सषी सों ॥ षलितन कहियें षंडित जाके वचन है ॥ और अ
धषुले जाके नेत्र है ॥ ललितन कहियें सुंदर पसीना के बूंदनि की जाति
कहियें सोभा है ॥ अरुन कहियें लाल मुष की सोभा है ॥ ये से मद क
हियो राहनासों छकि कहियें मनवारी भई है जो नाइका ॥ सो षरी है
रहत होति है ॥ जातिवर्नन अलंकार ॥ जो नाइका की उक्ति होइ तो स्व
ति संचारी गुन कथन व्यंग्य जो सषी की उक्ति होइ तो नाइका प्रति ले
कहि उपजावन है तन व्यंग्य जाति वर्नन ॥ जाको जैसो रूप गुन ॥
५३ ॥ मूल दोहा ॥ निपट लजीली नवल तिय: वहकि वारुनी सेइ ॥
त्यों त्यों अति मीठी लगै: ज्यों ज्यों ढीठो देइ ॥ यह मदपान समें सषी
को वचन नाइक सों ॥ सवैया ॥ लाज भरी अति ही नव नागरि जा
वी सुधा इसुधाई के गाई ॥ ता हि छकी छवि दे षिवे को पिय प्यारे भ
राई कै वारुनि प्याई ॥ ज्यों ज्यों उमंग उठे मद की तिय त्यों त्यों निसंक है
देति ढिठाई ॥ ही को ई लागति ती की महा चहमा नो भरी वहु भांति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

161

बिह॰
१६२

मिठाई ॥ टीका ॥ सखीकौवचनअथवानाइककौवचनसखीसौं ॥ नि
पटकहियेंअत्यंतलजीलीकहैलाजवंत ॥ नवलनियकहियेंनवो
ढानाइका ॥ सोवहकायेतैसारूकोपीकै ॥ ज्योंज्योंजैसेजैसेहीठ
ईदेतीहै ॥ त्योंत्योंतैसेतैसेंअतिमीठीलगगतिहै ॥ विभावनाअ
लंकार ॥ मद्यपानवर्ननेंनाइककीउक्तिसखी तिसंचारीभाउविभा
वनालंकार ॥ कारननाहियेंकारिजहोइकैकारजकारनतेंउपजा
वै ॥ कारजहोइअकारनतैंकिअहरनकारनकाजवनावै ॥ कैंप्रति
बाधककेहोतहूंकारजहोतयहोरसमेंानुवहावैहेतुतेंकारजविरु
द्धविलोकिबुधेसहैभांतिविभावनागावै ॥ ५४ ॥ इतीमद्यपानव
र्ननं ॥ अथरससर[illegible]वर्ननं ॥ नवाभिलाषवर्ननं ॥ मूलदोहा ॥
कोरिजतननकोउकरौःतनकौनपतिनजाइ ॥ जौलौंभींजैचीर॰
लौःरहैनघोलपिराई ॥ इहनाइकाप्रौढाहैकामकोअधिक
हैनाइकाकोवचनसखीसौं ॥ कवित्त ॥ कियेकोटिजतनननतन
कौनपतनजाइअननकीपीरउरअतिसरसातिहै ॥ हरितेंविलो
केचित्तचोरउनोउमगेचाउहिगआवैभेटिवेकोमतिअकुलातिहै
लीजीयेभुजानभरिकीजीयेनन्यारोवेगांहजीवनसफलजौलौं
यौंहीदिनरातिहै ॥ आलेपटकीसीभांतिप्रानपतिआठोजाम
रहैलपटानोछ्वानीतोहीलोंसिरातिहै ॥ टीका ॥ सखीकोवचनस
खीसों ॥ कोईकरोरिजतनकहियेउपाइतिनकोकरौ ॥ तालौदेह
कौनपतिनहीजानीहै ॥ जौलौंकहियेंजवलगिभीजैचीरकैंरू
भीजैवस्त्रकेसमान ॥ योंकहियेंनाइकसेंालपटिकैनहीर
हतहै ॥ उपमाअलंकार ॥ ५५ ॥ जोनाइकाकीउक्तिअंतरंगवर्ननीस
खीसोंहोइतौसंजोगलालसमतीकहियेउपमालंकार उपमाअरुउप
मेयसाधारनवाचकहोइएचारोपदइएजहांहरनउपमासोइ ५५ ॥

मूलदोहा॥ अथ चिंतादसावर्ननं॥ पुनिहु निसदिन सनेह लै षिंचर
है हियो मसिकाइ॥ वैसो येवानवनैसषी: वेगा प्रियको डुषजाइ॥ पद
नाइकाको॥ ढाहै याके मनमैं जो अवस्था भई है सो सषीसों कहति
है॥ सवैया॥ रीसजनी यह रीत अनोषी लषी न दिजात कितो पुचहा
री: हेसकहे उपचारन सूं तन चूकि ये का सों वूडो दुषभारी॥ प्रीतम
रीपगको धुनि कोहन होत न हे मन यो मनु हारी: के सियवातवनैस
षियेअवकै सियजीको मिटैन विकारी॥ टीका॥ नाइकाको वचन
सषी प्रती॥ पुनि कहियै पगधुनि ताको हनिकै॥ सनेहकहिये प्रीति
ताके सहितरे षिकै॥ नाइक कुमसकाइकै॥ मेरे हिये को हरै॥ सषीसं
वाधनहै॥ सो जहवानकै मेवनै॥ औरहकै से प्रियको दुषजाई॥ संदेहा
लंकार॥ ५८॥ चिंतामती नाइकाकोउक्ति सषी प्रति सिंदेहालंकार
५८॥ अथस्मरणदसावर्ननं॥

मूलदोहा॥ अथ स्मृतिदसा॥ सबै सुनाइन विरहनमः निसिदिन स
रमसनेह॥ रहे वहे लागी हगनि: दीपसिषासी देह॥ कहूं नाइकाको
ध्यान नाइक करत है॥ न ऊ विरहवट तनां ही सो नाइक सषी सों
कहत है॥ सवैया॥ वामृगलोचनिके विछुरे ज्ञ भई गति सोन हि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जानिउचारी॥ सुंदरस्यामसरीरउननैनहनिबातचलीउसंगनरथा
री॥ जहदिपदीपसिषासममैननलागीरहैतनकीउतिप्यारी॥ न
हुं विरहकेकछुनहियेभरिहरिहौविरहानलभारी॥ टीका॥ ना
इकाकोवचनसषीप्रती॥ विरहरूपीतमकहियेअंधकार॥ सोसं
नाइनहीसकतुहै॥ निसिदिनकैहैरातिदिन॥ सरसअधिकजा
मैसनेहकैप्रीतिहै॥ मसालपञ्चअधिकजामैतेलहै॥ वहदीप
सिषासीकेहैमसालसीदेहमेरेनेत्रनिकोलगीरहतिहै॥ उपमा
लंकार॥ ४० ॥ नाइकाकीउक्तिसरतिदपणाउपमालंकार उपमानरु
उपमेयसाधारनवाचकहोइ पचारयोपइएजिहांपूरनउपमासोइ ४०

मूलदोहा॥ कबकीध्यानलगीलषौ: जहघरलगिहैकाहिई॥
उरियतभृंगीकीटलौ: मतिवहईहैजाई॥ इहनाइकाकेध्यानमैंली
नहैरहीहैसोसषीसोंकहतिहै॥ सवैया॥ ठाढीविलोकतिहौंक
बकीयहपूरनप्रेमहियेहठरिवौ॥ पाहनकीपुतरीहैरहीविसस्यौउ
स्वेच्छरकौधरिवौ॥ ध्यानहीध्यानमैंजोकवहूंयहहोइवहीतौकहा
करिवौ॥ याकोघरआववलागीहैकाहिकहांगनिहैयहैडरिवौ॥ टी
का॥ सषीकीउक्तिसषीप्रती॥ नाइकाकबकीध्यानलगीकहियेध्या
नकरतिहै॥ लषोकहियेमैदेषतिहौ॥ अचवान्नमदेषो॥ जहघ
रकिसकौलगिहै॥ इसकोयहमतलवहै॥ किइसघरकोकहाहा
लहोइगो॥ भृंगीकीटकेसमानानाइकामतिनाइकहोइजायगो

धातें उरियतु है ॥ उत्प्रेक्षा अलंकार ॥ ५८ ॥ सखीकी उक्ति सखीसों ना
इकाकें पूर्वानुरागतें स्मृति दशा सखीकें वितर्क उत्प्रेक्षालंकार ज
हकी जतिसंभावना ५८ ॥ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ सुरति न ताल न तानकी ः उठै न सुर ठहराइ ॥ एरी राग बि
गारिगौ ः बौरी बोल सुनाइ ॥ उद्दीपनविभाव नाइकाको वचन ः
सखीसों अथवा सखी सखीसों कहै तौ ऊ संभवै ॥ जो सखी नाइकासों
कहै ॥ तौ लछिता नाइका ॥ सवैया ॥ लै कर बीन प्रवीन तिया सुरसा
धिकै गानकौ ठाठ ठयो है ॥ द्वारपै आइकै नाहसौं समै कहूं सामरो बोल
सुनाइ गयो है ॥ तान कहूं अरु ताल कहूं सुर लोक छु और रनें और भ
यो है ॥ बैरी अचानक बोल सुनाइकैं नंदको राग बिगारि गयो है ॥ टी
का ॥ नाइकाको वचन सखी प्रती ॥ तालकी औ तानकी मोकौं सुर
ति न रही ॥ अरु सुर ठहराइकै न ही उठत है ॥ एरी सखीको संबोध
न है औ कहै बौरी कहिये बाउरी संबोधन है ॥ नाइकु अपनो बोल सुना
इकै मेरो रागु कौ बिगारि गयो ॥ बैरी जलपठि है ॥ बैरी कहियै बैरको
लैनवारे नाइक जानियें ॥ काव्यलिंग अलंकार ॥ परकीया नाइका
की उक्ति वचन अनुभावतें स्वरभंग सात्विकतें पूर्वानुराग व्यंगि ॥
काव्यलिंग अलंकार ॥ अर्थ समर्थनकौ जी येजि हां युक्त सो मित्र
काव्यलिंग भूषन तिहां भाषत बुद्धि विचित्र ॥ ५९ ॥ मूलदोहा ॥
हितु करि तुम पठयो लगै ः वा विजना की बाइ ॥ टरी तपति तनकी
तऊ ः चुली पसीना न्हाइ ॥ इह नाइकाकी व्यंजनाकी बारि लगै ना

इकाकोसात्त्विकभावभयोहैसखीनाइकासोंकहै॥सवैया॥मोर
पषावनकौरचिकैहितकैपठयोतुमप्यारेविहारी॥नाहिविलोक
तहौतियकौननतापटरीउमगैयोमदुभारी॥हौंतोविलोकिअचं
भैभईअबलौनकहूंगतिऐसीनिहारी॥वाविजनाकीवयारिलगै
वहहाइपसीनाकेनीरमैंनारी॥टीका॥सखीकोवचननाइकप्रती॥
हितकरिकहियेंप्रेमकरिकै॥पठयोजोवहविजनाकहियेंपषानाः
कीवयारिलगैतनकहियेंदेह॥ताकीतपेतिरछीकहियेंद्दरिभई॥
नऊपसीनाह्वाइउठी॥सात्त्विकभावभयो॥विभावनाअलंकार
दूतीकोउक्तिनाइकप्रतिनाइकाकोप्रेमव्यंजितकरतिहैनाइका
कैस्वेदसात्त्विकतेंनाइककेवीजनापठवेतेंपूर्वानुरागव्यंगिउत्त
मकाव्यविभावनालंकार॥कारननाहिप्रेकारजहोइकेकारज
कारनकोउपजावैकारजहोइअकारनतेंकिअपूरनतेंकारजका
जवनतावैकेप्रतिवाधकहोतहूकारजहोतयहोरससोंनुवहावै
हेततेंकाजविरुद्धविलाकिवुधसहैभांतिविभावनागावैः॥५०
बलदोहा॥ऊचेचितैसराहियतःगिरहकबूतरलेत॥दृगफलक
तमलकितवदनःतनपुलकितकिहिहेत॥इहनाइकाकोकबू
तरउडतदेषिनाइकाकेसात्त्विकभावभयोसोसखीनाइकासों
कहतिहै॥परकीयालक्षिता॥कवित्त॥अंबरमैंसोभासजिउ
डतपारावतवाजीकरैंरंगमैंगिरहआछीलेतहैं॥तिनकोसवको
ऊचेकरिचाहतहेरीकिरीफिसरवरससराहतसहितहैं॥चाहिवो
सराहिवोविसरिगयोप्यारीतोहिदेषतहौंदेषिरहीहेरेचितहैं
झलकततेनेनमलकितहैंअधरवरसाचीकहिअंगपुलकितः
कौनहेतहैं॥टीका॥सखीकोवचननाइकाप्रती॥कवूतरगिर

हुलसेत ॥ ऊंचै देषिकै सराहियतु है ॥ तेरे हग फल मल लाभ है ॥ और तेरो मुष कमल ।
किलकै है षुसी होतु है ॥ और कहै हु तेरी रोमांचित होति है ॥ सो हे लनका हियें कार ।
न सो कहतु है ॥ यहो वक्ति अलंकार ॥ १ ॥ उक्ति सषी की परकीया नाइका सों या
अ रोमांचि सात्विक भाव नाइका के वचन रवाधव्य है यहो वक्ति अलंकार
यहो कतिमि मिश्र और कै कीजे पर उपदेश १ ॥ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ कारे वदन दरावनै :कत आवत इहि मेह ॥ कै वाल ष्यो लषै सषी : ल
ै षय वाघरी देह ॥ इह नाइका परकीया है नव उमा नाइका को देषि सात्विक
भए है ॥ तिन को सषी सों दुराइवे को कहति है ॥ कवित्त ॥ आपरंग चिर ।
मिर को हराधरें औ हिवे को करो एक काम रीय ही विसाति ॥ मीसम पैला एक
पी रासो डूमे दिवां ध्यो ताप एक वर ही पषिया करहु राति ॥ मद हिन्नल नइ रपा
उ ना सो क्ष्वात विंवे जब इहि और आवत है अहो रजाति ॥ नवतन देषि सषी के ऊ
वेर देष्यो या हि दे षेड हलागो देह पुलकि छय रहु राति ॥ टीका ॥ नाइका को व
चन सषी प्रती ॥ कारो नाको वदन के है रंगु है ॥ और डरावतो है ॥ ये सो जो श्रीकृ
ष्ण सो इस न्हाव को आवत है ॥ कै वार मैंने देष्यो है ॥ सषी सं वोधन है ॥ औ रहल को
देषत मेरी देह को एक घरीलागति है ॥ प्रछन्न वक्रोक्ति अलंकार ॥ २ ॥ उक्ति पर
कीया नाइका को सामर्थ वचन विदग्ध है नगमा कंपसात्विक प
र्यायोक्ति अलंकार ॥ पर्यायोक्ति प्रकार है कछु रचना सों वात मिसक
रिका रिज की जिये जैसें चित्त रहत २ ॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सल दोहा ॥ परसत पोछत लषि रहत लगि कपोल के ध्यान ॥ कर ले प्यौ पा
टल विमल ः प्यारी पठए पान ॥ इहां नाइका की आसक्ति नाइक सों अधि
क है सवाके हाथ के पान जो देषि के एसा करत है ॥ सो सषी सषी सों
कहति है ॥ सवैया ॥ प्रानपियारे की प्यारी तिया पठए कर दिए न हियें हरसै ॥
पाटल पान धरे कर थरे जिन की छवि देषि हिये हुलसै ॥ पौछति है पटु लै कबं
हू कबहू दरसै कबहू परसै ॥ ध्यान कपोलन को कबहू करि चुंबत यौं रस को
बरसै ॥ टीका ॥ सषी को वचन सषी प्रती ॥ प्यौ कहियें नाइक सो पाटल कहि
यें सेत ॥ लाल विमल कहियें निर्मल नाइका नें पठए जे पान ॥ तिनको हाथ मे
लै के नाइका के कपोल की या हिस्रानि कै ॥ पानन को परसत कहियें छुवत
है ॥ और पोछत है ॥ और देषि रहत है ॥ स्मृति दसा अलंकार ॥ सषी की उक्ति
सषी सों नाइक के स्मृति दसा स्मृति अलंकार जहां सुधि की जे मित्र स्मरण ज्ञा
न हू चित्र ः ॥ ३ ॥ सल दोहा ॥ लहि लषि हषिलनि येगरे ः लषी जगो हौनी
ठि ॥ फुलनि मैं मो मन वधिर हौ ः वहै अधपुली दीठि ॥ इहां स्वरत नाइका
को वचन सषी सों ॥ सवैया ॥ केलि कला सुष केलि प्रभात लसी परजंक
पै राधिका प्यारी ॥ अंगल गौतउ लाज पगी रहीं नारि नवाइ महा छवि छा
री ॥ सो है चितै वेको मैं रहु हठै गात वनै सक भौंह उचाइ निहारी ॥ सोउ नीदी अ
षिया अध षोलि चितौनि हियें नेट रैन हिटारी ॥ टीका ॥ नाइका को वचन
अथवा सषी को वचन सषी प्रती ॥ रति को सुष लेके गरे लागि कै ॥ नीठि
कहू सो जगो ही देषि ॥ नाइका की वह अधपुली डीठि मेरे मनमै वधि रही
है ॥ सो पुलती नही है ॥ विरोधाभास अलंकार ॥ नाइका की उक्ति वचन
अनुभाव स्मृति दसा नाइका मध्या भासति है ॥ विरोधाभास अलंकार ॥ जिं
हि ष्यल सहू विरोध है ॥ अर्थ मांऊ न विरोध सहू विरोधाभास कहि जो हीये प्र
बोध ॥ ४ ॥ सल दोहा ॥ ध्यान आन हिंग प्रान पति ः रहति रहति दिन राति
पलक पति पुलक नि पलक ः पलकु पसीजति जाति ॥ इहां विरहनी ध्या
न मैं मिलति है ॥ नव सात्विक होत है ॥ पचिक्रा आन द है मैं होत है ॥
सो अन्य सषी सषी सों कहति है ॥ जो सषी नाइका हूं सों कहै तो संभवे ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सवैया॥ कान्हरि के बिछुरे तें तिहारी सी भई सुवघा नक हूं लगा कौ जै॥ ध्यान हूं की
ध्यान मैं चंदमुखी मिलि प्रान पीया हिय मैं रस भीजै॥ रैन दिना रै॥ टीका॥ रोव
हु को है विया गिनि वै पानन छीजै॥ कंपित है लल वै क बहू कवहू पुलकै क
वहू कपसीजै॥ टीका॥ सषी को वचन सषी प्रती॥ ध्यान विषै प्रानपति करि
यै नाइक॥ ता के हिया करि यें समीप ता विषे आपके प्रानि कै॥ दिन राति प्राने
दिन रहती है॥ पलक करियें छिन मात्र कांपति है॥ औरु छिन मात्र रोमांचित
होती है॥ और छिन मात्र पसीना संयुक्त होती है॥ लाटानुप्रासः अतीसर
तिदसा॥ ५॥ सषी की उक्ति सषी सों नाइका के स्मरतिदसा तें रूपानुराग को ति
लाटानुप्रास॥ अथ गुन कथन दसा॥ ५॥ मूल दोहा॥ सोहत ओढें पीत पट
स्याम सलोनें गात॥ मनौ नील मनि सैल पर आतप परो प्रभात॥ गुन
मंतवरकी सोभा नाइका को वचन सषी सों सषी को वचन नाइका सों॥
भनीं हू को वचन है॥ सवैया॥ बनि जा छवि सों हरनैन निमैं अरु प्रान न
मै अवरोहत है॥ समता कहनाइ छबि कों करियें जु वियानि हु लोक मैं को हत
है॥ सषि नंदसु स्याम कलेवर पै पटु पीत लसै मन मोहत है॥ मनि नील के सै
ल के ऊपर मानौ प्रभात कौ आतप सोहत है॥ टीका॥ नाइका को वचन सषी
प्रती॥ स्याम करियें श्रीकृस्न ता के सलोनें करियें गात जो अंग॥ सो पीत पटु
ओढें सोहत है॥ मानौ नील मनि के पहार पर आतप करियें घाम सो प्रातस
मै परो है॥ उत्प्रेक्षा अलंकार॥ सलोनों पद सिंगार व्यंगि जक है तातें नाइका
की उक्ति गुन कथन दसा वचन जानियें उत्प्रेक्षालंकार॥ जहं कीजत सम्भाव
ना वस्तु हेतु फल मधि॥ ६॥ अथ उद्वेग दसा॥ मूल दोहा॥ और भांति भ
ए व ए चौसर चंदन चंद॥ पति विन अति पारत विपति मारत मारु तनमंद॥ इ
हि नाइका प्रोषितपतिका दसा अवस्था नवै भेद मैं उद्वेग जानीयें॥ क
वित्त॥ वै मो हित करि अव ऐसी विसराई निठुराई गाक्राई कौन कहू अव
ननि है॥ जेई हे सुषद अब तेई भए दुषदाई अब कहा कहौ माई अकुलाई अ
ति मति है॥ चंदन सरोज चंद चौसर सिचा रचार चंपक हू चंद्रिका की और भई

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गतिहै ॥ भयोनिरदईमंदुमारुतहू मारतहै प्रानपतिविनअकुलाईमेरीमतिहै
॥टी॰॥ वमलाइकाकोवचनसषीप्रती ॥ वकहियेंअवएवोमरकहियेंमोतीकौ
हार ॥ औचंदनऔरचंद्रमा ॥ एमोकौऔरभांतिभएहै ॥ एपतिविनाअतिवि
पतिकौपावतहै ॥ वपाकरतहै ॥ औमंदमारुतजोपौनसोमारतुहै ॥ भेदका
अलंकार ॥ नाइकाकोउक्तिउद्वेगदशा ॥ भेदकातिप्रायोक्तिवृत्यानुप्रास॰
जमककोसंसृष्टि ॥ कोमलावृत्तिहै ॥ जहवृत्यानुप्रासमैं ॥ गुनमाधुर्यप्र
काशतहोकोमलावृत्यहै ववरननवुद्धिविलास ॥ ७ ॥ सलदोहा ॥ अ
[illegible] ॥ मोसोमतिवालोहहा: सुषियाएनंदलाल ॥ मो
हनकितयोवकिउठतिः भईविकलअतिवाल ॥ यहुअलापदसाहैना
इकाकोवचननाइकासों ॥ सवैया ॥ मैंअपनेसुषमेंजुरहीरसमोहिक
हुजियकोसुधनाही ॥ हाहाउमैंकहिकेजोकह्योतुममोसोंनवोलोय
होजियमाही ॥ योंकहिकेपुनिचेतभईकविकलवाढैअगारीसुधना॰
ही ॥ कान्हकहांहैवुताउनताहियहैकहिकेअतिव्याकुलनाही ॥ टीका
सषीकोवचनसषीसों ॥ मेतुमसोंहाहाकरतिहो ॥ सुषियाएनंदलाल॰
संवोधनहै ॥ अथवाएनंदलालसंवोधनहै ॥ सुषियाकेहैसमसुषीहै ॥॰
तातेतुममोसोंमतिवोलौ ॥ मोहनकहियेंश्रीकृसनतुमकहांहौ ॥ ऐसेव्या
कुलभईजोवालनाइका ॥ सोवकिवकिउठतिहै ॥ जातिवर्ननअलंका
र ॥ उक्तिसषीकोसषीसोंनाइकाकेंअलापदशाजातिवर्ननअलंकार ॥॰
दोहाछेपक ॥ जाकोजैसोरूपगुनवरननवाहीरीति ॥ तासोंजातसुभा
वकविभाषतहैकरिप्रीति ॥ अथउन्मादशा: ॥ ८ ॥ सलदोहा ॥ अथोन्मा
ददसा ॥ सलदोहा ॥ तजिसंकुसकुचतिनचित्तु: वोलतिवाककुवाक
दिनछिनदाछाकीरहत: घरोविषमछविछाक ॥ इहनाइकाकोअपनी
छविकोगर्वुहै सोसषीसषीसों कहतिहैअदहावज्ञेनाइकेकीछ
विछकीकहौयेलालछिनाहोइ ॥ सवैया ॥ कछुहूहतिवातनउत्तर
देतिनलाइहकीअनिमेषतहै ॥ अरकानिकरैनअलीगनकीतजिलाजक

रोष निहै उफवै॥ सब संतुलजी सखु चेन दियें महाआवै हू वाकउ वाकव वै
रहै रैन दिना रूपमान समान छु विछुरा कछु कौन छिनै उछिकै॥ टीका॥ स
खीकी उक्ति सखीसे॥ नाइकासं कक हियें भय से मनजो है॥ औरहू चितमें सकुच
तिहै॥ वैहू लाजन होकर तिहैं॥ औरहू वचनहू वचन बोलतिहै॥ दिन राति वि
षमकहियै उलटी छु चिकोजे जाकू कहियै मद॥ नाछूकी मनवारी रहतिहै
व्यतिरेका अलंकार॥ सखी की उक्ति सखी सें नाइका के उनमाद दसा व्यतिरेकालं
कार॥ जानि परै उपमानतें जहां अधिक उपमेय॥ नहभाष तिव्यतिरेक है कविपं डि
तआधेय॥ ५॥ मूलदोहा॥ इती उनमाद दसाः अथ ... ॥ टीका॥
मैल दियो लियो हू करः छुवत छुनकि गौनीर॥ लाल तिहारो अरगजाः उर व्है
लगैपो अवीर॥ इहनाइका प्रोषितपतिका ... ॥ क
वित्त॥ फूलत प्रान प्यारे लाल विछुरे तिहारे अब दियौ ब्रजवाल को अनंगदु ष
दारुनहै॥ कोव कीनि पटउ मिलाइ गई फूलजिमि दुपअनु फूलभो सस ल
खभागपाहै॥ तुमजो पठायो सो मैं दीनो जाइ वाहि उनि लीनो अति हित सुक
रि चित्त अनुराग पाहै॥ करपर सन ही छिनकि गयो नीर अरगजा वाके उरमें अ
वीर व्है कैलांगपाहै॥ टीका॥ सखी को वचन नाइकाप्रती॥ मैने नाइका कोन्
ला रोदयो अरगजा लेकरि कै दयौ॥ सो अरगजा नाइका ने अपने हाथमें लयो
तो अरगजा को नीर जो पानी॥ सो छुवतहो छिनक कहियें जरिगई॥ लाल
संबोधन है॥ तहा तेसो अरगजा उरजो छाती तामें अवीर है लग्यो॥ अत्यु
क्तिअलंकार॥ नाइक सें दूती की उक्ति नाइका को विरह निवेदन॥ व्याधि द
सा अत्युक्ति अलंकार॥ अलंकार अत्युक्ति यह वर्नन अतिसय रूप॥ १०॥ मू
लदोहा॥ अथ जड़ता दसावर्ननं॥ वरवै गिरि गई हाथतें ऊपरि रहि गई आ
ति॥ घर की वाट विसारि कैः गई गोहन की लागि॥ यह नाइका की जड़ता द
सा सखी सखी सें कहतिहै॥ सवैया॥ चेतन ता सब भूल रही न हि वह
न की कछु धहैन सह्यारो॥ ऊपरिया करतें गिरी घुलि आगर होकर मोनि रधा
रो॥ हलाकहै कहू नीन बनें कछु जो कछु वाकी दसा ज्ञ निहारो॥ भूलि गई घ
रकी मग वा हि सु गोहन सीम चली प्रनपारो॥ टीका॥ सखी को वचन सखी सें

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सीकै नाइक प्रती॥ नाइका के हाथ में उ परिया कहियें गोहरा॥ सो सिरिगयो॥ आ
गि हाथ मैं रहि गई॥ पिय की चाह में भूलि गई॥ गोहन चली गई॥ जाति वर्नन अ
लंकार॥ सषी को उक्ति सषी सों पर की या नाइका के जड़ता द्रसा जाति वर्नन अ
लंकार॥ इति श्री आनवचंद्रिकायां रसदृसा वर्नने नेहसास प्रकासः॥ ११
११॥ मूल दोहा॥ प्रथम सात्विक भाव वर्ननं॥ इगित पानि इगुलात गिरि:
लषि सब वृज वेहाल॥ कंपकि सोरी हरसतैः घरेल जाने लाल॥ यह सात्वि
क भाव सषी को वचन सषी सों॥ सवैया॥ लोप हूनो वृलि को मघवा तव
को षिके मेघ सवै सकलाए॥ धोधन का कू घस्योत वहो सबु के हि पके भ
य भू रि वहाए॥ पानि इगे पाइगुलात लष्यो गिरि लोग सभै ब्रज के अकुलाए
गोरी किसोरे निहारि कै कंपित गात घरे नंदलाल लजाए॥ टीका॥ सषी
को वचन सषी सों॥ किसोरी कहियें राधिका॥ ताको दरस कहियें देषनों॥
तातें भयो जो कंप॥ तासों पानी कहियें हाथ॥ ताको इगितन कहियें हलन॥ गि
रि कहियें गोवरधन परवत॥ सो इगुलान कहियें हल्यो॥ तातें सिगरे वृज को
वेहाल देषि कें॥ लाल कहियें श्रीकृस्न घरेल ज्यावंत भयो॥ काव्यलिंग
अलंकार॥ कृस्न के श्रृंगार रस त्र पासे चारी कंप सात्विक वृजवासिनि के भ
यानिक रस॥ काव्यलिंग अलंकार॥ अर्थ समर्थन कीजिये जहां युक्त सों मि
त्र॥ काव्यलिंग भूषन तिहां भाषत वुद्धि विचित्र॥ १२॥ मूल दोहा॥ विहसी
वुलाइ विलोकि उतः प्रोढतिया रस झूमि॥ पुलकि पसीजति हृतको: पियचू
म्यो मुष चूमि॥ इहनाइका प्रोढा है सषी हूकी अधिकाई तें पिय ने चूम्यो
बालहि एन को सुख चूमि कें आनंद मान नि हे सात्विक भाव हो इ वन
लप हूलेष॥ सवैया॥ एरन प्रेम उमाहि तें प्यारी फिरे सम भांक हियें ढुल
माती॥ एन को आनन चूम्यो पिया निय चूमत ताहि महारस माती॥ चाहि
उतै सुसकाइ वुलाइ हियें सुष पाइ लगावति छाती॥ गात पसीजे रोमांच
नहोति भई अनुराग के रंग में राती॥ टीका॥ सषी को वचन सषी प्रती॥ र
स सों झूमि रही जो प्रोढा नाइका॥ सो विहसि कै पुत्र को वुलाइ कें॥ उतक
है नाइक को देषि कें पिय जो नाइक तिसनै॥ चूमो जो एन को मुष॥ ताको चू

सिपुलकि कै देहरोमांचित भई ॥ पसीजनि कहियें पसीना पगट भई ॥ असंगति
अलंकार ॥ उक्ति सषी की सषीसों संजोग सिंगार स्वेद सात्विक मदनाधि प्रौ
ढ नाइका असंगति ॥ कारन औरै ठौर है कारिज औरै ठौर ॥ और काज आरंभि
यै औरै कीजै दौर ॥ और ठौर हो कीजियै और ठौर को काज पतीत असंगत के करू
न भेद सुक विमति धाम ॥ २३ ॥ मूलदोहा ॥ रहे गहे बेनी लषैः गुहिवे के त्यौ
नार ॥ लागे नीर चुचान एः नीठि सुकाए वार ॥ दूलनाइक सषी भेष करि नाइका
को सिंगार करन लग्यो वह मिसि जानि नाइका नाइक सों कहति है । अथवा
सषी कहति है ॥ सवैया ॥ गोपी को वेष बनाइ गुपाल जू श्रीवृषभान सुता हि
ग आए ॥ हो मसि जान तिनी के सिंगार करो सुक वे कहौ वैन सुहाए ॥ बेनी गुहाव
न प्यारी कह्यो सुच रचन एकित ने दुम पाए ॥ नीर चुचान लगे अवही सटकार से वा
र से नीठि सुकाए ॥ टीका ॥ नाइका को वचन नाइक सों ॥ तुम बेनी गुहो ता ते रहियो
तन लारे बेनी गुहदने के मिस नाइक कहियें का भीगी सो देषि ॥ नीठि कहियें कष्ट सों सु
काए ऐसे बार ते ए पानी चुचान लागे ॥ व्याजोक्ति अलंकार ॥ उक्ति सषी नवलिका
नाइका को नाइक के स्वेद सात्विक व्याजोक्ति अलंकार ॥ व्याजोक्ति कछु और वि
धि कहै दुरै आकार ॥ २४ ॥ मूलदोहा ॥ स्वेद सलिल रोमांच कुसः गहि दुलहि अरु ना
थ ॥ दियो हियो संग नाथ के ः हाथ हियें हो हाथ ॥ इह विवाह समय स
षक भाव सषी को वाकि सषीसों ॥ सवैया ॥ मंडप मंडल नीरघ साधि कै वे
द विधान सों दान दीयो है ॥ स्वेद भयो सोई नीर नयो उलहे पुलके कुस पुंज लि
यो है ॥ मैन सुनिद भयो गठजोर पहुंच्यो रस के लिहियें अभिलाष कियो है ॥ दोउ नले
अपनो अपनो यों दियो है थले वाही हाथ दीयो है ॥ टीका ॥ सषी को वचन सषी
प्रती ॥ दुलही कहियें नाइका ॥ और नाथ कहियें नाइक ॥ इन दोउ ने स्वेद कहि
यें पसीना ॥ सोई भयो पानी ॥ और रोमांच जो है सोई भए कुसः ॥ तिन कौं गहि
हियें लेकै ॥ नाइका ने चित चलति नाइक के हाथ अपनो मन दियो ॥ और नाइ
क नैं नाइका के हाथ अपनो हियो कहियें मन सो दियो ॥ रूपकालंकार ॥ उ
क्ति सषी की सषी सों दंपति के रोमांच स्वेद सात्विक संजोग सिंगार ॥ अभिला
ष संचारी नाइका गांधर्व विवाह विधि स्वकीया है एकों के मत रूपकालंका
र ॥ उपमान रु उपमेय में भेद परै न लषाइ ॥ तामें रूपक कहत है सकल सुक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बिसमदाय ॥ ९ ॥ मूलदोहा ॥ डुचितैचितचलतिनहलतिःहसतिनऊकति
बिचारि ॥ लिषतचित्रपियलषिचितैःरहीचित्रलोंनारि ॥ इहनाइकानाइ
कोचित्रदेषिचकितहैरहीइहमांसषीसषीसोंकहतिहै ॥ सवैया ॥ ठा
ढोठगीसीहलैनचलैजियमांचुगाहैवहुभांतिबिचारति ॥ मेरोयहैकिधौं
आनवरकोयहैनिरधारकहियैनिरधारति ॥ योंचितमेंडुचिताइगहैनहसै
नऊकैहुबिमेषनटारति ॥ चित्रविलोकतिप्योअवलोकिरहीतियचित्रलि
षीसीनिहारति ॥ टीका ॥ सषीकीउक्तिसषीसों ॥ डुचितैजोचित्तनाकरि
चलतनहींहैहलतिनहीहैहसतीनहीहै ॥ औरऊकतिनहीहै ॥ पिय
कोचित्रलिषतदेषिकै ॥ नारीकहियेनाइका ॥ सोचित्रलोंचितैरहीहै ॥ का
व्यलिंगअलंकार ॥ उक्तिसषीकीसषीसोंएकपहलाजइर्षासंचारीस्तंभ
अनुभावतेंमध्याषंडिताव्यंगिएकपक्षचित्रदर्शनतेंस्तंभसात्विकक्रियाअनु
भाउतेंचित्रतीनाइकाअनुरागव्यंगिएकपक्षचितकिंसंचारीस्तंभअनुभाव
तेंव्यंगि ॥ उत्प्रेक्षालंकार ॥ जहंकाजेतिसंभावनावस्तहैतुमालमधितेंतेंसंभा
तिउत्प्रेक्षा ॥ १८ ॥ मूलदोहा ॥ कहाकहोंवाकीदसाःहरिप्रानिकेईस ॥
विरहज्वालजरिबोलषैःमरिबोभईअसीस ॥ इहनाइकाप्रोषितपतिका
सषीकोवचननाइकसों ॥ कवित्त ॥ प्यारेमनमोहनतिहारेबिछुरेतेव्रष
भानकोउवरिभईवरीकलकानहै ॥ जलबिनमीनजैसेंविकलफिरैआति
कहुककविछुलत्यौंसहैतिअनवानहै ॥ जैसेंजैसेंकरियतउपचारउनकोभीर
मैंआवहतितोपीरहैऔषिनहीप्रानहै ॥ विरहकीज्वालनिसौनरिवेकीलै
षेवाकोमरिवेकोवचनअसीसकेसमानहै ॥ टीका ॥ सषीकीउक्तिनाइक
सों ॥ हरीसंबोधनहै ॥ वानाइकाकीदसाकहाकहौ ॥ वानाइकाकोविरह
कीज्वालानिसोंजरिबौदेषिकै ॥ नाइकाकोमरिबोअसीसभईहै ॥ इसकोइह
मतलबहै ॥ किनाइकाकोइसजीवेतेंमरनोभलोहै ॥ लेषाअलंकार ॥
१७ ॥

मूलदोहा ॥ नेकु न जानी परत यौं परो विरह तन छाम ॥ उठति दियें लौं नादि हरि
लियें तिहारो नाम ॥ इह नाइका प्रोषितपतिका विरह निवेदन सषी कौ वचन
नाइक सौं ॥ सवैया ॥ लाल तिहारे वियोग तें वाकौ बिहाल निचुरी विधि वासर की
सी ॥ छाम भयो अति हीन तन बाम कौ काम दहै हद्धि बुधि हरी सी ॥ सेज में नेक
हहा निपरै न हिंदे दिषियें कंचन रेष लिषी सी ॥ रावरो नाम सुनें इकबार ही ना
दि उठै इति दीपक ही सी ॥ टीका ॥ सषि कौ वचन नाइक प्रती ॥ विरह सौं नाइका
कौ तन ऐसौ छीन परो है ॥ जो नाइका तें कौन जानि जाति है ॥ हरी संबोधन है ॥
नाइका तुम्हारो नाम लपतै ऐसें उठति है ॥ जैसें दिया बुझि बुझि के रबरि उठ
तौ है ॥ उपमा अलंकार ॥ उक्ति दूती की नाइक प्रति नाइका कौ विरह निवेदन व्या
धि दशा पूर्वानुराग उत्प्रेक्षा ॥ जहु कीजति संभावना वस्तु हेतु फल मधि ॥ २८
मूलदोहा ॥ कहा लडै तैं दृग करे परे लाल बेहाल ॥ कहुं मुरली कहुं पीतप
टु कहूं मुकट बनमाल ॥ इह सिहाल सषी कौ वचन नाइका सौं प्रेमानुनाइ
क पै चलि ॥ सवैया ॥ है चितई जब तें तब तें उहि भांति रह्यौ चित चेत हर्यौ है
पीतपटी लकुटी कित हूं अरु मोर किरीट कहूं बिसर्यौ है ॥ भूलि गई बनमाल
है कौन सुधि हाल लषे मन मेरो डर्यौ है ॥ लाडिली नैन लडै तें कहा करि दे षित तो ला
ल बिहाल पर्यौ है ॥ टीका ॥ सषी कौ वचन नाइका प्रती ॥ तैं ने अपने नेत्र कहा
ला[illegible] इते क हियें लडवाउ है कैसें है ॥ अब तें चितयो है तब तें लाल कहियें श्री
[illegible] कृस्न सो बिहाल परो है मुरली कहूं परी है ॥ पियरो कपरा कहूं परो
है ॥ और बनमाल कहूं परी है ॥ लेषालंकार ॥ दूती की उक्ति नाइका प्रति
नाइका कौ विरह निवेदन पूर्वानुराग लेषालंकार ॥ जहां दोष में कीजियें गु
न कल्पित कछु विशेष ॥ के गुन में हू राइये दोष सु जानो लेष ॥ २९ ॥ मूलदो-
हा ॥ बाल बेलि सूषी सुषद इहि रूषे रुष घाम ॥ फेरि डहडही कीजियें सुरस सींच
घनस्याम ॥ इह नाइका प्रोषितपतिका विरह निवेदन सषी कौ वचन नाइ
क सौं सषी सुषी सो कहै ॥ कवित्त ॥ हित करि जाकौ हरि लीनौ चित लाल यह
कित है उ चित ना हि एतो दुष दीजियें ॥ जानत है नी प्रीती रीति कौ प्रवीन पन
कीजे न गहरु सुष दैके सुष लीजीये ॥ रावरे हु सुहरु देष रुष घाम सों मुरझानी सो वा लिवे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लिखसषीनाहि निरषति ही जीजिये ॥ प्यारे घनस्याम जगाजरनि निवारन हो ।
सींचिके सुरसफेरि डहडही कीजिये ॥ टीका ॥ सुषदनाइकाको संबोधन है
जरत लतारो सषी जो तुम सोई याम जो रूपतासो ॥ बालक कहिये नाइका सो
ई भई ॥ बेलि लतासो सब जोहै ॥ घनस्याम श्रीकृष्णको संबोधन है ॥ सो नाइ
का सषी लता सुरस कहिये भली प्रीति ॥ तासों सींचिके डहडही कहिये ह
री करिये ॥ जैसे स्याम मेघ रूपको सषीलताको ॥ सुरस कहिये भलो पानी
सों सींचि हरी करत है ॥ तैसे तुम्हारी सषाई सो सषी जो नाइका ॥ ताको
रससों सींचिके हरी करिये ॥ रूपकपरिकरांकुरा अलंकार ॥ मानी नाइ
कप्रति दूतीको उक्ति विरह निवेदन रूपक परिकरांकुर सांगि प्राय विशेषण जह
परिकरांकुर सो है ॥ २- ॥ अथ दोहा ॥ हरि हरि बरि बरि उठति है ः करि कौ
घ को उपाइ ॥ वाको जुर बलि बैद लोः तो रस जाइ तु जाइ ॥ दूतीनाइकाको प्रो
षितपतिका व्याधि अवस्था विरह निवेदन सषीको वचन नाइक सो ॥
कवित्त ॥ हरि हरि रहति वहति विथा छिनु छिनु बरि बरि उठै वाके नेरे जात
जरीये ॥ करि करि थके है उपाउ सब आली अब कछून बसाइ उर सोच भा
र भरिये ॥ पहो बलि बैद अबरा वेर न लगावर बसतो बचै बाल वाकी पीर परहरि
ये ॥ नीषा नाप हारिये धर मउ धारिये निवारिये गरह करुना कै हर हारिये ॥
टीका ॥ सषीको वचन नाइक प्रती ॥ हरि हरि श्रीकृष्णको संबोधन है ॥ सो
नाइका बरि बरि कहिये जरि जरि उठति है ॥ हम सब उपाइ कर कारि थाकि ॥
बलीनाइकको संबोधन है ॥ बैद लोक हिये बैद के समान ॥ बा नाइकाको जु
र तुम्हारे रस सो जाइ तो जाइ ॥ संभावना उपमा अलंकार ॥ दूतीको उक्ति
नाइक प्रति नाइकाकैं व्याधि दशा है पूर्वानुरागतें सो अवहि प्यास अथवा परिहा
स करति है ॥ संभावनालंकार ॥ ज्यों यों तो यों होत है यह कल्पना वति आइ ॥ त
हां कहि तिसंभावना ॥ कवि पंडित समुदाय ॥ २१ ॥ अथ दोहा ॥ विरह वि
कल विनु ही लिषी ः पाती दई पठाइ ॥ अंक विहूनी यों चितै ः सूनी बांचित
जाइ ॥ दूती नाइका प्रोषितपतिका पत्री आई या ते दोउन के विरह को अ
धिकाई में संपना जानीये ॥ कवित्त ॥ विरह मह रतें न तन को न न बस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

घिबाल भूति व्याकुल अचेत ऐसी ह्वै गई ॥ लिखबे को लई पाती लिखन बन्यो न
कछु वैसी ए लपेट प्रानपति पै पठै दई ॥ वाको विकलाई कहां लौं अधिकाई
कहौं एक सौ उहूं कौ गति पिय के बिरह भई ॥ चपरी प्रवीनी वह जउ अंक रही
नी तऊ वाचि सिंह नेह हिय के लगाइ छाती सों लई ॥ टीका ॥ सषी को वचन स
षी प्रती ॥ बिरह करि व्याकुल जो नाइका ताने बिना लिषी पाती ॥ नाइक को
पठाइ दई ॥ सो नाइक नाइका अंक कहिये मूढ़ता करि रहित है ॥ और पाती अ
क्षर रहित है ॥ ऐसें तिन मैं समुझि कै अक्षर रहित पाती ताको वाच हृदै लगाइ ॥
सूक्ष्म अलंकार ॥ नाइक की करुना वर्निका ऊक हत है नाइका प्रोषितपति
का प्रवाघ ॥ सूक्ष्मालंकार ॥ सूक्षम पर आसे लषै सैन निमैक छभाइ ॥ २२ ॥ अ
लंदोहा ॥ रंगराती राते हियें प्रीतम लिषी बनाइ ॥ पाती काती बिरह की छाती
रही लगाइ ॥ इह पाती वर्नन सषी को वचन सषी सौं ॥ कवित्त ॥ जब तें बियो
ग भयो लाल मनभावन को नव ही तें प्यारी तलफ तिरह रफाइवे ॥ नैन जल
बरसत मिलिवे को तरसत तिसरसति मदन मुरहर बहु भाइवे ॥ अति अनुराग
सों बनाइ लिषी प्रानपति प्रेम सें अचानक कहौं री नीकाहू आइके ॥ हित अ
कुलाती सुनो बिरह काती ताती राती पाती रही लाती छाती सों लगाइके ॥
टीका ॥ सषी को वचन सषी सों प्रीतम कहियें नाइक ॥ तिस नै राती कहियें प्री
ति सैं जो हियो ॥ ताके रंग सों राती कहियें लाल जो पाती सो बनाइ के लिषी
नाइका बिरह की काती कहियें ॥ कारन वारी जो पाती ताको छाती सों लगाइ
रही ॥ जाति वर्नन अलंकार ॥ सषी को उक्ति सषी सों प्रवाघ विप्रलंभ पाती वर्न
नै लहा वाच वस्मील द्रूषन विभावना अलंकार ॥ कारन बिनु ही काज को
उदय होइ जिहि ठौर ॥ पहिलो भेद विभावना को कहि कवि सिरमौर ॥ २३ ॥ अ
लंदोहा ॥ नरज रमी ऊपर तारी कज्जल जल छिरकाइ ॥ पिय पाती बिन ही लि
षी बाची बिरह बलाइ ॥ इह नाइका प्रोषितपतिका बिरहनी अधिक
नाई पत्री लिषिबे तें जानि गई ॥ कवित्त ॥ प्यारे को सदेस लिषिबे कों बैठी भा
ग के लिषत बन्यो न मूनि बिरह मलीनी है ॥ ऐसी एल पेरउ निसा पीस जनी
कहा अउ निज आइ त्यों ही प्रान नाथ हाथ दीनी है ॥ नरमा ते पान के परपर जरी औ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ऊपरतें गारी अरु वांनिजल भीनी है॥ बोलत हीपाती पियवा तीको छाति
करी छाती गरु भरि आइ आंषि भरि लीनी है॥ टीका॥ सषी को वचन सषी
सो॥ नीचे कुरसी कहिये जरी है॥ और ऊपर काजर के जल के छिरके तेग
री है॥ ये सी बिना लिषी जो पाती ता मैं पिय कहिये नाइक॥ तिसने बिरह की
बलाइ बाची॥ बिभावना अलंकार॥ सषी की उक्ति सषी सों प्रवासविप्र
लंभ पाती वर्ननं॥ लछना वाचकग्रील छ्यन बिभावना अलंकार॥ कार
न बिन ही काज को उदय होइ जिहि ठौर॥ पहिलो भेद बिभावना को कहि क
बि सिरमोर॥ २४॥ मूलदोहा॥ कर लै चूमि चढाइ सिर: उर लगाइ भुजभे
टि॥ लहि पाती पियकी तिया: बाचत धरति समेटि॥ इहना इक की पत्री
आई ना हि देषि नाइका की अचेष्टा भई सो सषी सषी सों कहै॥ सवैया॥
मोहन के बिछुरे मृगनैनी चकोरी सी फिरै उर मैं अकुलाती॥ प्रीत को प्रीतम
आप लिषी कहे ऐसे में सो आई अचानक पाती॥ चूमति चाइ कै नैननलाइ कै
सीस चढाइ हिये डुलसाती॥ बाहु निभेटति चांपसों बाहु तिया चित मे हि
छिपावति छाती॥ टीका॥ सषी को वचन सषी सो तिया कहिये नाइका॥ सो
पियकी पाती लु हि कहिये पाइ के हाथ मे लेकै चूमि कै॥ माथे पर धरि कै छा
ती सो लगाइ कै दोऊ भुजानि सो भेटी कै वाचति है॥ पे रसमेटि कै धरति है॥
ज्ञातिवर्णनं अलंकार॥ सषी की उक्ति सषी सों प्रवासविप्रलंभ पाती वर्न
नं जातिवर्णन अलंकार॥ जाको जैसो रूप गुन वरनत वाही रीति॥ तासों जात
सुभावक बिभाषत हैं कवि प्रीति॥ २५॥ मूलदोहा॥ अथ हासरस वर्ननं॥
चित पितमारक जोग गनि: भयो भयें सुत सोगि॥ पुनि हुलस्यो जिय जोइसी:
समझे जारज जोगि॥ यह हासरस जोतकी को पितामह कवि की उक्ति॥
सवैया॥ सुत भयो इक जोतिकी के अरु सो धनसो चतमैं डुलसानो॥ डीठ
परो पितु घातक जोग सबिचारि हियें अतिही अकुलानो॥ जारज जोग ल
ष्यो तव ही सुलषो पुउ मानि हुलास सयानो॥ स्य लिगायो उघपुलि उछा
ह घु आनंद पुंज हिये अधिकानो॥ टीका॥ कवि को वचन॥ जोतकी अपने
चित मैं पितमारक जो जोग ताको गनि कै॥ सुत कहिये पुत्र ताके भए सोग

भयो॥ उनि कहियें के रिझो इसी जो जोनको॥ सो जार जजो गसमझि कै॥ अपने
हियें मे समझि कै खुसी भयो॥ इसको यह मतलब है॥ कि यह बालक जिसतें पे
दा भयो है सो मरि जाइगो॥ मोको दोष नहीं है॥ लेषाअलंकार॥ हास्यरस॥
लेषाअलंकार॥ २६॥ मूलदोहा॥ परतिय दोष पुरान सुनि॥ हसी मुलकि सुष
दानि॥ कस्तु करि राषी मिश्र हू॥ सहस्राई मुसिकानि॥ इहां लवमपैरालि
ककौ परिहासकविकी उक्ति है॥ सवैया॥ पंडित राजसमाजमै बैठि कथा जु
पुरान प्रसंगमैं भाषी॥ जाननि बीपदवीसविसेपरदारसोंजो हितको अभिला॥
षी॥ सो सुनि कै मनुलकी मृगलोचनि जासो हुहीठि मिलाइकै राषी॥ भहुज
वारि बिलोकत हौ उमगी सु मुसकान महुक करि राषी॥ टीका॥ कवि को वचन है
अथवा सषी को वचन सषी प्रती॥ पराई स्त्रीसंग को बडो दोष है॥ यह पुरान में क
हि के सुषदानी कहियें नाइका॥ सो मुलकि कहियें खुसी हुके हसी॥ मिश्र॥
कहियें पुरान बाचन हारो तिनसों ले॥ सुषमें आइ जो मुसिकानि सो कस्तु करि कहियें क
ष्ट करि राषी॥ लेषमाअलंकार॥ हास्यरस सहस्रालंकार॥ लछन पथ्यासेल
षै सैनति मे कछु भाइ॥ २७॥ मूलदोहा॥ बहु धन ले पसान के पारो देत सराहि॥ वै
द वधू हसि भेद सौं रहि नाह मुह चाहि॥ इहां लवमसवैद को परिहास कविकी
उक्ति॥ सवैया॥ विषम चिकित्सा के भेद निमैं इक बैदहु तो पुरुषार्थ हीनो॥ का
हु नपुंसक को बहु काइचनो धनु लै बहुतैं थकदीनो॥ पारो प्रचंड बढावत है चित
कै लिक लाल कोचाउ नवीनो॥ एकनिया हसि बाकी तिया पतिकै मुष ओर चितै हँ
सि दीनो॥ टीका॥ कवि को वचन बहुत धन लेकै॥ औ नइ हस्याम कोरि के सराहि ये
पारे की तारीफ करि कै वैद पारे को देत है॥ इसको यह मतलब है॥ कि जह पारो नपुं
सक को मरद करत है॥ वैद की बधु कहियें नाइका॥ हसि कै भेद सो नाह तन कहियें वै
द ता को मुषदेषि रही॥ इसको यह मतलब है॥ कि जो ये सो पारो है तब तम वे तो न
बात है॥ नाइक कौ नपुंसक ता जानी जात है॥ अथवा सषी को वचन नाइका प्रती
बहु धन कहियें बहुत ज्वाके नाइका है॥ ता नाइका कौं तू लेह॥ औ कत नाइक पर
इही सान कर॥ और स्त्री पारो कहियें क्षुक तिनाको देत है॥ तं इस वान को सराह
ना करु॥ वैद वधू कहियें स्त्री हसम को वध संवाधन है॥ नाह सि: तस्रीलाल सों भेद

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विहा॰
१८॰

170

करह्यौ ॥ तेसौ हि सबकौ भजषवे दे दिषि ॥ इसमर्थ मैं नाइका मानवती होत है ॥ सू
छमाअलंकार ॥ देषि रहि वे तेहासरस बगि ॥ सूछमालंकार ॥ सूछम पस्य
सैल छू ॥ सैन नि मैं कछु भाइ ॥ २८ ॥ मूलदोहा ॥ रवि विंदौ कर जोरि कैः सुनत
स्याम के बैन ॥ भए हसौ हैं सबनि के ः अति अनषौ हैं नैन ॥ इह हास्य रस चीर
हरन को समय सषी को वचन सषि सौं कवि की उक्ति ॥ सवैया ॥ गोप
वधून के चीर चुराइ कदंब पै धाइ चढ्यौ हरि ज्यौं हौ ॥ हाथ सों गात छिपाइ
कै बस कुची सत राइ के मांगति त्यौं हौ ॥ देष दिवाकर कों कर जोरि प्रनाम करौ
कह्यौ बाल बसों हौ ॥ यौं सुनि कै विहसौं इ भई सब की अषियां जु हुती अनु
षौहौ ॥ टीका ॥ सषी को वचन सषी प्रती ॥ वस्त्र हरन का समय है ॥ तब हाथ जो
रि कै सूरज को नमस्कार करो ॥ ऐसें श्रीकृष्ण के वचन सुनि कै ॥ अति गुसा
भरे जो गोपिन के नेत्र ते हसौहें भए ॥ व्याजोक्ति अलंकार ॥ हास्य रस अनु
भाउ समय विभाव रस बदालंकार ॥ अथ करुनारस ॥ २९ ॥ मूलदोहा ॥ अथ
अद्भुत रस ॥ हनी पूतना अचुदियोः जग मुह मैं दिषराइ ॥ कहा जानियें कौ
भयौः प्रगट नंद घर आइ ॥ यह अद्भुत रस है ताकौ वर्नन कवि कौ उक्ति हे
तु ॥ सवैया ॥ पूतना मार करी अति पावन ये तौ पराक्रम कौ अति भारौ ॥ विष्णु को
रूप दिषायौ सबै जग आनन माहि सु बाहन सारौ ॥ हाथ लकुट हिये धरे कर बंस
सिषी अहि तन का धि पै कामरी कारौ ॥ हलकहै न द्विजा निपरे प्रगट्यो नंद गोहक
हो निरधारौ ॥ टीका ॥ अच कहियें पापपनी पूतना बाक हियें राक्षसनी ॥ सो हनी
कहियें मारी ॥ फिर गरो जग मुह मैं दिषराइ दयो ॥ सो कहा जानियें नंद के घर मैं
कौन प्रगट आइ भयो है ॥ पर्यायोक्ति अलंकार ॥ कवि निवद्ध वक्ता को उक्ति व
चन अनुभाउ पर्यायोक्ति ॥ पर्यायोक्ति प्रकार है कछु रचना सौं बात मिसु क
रि कारिज को जिए जैसें चित्र सरूप ॥ अथ भयानक रस ॥ ३॰ ॥ मूलदोहा ॥ रा
धा हरि हरि राधिकाः बनि आए संकेत ॥ दंपति रति विपरीत सुषः सहज सुरत हूं
लेत ॥ इह लीला हाव रति विपरीत समय सषी को वचन सषी सौं ॥ कवित्त ॥
देषिवे को देह है पै एक तन एक प्रान रूप सील वैस गुन चातुरी समेत है ॥ जैसें उ
साचे मनसा वे प्रीति रीति पन अजलौं न देषे कहूं ऐसें हित हेत है ॥ राधा माधौ

माधोराधाग्रहलिवद्दलिवेषबनिबनिआयेकेलिकुंजकेनिकेतहै ॥ कोऊ ।
कविहृत्सदोऊसहजसुरतिहूंरतिविपरीतिकीविधिसुषलेतिहै ॥ टीका ॥
सषीकोवचनसषीसों ॥ राधिकाश्रीकृष्णकौ ॥ श्रीकृष्णराधाकौ ॥ संके
तमैआयेसाहृदयधारें ॥ दंपतिकहियेराधाकृष्ण ॥ सहजसुरतमैविपरीतसुरत ।
कोलेतहै ॥ काव्यलिंगअलंकार ॥ सषीकीउक्तिसषीसौंदंपतिनिकेसंयोगश्रृंगा
रहावलीलारतिविपरीतिकाव्यलिंगअलंकार ॥ अर्थसमर्थनकोजियेतिनका
युक्तसोमित्रकाव्यलिंगभूषनतनकाभाषतबुधिविचित्र ॥ ३१ ॥ ॥ अथललि
तहावदोहामनिरामको ॥
मलदोहा ॥ अथललितहाववर्ननं ॥ नेरीचलनिचितौनमृदु: मधुरमंदमुसि
कानि ॥ छाइरहीसषिलालके: लषिमनमिषअषियानि ॥ यहललितहावहै
सोसषीनाइकासौंकहैनाइककेहै ॥ सवैया ॥ मंदहसीमुषचंदलसीविग
सीतरलाइमहासुषदानी ॥ मन्नगयंदगतीकविकृष्णचितौतनलैमनधीर
हिवानी ॥ छाइरहीसषितमनमोंनहिभावतआननियामनवानी ॥ प्यारीत
हीसभमोंसिरताजकिधोवसनैसहजैदधरानी ॥ टीका ॥ सषीकोवचनना
इकाप्रती ॥ नेरीचलनीकहियेंचलिवो ॥ श्रमताइकहैकोमल ॥ चितौनिकहि
यैदेषनो ॥ मधुरकहियेमीठो ॥ मंदहेरीमुसकानीकहियेमंदहास ॥ लालक
हियेनाइक ॥ ताकेमनमिषकहियेपलकनहीलागत ॥ येसोजेआछेतिन ।
मैंछाइरहीहैसोतललषिकहियेंदेषु ॥ जातिवर्ननअलंकार ॥ इतीकीउक्तिनाइका
प्रतिललितहावजातिवर्ननं ॥ जाकोजैसोरूपगुन: ॥ ३२ ॥ अथविलासहाव
वर्ननं ॥ मलदोहा ॥ हसिअोठनिविचकरउचैः कियेनिचौहैनैन ॥ षरेअरोपि
यकेपिया: लगिबीरीमुहदैन ॥ इहजातिवर्ननानाइकाकीसोभासषीसौंक
हे ॥ सवैया ॥ काकहौकहोअतिहीहठकैनवराधिकाकोजियमैंयहआई ॥ ग्रीव
निवाइदुराइकपोलकियेंनतनैननऊसुसिकाई ॥ वीरीवनाइलईकरकंजषवै
वेकोमैजुखमाउकसाई ॥ यौंकहिनूकोमरसाईविलोकिभईमनसोहनकेमन
भाई ॥ टीका ॥ सषीकोवचनसषीप्रती ॥ अोठनिमेहसिकेनिचाहै ॥ सुख ।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नैनकरे हाथउचाइ कै ॥ नाइकानाइककेमुषमैबीरंदिनलागी ॥ जातिव
र्नेनअलंकार ॥ सषीकीउक्ति सषीसौं संजोगशृंगारनाइकामध्यातोकें ह
र्षत्रपासंचारीविलासहावनाइककेंहर्षत्रपासंचारीविलासहाव ॥ नाइ
ककेंहर्षअभिलाषसंचारीहैजातिवर्ननजाकौजैसोरूपगुनवरननवाही
रीति ॥ तासौंजातस्वभाउकविभाषतहैकरिप्रीतिः ॥ ३३ ॥ अथविब्बोकहा
वः मूलदोहा ॥ मतिरामका ॥ नथुरीगजमुकतानकीः लसततुचारुसिंगार ॥
जिनिपहिरोसुकुमारतनः औरअभरनाभार ॥

टीका ॥ सषीकोवचननाइकाप्रती ॥ गजमोतिनकोजोनथुनीतासौंतेरेचा
रुसुंदरसिंगारसोहतुहै ॥ तातेकोमलदेहमैऔरअभूषनभारेहैं ॥ तिन१
कौमतिपहिरो ॥ उत्प्रेक्षाअलंकार ॥ उक्तिसषीकीअथवानाइककीविदि
तहावउत्प्रेक्षा॰ ॥ जहकीजितसंभावना ॥ ३० ॥ अथमोटाइतहावर्नेन ॥ ३४
अथमोटाइतहाववर्ननं ॥ मूलदोहा ॥ झूठौहीब्रजमैलग्योः मोहिक
लंकगुपाल ॥ सपनेहूंककबहूंहियेंः लगैनतुमनंदलाल ॥ यहनाइकाअ
पनेंमनकीभ्रमतनसषीसौंकहतिहैकैनाइकसौं ॥ सवैया ॥ झूठोक
लंककलग्योब्रजमोंनहिजानकहीमनकीगतहै ॥ गामचवाउकरैहिग
रोइयिंइनकेंउपहासरतोहै ॥ मैंककबहूंसपनेंसजनीनहिमेटोगुपालहि
यैंभरिहै ॥ मोहियहीमनसंसोरहेमनभावनमोहिमिलैकवहै ॥ टीका ॥ ना
इकाकोवचननाइकसो ॥ गुवालश्रीकृष्णकोसंबोधनहै ॥ मोकोब्रजमै१
झूठाकलंकलाग्यो ॥ नंदलालसंबोधनहै ॥ सपनेहूमैंतुममेरेहियेंसोक
बहूंनहीलागे ॥ जागतकीवातकहाकहिये ॥ काव्यलिंगअलंकार ॥ ना

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

इकावीऊक्तिनाइकसेंमोटाइतहावकाव्यलिंग॥ अर्थसमर्थनकोजियेज
हांयुक्तसोमित्र॥ काव्यलिंगभूषनतिहांभाषतबुद्धिविचित्र॥ अथकुट्टमि
तहाव॥२५॥ अथकुट्टमितहाव॥मूलदोहा॥ प्रीतमकौमनभावतीःमिलति
चाहदेकंठ॥ वाहीछुटीनकंठतैंःनाहीछूटीकंठ॥

टीका॥ सषीकोवचनसखीप्रती॥ मनभामतिकहियेंनाइकासोप्रीतमकहि
येंनाइक॥ तिससोंचाहकरिकैकंठमैमिलतिहै॥ वांहीकंठतेनहीछूटीनाही
अपनेकंठतेंछुटी॥लाटानुप्रास॥ सषीकोउक्तिसखीसोंऊहमितहावदो१
हामतिरामकौ॥ लाटानुप्रास॥ वहीअरथपदफिरपरेभिन्नभाउकछुकोइ
सोलाटानुप्रासहैं॥ कहतसयानेलोइ॥ अथविहितहाव॥२६॥ अथविहत
हाव॥मूलदोहा॥ दोऊचाहभरेकछूःचाहेकह्योकहैन॥ नहिजाचककहु
निसमलीःचाहरिनिसतवैन॥ इहग्रंथमध्यानमैंलाजकीअधिकातैंदोऊ
ककछुकहिसकतनाहिसोसषीसषिसोंकहतिहै॥सवैया॥ आजुहूंमिलि
कैसजनीमनसोंमनसाकरीषोरिमिलायो॥ ठाहेठगेसेरहेंइकलाइकैनेहको
मेहतहीवरसायो॥ चाहभरेदोऊचाहैंकह्योषछुवालनयोंमनमआवनपायो
समजैआवैनभौनतेंबाहरहारहतेजवजाचककोआयो॥ टीका॥ सषीकोवचन
सखीप्रती॥ दोऊकहियेनाइकनाइकातेचाहनासोंभरेहै॥ सोकछुकह्योचाह
तोहैपरिकै सोतनकहि॥ जैसेजाचककहियेभिषारी॥ ताकोंहानिकैसमन
वाहरिनिकसतनाहीहै॥ तैसेंदंपतिकेवैनमुहतेंवाहरनहीकहतहै॥उ
पमाअलंकार॥ सषीकीउक्तिसखीसोंदंपतिकेअंतरजपासचारीतेरति
पोषी॥ विहितहावउपमालंकार॥ उपमाअरुउपमेयसाधारनवाचककोइ
एचारयोंपाइएजिहांहरनउपमासोइ॥ अथविवोकहावमतिरामकोदोहा॥२७

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अथ विधोकहाव ॥ मूलदोहा ॥ प्रान पियारो पगपरैः तऊं न तकति इहि ओर
येसोउरजकठोरतौः त्याहीउरजकठोर

टीका ॥ सखीकोवचननाइकाप्रती ॥ प्रानपियारोकहियेंनाइकु सोतेरेपगकहि
येंचरननलागयरोहै ॥ तूंताकओरनहींदेषतिहै ॥ सोजोतेरोउरककहियेंहियासो
कठोरहै ॥ तोन्यायकरिकै ॥ उरजकहियेंकुचतेकठोरभएहै ॥ उत्प्रेक्षाअलं
कार ॥ सखीउक्तिहूतीउक्तिनाइकमेंविव्वोकहावहै उत्प्रेक्षालंकार ॥ जहकी
जतिसंभावनावस्तुहेतफलमधिः ॥ ३८ ॥ अथविभ्रमहाव ॥ मूलदोहा ॥ च
लीअलीकहिकानपैः बडेकौनकेभाग ॥ उलटोकेंचुककुचनिपैः कहैदेतअनु
राग ॥

टीका ॥ सखीकोवचननाइकासो ॥ अलीनाइकाकोसंबोधनहै ॥ तूंकौनकेभा
गचलीहै ॥ एतेवडेकौनकेभागहै ॥ तेरेकुचनिकेऊपरउलटीकेंचुकीकहि
येंआंगी ॥ सोतेरेअनुरागकोकहेदेतीहै ॥ विभावनाअलंकार ॥ सखीकीउ
क्तिनाइकामेंविभ्रमहावविभावनालंकार ॥ समतिअकारनतेंजहांकारज
परगटहोइ ॥ चोथोभेदविभावनाकोजानतसवकोइ ॥ अथकिलकिंचित
हाव ॥ ३९ ॥ अथकिलकिंचितहावः ॥ मूलदोहा ॥ सुनिपगधुनिचित
ईउतैः न्हातिदियेंहीपीठि ॥ चकीझुकीसकुचीडरीः हसीलजीलीडीठि ॥ इ
हनाइकाकेवैननाइककोंदेषिपकांतमेंचेष्टाकीनीसोनाइकसखीसों

कह्यहै॥सवैया॥कोमकीवामहुतेअभिरामलसैदुतिजोवनकोसरसानी
क्योंकिहूपीठदियेंअविलोमकिलोधुनिमोपकाकीपहिचानी॥ज्ञात्ववि सों
चितईइतओरसवैसोहमोपैनजातवषानी॥चोकोचकीसकुचीडरपीकरि
डीठलजोंहीकृकौमसिकानी॥टीका॥सषीकोउक्तिसषीसौं॥पीठदियेंठा
ढीहैनाइका॥सोनाइककेपगावकहैचरन॥तिनकोधुनिकहियेंसवदताकोसु
निकै॥चकिकहियेचकितहवेकिकहैरिसभरी॥औरसकुचिकहियेसंकोचभरी
डरिकहियेंभयजुत॥हासभरीलालभरीजोडीठि॥तासोंनाइककोओरचि
तई॥जातिवर्नननअलंकार॥नाइककीउक्तिस्मृतिसंचारीनाइकाकैकिलकिंचित
हावजातिवर्ननअलंकार॥जाकोजैसोरूपगुनवरननतवाहीरीति॥तासोंजातसु
भावकविभाषतहैंकविप्रीति॥४०॥इतिनवरसनवसिंगार॥अथसंयोगसिं
गाररसवर्ननं॥मूलदोहा॥गोपिनसंगनिसिसरदकीःरमैरसिकरसरास॥ल
होछेहुअतिगतनकीःसबनिलषेसबपास॥इहनाइकदछनहै॥सुरासमं
डलमेंअपनीचतुराईकरिकेसबकोप्रसन्नराष्योएवाकेआधीनकाहूने
नजान्योसषीकोवचनसषीसों॥कवित्त॥जमुनाकोपुलनिसुहाईछविछा
इतैसोसरदरजनीजोन्हविसदविलासहै॥गोपिकासंगरसरंगकोउमंगनमेंर
सिकमनमोहनरमतरसरासहै॥अवलाअनेकनमेंकीनोंनंदललाकछअद्भु
तचातुरीकोकलायोंप्रकासहै॥सबहीकीवाहगहिसबहीकेसंगनाचोस
वनविलोकेगाकाहूसबहीकेपासहै॥टीका॥सषीकोवचनसषीसों॥गोपि
नकेसंगसरदरितुकीरातिमैरसिकवरहैश्रीकृष्णसो॥रसकहियेप्रीतितासोंरा
समैरमैकहियेंक्रीडाकरतभयो॥तिनश्रीकृष्णअछ्यगतियेसीलई॥जोसब
गोपिनअपनेअपनेपासलष्यौ॥इसकोयहमतलवहै॥किसबगोपिनजानी
किश्रीकृष्णहमारेपासनाचतुहै॥विसेषालंकार॥उक्तिसषीकीसषीसों
आश्चर्यसंचारीकरिनाइकदछिनसंयोगसिंगारचपलतासंचारीरासवर्नने
विसेषालंकार॥विनुआधारहोइआधेयलषहुआरंभसिद्धिअतिदेइएकअन
वनैवहुठौर॥त्रिविधिविसेषजानिसिरमोर॥४१॥मूलदोहा॥मिसहीमिस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

आनपउसरु: दई सें बेबहराइ॥ चलौ लाल नम न भामति हि: तनकी छाह छि
पाइ॥ इह नाइका जेष्ठा कनिष्ठा के भेद में संभवै सखी को वचन सखी सों॥ स
वैया॥ काहू सुजान के मांपे कछूर सरीति कै भेद कहै न हि जो रहो॥ आनप को
मिस के आवत राइ दई संग और जिती बनिता रहो॥ छैल गहो बह रोस मझू अंग
नाम टके लिनि कुंजन रहो॥ राधिका प्यारी को लै चल्यो संग राखिये अपने तन
की परछांहो॥ टीका॥ सखी को वचन सखी सों॥ उसरु कहिये सहोन जाई ये
सो जो आतप कहिये रूपता के छल करि कें सबे सखी बहराइ कहिये हटि कै
दई इस कोय हुमत लवरु॥ कि रूप बडी भई ताते अमस्रपने अपने चरन्नाइ॥
लालन कहिये नाइकु सो मन भामती जो नाइका॥ ताको अपनी देह की छाया
मो छिपाइ कै ले चलो॥ पर्यायोक्ति अलंकार॥ सखी को उक्ति सखी सों नाइक स
खै के अवहित्था संचारी तें अति अनुराग व्यंग्य पर्यायोक्ति॥ पर्यायोक्ति प्रकार है क
छु रचना सों बात॥ मिस करि कारिज कीजिये जे सें चित्र सुहान अथ विप्रलंभ
४२॥ अथ वियोग शृंगार॥ मूल दोहा॥ मारी मव हाविन भरी: गारी घरी मिठा
इ॥ वा को अति अघाहटो: मसि का हर विनु नाइ॥ इह नाइका धृष्ट है नाइक को व
चन सखी सों है या तें गुन धन में नीके संभवतु है॥ वा को पाप दत पैरो छु की
प्रीति है॥ सवैया॥ मारे तो रु लनकी छुरिका सों तऊ मन हारि अनेक जना
वै॥ गारी जो दई कहां कहिये मधुराई इते कि सुधा कि न पावे॥ वा रति सूरति को
मन राहु मेरे हिये अति मोद बढावे॥ सील सुभाव सुहागिल को रस है विस
हू हसि हो हसि आवे॥ टीका॥ नाइका को वचन सखी प्रतो वै सखा प्रतो॥ नाइ
का का मारिवो मन हारिन सो भरी है॥ और नाइका की गारी घरी मिठास ती है॥ औ
र वा नाइका को अन खाहट कहिये गुस्सा होनो सो मसि का उ ते विनु न ही है॥
विभावना अलंकार॥ धृष्ट नायक को उक्ति नाइका की सखी प्रति ईर्षा विवि
प्रलंभ विभावना लंकार॥ समति अकारन तें जहां कारज परगट होइ॥ वो
को भेद विभावना को जानत सब कोइ॥ ४३॥ मूल दोहा॥ जाल रंध्र मग अंग
नि को: कछु उजास सो पाइ॥ पीठि दिये जग सौं रह्यो: डीठि झरोखा लाइ॥ इह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नाइकाकी आसक्ति नाम सखी सखीसों कहै ॥ सवैया ॥ बालकी देहकी दीपति
भांति सों ह्वै तिय राह्व विछाइ रह्यो है ॥ जालदरी चितनैं कढिकै वहि जोतिनको
समदाइ रह्यो है ॥ लाल भयो अवलोकि लइ हुठगास्त्र सिषाइ विकाइ रह्यो है ॥
पीठि दियें सिगरेज गनमांव रही डीठि फरोषा लगाइ रह्यो है ॥ टीका ॥ सखीको व
चन सखी प्रती ॥ जालकहियें फरोषा ॥ ताके रंध्रनिके मारगमें अंगनिको ऊ
ज्वल प्रकास सो छाइकै ॥ सिगरे जगतको ओर पीठि देकें ॥ डीठिको फरोषामें
लगाइ रही ॥ इसको यह मतलब है ॥ किन वैसै फरोषाकी तरफ दृष्टि अटकी
रही है ॥ परिसंख्या अलंकार ॥ दूतीकी उक्ति नाइकाप्रति उपपतिको दसा नि
वेदन नाइकके कहें याम्नुभाउ उन्माद दसा तें पूर्वानुराग व्यंगि परिसंख्या
अलंकार ॥ अरच निषेध पक थल हू जै थल ठहराय ॥ परिसंख्या तासों क
हति सकल सुकवि समुदाय ॥ ७७ ॥ मूल दोहा ॥ सोवत सपनें स्याम घन :
हिलि मिलि हरत वियोग ॥ तबही टरि कित हूं गई : नींदौ नीदन जोग ॥ पू
र्वानुराग रूपदरसन नाइका सखीसों कहति है ॥ नींदको निंदा करति ॥ सवैया ॥
आली विछोह भयो जब तें छ्वि याव कुं भांति वियोग तनई री ॥ आज लला म
नमोहन सों सपनेमें अचानक भेट भई री ॥ मेरी विथा विहराइवेको हि
लिकै मिलिकै रस वेलि ठई री ॥ नीर हदी दि बिलाइ कहै तब कहूं भागि
गई सुनाई री ॥ टीका ॥ नाइकाको वचन सखी प्रती ॥ स्याम घन जो श्री कृ
ल सो सपने मे आइकै सोवत ॥ हिलि मिलिके वियोगको हरत है ॥ तब
कहियें ता सपनेमें नींद कहूं टरी गई दूरि भई ॥ तातैं नींदाके जोग है ॥ विषा
दनालोकोक्ति अलंकार को भेकद ॥ नाइकाकी उक्ति सखी प्रति पूर्वानुरा
गस्वप्न दर्शन विषाद संचारी विषादन लोकोक्तिकी संसृष्टिः प्राप्ति जि
हुं किरछुकी चज इच्छितने होइ ॥ ताहि विषादन कहत है जे पंडित कवि
लोइ वहनावति है लोककी लोकोकति हि सोइ ॥ ७९ ॥ मूल दोहा ॥ ह
सि उत्तर दिय नैं रहईः नुमजु तिन्ही दिन लाल ॥ राषति प्रान कपूर ज्यों : च
हो जु हरनी माल ॥ दूरुष्प्रानुराग निवेदन सषिको वचन नाइकसों ॥ स

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

174

बिहा:
१२४

दोहा ॥ छवरी ऐसी भई बिछुरे तिय से जहं मैं न लषी परै सौतौ ॥ आली बिलोकि
कै सी दुतिन्हा थ गयो इक सा य सबै सुष नौतौ ॥ वीस बिसे उड जात करे रत्यौ
राषत प्यारी को प्रानन कों तौ ॥ जब हु लाल निहारे दयो चुंच ची को हगाउ र
सो फ न है तौ ॥ टीका ॥ सषी को वचन नाइक प्रती ॥ लाल नाइक को संबोध
न है ॥ तुम नुहु रसि कै तिस हि ना अपने हिय ते उतारि दई ॥ सो चुं हु चिन को
माला सो नाइका के प्रान निकौ करे रवे समान राषति है ॥ इस को यह मत
लब है ॥ कि जैसे करे र गज्जा सो रहतु है ॥ तैसे गज्जा की माला सो नाइका के
प्रान रहै है ॥ नहि तौ नाइका प्रान निकरि जाते ॥ सषी नाइका को बिरह निवे
दन करति है ॥ उपमालंकार ॥ दूती की उक्ति नाइक प्रति ॥ नाइका को
बिरह निवेदन पूर्वानुराग ॥ उत्प्रेक्षालंकार ॥ नहु को जति सं भावना व
लकैत फल मधि तीन भांति उत्प्रेक्षा वरनन सु मति प्रसिद्ध ॥ ४८ ॥ मूल
दोहा ॥ देषत चर कर ले लो : उपै मार जिनि लाल ॥ छिन छिन जाति प
री षरी : छीन छबीली बाल ॥ इह नाइका को अनुराग निवेदन सषी वच
न नाइक सौं बिरह निवेदन के हेतु ॥ कवित्त ॥ बिकल भई है बाल लाल
अनुराग विन परी बिललात वै ताहू धीर न धरत है ॥ एते मान ग्रसु भई प
रे परजंक परनी छिनी ठि निरषो परतु वाको गात है ॥ काल्हि हो सु आ
न नाहि आज हो स अब नाहि याते पर जननु को जी व अकुलात है ॥
ऐसी छिन छीजति बिलाइ जिनि जाइ बाल ज्यौं कपूर दानी ते कपूर उ
डि जात है ॥ टीका ॥ सषी की उक्ति नाइक सो ॥ छबीली कहिये सुंदर जो
बाल कहियें नाइका ॥ सो छिन छिन मैं षरी कहियें अति छीन परि जाति
है ॥ लाल संबोधन है ॥ सो नाइका देषन हो रे षत ॥ कपूर के चूर के समा
न जिनि छिपि जाई ॥ उपमालंकार ॥ दूती की उक्ति नाइक प्रति नाइ
का को बिरह निवेदन पूर्वानुराग व्याधि उत्प्रेक्षा ॥ ४७ ॥ मूल दोहा ॥ जो वा
के तन की दसा : देषौ चाहत आप ॥ तौ चलि नेक बिलोकियें : चलि अव
कौं चुप चाप ॥ इह नाइका प्रोषित पतिका व्याधि अवस्था सषी को वचन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नाइकासौं नाइकाको लेचलिबौ ॥ सवैया ॥ पाहुनवी धुनरी ज्यौं वरी बरसे
अरुबांसुरसैननमायें ॥ ज्यौं ज्यौं करै उपचार उरै त्यौं पसारु रुमलोगनको
अतिपायें ॥ वाकीदसा अब ऐसी भई हरि ज्यौं अवलोकि आई चाहनआयें
तौ बुहु सो धल है नवलाइ ल्यो यौं अचकाच लियें चुपचायें ॥ टीका ॥ स
षीकोवचन नायक प्रती ॥ जो तुम वाल नाइका कै देहकी दसा आयदे
षो चाहत है ॥ वलीनाइकाको संबोधन है ॥ जो न मअचका कहियें अ
चानक ॥ चुपचाप चूक हियें मान है कै चलिकै नेकु कहै थोरी सी देषियै ॥
काव्यलिंगालंकार ॥ उक्ति इनौकी उक्ति नाइक प्रति नाइकाको विरह नि
वेदन लेषा अलंकार ॥ जहां दोषमैं कीजिये गुनकल्पित ज्ञविशेष ॥ कोगु
नमै ठहराइये दोष ज्ञनो लेष ॥ ४८ ॥ अथ विभत्स रसः ॥ लछन दोहा ॥ वलया
पीक उगार त्वचः गिरे संजोग निवास ॥ मास्यो विरह मनोपस्यो ः पुंजर लोहु
मास ॥ यह जोग सिंगार विषै सषिको वचन नाइकसौं ॥ सवैया ॥ नीनभई रति
केलि मैं आज विराजत ताहि को रंग घलो है ॥ हासक है अति नीहु हठके वि
रहानु परयो रत मैं दलि है ॥ चूरी न ही यह पंजर राजत पीक न ही यह लो
हपरी है ॥ ये जो उगाल सो मास परयो सब नीत संजोग विहार करी है ॥
टीका ॥ सषीको वचन सषीसौ ॥ वलया कहियें चूरी ॥ और पानकी पीक
और पाल षाए को त्वच को उगारत है ॥ सो एम वसंजोग के निवास कहियें
स्थान सो परे है ॥ सो मानु विरह जो मारो है ॥ इसको यह मतलब है ॥ कि पं
जर के ठौर चूरी टूटि परी है ॥ और लोहु की ठौर पीक परी है ॥ और मास के ठौ
र पानको उगार परो है ॥ उत्प्रेक्षा अलंकार ॥ स्वतः संभवी ग्लान प्रगट ही
है उत्प्रेक्षा यथा संष्य को संकर रसवदालंकार सो संसृष्टिः ॥ जहकी जति
संभावना ठ ॥ अथ सांत रस ॥ ४९ ॥ अथ सांत रस ॥ लछन दोहा ॥ दियो सु सी
स चढाइ लै आछी भांति अएहेरि ॥ जापै सुषचाहै लह्यौ ः ताकै दुषहु न फे
रि ॥ इह भक्तको वचन अपने मन सौं कहै ॥ सवैया ॥ राषि तं वाको विस्वास
हियें अति ज्ञाहि सदा परिपरन टेरै ॥ रंक तें राउ करै पल मैं जो वहै नेक
कृपा करि हेरै ॥ मोक हु तो हि दियो जग ही स सीस चढाइ कै कौन अए

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

175

बिहा.
१७५

रै ॥ जापैलख्यौसुबचाहतहै अबनाके दयेदुषकौंझिझिपैरै ॥ टीका ॥ साधुको
वचनसाधुप्रती ॥ जोभगवानतौकोदयोहै ताकोतूं आछीभांतिसोंमाथेआ
पनेपरधारिलेहु ॥ अहेरि कहियेंपीछेमतिदेषु ॥ जाकेपाससतें सुषलयोचा
हतहै ॥ ताकेदीनेदुषकोमफेर ॥ इसकौयहमतलबहै ॥ किपरमेस्वरतो
कोसुषदेइगो ॥ विचित्राअलंकार ॥ सोछामतिसंचारीवचनअनुभाउतेंसां
तरसध्वनिविचित्रालंकार ॥ उलटेफलकोचाहसोंकीजेजतनविचित्र ॥
५० ॥ मूलदोहा ॥ मैनपाइऔनायसैाः राषोहियोहमाम ॥ मतिकबहूंआ
पइहोः पलकुपसीजेस्याम ॥ दूहभक्तकोवचन ॥ कवित्त ॥ गावैगुनसेसज्ञा
कौध्यावतमहेसमनिसाधतसमाधिबहुभांतिचित्तलाइकै ॥ ऐसीकोऊ
विधिमोपैआवतिनवनिजोतैंवसकरोत्रिभुवनपतिकोंरिझाइकै ॥ एक
बारउरधरिआपनोहियोमैंकठिनराष्योहैहिमामसतिहतापसोंनचाइकै ॥
बहुकहनामयकहावतहैदीनबंधुमतिकहूंपलकपसीजेइतआइकै ॥
टीका ॥ साधुकोवचनअपनानाइकाकोवचनसषीप्रती ॥ आधिभौतिक
आधिदेवकआध्यात्मिक ॥ एतीनिप्रकारकेजोताप ॥ तिनसोंमेंअपनो
जोहियोसोइभयोहमाम ॥ सोतनपाइकहियेंगरमकरिराषोहै ॥ स्याम
कहियेंश्रीकृस्नसोमतिकबहूंइहांआइकैछिनमात्रपसीजै ॥ संभावना
अलंकार ॥ जोउक्तिनाइकाकीहोयतोश्रृंगाररसमेंसरहीकापाकवि
भक्तिजानियेंपैजेतापपदतेंकहूंसाधककीउक्तिसीभासतिहैवचनअनु
भावनिर्वेदसंचारीकरिसमस्याईपोष्योतातेंसांतरसध्वनि ॥ संभावना
लंकार ॥ जौयोंतौयोंहोनहैयहकहनावतिआइ ॥ तहांकहतसंभाव
नाकविपंडितसमुदाय ॥ ५१ ॥ मूलदोहा ॥ जमकरिमुहतरहरिपरोःज
हधरिहरिचितलाइ ॥ विषमत्रिषापरिहरअजौः नरहरकोगुनगाइ ॥
इहसांतरसभक्तकोवचनमनसोंभयसंचारीजानीयें ॥ कवित्त ॥ दसहूं
दिसानमांझव्यापिरह्योजाकोधांकुकहोवाकेविक्रमकोसकहांलौंप्र
भावरे ॥ तिनकालौनौरेतीनोंलोककेसकलवलीकोकूपैनवचाव
कुकियेहूंउपावरे ॥ ऐसेंकालकरिकैपकैरोतूंमहततबहरिहितसकदय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हधरहरि चित लावैरे ॥ हारि मानि विषयत्र बासि परिहर मन नरहरि देवके स
मरि गुन गावैरे ॥ टीका ॥ साधु को वचन सीछा करतु है ॥ जम जो है सो ई भयो
करि हाथी ॥ ताके मुह वेतर हरि कहियें नरे तू परो है ॥ इस बात को चित मै
धरिकै ॥ हरि कहियें श्री भगवान ताको अपने चित मै लाउ ॥ विषय कहियें इं
द्रियन के सुष तिनकी त्रिषा कहियें त्रिसा ॥ ताको तूं परिहर के हे नर जिदे कु
नरहर कहियें नरसिंह ताके गुन गाउ ॥ अथवा नरसें वोधन है ॥ हरि कहियें
भगवान अथवा हरि कहियें सिंह ताके गुन गाउ ॥ इसको यह मतलब है ॥ कि
हाथी के तेरे तै ॥ सिंह छुडावत है तैसें जम तें छुडावन हारो भगवान है ॥ छे
रूपक छेकानुप्रास ॥ सीछा मति संचारी वचन अनुभाउ तें सांत रस व्यंग छे
कानुप्रासलंकार ॥ जहां बीच पद दै परे अछर समता आइ ॥ तह छेकानुप्रास
है कहत सुकवि समुदाय ॥ ५२ ॥ मलदोहा ॥ जगत जनायो जिहि सकल ः
सो हरि जान्यो नाहि ॥ ज्यों आंषिन सव देषियें ः आंषिन देषी जाहि ॥ इहां सां
रस भक्त कौ वचन निर्वेद स्थाई भाव जानिये ॥ कवित्त ॥ नाहि मजवैया तू भ्रम भ
र्यो भटकतु वोरे याते लहियत सभ दुष नके गोतु है ॥ मान अरु चिह हरि भज
न पियूष छाडि मानि विष रूपि विषय विषम विष भोगतु है ॥ जिनि सभ जगत जना
यो भली भांति वह प्रभयैन जान्यो ऐसो मोह कोउ दोतु है ॥ देषि जिन आंषि
न सौ सभ दरसायो तिन आंषिन को कोउ भांति देषिवो न होतु है ॥ टीका ॥
साधु को वचन साधु प्रती ॥ जिन भगवान सिगरो जगत जनायो है ॥ सो हरि
काहू न हो जान्यो है ॥ जैसें आंषिन सो सव काछु देषियतु है ॥ ते परि आंषि का
हू सो देषी न ही जाती है ॥ दृष्टांतालंकार ॥ वचन अनुभाव ते सांत रस व्यं
ग ॥ दृष्टांत अलंकार ॥ उपमान रु उपमेय पुन वाचक धर्म सुजान ॥ हो तवि
व प्रति विंव है दृष्टांत सु परिमान ॥ ५३ ॥ जप माला छापै तिलक ः सरै न मलदोहा
एको काम ॥ मन काचै नाचै वृथा ः साचे राचै राचे राम ॥ इहां परलाविकजौ
लौ मन मैं कचाई है ॥ तौ लौ ऊपर कौ स्वांग कामना हीं आवतु है ॥ सवैया ॥
तीके मनोहर माल वनाइ के माल धरी उर मैं किनि सालो ॥ छाप तिसोंनन मे
छितके अरु ध्यान लगाइ रहो किनि कौलो ॥ नाचन नाचर षाक विह्लक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

176
बिहा०
१२८

चाईरहीउरमैंभरितौलौ॥ काजनकहुइहभेषसरैनहिसांचरचौमतिनाहितैजौ
लौ॥ टीका॥ साधुकोवचन॥ जपकीमालाअोरछापेअोरतिलक॥ इनसौंए
कौकामकहियैअभिलाषसोपूरननहीहोतहै॥ काचेमनसौंजोएवातें
करितौवृथानाचैहै॥ तातेरामसांचुसौंरचैहै॥ अथवाजपमालाछापेतिलक
इनसौंकामसरतुहै॥ अोरजोसबसौंभ्रमभयोहै॥ ताकोकामएरहोहोतहै॥
कोचमनसौंजोरवृथानाचै॥ कैसांचेमनसौंनाचै॥ तऊरामदोऊबातसौंरचौ
है॥ परिसंख्याअलंकार॥ वचनअनुभाउतेसांतरसअंगीपरसंख्यालंकारअ
रथनिषेधेएसकल॥ इनैथलठहराइ॥ परसंख्यातासौंकहतसबकलसुकवि
समुदाय॥ ५४॥ मूलदोहा॥ सोरठा॥ मैंसमझ्यौनिरधारः एहजगकाचौ
काचसौ॥ एकैरूपअपारः प्रतिबिंबलषियतजगत॥ इहहांतिरससर्वमयीक
रिदेषिये॥ कवित्त॥ निपटअसारदुषदुंदकोअगारयहभांतिभरोभयभ्रम
निकेभारहै॥ साचेकोसौहासौतातेंसांचोसोनिहारियतजोजोलषियतुसो
कछुथिरनारहै॥ मैंतोमनमैंतोसमझकैविचारकरियहजगकाजअैसोकौ
चनिरधारहै॥ जितितितरहरिरह्यौएकनुपुरुषवरएकैरूपतन्हाप्रतिबिंबितअ
पारहै॥ टीका॥ साधुकोवचन॥ बुद्धिअोरअनुमानप्रमानअोरश्रुतिकहि
येंवेद॥ इनबातनिकेकिएतेंभगवानजीठिकएसौंठहरातहै॥ परब्रह्म
कहियेंपरमात्मा॥ ताकीगतिअलषकहियेंदेषवेमेंनहीआईहै॥ सोल॥
षीनहीजातीहै॥ काव्यलिंगाअलंकार॥ वचनअनुभावतेंसांतरसअंगि
उत्प्रेक्षा० जदकोजतिसंभावनावस्तहेतुफलमधिजीनभांतिउत्प्रेक्षा॥
५५॥ मूलदोहा॥ तौलगियामनसदनमैंः हरिआवैकिहिवाट॥ विकट॥
जटेजौलौनिपटः षुलैनकपटकपाट॥ इहसांतरसभक्तिकोवचनजा
नियें॥ कवित्त॥ सरलसुभावगहिसंतनकेसंगरहिसंग्रहधरमलागिभ
गतकेघाटरे॥ छोडिअोटपाइगुनगाइकरुनामयकेयहसमझाइनोसें
काहूनबिगाटरे॥ कहैकविकृस्नदुहीदेषिधौविचारमनमंदरमेंहरिजौ
लौआवैकिहिवाटरे॥ जटेहैंविकटरुष्णावादकीजंजीरनसौंतौलौएक
टननाहिकपटकपाटरे॥ टीका॥ साधुकोवचनअपनेमनमती॥ अथवा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्री रघुकुलपती ॥ मैनें जिस भगवान को भजन सेवन कह्यौ ॥ तू तातै भजौ क
ह्हि गयो ॥ तैनें एकौ वार भगवान नहीं भज्यौ ॥ आरज्ञा तैं कहियें जिस पाप
तैं हरि भजन कहियें हरि भजि ज्ञानी कह्यौ ॥ गमार संबोधन है सो पंपरतें भ
ज्यो सेवो ॥ जमकालंकार ॥ वचन अनुभाव तैं सार सब्यंगि ॥ भेद परैन
लखाइ तासौं रूपक कहत हैं सकल सुकवि समुदाय ॥ ५६ ॥ मूलदोहा ॥
यह बिरियां नहिं और की : तू करिया वह सोधि ॥ पाहन नाम चढाइ जिन : कीने
पारि पियोधि ॥ टूहां तन रस भक्त को वचन मन मैं हो ॥ कवित्त ॥ तमो है भलयो जो
सयारतन एक आंक वार वार कहिये कहां लौ पर मोधि रे ॥ परयो भवसाग
र कै मौर मभै भटकत किततौ उपाधि और तासैं रह्यो आधि रे ॥ कहै कविहाल
यह बिरियां न और की है करि या वही है ताहि एक चित्त सोधि रे ॥ काहाला
वधा नौ ताके नाव को अभाव नाव पाहन की वरि सब उतारे पयोधि रे ॥ टीका
साधु को वचन ॥ यह बिरिया और की नहीं है ॥ अथवा यह समय और को न
हीं है ॥ इसको यह है ॥ कि यह वेरा अस्त समय श्रीरामजी को है ॥ तातैं तूं वह क
रिया के है चूण्या ॥ ताको सोधु ॥ अथवा वह करिया कहियें जगत को कर्त्ता श्री
रामता को तूं सोधु ॥ जिन राम नें पाथर की नाउ मैं वैठाइ कैं पयोधि जो समुद्र
ताके पार करे ॥ परिसंख्या अलंकार ॥ ५७ ॥ वचन अनभाउ तें सांत रस व्यंगि अ
वर काव्य वाचक लुप्तोपमा उपमा अन उपमेय साधारन वाचक होइ एवा
सोपहृप जिहां एरन उपमा सोइ ५८

मूलदोहा ॥ जान जान चित होत है : ज्यौ जिय मैं संतोष ॥ होत होत चित हो
त है : हाय हरी मैं मोष ॥ दूरप रस विक कवि की उक्ति आनी यें ॥ कवित्त ॥ स
र कै अंत समै जैसे या को मन सम ठौर नें मिमिटि रहै ग्यान ही की टेक मैं ॥
ऐसे मन सदा जो पैरहै एक रस तो पैकाहि कौ भ्रमत फिरै चौरासी अनेक
मैं ॥ सपन कै जान जान जैसे याकौ चित्त हरि आवत है समझि संतोष कहि वे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कमैं ॥ कहै कबि हरिलाल ऐसो होत होत होइ तो पैहोइ अनया सहौ सुकतिचरी
एकमैं ॥ टीका ॥ साधुको बचन ॥ जैसें धन के जात जात जियमैं संतोष होत है
तैसें धन के होत होत जो जियमैं संतोष होइ ॥ तो चरीमै मोक्ष होइ ॥ संभाव
नाअलंकार ॥ बचन अनुभाव तैं सांत रस अंगि संभावना ॥ ज्यौ यों त्यौ यों
होत है यह कहनावति आइ तहां कहति संभावना कबि पंडित समुदाय ॥
५८ ॥ मूलदोहा ॥ नीकी दई अनाकनी फीकी परी गुहारि ॥ तज्यो मनो ता
रन बिरद ॥ बारक बारन तारि ॥ इह भक्तकौ बचन भगवान सौं जानियौ ॥
कबित्त ॥ सेवक के संकट निवारिबे के सावधान कहत निहारो बेद बिरद
पुकारिबै ॥ कहै का बिहरिलाल सौं ही देषी परत बिसारि दीनन के दीनदुख अने
क उघटारिबै ॥ आनाकानी कौ करी मेरी रट फीकी परी लागे नसु हारि
रहे निठुराई धरिबै ॥ जानियतु तारिबे को मेमम अब छाड्यो तुम गजराज ज्यौ
एक बेर बारन को तारिबे ॥ टीका ॥ साधुको बचन भगवान प्रती तुमनी की
कहै भली अनाकनी कहै मेरी पुकार ॥ सुनिबे को कान न दयो इसु को य
है ॥ कि तुम मेरी पुकार न सुनी याते मेरी गुहारि कहै पुकार फीकी परी
सो तुम मानो बारक कहियें एक बार ॥ बारन कहियें हाथी ताको उधार क
रिकै तरन तारन बाहु जो बिरद सो तुम तज्यो है ॥ अथवा तुम तारन बिरद छा
ड्यो है ॥ बारक हियें दरवाजो ताके कि वारन कौ तारिबे है हे कै बैठि रह्यो है ॥
यातें तुम मेरी पुकार नहीं सुनी ॥ उत्प्रेक्षा अलंकार ॥ बचन अनुभाव तें
सांत रस अंगि ॥ उत्प्रेक्षालंकार ॥ जहु कोजु तिसंभावना ॥ ५९ ॥ मूलदोहा
कौन भांति रहि है बिरद ॥ सब देषी बिसुरारि ॥ बीधे मो सो आनि कें गीधे गी
धहि तारि ॥ इह भक्तकौ बचन भगवान सौं यह दीन उधारन बिरद है सो
निश्चै मानि कहत है ॥ कबित्त ॥ पतित उधारन कहत सब को उ साथ सांच ॥
रहै अब ठहराइ गो बनाइ कै ॥ कहै कबि हरिलाल जिन औरन के भरम भूले हैं
तो हौं गारवा पापी मन बच काइ कै ॥ तारयो है पषेरु एक गीधु तातें गीधे
तुम मोसो जस राष्यो है जगत बोराइ कै ॥ कौन भांति राषि बिरद प्रभु देषि ॥

येजनकठिनवनीअबवीधेमोसोंसाउकै ॥टीका॥ साधुकोवचनभगवानप्र
ती॥ तुह्मारेअधमउधारनजोविरदकहियेंजमसोकोनभांतिरैहैगो॥ मुरारी
श्रीकृष्णकोसंबोधनहै॥
कहियेंअरकेहो:दुखकोयहमनलवहै॥ किमैगीभक्तेअतिपापीहो॥ सोतु
ममोकोजवनारोगेतवमैंतुमकोअधमउधारनजानोगो॥ पर्यायोक्तिअलं
कार॥ वचनअनुभाउतेंसांतरसव्यंगि॥ आक्षेपालंकार॥ जहकीजतिसंभाव
नाउ॥ ६० ॥मूलदोहा॥ दीरघसासनलेहदुष:सुषसाईहिनभूलि:॥ दईदई
क्योंकरतहो:दईदईसोकबूल॥ इहकरुनारसभक्तकोवचनअपनेमनसों॥ क
वित्त॥ जोंतूंदुषलहैजोंतूं जितिअतुलाईलैलैदीरघउसासचितचिंतामैं
नभूलिरे॥ सुषमैंलहेंतोसभभांतिसावधानरहिमैंपतिमगनहैकेहरषन
फूलिरे॥ फिरनरहूतपतौसुषदुषहैतजानतूक्कलकरुनामयकीसुरति
नभूलिरे॥ काहेकोकरतअतिआतुरहैदईदईदईजोदईसोभलीभांति
सोनभूलिरे॥टीका॥ साधुकोवचन॥ तूदुषमेंदीरघजोवडेसासतातोमति
लेह॥ औरसुषमेंतूसांईजोश्रीभगवानताकोमतिभूल॥ दईदईकहेदया
रैयाक्योंकरतहै॥ तातेंदईजोभगवानतिनजोतोकोदयोहैसोतूकबूलक
रले॥ जमकाअलंकार॥ वचनअनुभाउतेंसांतरसव्यंगिजमकालंकार॥
जहांवहीपदपुनिपरैअरथऔरहीहोइ॥ तहांजमकालंकारहै भाषतवे
वितलोइ॥ ६१ ॥मूलदोहा॥ वंधुभएकादीनके:कोतारोरघुराइ॥ तूठेतूठे
फिरतहो:झूठेविरदबुलाइ॥ इहभक्तकोवचनभगवानसांजानिकें॥ सवे
या॥ कौनसेदीनपैकीनीदयाअपराधीकहोतुमकौनउधारेगो॥ कौनअ
नाथकोवंधुभएप्रभुकौविनदामभुवेंतुमतारैगो॥ ऐसेपवैसेंप्रतीतक
हेंकविहूसबकहैहैंपुकारिकेहारेहो॥ तूठेईतूठेनिसांक फिरौप्रभुझूठे
ईधातुअनाहकृपाहो॥टीका॥ साधुकोवचनतुमकौनदीनकेवंधुभए
हो॥ रघुराईसंवोधनहै॥ तुमकौनतारोहै॥ तातेंतुमदीनवंधुऔरअधम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बिहा·
१२८

178

उधारनयेमोरुठौजोविरहताकौबुलाइवौ॥लूठेहठेकहेसंतनुद्रभयफि
रतहै॥काकोक्तिअलंकार॥वचनअनभाउतेसातरसव्यापि॥काको
क्ति·॥औरवातमैऔरहीअर्थकरैजहजानिअकुअषस्वरहुदुभांतिकाको
क्तितिइरसआनि॥८२॥मूलदोहा॥थोरेंगुनरीझतेः विसराईवहवा
नि॥तुमहूकान्हमनोभएआजुकालिकेदानि॥इहभक्तिकोवचन
भगवानसोकह्यो॥सवैया॥हेअतिआतुरमैविनतीवहुभांतिकरी॥
करुनारसभीनी॥कूलकृपानिधिदीननकेवंधुसुनीअसुनीतुमकाहेतें
कीनी॥रीझतेरंचकहीगुनतेवहवानिविसारिमनोतुमदीनी॥जानि
परीतुमहूप्रभजीकलिकालकेदानिनकीगतिलीनी॥टीका॥साधु
कोवचन॥तुमथोरेगुनसौरीझतहेसोतुमअपनीवानिकहियेंस्व
भाउ॥सोभुलाइदयोहेकान्हहसलकोसंवोधनहे॥सोमानौतुमहूआ
जकालिकेदानीकहियेंदाताभएहे॥इसकोयहमतलवहै॥किआजु
कालिकेदाताथोरेगुनसौनहीरीझतहे॥अथवाआजुकालिकै
दानीकहियेंनटसोभएहे॥इसकोयहमतलवहै॥किजैसेनटुकहत
हैजहकलातेरीमैनवदौ॥उत्प्रेक्षाअलंकार॥वचनअनुभाउतेंसात
रसव्यापि॥उत्प्रेक्षा·॥जहकीजतिसंभावना·॥८३॥मूलदोहा॥मोल
गयामनमंदनमेंहरिआवैकिहवार॥विकटजटेजौलौंनिपटखुलै
नकपटकपाट॥यहसांतरसभक्तकोवचनजानियें॥कवित्त॥सरल
सभावनाहिसंतनकेसंगरहिसेग्रहधरमलागिभगनकेचाहरे॥
छोडिओरपाइगुनगाइकरुनामयकेमेंसमझाइतोसोंकहतनिरावरे॥
कहेकविहलसलतहौदेविधोविचारमनमंदिरमेंहरिआवैकैसेकोनवार
रे॥जौरहेविकटवघावादकीजंजीरनसौतौलौंयेकटतनाहिकपटक
पाटरे॥टीका॥साधुकोवचनजवलगयहमनजोहैसोइभयोसदनकहै
वर॥नामैहरिकहियेश्रीकृस्नसोकोनवारआवे॥जवलगिविकटजरेजे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कीवारकूपरकैषुलेनहो॥इसकोयहमतलबहै॥विकपरछहेविनुभगवा
ननहीमिलतुहै॥रुपकाअलंकार॥वचनअनुभावतेसांतरसंजोगीभेदुपरेन
लषाइनासोंकहतवाककहतुहैसबकुलमहकविसमुदाय॥८४॥मूलदोहा॥य
हुभवपारावारकेः उलंघिपारकोजाइ॥नियछविछायाग्राहिनीः ग्रहैवीच
हीआइ॥इहभक्तविकसंसारसागरकेपारकैकोपकतीश्रवराधुसे॥कवित्त
लोभमोहवासनाभयानकभवरजहांअसुरमनोजजाकोषिक्रममहतुहै॥
ऐसोभवसागरअपारविकरालमहाकहेकविकुलसकोउलंघिनिवहतुहै॥साह
सकियेमैंकेरिजननअनेकवारिसवकोउयाहितरिबारभयोचहतुहै॥नरनी
कीछविछायाग्राहनीविकहगाहिराषतप्रबलतातेवीचहीरहतुहै॥टीका
साधुकोवचन॥यासंसाररूपीसमुद्रकेपारकोकोनउलंघीजाइ॥नियकहिये
नाइकाजाकीछविकहियेसोभा॥सोईभईछायाग्राहिनीकहियेसमुद्रको
पक्षी॥सोवीचहीग्राहइग्रसतुहै॥रुपकाअलंकार॥वचनअनुभाउतेसांतरस
संजोगि॥रुपकालंकार॥उपमानरुउपमेयमेः ०॥८५॥मूलदोहा॥पतवारीमाला
पकरिः औरनकछुउपाउ॥तरिसंसारपयोधिकोः हरिनामेकरिनाउ॥इहसांत
रसभक्तकोवचनमनसों॥कवित्त॥जहांकामक्रोधमदहादमतिमिंगिलहैसुरु (?)
तनवैयाहूपारपरिवेकोदाउरे॥मोहभयोसलिलकहरतातेंलोभकीहलरसा
विकरालभारीभौरकोभाउरे॥हूलवाहेपयोनिधिविकलभवसागरमेंअवक
छुऔरनउपाइचितलाउरे॥मेरोकह्योमानियहहरिहाथहीनसोगेपतवारी
कमालाहरिनावकरनाउरे॥टीका॥साधुकोवचन॥मालाजोहैसोईपत
वारीकहियेचप्पाहै॥औरकछुउपावनहीहै॥संसाररूपीसमुद्रकेपारजा
नेकोहरिनामकहियेभगवानकोनामताकोलैनावकरु॥रुपकाअलंकार
वचनअनुभाउतेसांतरससंजोगि॥रुपकालंकार॥उपमाअरुउपमेयमे०॥८६
मूलदोहा॥हरिभजनप्रभुपीठिदैः गुनविस्तारकाकाल॥प्रगटतनिर्गुननिक
टहैः रंगरंगकोपाल॥इहभक्तकोवचनजवयाकोगुनाभिमानहैतबया
नेप्रभुहरिसैंअरुनिर्गुनब्रह्मनहीप्रगटहैयहरीतिकहिकोलिके॥राजा
नकीकहींयेनामभवहै॥सवैया॥हायकहैकविएकसीरीतिप्रभुउरचंगनि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विहा. २०५

179

घा हुन सोऊ॥ पीछि दै हु रि हु हरि जनै गुनकौ विस्तार करै जब कोऊ॥ नीके हि बैं पान
लहै गुन मनु ह्वै सोच कै वा दिप चौमति कोऊ॥ निर्गुन ता प्रगटै जब होई प्रति हौ
निकट है प्रगटै तब सोऊ॥ टीका॥ कवि को वचन अथवा साधु को वचन॥ चंगा जो
है सो गुन कहिये डोरी ताके विस्तारिवे के समय मैं॥ प्रभु कहिये बालिको बेल
न वारे ता को पीछि दैके भाजति है॥ और प्रभु कहियें नारायन सो मनुष्य अपने गु
न जब कहत है॥ तब ताते भगवान हरि होत है और जब निरगुन कहियें डोरी
पै चिली जियत है॥ तब चंग नीचे निकट षेलन वारे के पास आवति है॥ और जब
मनुष्य को निकट होत है॥ गोपाल कहिये श्रीकृस्न सो चंग के रंग है अथवा
रंग गोपाल कहियें रंगभूमी को पालन वारो नट ताको नाम जानियें॥ सो नट आप
ने गुन को विस्तारिवे के समय॥ प्रभु कहिये तमासो देषन वारो॥ ताको पीछि दै
भजत है॥ जब तमासो देषि करि चुकत है तब मागने को निकट होत है॥ लुप्तो
पमा अलंकार॥ ६० ॥ अवर काव्य प्रकाश विषे उपमालंकार उपमा अरु उपमे
य साधारन वाचक होइ एच्यमोंपइए जिहा प्रवरन उपमा सोइ ६०

सत्य दोहा॥ ब्रजवासिन को उचित धन: नव चन हू चितन को इ॥ हू चितन आया
सु चितनई: कहा कहाने होइ॥ इह भक्त को वचन प्रयोजन यह है बिना श्रीकृ
स्न को ध्यान बिन सुचितई नाही है॥ कवित्त॥ जाकी मन सोभा ननी रद ई दे
षियत पीत पट दामनी दमक छवि छाई है॥ लोचन ललित लसैं रस भरे ता
मरस ऊं चित अलक अलि अवलि सुहाई है॥ ऐसो ब्रजवासिन को उचित ध
न ताकौं नैन नहीं ताम नु मति विषै ताप रषाई है॥ कोन भाति होति सुचिताई
जियकाई तो लौ रूप को निकाई वह जिय में न आई है॥ टीका॥ साधु को वचन
ब्रजवासिन वारे जे मनुष्य तिन को उचित जा आपनो धन है॥ और हुन या जो घन
कहिये मेघ तैसी जाके तन कहियें देह ताकी स्याम छवि कहियें सोभा ये सो जो को
ई ध्यान करे है॥ सो श्रीकृस्न जो चित मैं नहीं आयो है तो सुचितई कहियें नि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चिंत करत मैं होइ इस बातन कौ तुम कहौ ॥ इसको यह मतलब है कि श्रीहरि लखमन
मे आवै नव हो सु चित जानियें ॥ पर्यायोक्ति अलंकार ॥ वचन अनुभाव तें सा
तरस व्यंगि पर्यायोक्ति ॥ पर्यायोक्ति प्रकार है कछु रचना सौं बात सिद्ध करि का
रिज कीजियै जैसें चित्र हरात ॥ ९८ ॥ मूलदोहा ॥ भजन कह्यो ता तें भज्यो ः भ
ज्यो न एको बार ॥ हरि भजन नाते बस्यो सो ताते भजो गमारि ॥ इह भक्त कौ वचन अ
पने मन सों कहै ॥ सवैया ॥ मेरी तो सीख सुनी करते मन क्यो रमतो अपनो मन यो
रे ॥ मैं कहि बारहि भली विधि सों भजन हि दिने भजि हरि गायो रे ॥ जाके कहो अति
हरि भजो रहि सो तें भज्यो हित सो जिन यो रे ॥ हल्लकारे यह स्यान पुत्तें सब एक
हू बार कहा बिनयो रे ॥ टीका ॥ भजन कहिये सिमरनो सु तू तातें भज्यो कहि
ये भाग्यो हि ये कै बार तें न हो भज्यो कहिये सिमर्यो ॥ अरु हरि भजन कहियें ह
रि भागनो जातें कह्यो है सो तें भजो कहिये सिमरो ॥ गमार मन को संबोध
न है ॥ यह अर्थ साध को वचन मन को उपदेस करत है ॥ जमक अलंकार ॥
वचन अनुभाउ तें सातरस व्यंगि ॥ जमका ॥ जहां बीच पद दे परैं अरथ और
ही होइ ॥ नहन जमकालंकार है भाषत पंडित लोइ ॥ ९९ ॥ अलंकारसार
दोहा ॥ कबकी टेरत दीन रटः होत सामस हाइ ॥ तुम हूं लागी जगत गुरु ः
जगनाइक जगवाइ ॥ इह भक्त को वचन भगवान सों जानीयें ॥ सवैया ॥ हौं
कब को रट लाइ रह्यो गहि दीन सुभाइ मनो वचकाइक ॥ दीन के बंधु कहावत
हो हरि काहे ते होत न आनि सहाइक ॥ एतो बिलंब करयो करुनामय हौ सब
के प्रभु हो सुभलाइक ॥ जानि परी तुमहू को कछु अब ब्यारि लगी जगकी ज
गनाइक ॥ टीका ॥ साधु को वचन ॥ मैं दीन रट सो तुम को कब को टेरत हैं स्वा
म श्रीहरि सब को संबोधन है ॥ तुम मेरे सहाई नहीं होत है जगत के तुम गुरु हो
और तुम जगत के नाइक हो ॥ एदो पद संबोधन जानियें तुम हूं को जगत की
लि जगत की बयारि लागी है ॥ उत्प्रेक्षा अलंकार ॥ वचन अनुभाउ तें सातर
स व्यंगि ॥ उत्प्रेक्षा ॥ जह कीजत सिंभावना ः अगर अपह्नुति राकुल ॥ स
व यव से ब्रज आइ मेरे हरी कलेस सब केसो केसो राइ ॥ इह भक्त को वच

म॰ दोहा
२ ज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

180

विहा.
१८.

नभगवानसेंजानिबेकोकविकीउक्ति ॥ सवैया ॥ दीनदियालकहावतहो
निजसंतनकोसुषवांछतहौजू ॥ सोप्रगटेद्विजराजकेवंसमेंवासकियोव
जमेंसुषसोजू ॥ हलुकहैकरजोरअबैनबिलंबबारोकरनासुहरोजू ॥ के
सवकेसवराइसदासुतालोंसुहमारोरूपावैहरोजू ॥ टीका ॥ कविकोव
चन ॥ द्विजराजकहियेब्राह्मननताकेकुलमेंप्रगटभएहै ॥ औरब्रजमेंमिमैआ
इकेसुवसवसेहै ॥ केसवकेसवराइविहारीकेपिताकोनामहै ॥ सोमेरेसवकले
सकहियेदुषताकोहरो ॥ अथवाद्विजराजकहियेचंद्रमाताकेकुलमेंप्रगट
भएहै ॥ औरब्रजमेंआइकेसुवसवसेहोयसेकेसवराइकहियेश्रीकृष्ण ॥ सो
मेरेकलेसकोहरो औरसववेकहियेजगतकेसवकलेसहरो ॥ आशिषाअ
लंकार ॥ वचनअनुभावतेंसांतरसव्यंगिके सोकेसोराइविहारीकेबापको ।
नामहैयातेंआशिषालंकार ॥ एकशहूकेअर्थजहभासतआइअनेक सहस्ले
षसंकेतनकहैजिनकीवुद्धिविवेक: ॥ २१ ॥ मूलदोहा ॥ हरिकीजतितुमसौंज
हे: विनतीवारहजार ॥ जिहितिहिभांतिपरोरहो: मैंतुमरेदरवार ॥ इहसां
तरसभक्तकोवचनभगवानसों ॥ सवैया ॥ दीसतऔरनकोऊदयानिधि
तेरोईएकभरोसोगहेहौं ॥ वेदपुराननकोमुनिसाषिहियेंधरिआसहुला
सलहेहौं ॥ दीनउधारनबारहीबारयहैविनतीकरजोरकरेहौं ॥ जैसेंहु
तैसेंउसैसाहूपरोदरवारमुरारितिहारेरहेहौं ॥ टीका ॥ साधुकोवचनहर
रीसंवोधनहै ॥ तुमसोंजहीविनतीहजारवारकरीयतिहै ॥ जिहिंतिहिं
भांतिकहियेजिसतिसतरहसोतुहारेदरवारमेंडरोपरोरहो ॥ पर्यायो
क्तिअलंकार ॥ २२ ॥ वचनअनुभाउतेंसांतरसव्यंगिलाकान्हि० कहना
वतिहैलोककीलोकाकतिहीसोइ २२ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ कीजैचितसोईतरो: जिहिपतितनकेसाथ ॥ मेरेगुनऔगुनग

लिः गनैानगोपीनाथ ॥ इहभक्तकौवचनअपनेमनसोंकहै ॥ कवित्त ॥
निगमपुकारतहै आरतकेबंधुहरितुमसरवरकोानहूसमोनिहारिये ॥ असर
रनसरनहरनदुषदुंद मांतेनेरादरवारवारछाडिकेनपेपुकारीये ॥ मेसेंन
मनारपतितनकेअनेकसंगाकहेकविहलनैसेंमाहकौंउधारीये ॥ कीजैचि
तसोईजांतैसोडुनिरवाहप्रभुमेरागुनअौगुनकछुनउरधारीये ॥ टीका ॥ सा
धुकोवचन ॥ जिसतरहसोमेपतितननिकेसाथनेरा ॥ साईनरहचिनमेकीजैमेरेगु
नअोरअौगुनहूनकेजागनसमरहतिनकोतुममतिगनो ॥ गोपीनाथसंबोधन
है ॥ अथवामेरेजेगुनईभएअौगुनतिनकेसमूहनिकोमतिगनो ॥ इसकोयह
मतलवहैकिमेरेपापनिकोअोरमतिदेषो ॥ दीपकाअलंकार ॥ ७२ ॥ वचन
अनुभाउतेंसांतरसव्यंगि दीपकालंकार उपमानहउपमेयसोंइकपदलागेजा
इ नामसोदीपककहतहैं समतिसुकविमनदाइ ७३ ॥ ॥

मूलसोरठा ॥ मैहूं दीजैमोपुः ज्योअनेकअधमनिदयो ॥ जोवाधैहीमोपुः तौवा
धोअपनेगुननि ॥ इहभक्तकौवचनभगवानसोंकिमनुक्तिकदौतौवांधि
राषौतौअपनेकनकेवांधौ ॥ कवित्त ॥ भांतिभांतिआरतकोआरतनिवार
तुहौअगरपुकारतनिगमगानसाषियै ॥ तानेंकोचिहलदीनबंधुदयासिंधुजू
मोंबारवारविनतीपुकारयहेभाषियै ॥ अधमअनेकनकोजोइदीनोमोषतुम
मोंहोमोहमोषदीवोचितअभिलाषियै ॥ वांधिवोईज्योपैमनमान्योमहाराज
तौतुअपनेहोगुननवनाइवांधिराषियै ॥ टीका ॥ साधुकोवचन ॥ तुमनेजै
सेअनेकअधमनिकोमोषदयाहै ॥ तैसेमेरेकुंमोछुकरियें ॥ जौमेरेवांधिवे
मैतत्परसतोषहै ॥ तौतुमऔमोकौअपनेगुननिसोंवांधौ ॥ श्लेषाअलंकार ॥
७४ ॥ वचनअनुभाउतेंसांतरसव्यंगि श्लेषालंकार एकशब्दकेअर्थजहभा
सतआइअनेकसहश्लेषसोंकहतहैजिनकेवुद्धिअनेक ७४ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

181

विहा. १८१

मूलदोहा ॥ कोईकोरिकसंग्रहैः कोईलाषहजार ॥ मोसंपतिजदुपतिसदाः विप
तिविदारनहार ॥ इहसांतरसभक्तकोवचनजानीयें ॥ सवैया ॥ संग्रहकोऊकरो
रकरौरहभरौकोऊलक्षकेलक्षभंडारौ ॥ कोऊहजारिकजोरधरौबहुभांतिल
हैमनमैंसुखमारौ ॥ हूसलहपानिधिदीनदियालहियैंधरिहौमैंभरोसौतिहा
रौ ॥ दीनकौबंधुवहीजदुपतिविपतिसदाजविदारनहारौ ॥ टीका ॥ साधुको
वचनकोईकरोरिवधनकौसंग्रहकरौकोईलाषनकोसंग्रहकरौ ॥ विपतिके
विदारनहारकहियेंदूरिकरनवारेंजदुपतिकहिश्रीकृस्नसोमेरीसदासर्वदासंप
तिकहियेंधनहै ॥ परिसंख्याअलंकार ॥ ७५ ॥ वचनअनुभाउतेंसांतरसव्यं
गिपरसंख्याअरथनिषेधेएकथलहूजेथलवहराइ परसंख्यातासोंकह
तसकलसुकविसमुदाय ७५ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ ज्यौंहैहौंत्यौंहोउंगोः हौंहरिअपनीचालि ॥ हठुनकरौअतिकठिन
हैः मोतारिबौगुपाल ॥ इहभक्तकोवचनभगवानसोंअपनोपापुकारिबे
कोपनभगवानकोउधारिबेकोपनउपालंभसोप्रगटकरतुहै ॥ सवै
या ॥ हौंउनकीगनतीनमैंहौंप्रभुजेनमनांनेतुअपनीगोंहौ ॥ कुलकाहेग
नतेनवनेकछुपापिनकोपरमावधिहौंहौ ॥ हौहौवेजोकछुहैहैसोईगतिमे
रीपैचालऊचालनिसौंहौ ॥ ख्यालनहैप्रभुमेरोउधारिबोम्हलिनकोजेबथा
हठयोंहौ ॥ टीका ॥ साधुकोवचनहरीसंबोधनहैजैसेमैंहूहौतैसेमैंअपनी
चालिसौंहोउंगो ॥ गुपालसंबोधनहैमेरोतारिबोअतिकठिनहैतुमहठमति
करौ ॥ लोकोक्तिअलंकार ॥ ७६ ॥ वचनअनुभाउतेंसांतरसव्यंगि ञ्याहै
पालंकार हुहैनिषेधजुविधिवचनऔरनिषेधाभास पहिलेंकहियेआप
कछुवक्तारिपकरियेतास ७६ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूलदोहा ॥ कहै कुमति जग कुटिलता : तजै न दीन दयाल ॥ दुखी होउगे सरल हिय : बसत त्रिभंगी लाल ॥ दुःख भक्त को वचन भगवान सों जानीयें : ॥ सवैया ॥ चाहत हो अपने हिय मांहि बसायो न लै प्रभु जैसें कहु मैसें ॥ कौंनहु बान कहो सित रो जग मो चित नै कहु आवैन वैसें ॥ हो उरलाइ न जो न कृपानिधि ज्ञान न तो अपने जिय ऐसें ॥ दीनदयाल कहावत हो उर लैधो भए बसि हो तुम वैसें ॥ टीका ॥ साधु को वचन मैं कुमति कहि यें दुर्बुद्धि ना कोवत तु है दीनदयाल संबोधन है ॥ जगत मै कुटिलाइ कौ न तजतु न हौ त्रिभंगीलाल संबोधन है ॥ मेरे सूधे हिय मै बसत तुम दुख पावोगे काहे तें तुम तीनि ठौर टेढे हो ॥ काव्यलिंगाऽलंकार ॥ १७ ॥ वचन अनुभाउ तें मान रस व्यागि काव्यलिंग अर्थसमर्थन कीजिय जिहिं युक्त । सो मित्र काव्यलिंग भूषन तिहिं भाषत बुद्धि विचित्र ११ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ मोहि तुम्हैं बाढी बहस : को जीतै जदुराज ॥ अपनै अपनै विरद की : दुहु निबाहन लाल ॥ दुःख भक्त को वचन भगवान सों जानिवो ॥ कवित्त ॥ तुम मैं सें जेते तारे ते ते न मो ते पतित भए मैं मो सौ उरो पापी कोऊ दूसरो न पेखिये ॥ तुम्हें का निपट प्रभु अधम उधारिवे की मेरे एक पापही कीं देव अब देखिये ॥ दुहु को लाज आपु आपने विरद की है सदी पेज पालिवे निवाहनी विसेखिये ॥ कहैं कवि हाल मो तें तुम सों बहस बाढी कौन चलि जाइ अव जीते कौन देखिये ॥ टीका ॥ साधु को वचन मो सो तुम सो बहस बढी है जदुराज श्री कृष्ण को संबोधन है ॥ सो अब देखियें कौन जीतैगो अपने अपने विरद की लाज है दुहुं को निबाहनी होति है ॥ पर्यायोक्तिअलंकार ॥ १८ ॥ वचन अनुभाउ तें मान रस व्यागि पर्यायोक्ति - पर्यायोक्ति प्रकार द्वै कछुरचना सों वात मिस करि कारिज कीजिये जैसें चित्त हरदात १२ ॥ ॥

मूलदोहा॥ निजकरनी सकुचेहि कत: सकुचावत इहि चाल॥ मोहू से अति बिमुख
सों: सनमुख रहि गोपाल॥ यह भक्त कौ वचन अपनी विनम्रता भगवान सों
भक्ति न सों सनमुख रहिबे कौ पनु सो प्रगट करत है॥ सवैया॥ जानि परै न।
निरुरारी प्रभु भगति वेदहू नीके कै भेद न पावत॥ संग फिरै ब्रजग्वालिन के मुनिया
वैन ध्यान समाधि लगावत॥ एकत हौं अपनी करतूतनि तें हौं सकुच्यौ बहु त्यौं स
कुचावत॥ हौं तुम सों निंत ही बिमुषे तुम दीनदयाल सनामुष आवत॥ टीका॥
साधु कौ वचन भगवान प्रती मैं अपनी करनी सकुचि रहौ है॥ सो तुम इह चाली
सों मोकौं कसत कहियें सकुचावत कहियें लज्जावत हौ॥ मोसों अति बिमुष
सों गोपाल संबोधन है सनमुष रहि कै कैसै लाज वंत करत हौ॥ बिरोधाभास
अलंकार॥ ७९॥ वचनअनुभाउतें सांतरस ब्यंगि विरोधाभास अलंकार जि
हि थल पाइ विरोध है अर्थ मां जन विरोध सह विरोधाभास है जो हियें प्रवीण ७९

मूलदोहा॥ तौ बलियें भलियें बनी: नागर नंदकिसोर॥ जौ तुम नीकें कै लख्यौ:
मो करनी की ओर॥ यह साधु कौ वचन भगवान सों॥ सवैया॥ दीनदयाल नि[illegible]
उत्तम पैं कवि कुल कहें चितनौ चित सों॥ तारे हैं नेक बड़े अधमी अब सोहिउ
धारकरौ हित सों॥ मो करनी जु लषौ नंद के सुत तौ कछु हौ तन है बित सों॥ नागर
रूप उजागर हौ गुन आगर हौ सुहि नारहौ सो॥ टीका॥ साधु कौ वचन श्रीकृ
स प्रती॥ नागर कहियें प्रवीन नंदकिसोर श्रीकृस्न कौ संबोधन है॥ बलियें क
हियें तुम्हारे ऊपर बलिहार भलौ तो भली बनि आई॥ जो तुम मेरी करनी कौ
ओर भली भांति सो देषो॥ संभावना अलंकार॥ ८०॥ वचन अनुभाउतें सांत
रस ब्यंगि संभावनालंकार ज्यौं यौं त्यौं यो होत है यह कहनावति आइ त
हां कहत संभावना कवि पंडित समुदाइ ८०॥ ॥

मूलदोहा॥ समै पलटि पलटै प्रकृति: कौ न तजै निज चालि॥ भो अकरन करु

ताकरै। दूरि करत कलिकाल ॥ यमहला विवकि सैं करिवो संभवै कलिजुग को
वर्नन ॥ सवैया ॥ कासौं पुकारि करौं विनती इक साहु भयो सिगरो जग जोऊ ॥ ज्या
ति सुभै पलटै प्रभु जैसें किरि वै गान सुभाव तजै सब कोऊ ॥ आरत सिंधु दया को स
मुद्र अनाथ को नाथ कहावत सोऊ ॥ ह्वै गयो देषि मनी निरदै कलिकाल कपट
ल्यावत सोऊ ॥ टीका ॥ साधु कौ वचन भगवान सैं समै के पलटै तें प्रभुनि करि
यें सुभाव सो पलटतु है ॥ सुभाइ के पलटे तें कोऊ अपनी चालि कौं नाहि तजतु
है ॥ तातें तुम अकारन कृपा करनारहित भए हौ ॥ तातें जहं कपट जो कलिका
ल तामें तुम कारन का कियें दया ताकों करै ॥ अथवा तुम अकारन करि करिये द
या कौं का निहै ॥ सो तुम इस कपट कलिजुग के समय में दया हीन भए हौ ॥ विरो
धाभास अलंकार ॥ ८१ ॥ वचन अनुभावतें सांत रस अंग विरोधाभास ८१

सल: दोहा ॥ अपने अपने मत लगे : बादि मचावत सोर ॥ ज्यों त्यों सबकौ सेइवे : ए
क नंदकिसोर ॥ इह भक्त कौ वचन अरु सर्वकौ अधीश्वर एक श्री कृष्ण हे य
ह सिद्धांत जानीयें ॥ सवैया ॥ जग मैं अपने अपने मत लागि करैं वकवाद वृथा
भ्रम मैं ॥ सबको वह सेइवे नंद को नंद जु व्यापक है जु चराचर मैं ॥ वह सो न भने किन
नीर कहूं सब आनि समात है सागर मैं ॥ जियसा चसैं का हू की सेव करो परि आइ
मिलै नंद नागर मैं ॥ टीका ॥ साधु को वचन अपने अपने मत लैं वसै लागि के वादि
वृ कियें रथा सोर मचावत है ॥ जैसें तैसें सबको एक नंदकिसोर कहियें श्री कृष्ण सो
ई सेवन करने जोग है ॥ परिसंख्या अलंकार ॥ ८२ ॥ वचन अनुभावतें सांत र
स अंग परिसंख्यालंकार अरथ निषेध एकथल जे वलठहराइ परसंख्या
तासौं कहत सकल सुकवि समुदाय ८२ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूलदोहा॥ चलन न नैं पैयत निगम मग॥ जग उपज्यो अति त्रास॥ कुच उतंग गिरि
वर गह्यो॥ मैना मैन मवास॥ इह कुचन की सोभा नाइका लाइका सों कहै सखी।
सों कहै नाइका सों कहै॥ सवैया॥ लूटत माल सुनिंदन के मन नयन विसा
निल कौ न वह्यो है॥ वेद को पंथ कुचलै कहिके सं सवै जग मैं अति त्रास च ह्यो है॥
हूलस वाह त्रिवली सरिता रमली वन पास गढ़ा सुलह्यो है॥ ऊंचे उरोज पहार के
छोर मनोज ह्यी प्रेम सुवास गह्यो है॥ टीका॥ साधु को वचना निगन कहियें
वेद ताके मारग चलन नैं पैयतु है ताते जग कहियें संसार तामैं त्रास उपज्यो है॥ मै
न कहियें कामदेव सोई भयो मैन ता कहियें चोर ताने उतंग कहियें ऊंचे जे कुच सो
ई भये गिरिवर कहियें परवत तिन कौ वास कहियें वाकी ठौर जानि के गह्यो
कहियें पकर्यो है॥ अथवा मैना कहियें मैन ही कामसु कुच रूपी परवत सु वा
सो पकर्यो है॥ इस कौ इह मतलव है कि मेरा कहा वस है ए सव वातें कामु करतु है
रूपकालंकार॥ ८३॥ वचन अनुभाउ तें सांतरस व्यंगि रूपकालंकार उ
पमानन उपमेय में भेदु परै न लखाइ तामैं रूपक कहतु हैं सकल सु कवि
समुदाय ८३ ॥ ॥

मूलदोहा॥ या अनुरागी चित्त की॥ गति समझै नहि कोइ॥ ज्यौं ज्यौं वूड़ै स्याम
रंग॥ त्यौं त्यौं उज्वल होइ॥ इह अनुरागी भक्त को वचन अरु नाइका को
वचन सखी सों होइ तो संभवै॥ सवैया॥ नैनन मांझ रह्यो ब्रजभूमि कै वह नंद।
कि सोर को ऊठि सुहाइ है॥ प्रानन मैं तऊ सालति हैं कवि हूलस वा रह्यो धिया
न भुलाइ है॥ या अनुराग परे चित को कछु अद्भुति रीति कही नहि जाइ है॥ बू।
डै अरु है रंग स्याम मैं ज्यौं ही त्यौं त्यौं अति उज्जल ताई है॥ टीका॥ जु अनु
रागी कहियें प्रीतिवंत जो मेरो चित ताकी गति कौ कोई नही॥ समझै कहि
यें वूझतु है जैसे जैसे स्याम कहियें श्री हूलल ताके रंग गहतु है॥ तैसें तैसें मेरो
चित ऊजरो होतु है॥ विषमालंकार॥ ८४॥ रागा पद तें नाइका की उक्ति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भासतिहैहालतैंपूर्वानुरागजानियेंपरकीयानाइकाहै पैउज्जलपदतैंसाधुकी
गतिजानियें वचनअनभाउतैंसातरसजोगिविषमालंकार आनरंगकैका
रनतैंजहकारजआनरंगकौजाइ अनमिलतेकौंसंगहोइतहजानिलीजीयो
चित्रवलाइअलंकारयहविषमतीनसबकोंदीनोसमझाइ ८४ ॥ ॥

मूलदोहा॥ मोहनमूरतिस्यामकी: अतिअदभुतगतिजोई॥ वसतिसुचितअंतरतउ: प्रतिबिंबितजगहोइ॥इहअद्भुतरसभगवानकीव्यापकतावर्ननभक्तकोवचन॥सवैया॥ ऐसीनऔरतिहूपुरमैंछविजैसीवानंदकिसोरमैंपेषी॥ताहि
विलोकिमनोजनकीमूरतिकोवरनेंअतिरूपविसेषी॥औरकहाकहौंसुंदर
स्यामकीअद्भुतरीतनषरीअवरेषी॥ अंतररापीकहाइहियेंकेतऊजगमैंप्रति
बिंबितदेषी॥टीका॥ साधुकोवचनस्यामकहियेंश्रीकृष्णताकीमोहनीजोमूर
तिताकीअतिअदभुतजोगति॥सोजोइकहियेंदेषिकेअंतरकहियेंभीतरवस
तिहैतऊजगमैंप्रतिबिंबतहोतिहै॥विषमालंकार॥८५॥ वचनअनुभाउ
तेंसातरसजोगि विषमालंकार ८५ ॥ ॥

मूलदोहा॥ नितप्रतिएकनहीरहत: वैसवरनतनएक॥ चहियतजुगलकिसोरलषि: लोचनजुगलअनेक॥इहजुगलकिसोरकीसोभाओरउहनकीआधिकरसाषीसषीसोंकहतिहै॥सवैया॥ नितश्रीवृषभानसुतानंदलाल
विराजतहैंछविरंजनूप॥कविकुलकहैमनसोलविहृत्रमचातुरताइकरे
गरूए॥सुषदेषिमिहातिसबैसजनीविधिसोंविनवेंअभिलाषनए॥इहरूप
विलोकिवेकोतननमैंप्रतिरोमनिलोचनक्योंनभए॥टीका॥ साधुकोवचन
नित्यकहियेंकठोररहतहैओरहवेकहियेंउमरि॥ सोसवरनकहियेंसमानहै
औरएककहेहैइसकोयहमनलवहै॥ किरामकालमेभेदनहीहैअथवावस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कहियें उमरि सो जिनकी एकन हीं बरन नहैं इसको यह मतलब है॥ कि रामब
डे है श्रीकृष्ण छोटे है जुगलकिसोर कहियें रामकृष्ण॥ जिनके देषिबे कौ अने
क नेत्रनि के जुगल अनेक चहियत है इसको यह मतलब है॥ कि बहुत नेत्र
होइ: नवराम कृष्ण की सोभा देषी जाइ अथवा सुषी को वचन सषी प्रती॥ कि
स एक ठैर है नहें बैस कहियें उमरि दोऊ को सवरन कहियें समान है॥ अथवा
बैस बरन है मिथुन रासी श्री राधा जू लाल रासी ए दोऊ रासि बैस बरन है॥ औ एक
दे है जुगलकिसोर कहियें राधाकृष्ण तिनके: देषिबे को बहुत नेत्र चाहियत
है॥ बिसेषोक्ति अलंकार॥ ८६॥ जो नाइका की उक्ति कहीये तो रसाभास होतु
है अरु किसोर पद अनुचित जो कहु भक्ति की उक्ति कहुं तौ अगि रामकृष्ण को
ध्यान है या ते जु ग्रंथ को करता मंगलाचरन तैं कृष्ण को उपासभास तु है ताते
सांत रस कहिये विशेषोक्ति सब कारन काज न भये उक्ति विषेश कहियें धैरे ८६

मूल दोहा॥ सीस मुकट कटि काछनी: कर मुरली उर माल॥ इह बानक मो मन
बस्यो: सदा बिहारी लाल॥ इह श्री कृष्ण जू को ध्यान है की या बानक सो मेरे म
न में बसो॥ सवैया॥ छबि सों पषि सीस किरीट बन्यो है बिसाल हियें बनमाल ल
सै॥ कर कंज नहि मंजु रली कछनि कटि चारु प्रभा बरसै॥ कवि कृष्ण कहै लषि सुं
दर मूरत यों अभिलाष हियें सरसै॥ वह नंद किसोर बिहारी सदा इह बानिक मो हि
य मांह बसै॥ टीका॥ साधु को वचन सीस कहियें माथा ता मैं मुकट धारे है कटि
कहियें कमरि ता मैं काछनी पैधै है॥ उर कहियें छाती ता मैं माला पैहिरी है बि
हारी लाल कहियें श्रीकृष्ण सो इस सोभा सो मेरे मन में सदा बसो है॥ ध्यान बर्न
नं:॥ जाति वर्नना अलंकार॥ ८७॥ भक्त की उक्ति वचन अनुभाउ तें सांत रस ब्यं
गि जाति वर्नन जाको जैसो रूप गुन बरनन वाही रीति ता सों जान स्वभाव
क विभावन है कारि प्रीति ८७ ॥ ॥

मूल दोहा॥ तजि तीरथ हरि राधिके: तन दुति कर अनुराग॥ जिहं ब्रज केलि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लैकुंजनिः पगपगहोतप्रयाग ॥ इहां ज्वालवर्णनहै ॥ कवित्त ॥ तीरथनिकटक
नुकाहे तनभटकत कौनअटकानब्रजसोभाकीहिलामैं ॥ राधा वनमालीकी
सुरस गौरस्याम दुनिसकलनिकाईकौलसतसारजगमैं ॥ तासौंकरिप्रीति
यहनिरामप्रसिद्धविधिसिद्धविधिसंकरसेतिनहूनेअगमैं ॥ डगडगप्रतिहो
तिप्रगटप्रयागजिनकेपरनकेलिकुंजनकेमगमैं ॥ टीका ॥ साधुकोवचननते
तीरथकौनजिवकहियेछांडिदेहहरिकहियेश्रीकृष्णअरुराधिकाइनदोऊकी
तनकहियेदेह ॥ ताकीदुतिकहियेसोभातामेंतअनुरागकहियेप्रीतिताकोक
र ॥ जिसराधाकृष्णकीरजविषेक्रीडाकीकुंजकेमारगविषेपेरपेरपैंप्रयाग ।
होतहोतहै ॥ इसकौयहमतलवहैकिश्रीकृष्णयमुनाहैअरुराधिकागंगाहैअरु
प्रीतिसरस्वतीहैएतीनोवातसोब्रजकुंजमेंप्रयागसमानहै ॥ येसोतीरथछोडि
केअरतीरथकोकौनभटकनहैअथवाराधाकृष्णकीकेलिकेमारगमेंपगपग
मनपकहियेतपस्याअरुजनाकहियेजज्ञसोहोतहै ॥ संबंधातिशयोक्तिअलंकार
॥ ९८ ॥ वचनअनुभावमैंमतिसंचारीसांतरसव्यंगि संबंधातिशयोक्ति
अलंकार संबंधातिशयोक्तिजहंदेतअजोगहिजोग ग्रंथनकोमतदे
षजहंभाषतकविजनलोग ९८ ॥ ॥

मलदोहा ॥ मोरमुकुटकीचंद्रकनिः यौंराजतनंदनंद ॥ मनससिसेषरकीअ
कसः कियसेषरसतचंद ॥ इहांश्रीकृष्णकेमुकटकीसोभासषीकोवचनना
इकासोंभक्तकोवचनमंहसंभवे ॥ सवैया ॥ आजुलख्यौब्रजराजकोवारसुदेस
सिंगारवनेसिगरेहैं ॥ रूपकीरीझकहीनपरैअवलोकिविलोचनमोदभरेहैं ॥
कृष्णकहेसिरसोहतमोरकिरीटचंद्राछविपुंजभरेहैं ॥ मनोअकसेससिसेषर
सोंहरिसेषरचंदअनेककरेहैं ॥ टीका ॥ साधुकोवचनअथवासषीकोवचन
नाइकाप्रतीमोरकेपष्षनिकोजोमुकटताकीजेचंद्रिकातिननंदनंदकहियेश्रीकृ
ष्णसोयसराजनकहियेसोहतुहै ॥ मानोससीसेषरकहियेमहादेवताकोअक
ससोश्रीकृष्णसोचंद्रमाकोसेषरकहियेमुकटसोकियोहै ॥ इसकोयहमतल
वहैकिताइककेगुनकहिकैमिलायोचाहतिहै ॥ उत्प्रेक्षाअलंकार ॥ ९९ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विहा॰
१८५

185

जोहलीकीउक्तिनाइकाप्रतिहोइतोशृंगारव्यंगिजोसखीकीउक्तिसखीप्रति
होइतोराजरतिभावध्वनिजोभक्तिकीउक्तिहोइतोसांतरसव्यंगिउत्प्रेक्षा॰
जहकीजतिसंभावनावस्तुकहेतुफलमधितीनभांतिउत्प्रेक्षा॰ इतिनवर
स ८४ ॥ ॥ ॥

मूलदोहा॥ अथ रसाभासः॥ कहतिनदेवरकीकुमतिःकुलतियकलह
डराई॥ पंजरगतमंजारढिगःसुकज्योसूकतिजाई॥ इहभयरसदेवरकीधि
ठुनासखीकोवचनसखीसोंनाइकारक्षाकिजानीये॥ कवित्त॥ देवरचप
लचित्तउरमैंकुभावधरिकहतअनैसीवातयासोंदिनरातिहै॥ कहैकाविकल
यहपरमरसालवालसकुचिसकुचिमनहीमैंअकुलातिहै॥ कहिनसकति॰
काहुआनसोंहियेकोभेदवालतियकुलमकेकलहडरातिहै॥ निकटवि॰
लाऊकेपखेरूपिंजराकोजैसेंअैसेंयहवालनिसदिनसूकीजातिहै॥ टीका॥
सखीकोवचनसखीसोकुलतियकहियेवडेकुलकीनाइकासोकलहकहिये ।
तातेडराइकैदेवरकीकुमतिकोकहतीनहीहैइसकोयहमतलवहैकिदेवर॰
नाइकाकौजवतववचेरेडेरहतुहै॥ पिंजरामेंप्रपज्योसूवककहियेसूवासोमंजा
रकहिविलाताकेढिगकहियेसमीपसूषतुजातहै॥ तैसेदेवरकेसाथनाइका
सूषतिजातिहैअथवानाइकाकलहतेडरिकेवरकीकहियेनाइककोकुमति
कौकहिनहिसकतिहै॥ वल्लीकेसमीपजोपिंजरामेंवैठेसूवाकेसमाननाइकासू
षतिजातिहै॥ अथवानाइकासखीसोंतिनुकेमाथेपैधरिकैवरकहियेनाइकु
नाकीकुमतिकोकहतिहै॥ कलहतेडराइकेइसकोयहमतलवहैकितूसखी
काहूकहियेमतिकाहैतेघरमेंलराईहोइगी॥ अथभावध्वनिवर्ननं॥ ८० ॥
होसुरसाभास उपमालंकार उपमाअरुउपमेयसाधारनवाचकहोइ प
चारयोपइएजिहांएसनउपमामोइ ८० अथभावध्वनिवर्ननं ॥ ॥

मूलदोहा॥ मलयपवनवरसनलगेःजुरिजलधरइकसाथ॥ सुरपतिगरवु
हरयोहरषिःगिरिधार्योगिरहाथ ॥ इहवीररसमैंगोवर्धनकोसमयहैरु

रषियापदलैउन्साह मुख्य जानीयें॥ कवित्त॥ प्रलकैं घुमडि घन आए ब्रजमंड
लपैमंडि कैं अषंड धार लायो जरधरतिको॥ निरषि विकल भएगोपी गाइ ग्वाल स
बकाहू कैकहियें मैं रह्यो धीरजुन धरतिको॥ नाहीं समै जसुधा कौलाल ऐसें कह्यौ।
लेदेषिहु रषि हरैया भयो ब्रजकौ विपतिको॥ पानलौ उठाइ राष्यौ गिरवर पानि
पर इंद्रकि कीनो सरव गरव सुर पतिको॥ टीका॥ साधुकोवचन प्रलयके करन
वारेजलधर कहियें मेघ तिन्ने ब्रज कैं एक ठौर के एक साथ बरसन लागे॥ गिरिधर क
हियें श्रीकृष्ण तिन आनंदसौं गिरि कहियें परवत ताकौ हाथमें धारिकें सुरप
तिकहियें इंद्रताकौ गरव कहियें हरिकरो॥ काव्यलिंगालंकार॥ ९१ ॥
देवरतिभावध्वनिकाव्यलिंग अर्थसमर्थनकीजियेजहांयुक्तसोमित्र
काव्यलिंगभूषनतहांभाषतबुधिविचित्र ५१ ॥ ॥

प्रलदोहा॥ लोपैं कोपैं इंद्र लौं रोपैं प्रलय अकाल॥ गिरधारी राषे सबै गो
गोपी गोपाल॥ इहांवीररसवर्नन श्रीकृष्णने गोवर्धन धरिकें ब्रजवासी सब रा
षे॥ कवित्त॥ लोप्यौ बलिभाग सुनि कोप्यौ अतिसुरपति प्रभुता के उमगि गु
मान मन आए हैं॥ आह करि कहौ वारिवाह सब पत है ब्रजकौ वहावौ ऐसें च
लन चलाए हैं॥ मंडिगो रोधार रवरषन विकल घनमानो महाप्रलै एकसाथ च
लिआए हैं॥ ऐसे समै नंदके सुवन गिरिधर गोपी ग्वाल गाइ बछ सब हीं बचा
ए हैं॥ टीका॥ साधुकोवचन अथवा कविकोवचन ब्रजकोलोपकरिवेकौ
कोपसंयुक्त जो इंद्र तिसलौं अकाल कहियें असमय प्रलय रोपो कहियें कर
नलागे॥ नव गिरधारी कहियें श्रीकृष्ण तिसने गो कहियें गाइ औ हु गोपी औ
रगुआल ए सब राषे॥ परिकरांकुरालंकार॥ ९२ ॥ देवरतिभावध्वनिपरिक
राङ्कुरलक्षणं प्राप्तकीसंस्कृत साभिप्रायविशेषजहां परिकराङ्कुरसोइ वी
वनपदइयेपद जिहांअरु रसमतासोइ सोलक्षणप्रासहैकहनसयानेलोइ ९२

मूलदोहा ॥ अथ प्रभुसत्तातिवर्ननं ॥ प्रतिबिंबत जैसाहि तुव निः दीपति दर्पन
धाम ॥ सब जग जीतन कौं कियो ः काय व्यूह मनकाम ॥ यह राजा को सोदर्प
न वर्नन कविको उक्ति सषी को वचन नाइका सों नाइका को वचन स
षी हूं सो ॥ सवैया ॥ राजत दर्पन मंदिर मैं महि मंडन श्री जयसिंह सवाई ॥
त्यों प्रतिबिंबिनि को अवली चहुं ओर लसै अति ही छवि छाई ॥ कैधौं अनेक
सरूप धरें रवि राजत है मंडली मंडल हुं ठाई ॥ मानहुं जीतिवे को जग तें रचना व
पु व्यूह की कीम बनाई ॥ टीका ॥ कवि को वचन जैसिंह राजा की स्तुति करि यें
कांति ॥ ता की दीपति सीसा के महल में प्रतिबिंबत भई ॥ सो मानो कामदेव नें
सिंगारे जगत के जीतिवे को काय व्यूह कर्यो है ॥ उत्प्रेक्षा अलंकार ॥ ५२ ॥ कवि
की उक्ति राजरति भाव धुनि उत्प्रेक्षालंकार जहं कों जतिसं भावना ० ५३ ॥

मूलदोहा ॥ चर चर हीं तुव निचरि किनी ः देतीं असीस राहि ॥ पति न्तु राषि चाद
रि चुरीः तैं राषी जैसाहि ॥ इहु राजा को पराक्रम सवयैं उपकार क वि को वच
न ॥ कवित्त ॥ आयो इत उमड़ि अजीतसिंह पें डाइलु संग लै विकट सुभटन के
समाज कौ ॥ कहैं कवि कुल सहुन दीली के प्रबलनि कमैं सकल साजे समर के सा
ज कौ ॥ ऐसें समै वीर विरुझे नैसकें अज्ञान वाह राषी तैं दुहूं को लाज करि के दु
लाज कौ ॥ चर चर तुरकिनि हिंदुनी मैं सब बहु देति हैं असीस जयसाहि महा
राज कौ ॥ टीका ॥ कवि को वचन चर चर विषै हिंदुनी और तुरकिनि सराहि करि
यें तारी ॥ कुवारि के असीस देती है जैसाहि ः राजा को संबोधन है ॥ हमारे पति
न कों राषि कें हमारी चादरि और चुरियां तुम नें राषी है ॥ काव्यलिंग अलंका
र ॥ ५४ ॥

मूलदोहा॥ रहत तिनरतनजैसाहिनुषःलषि लाषनकीफोज॥ जाचिनिराबरकु
चलैःलैलाषनकीमौज॥ इहांराजाकोरत्नाग्रकहदानकविकीउक्ति॥ कवि
त्त॥ कूरमसवाईजयसिंघकेग्रभंगनभामगनदिनेसकोसोतेजत्येगाऊंगमैं
लागैपाईरहतनिनसमरविजैकोचाउदानकरिवेकोचित्तरहतउमंगमैं॥ परद
ललाषनकौनरपकोवदनलषिमननसुषरहिनसकतररनरंगमैं॥ आसारनजानै
सउलाषनलहतुवसजाचेसोग्रजाचीहोतमोजकेप्रसंगमैं॥ टीका॥ कविको
वचनरतनकहियेपुहतामैंजैसाहिनुषकोदेषिकै लाषनमनुष्यकीफोजसा
मुंहनहीरहतिहै॥ निराबरकहियेमरषतेजैसिंघसोमांगिलाषनिमुहरनिकू
पैयनकीमौजलेजातहै॥ दीपकालंकार॥ ८५॥ कविकीउक्तिराजरतिभावध्व
नि दीपकालंकार उपमानवस्तु उपमेयमैंएकपदलागैजाइ तासौंदीप
ककहतहैरसमतिहककविसदाय ८५ ॥ ॥

मूलदोहा॥ चलतपांइनिगुनीगुनीःधनमतिसुयनमाल॥ भेटभएैसाहि
सौःभागुचाहियतुभाल॥ इहांराजाकोदानकविकीउक्तिस्वानीये॥ कवित्त॥
दौजतमंगाइकेतुरंगरंगरंगनकेतुरतभंडारसिरपांइनसोंभरीयै॥ किम्मति
विसालसालसुबरनमाललाललहीरामुक्काफलवकासिहाररहरियै॥ गुनीअन
गुनीसबकोजतनिहालहालजाचककीविपतिअनेककैभांतिहरियै॥ भेटभ
यैंनरपतिसवाईजयसाहिजूसेंसोहोतवडुभागफलभागकहाकरियै॥ टीका॥
कविकोवचननिगुनीकहियेगुनहीनऔरगुनीकहियेगुनवानएसबधन
औरमतिकहियेजवाहर॥ औरमोतीनकीमालापाइकेघरजातहैजैसाहि
राजासोंभेटभएतेभागुभालकहियेमाथोतामैवांहियतुहै॥ इसकोयहम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नलवहैकिमागपचाहियैजैसिंचकेदेनें ॥ कौकोइकमीनहीग्रथवाभागपनहेहुत
हजैसिंचदेवहै ॥ काकोक्तिअलंकार ॥ ५६ ॥ कविकीउक्ति राजरतिभावधु
निकाकोक्तिअलंकार औरवातमेंऔरहीअर्थकरेजहजानि श्लेषअहहै
भातिकीवक्रोकतिउरआनि ५८ ॥ ॥

मलदोहा ॥ योंदलकाहेवलकतै: जैजैसाहिभुपाल ॥ उदरअघाहरवेय
रै: जैसोहरिगाइगुपाल ॥ इहराजाकीसरना अरु पराक्रमकविकीउक्ति
॥ कवित्त ॥ एकरसनासेंमायैकैसेंकहै परेजेतेविक्रमअमितकीनेन्रप
तिसुवाईतैं ॥ केसवअचाहरतेराष्योवज्रजैसेंऐसेंहसनअलीकीगि
लोदिल्लीउगिलाईतैं ॥ जेजियानिवासोदावानलसोंप्रवलतुपवलकेविप
तिहितुवानकोवहाईतैं ॥ कालीजैसोंकुचालीकाढिहरिकीनेजगतमेंतें
कीरतिप्रकासजगुअोप्योउजराईतैं ॥ टीका ॥ कविकोवचनजैसाहिभुपा
लहैपरसंवेधनहैतुमनेंपसेवलवदेसतैदलकहियेंफोजकाढी ॥ जैसेंह
रिकहियेंश्रीकृस्नतिसनेंअघासुरनामादैत्यकेउदरमेंपरीजेगाइऔरुग्वा
लतेकाढे ॥ द्रष्टांतालंकार ॥ ५७ ॥ कविकीउक्ति राजरतिभावधुनिद्रष्टांतअ
लंकार उपमानरुउपमेयगुनवाचकधर्मसुजान दोऊनविंबप्रतिविंवहैद्रष्टांतसु
परिमान ५० ॥ ॥ ॥

मलदोहा ॥ चिरजीवौजोरीजुरैः क्यौनसनेहगंभीर ॥ कोघटिहैवृषभा
नजाःवेहलधरकेवीर ॥ इहपरस्पर मानसखीकोवचन सखीसों ॥ सवै
या ॥ माननकोनहमारीकहीजहांदोउनमांझभरीगरभाई ॥ दोऊवरे
अतितेजभरेनकहांवयौंनघटेहितवीसरसाई ॥ कोघटिहै चिरजीवौक
रैइहएकसीजोरीविरंचवनाई ॥ हैंइनएवृषभानसुताउतवेहलधा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रीकेबीरकन्हाई ॥ टीका ॥ सषीकोवचनसषीप्रतीयहराधाकुलकीजेरीचिरकहि
येवडेकाललौंजियै ॥ श्रीराधाकुलगंभीरकहियेंराहिरीसनेहकहियेंस्याकेया
नजरैइनदोऊमैकौनछरीहै ॥ औरश्रीकुलकहियेंवलिभद्रताकेवीरकहियें
भाईहै अथवाराधिकावैलकोवहिनिहैवेहरिकेभाईहै ॥ श्लेषाअलंकार ॥ ५७ ॥
नाइकाकीउक्तिईर्षाभाववधुनिश्लेषालंकार एकशब्दकेअर्थजहभासत
आइअनेक सश्लेषमेंअर्थकहतहैजिनकेबुद्धिविवेक ५८ ॥ ॥

अथभावउदयवर्ननं: ॥ मूलदोहा ॥ हठिहिनकरिप्रीतमलियो: कियोजुसौतिसिंगा
र ॥ अपनेकरमोतिनगुहे: भयोहराहरहार ॥ इहनाइकाअन्यसंभोगितदुषिताया
कोगुहौहारनाइकानेसौतिकौलैपहरायौहै ॥ सोयाकोसर्पमोलागैहैनाइका
सषीसोंकहैसषीसषीसोंकहै ॥ सवैया ॥ मागिलियौहठकैहितप्यारेनहारह
चारुप्रभानिसोंपागेयौ ॥ ताहिलैलालचीलालगायौकहैसोतिकेधामसनेहीअनु
रागेयौ ॥ वाहीकोरीझिसिंगारकीयोलषियाकहियेमनकारठलागेयौ ॥ अपने
हाथवनाइगुह्योमुकतानकोहराहरहारसोलागेयौ ॥ टीका ॥ सषीकोवचनसषीप्र
तीप्रीतमकहियेंनाइकतिसनेहठुकरिकैहितसोनाइकाएतेमोतिनकोहारलि
यो ॥ सोहारसौतिकौसिंगारकरोइसकोयहमनलवहैकिसौतिकोपहिरायौअ
पनैहाथसोगुहेसोमोतिनकोहराकहियेंमाल ॥ सोहरकहियेंमहादेवताको
हारकहियेसापुतासमानभयो ॥ अथवासोहारहराहरकहियेंविषसोभयोयाका
रलकारकोअभेदजानियें ॥ विभावनाअलंकार ॥ ५९ ॥ सषीकीउक्तिसषीसोंना
नाइकाकेंहर्षोदयविभावनाछ कारननाहिपैकारजहोइकैकारजकारनकोउप
जावैकारजहोइअकारननतैकिअपूरनकारजकामचनावैअनिविबाधककहान
ङुकारजहोनयहोयसमानवढावैहेतुनेंकाजविरुद्धविलोकिवुधेसवैभांतिवि
भावनागावै ५९ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ विषरोजावककेसौतिपग: निरषिहसीगहिगास ॥ सलजहसौंहीलि
षिलियो: आधीहसीउसास ॥ इहनाइकाअन्यसंभोगितदुषितासषीकोवच

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

188

विहा·
२८८

न सषीसें ॥ सवैया ॥ बाल हसी कछु गाम सगहे लषि पैल्यो मसाव हसे निके पाइ
न ॥ जानियहे अपने जियमें दुहु जानति वाहि सिंगार के भाइन ॥ एतें मामोद भरी अ
सकाति लजैहाहो विलोकत निदेषि सुभाइन ॥ आधी ये हासी मसामभरी अजु लाति
षरी विसरी चित चाइन ॥ टीका ॥ सषी को वचन सषी सों सौतिके पाइमें विषधरा
कहियें पैलों जावक कहियें महावर ताकों देषि कें गामसपकरिवो नाइका हसी ॥
लाज सहित सो जिकौ हसो हो देषि कें आधी हसीमें उसास भरि लई इस कहनावर
तिसो नाइक के हाथ को लगायो जानि के नाइका अति दुषित भई ॥ विषादनाम अ
लंकार ॥ ६०० ॥ सषी की उक्ति सषी सों नाइका कें ईर्षा दय विषादन अलंकार प्रा
पति जिहां विरुद्ध की निज इछित तें होइ ता हि विषादन कहत है जें पंडित क
विलोग ६०० ॥ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ हग पर कौ हे अध षुले: देह षवैको हे हार ॥ हरत सुषित सी देषियति:
दुषित गरभ के भार ॥ इह जाति वर्नन गर्भवती नाइका की सोभा सषी नाइ
कासों कहे सषी सषी सों कहे नाइक सषी सों कहे ॥ सवैया ॥ बोलति बैन
हरेइ हरे सो भई छवि आननकी पियरी है ॥ आधे षुले अलसोहे से लोचन देह
षवैकौ हसे हार हरी है ॥ गर्भ को भार धरे सुकुमार तऊ दुषितो न बनारषरी है ॥ नी
कीलगे अति लगति है मनो केलि कलोल के रंगभरी है ॥ टीका ॥ सषी को वचन
सषी प्रती ध्रुरकौ हे जे नेत्र ते अध षुले हैं और षवैकौ हे देह को हार है ॥ इन बात
तिसो गरभ के भार सो दुषित जो नाइका सो सुरतते सुषीत सी देषियति है ॥
लेष उपमा अलंकार ॥ ६०१ ॥

मूलदोहा ॥ अथ भावसंधिवर्ननं ॥ छूटैनलाजनलालचौः प्योललषिनेहरंगेह ॥
सटपटातलोचनघरेः भरेसंकोचसनेह ॥ इहनाइकामध्यालाजकामसमानहै
सषीसषीसोकहतिहै ॥ सवैया ॥ माईकैमैमनभावनकोंलषिप्यारीनिसंककछूदे
षिसकैना ॥ देषिवेकौंतरसैहियरादिषसाधलगीचितचैनलहैना ॥ छूटैनला
जअरूहूटैनलालचलोकवीकउलंचियरैना ॥ तातेंसकोचसनेहभरेअकुलात
घेरेजलजातसेनैना ॥ टीका ॥ सषीकोवचनसषीसौप्योकहियेनाइकताकोनेह
रगेहकहियेमाइकेमैलषिकहियेदेषिकेलाजननहीछूटतहै ॥ संकोचकहिये
लाजऔरसनेहकहियेप्रीतितिनासौभरेजेलोचनकहियेनेत्रतेघरेसटपटाकहि
येडगमगातहै ॥ पर्यायोक्तिअलंकार ॥ २ ॥ उक्तिसषीकीनाइकेंभावसंधिपर्यायो
क्तिअलंकार पर्यायोक्तिप्रकारहै कछुरचनासोंवात मिसकरिकारिज
कीजियेजैसैचित्रमहलात २ अथभावसवल ॥ ॥

मूलदोहा ॥ वालमवारेसौतिकेः सुनिपरनारिविहार ॥ भोरसुअनुरसुरलीःरी
सषीरुइकवार ॥ इहनाइकाकौवहनाइकसौतिकेनाइकाकेदुषभयोऔरसौति
कोभारीवथाभईसौतिसुषभयोसोसषीसषीसोकहतिहै ॥ सवैया ॥ वैठि
सषीनुसमाजमैंप्यारीसिंगारकेसाजनसोंसरसानी ॥ काहूकहीजुमसौतिनके
घामरेआनवधूकेगयोदधिदानी ॥ सोसुनिकैकविहूललकैहरहूमीलषीडुलसी
अकुलानी ॥ एकहिवेरलसौसरगलोचनिरीझिषिझीमुसिकानीरिसानी ॥ टीका ॥
सषीकोवचनसषीप्रतीवालमकहियेंनाइकतिसनैसौतिकीवारीकोपरना
रीकहियेंऔरनाइका ॥ तासौविहारकरोइसवातकोसुनिकेरसभयोऔअ
नरसभयोऔरहरीझभईऔरषीझभई ॥ एसववातेएकहीवारभईइसकोयह
मतलवहैकिसौतिकीवारीभातिइसवातसोषुसीभई ॥ एसहीमेरीवारिकोऔ
रठौरजाइरोगइसतेदुषीभईअथवाबोकहियेंवालकजोवालमकहियेनाइक ॥
ताकोसौतिकेपासबैठेनाइकापरनारिविहारसुनोतवतेएसववातेएकैवारभ
ई ॥ इसकोयहमतलवहैकिप्रथमऔरठौरगयोयातेदुषितभईइसकारजला ।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विहा
२८६

189

इक भयो इस बानैनेम सखी भई ॥ दीपकालंकार ॥ ३ ॥ सखी की उक्ति सखी सौं नाइ
का कैं भाव सबल दीपक अलंकार उपमान बरन्यो उपमेय सौं इक पद लागै ।
नाइ ता सौं दीपक कहत हैं समति सुक कवि समुदाय ३ ॥ ॥

अथ षट रितु वर्नन ॥ तत्र वसंत वर्ननं ॥ मूल दोहा ॥ वन वाटनि पिक बटपराः
लषि विरहि मित मैन ॥ कुहू कुहू करि कहि उठैः कारि करि ताने नैन ॥ इह वसंत
समय सखी को वचन नाइका सौं होइ तौ मन नाइ वौ नाइक को वचन सखी सौं
होइ तौ अपनी अवस्था ॥ सवैया ॥ मैन महीप को मानि मतौ दुम डार चढे चढ़ै
औरनि हू कत ॥ देषत हौ विरही जन कौ करि लोचन लाल उहू कहू कत ॥ बीस बि
से वन वाटन मैं पैं बटपार बसै पिक मूल निते कुत ॥ प्रानपती बिन वै गांव छिवौ अब
दाउ परै अलि वैं उ डुकच कत ॥ टीका ॥ सखी को वचन सखी प्रती अथवा नाइका
को वचन सखी प्रती वन की वाट कहियें मारग ता मैं पिक कहियें कोइल ॥ सो ई भ
ई बटपार कहियें रहजन वारौ सो विरहीनि कहियें वियोगनी नाइका ॥ ति
न कौ देषि कै मैन कहियें कामना का मत लै कै लाल नेत्र करि कै कुहू कुहू यह
सबद कहि कहि उठै है ॥ उत्प्रेक्षा रूपकालंकार ॥ ४ ॥ विरही की उक्ति बसं
त रितु वर्ननं रूपक उत्प्रेक्षालंकार उपमान रु उपमेय मैं भेउ परै न लषाइ
ता सौं रूपक कहत है सकल सुक कवि समुदाय ४ ॥ ॥ ॥

मूल दोहा ॥ दिसि दिसि कुसुमित देषियत उपवन विपिन समाज ॥ मनहु वियो
गिन कौ कियो सर पंजर रितुराज ॥ इह वसंत समय है सखी को वचन नाइका सौं
होइ तौ मन नाइ वौ नाइका को वचन नाइका सौं होइ तौ अवस्था पति का होइ ॥
कवित्त ॥ आयौ है मदन छितिपाल कौ दुकम पाइ आमिल प्रबल ऐसौ दुकम
चलायो है ॥ मानगढ़ तोरिबे को अधिक प्रचंड देष्यो सब ही के उर उमराग उरगा
यो है ॥ वन उपवन जित तित अवलोकियत दिसि दिसि तें समसमर दुख विछायो ।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यो है ॥ वैरवां धि वि बसम वियोगिनके रोकिवेको मानो रितुराज सर पंजर रच्यो है
टीका ॥ सखीको वचन अथवा नाइकाको वचन सखी प्रती ॥ दिसा दिसा विषे उपवन
कहियें बागीचे विपिन कहियें वन तिनके समाज कहियें समूह ते कुसमिनक
हियें फूलि रहे है ॥ सो मानो रितुराज कहियें वसंत तिसने वियोगनिको सर
पंजर रच राखो है ॥ उत्प्रेक्षा अलंकार ॥ ५ ॥ कविकी उक्ति वसंत रितु वर्नन उत्प्रे
क्षालंकार ॥ ५ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ हिय औरै सी है भई : टरे अवधिको नाम ॥ दूजे कारि डारी खरी : बौरी बौरे आ
म ॥ इहां वसंत समय नाइकाकी अवस्था सखी नाइक सों कहै है सखी सखी सों कहै ॥
सवैया ॥ मोहनसों बिछुरी जबते तबते न लहै कल एक घरी है ॥ नैन तिनी रहै रे
निसवासर व्याकुल बालि अतितन घरी है ॥ ऐसी दसा पहलें ई हुती पुनि ऐसी भई इत
निअवधि टरी है ॥ ता पर बौरि रसालन देष मसूके सें यहो सर बौरी करी है ॥ टीका
सखीको वचन सखी सो अवधिको नाउ टरै तेनै नाइका अपने हियें में और सी है ग
ई ॥ दूजे कहियें दूसरे बौरा कहियें फूले जो आमको पेड़ तानें बरी बाउरी करि डा
री ॥ भेदकातिसयोक्ति अलंकार ॥ ६ ॥ सषीकी उक्ति सखी सों प्रोषितपतिका ना
इका वसंत रितु वर्ननं भेदकातिसयोक्ति० ६ ॥ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ औ जहूप सोई सु मैं : जहा सुष दरद दुख देत ॥ चैत चंदकी चांदनी : डार
ति किये अचेत ॥ इहां नाइका प्रोषितपतिका दसा अवस्था नाइक ... जानीये
नाइकाको वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ व्याकुल भई अब मालती माल सु मी
रतें पीर हियें सरसाई ॥ पावक पुंज सो चंपक कुंदन चंद्रक चंदुल ष्योन रहा

190

विहा.
२८०

ई॥ चेतदिरैचितचेतकीचांदनीबेधतबाननकामकसाई॥ आनिबन्योअबकैअैसो स
मोउबहेतसवैजुडनेसुषदाई॥टीका॥ नाइकाकोवचनसषीसोजहयेसोईस
मोभयोहै जिससमयमैसुषदकहियेंसुषकीदेनवारी॥ वहचैउबदेषदेतिहै
चैतमहीनामैचंद्रमाकीचांदनीअचेतकहियैंविकोसकरतिहै॥विभावना
अलंकार॥ ५॥ वियोगीकोउक्तिउद्वेगदसावसंतरितुवर्ननेविभावनालंकार
काह्नकारनतेंजहांकारजहोइविरुद्ध पचऔभेदविभावनाकोभाषतमति
शुद्ध ५ ॥ ॥ ॥

मलदोहा॥ पीठिदियेंहीनेकमुरिः करघुंघटपटटारि॥ भरीगुलालकीमु
ठिसोः गईमुठिसीमारि॥ होरीषेलकोसमयनाइकाकीसोभानाइकसषी
सोंकहतुहै॥सवैया॥ मोपैकह्योकहतेनबनेकरिजैसीदसाब्रजनागरईहै
पीठिदियेंहीमुरीमनुलेवह फागनषेलबिलारिगईहै॥ घुंघटकोपटुटारिकै
भौंहउसारिकैनेकनिहारिगईहै॥ यौंभरिमुठगुलालसोंप्यारीअचानकमु
ठिसीमारिगईहै॥टीका॥ नाइककोवचनसषीप्रतीकैसषाप्रतीपीठिकोद
एनेकुमुरिकहियेंफिरिकैहाथसोंघुंघटकेपटकोदूरिकरिकै॥ गुलालभरी
जोमुठितासोमुठिकहियेंमारनप्रयोगतैसीमारिगई॥उपमाअलंकार॥ ८॥
होरीवर्ननइकाकीउक्तिस्मरतिसंचारी उत्प्रेक्षालंकार जहकोजतिसं
भावनावस्तुहेतुफलमधितीनभांतिउत्प्रेक्षा० ८ ॥ ॥

मलदोहा॥ दियोजुलषिपियचरनमैः षेलतफागुषियाल॥ बाढतहूंअति
पीरसुनः काढतनबनतगुलाल॥ इहफागुवर्ननहोरीषेलकोसमयनाइका
केअनुरागकीअधिकाईसषीसषिसोंकहतिहै॥सवैया॥ हरिषेलतफागु
वधूगनमध्यसषासवकेसरिरंगासनै॥ उतचाइभरीवृषभानसुताइतपोहरि

केअतिमोदमने॥ जबनैननिमैंनतबिहारीयोगुलालअपनेकरसेंसीवहराइयेने
अतिवाढतिहै जउपीरतउवहकाढतिपेनगुलालबने॥ टीका॥ सषीकोव
चननाइकप्रतीअथवासषीप्रतीपियसंबोधनहै॥ अथवानाइकनेफागुकोषे
लुतचसकहियेंनेत्रतिनमेंगुलालडारो॥ सोगुलालअतिपीरनेवढतहैनाइ
कापैकाढतवनतननहीहै इसकोयहमतलवहै॥ कैनाइककेहाथकोडारोताको
प्रेमतेनिकासतिनाहो॥ विसेषोक्तिअलंकार॥ ९॥ उक्तिसषीकीकैनाइका
कीहोरीवर्ननं अरुधुनितेभासतहै कीयाकीओरकवहूं नाइकनेंदेष्यो
ऊनाहीजोसकीयाहैतोरसभासकहियेजोपरकीयाहैतोरसभासन
है विशेषोक्ति० सबकारनकाजनमरै उक्तिविशेषकहीयेधरै ५ ॥

दोहा॥ छुटतमूठीसंगहीछुटीःलोकलाजकुलचाल॥ लागेपोदुहूनिहक
साथहीःचलौचितनैननगुलाल॥ होरीषेलसमयसषीसषीसोकहै॥ क
वित्त॥ होरीकोसमाजबरसानेकेवगरआजकहांकहांआलीवनआयोनी
कोष्यालरी॥ इतजवलोगननसेंराधिकाकिसोरीउतसहितसषनिमेंवन्योमद
नगोपालरी॥ छुटतमूठीकेसमाछूटतहैएकेवारगुरजनडरलोकलाजकुल
चालरी॥ कहैककविहूलनैनोंहीलगतदुहूकेनननएकेसाथचाउचित्रलोचन
गुलालरी॥ टीका॥ सषीकोवचनसषीसोगुलालकीमूठिकेछुटतनाकेसं
गलोककीलाजओरकुलाचारसोछुटिगयौ॥ नाइकनाइकाकेएकठेईचंच
लचित्रओरनेत्रओरगुलालपतीनोवातेलागतिभई॥ इसकोयहमतल
वहैकिदोउकेचित्तलागेओरदोउकेनैनलागेओरदोउकेगुलाललागो॥
सहोक्तिअलंकार॥ १०॥ लक्षितनाइकाएकीअनुरागउक्तिसषीकीसषीसों
होरीवर्ननंसहोक्तिहोइअनेकएककहीसंगसोसहोक्तिकहियेलषिहेंग
१० ॥ ॥

मूलदोहा ॥ रसभीजै दोऊ दुहुनि तौ टिकि रहे टरैन ॥ छविसौ छिरकत प्रेमरंग भरि पिचकारी नैन ॥ दुहु दोऊ नको परस्पर अवलोकन देहै सषी सषीसौं होरी के ष्याल की समता देव रिके कहति हैं ॥ कवित्त ॥ आजु वृषभानकी औ नंदके किसोर दोऊ अवरि मन मोहन नैनन मैं राष्यो होरी को सो ष्याल जु करिकै ॥ भरे हित चाइ दोऊ चूकत न दाउ टिक रहे हैं सकलाइ कोऊ जान न न टरिकै ॥ भिजि पवनाएं अतिरस मैं परस्पर पागे अनुराग के गुलाल रंग ह्वरिकै ॥ हलसकहि छिरकत छविसौं छवीले दोऊ नैनको एपिचकारी प्रेमरंग भरिकै ॥ टीका ॥ सषीको वचन सषीप्रती दोऊ कहियें नाइका नाइकाने नायक नायक कौं आपुसमें परसपर भिजयो है ॥ न उटिकि रहे कहियें बड़े हैं रहे हैं टरे न कहियें चलत नहीं हैं नेत्र जे हैं ते ई भई पिचकारी ॥ तिनसों प्रेम जो है सो ई भयो रंग ताको छविसौं छिरकत है ॥ रूपका अलंकार ॥ २२ ॥ लच्छिनाम वानुराग सषी कौ उक्ति होरी वर्ननै रूपकालंकार उपमान रु उपमेय मैं भेद उपरै न लषाइ तासौं रूपक कहत है सकल सुकवि समुदाय २१ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ गिर्यो कंपि कछु कछु रह्यो कर पसीजि लपिटाइ ॥ छोड़त लाल गुलाल की मूठि रुठौ ह्वै जाइ ॥ इह होरी षेल कौ समय सषी सषी सौं कहै ॥ कवित्त ॥ मेरो कह्यो मानि री उतैलौ चलि देषि नैकु आज ब्रज धूम होरी षे[ल] कौ अनूठौ है ॥ केसरि मैं सने वने रसिक रसीले जहाँ वरषात होस वे सुषन कौ तू ठौ है ॥ जद्यपि परसपर दोऊ मुष माडिवे कौ लेत अति चाइसौं गुलाल भरि मूठी है ॥ कछु कर यंकज पसीजे लपटान कछू कांपै गिरि जात तातैं बोले होत रूठौ है ॥ टीका ॥ सषीको वचन नाइक प्रती अथवा सषी प्रती गुलाल कछुक कांपि कै गिरो ॥ और कछु कर कहियें हाथ ता मैं पसीजे ते लपटि रह्यो सो लाल कहियें नाइक ताकौ गुलाल की मूठि छोडत मूठौ ह्वै जात है ॥ इसको यह मतलब है कि गुलाल नाइका के ऊपर परत न हौ है ॥ विसेषोक्ति अलंकार ॥ २२ ॥

नाइकाके सात्विक स्वेदकं पकोई रीवर्नने विशेषोक्ति सबकारनका
जनसैउक्ति विशेषपरु हियेधरे १२ ॥ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ ज्योंज्यों पटझटकति हटति हसति नचावति नैन ॥ त्योंत्यों निपट उदार हूं
फगुवा देत बनै न ॥ इहनाइका औ होरी षेलकौं समान नाइकसों भाव दिषि
कोलो भला स्यो है सो सखी सखीसों कहति है ॥ कवित्त ॥ फागुनके षेलकौं स
माज बनि आयो जैसे तैसे सापका सनासों कहनबनेन है ॥ सांवरी गालीमैं नंदला
लकोषक सिवाल मन भाए करि सिवहावैं चित्र चैन है ॥ ज्योंज्यों नेह चाह भरीलो
चनन चाइ पट झटकि कहति हसि हसि मुरुवे नहै ॥ त्यों त्यों चित्र लालनको
निपट उदारनऊ फगुवाको देवा वैपाहु वनगुमनेने नहै ॥ टीका ॥ जैसे जैसे पटकरि
यें वस्त्र नाको पकरनि है और हठ वारति है और नायका हसति ॥ और नेत्रनिको
नचावति है तैसे तैसे निपट उदार जो है नाइक तिसको फगुवा कहियें फागु
कौ दस्तूर सो देतवन नहुनहो है ॥ विशेषोक्ति अलंकार ॥ १३ ॥ उक्ति सषीकी
होरी वर्नने पूर्वानुराग कटाक्ष विक्षेप नाइकाके अनुभाव देवो नाइककैं
उदारपद तें ध्वनि है विशेषोक्ति ० १३ ॥ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ छिकि रसालसौरभ सनैः मधुर माधुरी गंध ॥ ठौर ठौर झूमत झ॰
कत ः भौर भौर मधु अंध ॥ वसंतरितु समय जो मान कूनी नाइकासों कहि है तो म
नाइवो सोहि ॥ जो नाइका नाइकसों कहै तो स्वयं हुतनका है सेनाइकको कुवि
वाई संभवे ॥ जो नाइक सखीसों कहै तो आपनी अवस्था प्रयोजन नाइका मि
लावो ॥ सवैया ॥ फूलनके रसके चलकै अवगाहि छवेसब वेलि जिती वन ॥ माधु
रीके मकरंद गंध सनै अरविंद परागसों पागि रहै तन ॥ मंजरसालवे सौरभसों मि॰

लिमान भए हरत्यौ नरहौ मन॥ हौरनि हौरनि जौरनि कहि किहुवे मधु अंध मधुव्र
तके गन॥टीका॥ सषी को वचन सषी सौं रसाल कहियें आम ता के सुगंध सौं स
ने कहि भरे है॥ आठ मधुर वा कहियें मीठौ मधुरी कहियें लता तिन के गंध सौं
सने कहौ रक कहियें फूलनि के गुछा॥ तिन के मधु कहियें पुहुप रस ता सौं अंध
भए जे भौंर ते कहुं मत है ऊकन कहियें सिरि परत है॥जातिवर्ननअलंकार॥१४॥
स्वनसंभवी वसंत वर्ननं जो नाइका की कै नाइक की उक्ति है छुतो उद्दीपन हर
चितकरि संके तजना वतिहै जातिवर्ननं उत्प्रेक्षा जहकौ जति संभावना
वस्त हेतु फलमधितीनभांति उत्प्रेक्षा॥ १४ ॥ ॥

दोहा॥ इहि बसंत न घरी अरी: गरम न सीतल वात॥ कैसो धो प्रगटै है षि
यत: पलकि पसीजन गात॥इह सात्विक भाव सषी को वचन नाइका सौं
परकीया लछिना जानीये॥कवित्त॥ सो हद्व समान समो है नहि तो वसंत रि
तु ना हि ने गरम अरु सीकरन अति है॥ कहै कविकुल वलि हम सो न तो सा
ची कहि काहे ते छबीली भई ऐसी तेरी गति है॥ कवहूं कंपति गात कवहूं
पुलक होत कवहूं पसीना होत कवहूं तपति है॥ जानी है री जानी हित सानी
अरगानी रहि है षी दधि दानी प्रेम रस में पगाति है॥टीका॥ सषी को वचन नाइ
का प्रती अरी संवोधन है इस वसंत रितु मै घरी गरम नहीं है॥ और ह सीतल वा
त कहियें पवन सो नहीं है इसको यह मतलव है कि गरमी सो पसीना होता है
और सीत सौं रोमांच होता है॥ ए दोऊ वात वसंत में नहीं है काहे ते प्रगट पुल
कि कहियें रोमांच सहित तेरे अंग देषियत है॥विभावनअलंकार॥१५॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूलदोहा॥ फिरि विहार कौतूहल नि पथिक: चलो चकित चित भागि॥ फूलो देषि पलास वन: समुहौ समुझि दवागि॥ इहां मतसमय सषी को वचन नायिका सों कै है तौ प्रवत्स्यत्पतिका सषी को वचन नायक सों कहि है॥ कवित्त॥ देषौ रितुराज कौ समाज वन बागनि मैं प्रफुलित सुमन तु रहे हैं जो अनि जागि कै॥ फूले म पलासन के अंगार कैसे जानि चहूं ओर रवु चनि सों चापित चको [illegible] गु रागि कै॥ आगे नैं विलोकै एक पथिक समाज भरो वाको देष फूली रही भरम दवागि कै॥ वीर उर औरल पर देस की विसारी गैल लौटि चले चस को चकित चित्त भागि कै॥ टीका॥ सषी वचन सषी प्रती अथवा कवि को वचन न यो मारग गीर चित मैं डरि कै पथ को फिरि कै भागि चले॥ फूलो पलाष कहियें ढाक ना को वन देषि समुझो दोहा रो को आगि समुझि॥ भ्रांतिअलंकार॥ २८॥

मूलदोहा॥ रवनत भृंग घंटावली: झरत दान मधु नीर॥ मंद मंद आवत चलो कुंजर कुंज समीर॥ इहां वायु वर्नन कवि की उक्ति जानीयें॥ कवित्त॥ घंटन के सबद अषंडित ई सुनियत गुंजत अनंद भरे या अलिन को वृंदु है॥ सुमन समूहन को धूरि सों धुरे रे गात मदजल उमरि झरत मकरंदु है॥ रंग रंग फूलन को झूले मैं झपा औ तनु जगत विदित थकौ विक्रम अमंदु है॥ मानत हलो रवि को आवत गुमान भरो मंद गति पवन मनोज को गयंदु है॥ टीका॥ भौरा जो है सो ई घंटावली रवनत कहियें वाजति है मधु कहियें पुष्परस ताको नीर कहियें पानी सो ई दान कहियें मदजल सो झरत कहियें गिरत है॥ कुंज को जो पवन सो ई भयो कुंजर कहियें हाथी सो मंद मंद कहियें हलवे हलवे चलो आवत है॥ रूपकालंकार॥ २९॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥ सलदोहा ॥ चुवत स्वेद मकरंद कन : तरु तरु तर विरमाइ ॥ आवतु दछिन तै चलौ : थको वटोही वाइ ॥ इहां पवन वर्नन कवि की उक्ति जानीयें ॥ कवित्त ॥ निझरन डगन जल जंत्रनि के विमल सलिल परसत ऐसें हारे सोंढ रेहरे ॥ हलक कै जहांन हां सीरी छांह देखि देखि विरहत तरु तरु तर केतरे तरे ॥ सुमन पराग रज पागि रह्यो अंग अंग स्वेद कहुं दमक रंद के धरे धरे ॥ सब मिल सहूछा वेदाद छन दिसा तै वायु या को बटोही चल्यो आवतु है हरे हरे ॥ टीका ॥ सखी को वचन सखी प्रती मकरंद का कियें पुष्प रस ता के तनु सोई भयो पसीना चुवत है ॥ अरु वृछ के तरे रहि के वाइ का कियें पौन सोई भयो थको राहगीर सो दछिन दिसा तै चलौ आवतु है ॥ रूपक का अलंकार ॥ २८ ॥

॥ सलदोहा ॥ हवै सो सांकरी कुंज मैं : करतु झांकि झकरात ॥ मंद मंद मारुत तुरग : स्वेद नि आवत जात ॥ इहां वायु वर्नन कवि की उक्ति जानीयें ॥ कवित्त ॥ सोहतु सिंगार बहु भांतिन जराउ साज रंग रंग झूलमत रल अति अंगु है ॥ कलि १ काल ललित भ्रमर वरी लसति सुख पुहुप पराग टवैसो उमगा अंगु है ॥ झझकात सांकरे निकुंज मग निरखत झांकि सीकरन झकरातु भये गारंगु है ॥ सुदी सी कुरत मंद मंद मच याल या तैं आवतु है पवन कामदेव को तुरंगु है ॥ टीका ॥ नाइका को वचन सखी प्रती सांकरी गली मैं झकोर है अंग रझां सीकरन झकोरतु है ॥ येसो मारुत का कियें पवन सोई भयो तुरग का कियें चोरा कूदत चलो आवतु है ॥ रूपका अलंकार ॥ २९ ॥

मलदोहा॥ छिरकनाहनवोढहगः करिपिचकीजलजोर॥ रोचनरंगलालीभई:
बियतियलोचनकोर॥ इहांअज्ञातकनिशाकोभेदअन्यसंभोगितदुखितहेदूस
षीकोवचनसषीसोंलछितजानीयें॥ सवैया॥ नंदलालललसेलललनागनमेंज
लकेलिमचीरसरीतिचलाई॥ चभकलैउछरैवहुभांतिदुरैभरिरंककरीनरला
ई॥ लोचनभावतीकेछिरकेकरवेकारकोजलधारचलाई॥ सोतिकोलोचनको
रतुमाऊयहीभईलोचनरंगललाई॥ टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रतिनाहकहियें
नाइकनिसनैपिचकारीकेपानीकेजोरसैंनवोढानाइकाकेनेत्रछिरके॥ दूसरीना
इकाकेनेत्रनिकीलालीभई॥ असंगतिअलंकार॥२०॥

इतीवसंतरितुः अथग्रीषमरितुवर्ननं॥ मलदोहा॥ नाहिनएपावकप्रवलः लुवैच
लतिचहुपास॥ मानोविरहवसंतकेः ग्रीषमलेतिउसास॥ इहांग्रीषमसमयना
इकाप्रोषितपतिकानाइकाकोवचनसषीसों॥ कवित्त॥ चंडकरमंडलतेंमंडिके
अषंडधारवरषतपावकप्रचंडकिधौयहरी॥ हंसप्रानप्यारेकोडुहाईकिधौआ
ईवडवानलकोलुवेंनानेंतचनद्वपहरी॥ चंडकरमंडलतेपावकनवरषतलुवेन
चलतिजिन्हेदेषिमतिहहरी॥ मेरेजानप्रीतमवसंतकोवियोगभयेंग्रीषमविरह
नीउसासलेतिगहरी॥ टीका॥ कविकोवचनअथवानाइकाकोवचनसषीसों
पावककहियेंआगितातेंप्रवलकहियेंजोरावरएलुवैंपारोओरनाहीचलतीहै॥
मानोवसंतरितुपेरविरहसेंग्रेषमरितुउसासलेतिहै॥ उत्प्रेक्षाअलंकार॥२१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

194

बिहा.
१५५

मूलदोहा॥ कहलानैएकतवसतःअहिमयूरम्रगवाघ॥जगततपोवनसोकियोः
दीरघदाघनिदाघ॥ग्रीषमसमयनाइकाकोवचननाइकसोंहोइ।तोप्रवत्स्यपति
कासषीकोवचननाइकासोंनाइककहूसोंहोइ॥कवित्त॥होतवरहोनवरहोनरहै
रेअहिनकोअहिकरिसुंडउनकेरथनिगहतुहै॥करनिकेउदरकेतरहूरविआइसोव
नतपोवनकीरीतिनिवाहतुहै॥हरिनकीछातीतरवैठिनहरिनआइछोडिचितचा
इनविरोधविसरतुहै॥देषिरितुग्रीषमकोतीषनप्रतापयहहरकलानेकहलाने
एकतवसतुहै॥टीका॥सषीकोवचनसषीप्रतीकहलानेंकहियेंभएसांपमोरम्र
गवाघएएकठौरवसतुहै॥दीरघकहियेंवडीजाकोगरमीयेसोजोनिदाघकहियें
ग्रीषमरितुतिसनेंसिगरेजगततपोवनसोकियोहै॥इसकोयहमतलवहै किजैसें
तपोवनविषैतपसीकेप्रतापतेंसवजीवएकठेरहतुहै॥उपमाअलंकार॥२२॥

मूलदोहा॥वैठिरहीअतिसघनवनःपैठिसदनतनमाह॥देषिदुपहरीजेठकीःछांहौं
छांहौंचाहतिछांह॥इहग्रीषमसमइनाइकाकोवचननाइकसोंस्वयंदूतत्वेसेंही
मानीनाइनाइकाकोवचननाइकसोंजोनाइकाकीसषीनाइकसोंकहैतौप्रदे
सकोनिवारनहोइ॥कवित्त॥सलिलसूषतजलचरअकुलातपलजीवजंतुस
कलउठेजरवरिकै॥कहूँकविहालसेनअंवरअनिलसवपावकहोहोतकोऊरहै
धीरधरिकै॥ग्रीषमकेआतपकोभीषमप्रतापुकितदिकिनसकतिकाहूँडोली
डोलडरिकै॥सघनविपिनतहांपानेकूपकंजनिमैंछायोविरमतिकहूंछांहअ
टकरिकै॥टीका॥नाइकाकोवचनसषीप्रतीछांहहूनेवनमेवैठीरहीहै॥औरकुच
रविषैछांहजोहैसोउछाहचाहतिहै॥अत्युक्तिअलंकार॥२३॥कविकीउक्तिग्रीष

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सवर्नने अप्रस्तुति अलंकार अलंकार अप्रस्तुति यह वर्नन अतिसय रूप ॥
२३ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ इतीश्री बसंतरितु अथ पावसरितु वर्ननं ॥ गनन तर सो है मनि किये : क
रिहरसो है नेह ॥ धर पर सो है करहै : फरवर सो है मेह ॥ इह वर्षा समय है अह कवि
की उक्ति स्वयंदूतनाइका को वचन नाइक सों ॥ कवित्त ॥ हरित भूमि जल भरे वन
उपवन चहुं ओर सोरभ के उमगि उठे रहै ॥ महमही लता लहलही छवि छाई रही कू
जि कू जि बगन जिको लाहल के रहै ॥ उमडि घुमडि परसत नभ भूमि घन सोहै सरसो
है बरसो है फूमि के रहै ॥ हरि है रिझनि मन तिय है रसो है होत इत घन वृंद अनुराग
के उदे रहै ॥ टीका ॥ सखी को वचन नाइका प्रती मान मोचन करावति है इन में चनि सर
सने हकरि के ॥ तिय कहिये नाइका जिनके नर साउन वारे पमे दनुपर कहिये पी पर
सो है कहिये सानु दै के रहे है ॥ छेकानुप्रासअलंकार ॥ २४ ॥ मानिनी नाइका प्रतिस
षी की उक्ति उद्दीपन दिषावति है वर्षा रितु वर्नन छेकानुप्रास जहां बीच
पद दे परे अक्षर समता आइ नहु छेकानुप्रास है कहत सुकवि समुदाय ॥
२५ ॥ ॥

अनुप्रासः ॥ मूलदोहा ॥ पावस घन अंधियार मैं : रहै भेद दिन जान ॥ राति द्यौस जा
नो परै : लषि चकई चकवान ॥ इह वर्षा रितु समय स्वयंदूतनाइका को वचन ना
इक प्रति नाइका को वचन सखी प्रति ॥ सवैया ॥ अंबर अंबर विदिसा बिदिसा सगरे नभ
ही को वितान सो तान्यो ॥ मेचकरंग सबै जगभो अति मोह कहियें निसि चाइ न मान्यो ॥ पाव
क सो घन के अंधियार मैं भेद कछू न परै पहिचान्यो ॥ द्योस निसा को विवेक सु तो चकई
चकवान के बोलन जान्यो ॥ टीका ॥ सखी को वचन नाइका प्रती पावस कहिये वरषा के
अंधेरे मे ओर राति दिन के जानिबे को भेद नही रहै राति दिन चकई चकवा को देषिबे जानो
मानु है इसको यह मतलब है ॥ कि चकई चकवा एक ठौर देषिबे दिन जानियतु है ओर
न्यारे देषिबे राति जानी जाति है अथवा चकवा को उत्तर प्रत्युत्तर सब्द बाके मेघ के अंधि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यारेभेदनही ॥ एहोत्रोरुत्र्यानमरजादासोजहींरहीचकईसंबोधनहैतोकोराति
दिनुजानोजातुहैतुंदेषु ॥ तवफेरचकईबोलीचकवासंबोधनहैरातिदिनुनहीं
जानोजातुहै ॥ काव्यलिंगत्र्प्रलंकार ॥ २५ ॥ उक्तिहूतोकीनाइकाप्रतिसंके
तत्र्प्रवरसूचितकरतिहैवर्षारितुवर्ननेकाव्यलिंग॰ अर्थसमर्थनकोजि
येजिहांयुक्तसोमित्रकाव्यलिंगभूषनतिहभाषतबुद्धिविचित्र २५ ॥

मूलदोहा ॥ छिनकुचलतिठठुकतिछिनकुःभुजप्रीतमगलडारि ॥ चढीत्र्प्रटादे
षतिघटाःविज्जुछटासीनारि ॥ इहसंजोगसिंगारहनाइकास्वाधीनपतिकासख
सखीकोवचनसखीसों ॥ सवैया ॥ मेलिभुजामनमोहनकंठचलैठहुकैउम
गैरसुषभारी ॥ नाछविकैकविहूलकहैघनदामिनिकोरिकरैवलिहारी ॥ ऊंदनसें
ननवानिकसोंवनिसारीसुरंगलसैलहकारी ॥ कारीघटाछविसोंअवलोकति
सावनमांझत्र्प्रटाचढिप्यारी ॥ टीका ॥ सखीकोवचनसखीप्रतीविज्जछटाकहिये
विज्जलीसीनारिकहियेनाइकासोछिनमात्रचलतिहै ॥ त्र्प्रोरुछिनमात्रठिठुक
तिकहियेंठाढीहोतिहैप्रीतमकहियेंनाइक ॥ ताकेगरेमेंत्र्प्रापनीभुजाकोडारि
कैत्र्प्रटापरचढीनाइकामेंघकीघटाकोदेषतिहै ॥ उपमात्र्प्रलंकार ॥ २६ ॥ सखी
कोउक्तिसखीसोंसंजोगश्रृंगारवर्षाऋतुवर्ननेउपमालंकार उपमात्र्प्ररुउ
पमेयसाधारनवाचककहेइ एचारयोंपदएजिहांहरतउपमासोइ २६ ॥

मूलदोहा ॥ पावकझरतेमेहझरःदाहकदुसहविसेषि ॥ दहदेहवाकेपरसःय
हीद्रगनहींदेषि ॥ इहनाइकाप्रोषितपतिकाविरहनीनाइकाकोवचनसखी
सोंउद्वेगमेंनाइकहसखीसोंकहैतोसभवै ॥ सवैया ॥ स्यामधरेधुरवागहरेत्र्प्रर
त्र्प्रवरपतिमहीत्र्प्रवगाहै ॥ देषिरीपावककोउरतेंयहमेहकीज्वालकरालमहाहै ॥ ।
वारिमझारमेंहोंदहैयहनैननहीनिरषेतनदाहै ॥ वागिरधारीविनावचिवेकोत
हींकरिकेंत्र्प्रोरउपाइकहाहै ॥ टीका ॥ नाइकाकोवचनसखीप्रतीपावककहियेंत्र्प्रा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तिनाकौ जरकहियें लाटनातैं मेघकौ जरकहियें वरषनो ॥ सो विसेषकरिकैं उसरुव
हियें सहोनजाइ ऐसोदाहकहियें जरावतवौरीहै ॥ आगिके छुवेतें देह जरतिहै इसमेघ
के जरसों नेत्रनि सों देषतही जरियतहै ॥ काव्यलिंगअलंकार ॥ २७ ॥ वियोगी
कीउक्ति ॥ विप्रलंभसिंगाररस यथा ॥ अलतुवनैनें काव्यलिंगा० अर्थसमर्थनकी
जिएजिहांयुक्ति सो मित्र काव्यलिंग भूषनतहां भाषतबुद्धिविचित्र २७

मूलदोहा ॥ कुढंगकोपतजिरंगरली: करतिजुवतिजगजोइ ॥ पावसगरूढनवा
तनजूः चूडनकूरमहोई ॥ इहवरषासमयसषीकोवचननाइकासोंमनाइवो
सवैया ॥ पावसआवतहीवगपुंजनिमोदसोंकूकमचाइदईहै ॥ चाइभरीवधुभा
इभरीमिलिरंगरलीवनितानिठईहै ॥ कोपप्रसंगकुढंगनिवारिनिहारिचहोउग
इजनईहै ॥ गरूढतहेयरूवातगुसांइनिचूडहुदेषिहरंगभईहै ॥ टीका ॥ सषीकोव
चननाइकाप्रतिहैकुढंगकहियेंवुरेढंगकाजोकोपताकोतजिकहियेंछोड ॥ जु
वतीकहियेंनाइकातेजगतेंरंगरलीकहियेंक्रीडाताकोकरतिहै ॥ तेजोइकहियें
देषुपावसकहियेंवरषारितुतामेंजेगरूढकहियेंछिपीवातनहीहै ॥ चूडकहि
येंसीसवहोटीतिनकोरंगहोतहै अथवाचूडेनकोरंगुहोतहै ॥ अर्थांतरन्याससंकरा
लंकार ॥ २८ ॥ इहांनीतिउक्तिसांतिनीनाइकाभेदापायुअर्थांतरन्याससंश्लेषको
संकरकस्योअर्थजहपोषियेअर्थअर्थसोमीतसोअर्थांतरन्यासहैबुधजन
करतप्रतीत एएक भावकैअर्थजहभासतआइअनेकसहूसश्लेषसोकहत
हैजिनकेबुधिअनेक २८ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ धुरवाहोइनअलिउठेधुवाधरतिचहुंकोद ॥ जारतआवतजगतकौ
पावसप्रथमपयोद ॥ इहवरषासमयनाइकाप्रोषितपतिकानाइकाकोवचन
सषीसों ॥ कवित्त ॥ मेरोकह्योमानिजियनिहचैकेजानिआलीप्रथमहींपावसकेव
लउचरतहै ॥ सीतलसमीरमिल्योतैसेहीसहाइकरिविरहीविचारेकदिकेसेंउ
वरतहै ॥ जगहीनरावतएआवतघुमडिघनताहीतांसघराकुलसोरुपकरतहै ॥
चपलानचपलकरपज्वालजालनिकीतेईधूमधारएनधुरवापरतहै ॥ टीका ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

196

बिहा०
१९६

नाइकाकौवचनसषीप्रतिअलिसषिकोसंबोधनहै॥ प्रथमकहियेपहिलोपयोदहक
हियेंमेघमोवरषारितमेजगतकौमारनआउतहै॥ नाकोधुवाभूमिमेचारो
औरउठोहैएधुरवानहीहोइहै॥सहेतापहनुतिअलंकार॥२९॥ वियोगिनी
कीउक्तिसषीसोंपावसरितवर्ननउत्प्रेक्षा जहकीजतिसंभावना॰
२९ ॥ ॥ ॥

मूलदोहा॥ हठुनहठीलीकरिसकै इहिपावसरितुपाइ॥ आनगांठिमनवैया
रहैमानगांठिछुटिजाइ॥इहमानमोचनप्रसंगविषैसषीकोवचननाइ
कासों॥कवित्त॥ दामिनीचपलगतिसोउस्यामघनहूंमैसोंमिलिविरहनिअतिसर
सातिहै॥ द्रुमनिसेंलहलहीलतिकालिवटिरहीसबहींकेउरप्रतिरीतिसर
सातिहै॥ कैसीयोहठीलीकोऊहठनोनठानिसकैमदनमरूरनिसेंाछ्यालोअ
कुलातिहै॥ देषोरितपावसकीनेहकीनिकाईमाईआनगांठिछुटेमानगांठिछु
टिजातुहै॥टीका॥ सषीकोवचननाइकाप्रतीहठीलीजोनाइकातेहरसवरषारि
तुकोपाइकैहठकरिनेहीसकतिहै॥ औरहुगांठिमनमेंकेसेंरहतिहैमानकीगां
ठिछुटीजातिहै॥इसकोयहमतलबहैकिहमानमतिकरु॥दृष्टांतअलंका
र॥३०॥ सषीकीउक्तिसेंपावसरितुवर्ननंदृष्टांतअलंकारउपमा
नउपमेयगुनवाचकधर्महुजानहोतबिंबप्रतिबिंबहैदृष्टांतउपरि
मान ३० ॥ ॥

मूलदोहा॥ वेईचिरजीवीअमरनिधरककिरौकहाइ॥ छिनबिछुरेजिनकीनही
पावसआउसिराइ॥इहवरषासमयसषीकोवचननाइकमोंनाइककोव
नसषीसें॥सवैया॥ घोरिघटाघुमडीचहुंओरकरैबहुभांतिनिसोरविरावो॥
भमिहरीवहैसीतसमीरहराहैगतिमंदसुगंधसुभावो॥ ऐसेंसमैंमेंछिनएकवि
छोहभयेजिनकीगईछूटिनआवो॥ वेचिरजीवीभयेजगमेंअजरावरवैपान
निसंककहावो॥टीका॥ नाइकाकोवचनसषीप्रतिजिनकीछिनमात्रविछुरे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नैआपुकहियैआपुवल्लभसोसिराइकहियैहरिनहिहोतिहै॥ वेईचिरंजीवऔर
अमरनिधरककहाइपिरो॥काव्यलिंगालंकार॥३१॥वियोगीकोउक्तिपा
वसरितुवर्ननकाव्यलिंगसोरठा अर्थसमर्थनकीजियेजहांयुक्तिसो
मित्रकाव्यलिंगभूषननतेंहांभाषतबुद्धिविचित्र ३१ ॥ ॥

मूलसोरठा॥पावसकठिनजुपीरअवलावोदुसहिसकै॥तेजधरततनधीरर
क्तबीजसमउपजै॥इहवरषासमयसखीकोवचननाइकाप्रतिवासखीप्रति॥
सवैया॥पावसकेसमयेकोकहालहेंपीरभईयहरातिचलाकी॥रैनदिनाहरा
नीदनहोसोतावाकुलहैवदसोहककाकी॥झलकहैवहवालिविहालभई
गतिधीरककीऔरहैवाकी॥धीरजछूटिगयोहैनपुंसनारीयऔरनएवारहना
की॥टीका॥सखीकोवचननाइकप्रतिअथवासखीप्रतिवरषाकालकीकठोर
पीरहै॥अवलाकहियैनाइकातेवैसेंसहिसकैजेरक्तवीजकेसमानउपजतहै
अथवारक्तबीजसमउपजेकहियैंनपुंसकतेऊधीरजननहींधरतहैपुरुषस्त्रीन
कीकहाचली॥अर्थांतरन्यासउपमालंकार॥३२॥उक्तिनाइकाकोवियोग
शृंगाररक्तबीजपदमैंश्लेषतहांअर्थांतरन्यासअलंकार॥ कह्योअर्थ
जहंपोषियेअरथअरथसोमीतसोअर्थांतरन्यासहैबुधजनकरतप्र
वीन ३२. ॥ ॥

मूलदोहा॥आवनहेनाउउपाउकोआयोपावसमास॥बेलरहीवाषेमसोकेम
कुसुमकीवास॥इहवर्षासमयप्रोषितपतिकानाइकाकोवचनसखीसौं॥
कवित्त॥जोलौंमनरह्योहाथतौलौनउसासीसगाथआगयोविरहदुषसल
निकोसहिबो॥ प्यारेनंदनंदनकोआवनअवधिआसजैसेंतैसेंरह्योजीकअव
कहांकहिबो॥ आयोसखीसावनसू[illegible]भावनरीअवतउपाइनकोछा
डिवथावहिबो॥कदमकुसुमकीसुवासकोप्रकासभयेंषेलहैनप्रानकौउ

197

विल॰
२५०

सुमसों रहिवौ ॥ टीका ॥ नाइकाको वचन सषीप्रति पावसक हियेवरषाताकोमा
मासकहियें महीना सो आयो हो ना मैतं अव उपाइ कोना उछोडुके मकु सुमकहि
येके वरकोफल ॥ ताकीवासकहियेसुगंध सो फैलीहै तामै षेमकहियेकुसल ॥
सो रहिवो षेलु नहीहै इसको यह मनलषहै ॥ किकेवरेके सुगंधसो मरनो होइ ॥
गो लातैउपाय मनिकसे ॥ लोकोक्तिलंकार ॥ ३३ ॥ प्रोषित पतिकानाइका
कीउक्ति सषीसों पावस रितिवर्ननं लोकोक्ति ॥ कहनावतिहैलोक ॥
कीलोकोकतिहिंसोइ ३३ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ वामा भामा भामिनीकहिबोल्लो प्रानेस ॥ प्यारी कहतलजात नहि
पावसचलतविदेस ॥ इहमाइकाप्रोढा प्रवत्स्यपतिकानाइकाको वचनमा
इकसों ॥ सवैया ॥ आपहीमोपैविराइतपावन पावसके घुमडे घनकारे ॥ का
मिनीवामनिचोलहुतोअरु प्यारी कह्यो जिननंदहुलारे ॥ ए चकहूनलजात
हियेंहितवैअवएदुषदीजतभारे ॥ ऐसेमैं छाडि विदेस चलेकहोमेरीकहा
गति प्रानपियारे ॥ टीका ॥ नाइकाकोवचन नाइकप्रति प्रानेस नाइकको संबोध
नहै तुमसोको वामा भामा भामिनीएनाउंलैकैबुलावो ॥ वरषामै तुमपरदेसजा
तहौ ताेपेरीसोकोतुमप्यारीकहतलज्यावान नहीहोतहो ॥ परिकुरांकुरालंका
र ॥ ३४ ॥ गाभिप्राय तियनिकाकहनिहैनाइकासों पावसरित्तवर्ननंपरिकरां
कुरसाभिप्रायविशेषजहपरिकुरांकुरसोई ३४ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ रहीरुकीक्यैांहूं सुचलि आधिकराति पधारि ॥ हरतिताप सब
द्यैासकोउलगियासियारि ॥ यहवपुवर्ननकविकीउक्तिजानीये ॥ कवि
त्र ॥ ऐसीरहीरुकीक्यैांहूं आवन न पाइजाके विनमिलेप्रानन्कीगतिआ
कुलातिहै ॥ लोचनचकित जाको आगमविलोकिवेकोचहूंओर चितव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नखानी होत न जानी है ॥ वेसौं हूं वेसौं हूं चलिवे को अचानक कहीं आधी रात आइ गई
व्यारि जैसें या रि आइ जाति है ॥ हरति तपति सब द्यौस को दियें सो लागि कहै क
वि फूलन सुष सिद्धि सरसाति है ॥ टीका ॥ नाइक को वचन सषी प्रति कै सषा
प्रति यारी कहिये मित्र नी नाइका सो ई भई वयारि सो रूप की कहिये अरु को रहो
सो कैसें हूं चलि के आधी राति भए पधारी कहिये चली नाइका उर सो लगि के
सिगरे दिन के ताप को हरति है ॥ ठैठे घरूपकालंकार ॥ ३५ ॥ कवि की उ
क्ति पावस रितु वर्ननें रूपक उपमान रु उपमेय मैं भेद परै न लषाइ ता
सों रूपक कहत है रुक विसकुल समुदाय ३५ अथ शारद ऋतु व
र्नन ॥ ॥

मूल दोहा ॥ विगसत नव वल्ली कुसुम निकसत परिमल पाइ ॥ परसि पजारति विरहि हिय
वरसि रहे की वाइ ॥ इहू रूपक नव र्नन विरह के प्रसंग मैं नाइका अथवा नाइक सषी सों
कहै मान के प्रसंग मैं सषी नाइका सों कहै ॥ कवित्त ॥ मंजुलता वेलिन के सघन नि
कुंजनि तिहरे रे निकसति सवहि सहाति है ॥ सुवन कदंवनि के सुषद पराग सनो जरि
मिलि भौरन की पांति जुल जाति है ॥ मलकि न मल्लिका के उसमन वीन तेनि कसति
सुरभि सहित सरसाति है ॥ वारसि रहे को सो रो आवति वयारि देषो परसि पजारति विगु
न की जाती है ॥ टीका ॥ नाइका को वचन अथवा नाइक को वचन सषी प्रति फूलिन ई
लानि के फूलनि को परिमल कहिये सुगंधता को पाइ के वरसे उपरान्त की जो वाइ क
हिये पौन सो परसि के विरहीन के हृदय को जराउति है ॥ विभावनालंकार ॥ ३६ ॥

[illegible] ॥ मूल दोहा ॥ घन घेरा छुटि गो हरषि चलि गे चहूं दिसि रा
ह ॥ कियो सुचैनो आइ जग सरद सूर नरनाह ॥ इह सरद समय राजनीति प्रसंग क
वि की उक्ति ॥ कवित्त ॥ घन घेरा छुटि गयो अंधियारा मिटि गयो विसद प्रताप जगाम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गेपाछ्वविछाइके॥ कहैकविहूलसउरहरषेनिरषचलेपथिकचहूंओभूरिभयवि
सराइके॥ फूलेहियकमलअमलभयजलथलचटअयचनउछाहहउमगाइ
के॥ सरदसुभटनरनाहकीनिकाईनी..निदेषेसवजगतसुचैनोकीनोआइके
टीका॥ सषीकोवचनसषीप्रतिचनकहियेमेचतिनकोंचेराऊहिगयोअथ
वाचनोंजेचेरासोदूरिभयो॥ हरिषिकहियेषुसीहैकैचारोदिसानिराहचलीस
रदजोरितसोईभयोसुराजतिसनेआइकेवसमैसारमेसुचैनकियो॥रूपकालं
कार॥३७॥ कविकीउक्तिसरदरितुवर्ननेरूपकालंकार उपमानरुउप
मेयमैंभेदपरैनलषाइ तासोंरूपककहतहैंसकलसुकविसुषदाय ३८

मूलदोहा॥ अहनसरोरुहकरचरनदृगषंजनमुषचंद॥ समैआइसुंदरिसरदका
हिनकरतिअनंद॥उकसरदसमयकविकीउक्तिजानीयै॥कवित्त॥ सोहतअरु
नसरसीरुहचरनकरजिनहिजगातुप्रियसदनगतवाई॥ कलापतिपरनसुधानि
धिवदनलसैजाकीअरभुनिछुविकाहनअवाई॥ देषियतषंजननतरलकजरारेनै
नकहैकविहूलसदेषेजीवसचपवाई॥ समैसुषपुंजसनीसुंदरिसरदआईकोन
केनडरमैंअनंदसरसवाई॥टीका॥ सषिकावचननाइकप्रतिअरुनजेकमलने
ईहाथपाइहैअोरषंजननकहियेमसोलासोईनेत्रहैऔरचंद्रमाजोहैसोईमुष
है॥ ऐसीसरदजोरितसोईभईसुंदरीकहियेनाइकासोसमयमेआईकेकिसको
आनंदिनहीकरतिहै॥रूपकालंकार॥३८॥

अथहिमंतरितवर्नन॥मूलदोहा॥ ज्योंज्योंघटतिविभावरीत्योंत्योंवढतअनं
त॥ अोकअोकसवलोकसुषकोकसोकहेमंत॥ इहहेमंतसमयकविकीउक्ति
मुख्यहैसंयोगसिंगारमैंवनेविप्रलंभहैमेकोककौनुकौप्रसंगअन्योक्त

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जातीये॥ कवित्त॥ हिमरितआईभईसीतसरसाईदेषिभाजिगईपरमउरोजअचल
नमैं॥ वासुरकोलघुताविलोकिअरुतिकोलम्बछिमदैरयोतेजतपनकेतन
मैं॥ कहैवभविकस्नेहपाजैपा रजनीवढतिसांतोउमगानुमोदस्यनुरागिनकेमनमैं॥
भोकस्यो कलोकलोकवाढतअपारसुषसोंवाहे वियोगीकेकिकोकनुकेगनमैं
टीका॥ सषीकोवचननाइकाप्रतिअथवानाइकप्रतिजेसेंजेसेंविभावरीहीकहि
येरातिसोवढतिकहियेवडीहोतिहैतैसेंतैसेंअंततकहियेजिहकोनाहनहीं॥ च
रचरविषैसवसारकेसुषुअरुकोककहियेचकवातिनकेसोककहियेदुषसोवा
ढतुहै॥ दीपकालंकार॥ ३५॥ नाइकाकेउक्तिहर्षसंचारीकरिहेमंतवर्न
नेदीपकालंकारउपमानवस्तुउपमेयसोइकपदलागेजाइतासौं
दीपककहतहैंसकलसुकविसमुदाय ३५ ॥ ॥

वलदोहा॥ वियोगसैवजगतुकामवसजीतेजितेअजेइ॥ कुसुमसरदिसरधनुषकर
अगहनवाहननदेइ॥ इहदोहेमैंहेमंतसमयकोउद्दीपनअधिकहोतुहैसुनाइकप्र
तिनाइकसषीसोंअरुसषीकोवचनसंभवेकविकीउक्तिहै॥ कवित्त॥ सो
सोहैमनोससिहिईसेमेमनकनसेकेतेकीनीविकलगनेयेकहाकहिकहि॥ मा
नियतजाकोतोषंडमेंअषंडधाउजीतेमहिमंडलकेअजतीजितेकहाहि॥ कहैक
विकल्यानजिनफूलहीकोआयुधसोकैसेवलीभेदेसाहसहूतीकुचाहि॥ जीतेजिहि
तीनौलोकऐसोवलीमनमथअगहननगहनेदेतसरचापुताहि॥ टीका॥ सषी
वचननाइकाप्रतीअगहनकहियेमारगसिरकोमहीनासोकुसमसरकहियेपंच
वानहुदेतहै॥ अगहनमहीनानेसिगरोजगतुकामकेवसमैकोनोअरुजिनने
अजेकहियेजीतेनहींजातहैंतेजीते॥ इसकोयहमतलवहैकिहेमानविनुमेआपु
हीनेसिगरोजगतुकामवसभयो॥ विसेषोक्तिअलंकार॥ ३५॥ मानिनीप्रतिस
षीइतीकीउक्तिहेमंतरितुवर्ननेविषेषालंकारसवकारनकाज
नसरैउक्तिविषेषवहकहियेधरै ३५ ॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

199

विहा. १५५

सतसईदोहा ॥ मिलिविहरतविछुरतमरतःदंपतिअतिरसलीन ॥ नूतनविधिहेमंतज
रुःजगतजुराफाकीन ॥ उक्तहेमंतसमयसषीकोवचननाइकासोंकाहूनो
मानवतीग्रहकहिकौ हिकि कोइ ॥ कवित्त ॥ दोऊएकैदेषियेइहूनबीचपरैं
आनहितकीउमंगनईनईयेगहतहैं ॥ अतिरसलीनदोऊमिलेईतिहारु करैकहै
कहैकविहारसचित्रअतिउमहतहैं ॥ विछुरेतिमेवहुतोजीवेकौभवोसोनाहि
अतिआकुलाइमेनविधानसहतहैं ॥ औरएकदेषोहिमरितकौनवलरीतिजग
तमेंसबहीजुराफाकैरहतहैं ॥ टीका ॥ सषीकोवचननाइकाप्रतीमिलेतेविहा
रतहैंऔरविछुरेतेमरतहैयेसेंदंपतिकहियेंनाइकनाइकातेअतिरसमेलीनहो
सोहिमंतरितुकीजहनाउविधिहै ॥ सबुसंसारजुराफाकहियेंकोइपंछीकीजा
तिहैसोकियाइसकोयहमतलबहैकिजुराफामिलेतेजियतहैंऔरजुदेभए
मारतहैतैसेंदंपतिभए ॥ रूपकालंकार ॥ ४० ॥ मानिनीसोंसषीकीउक्तिमें
नरिकवर्ननरूपकअलंकार ४० ॥

सतसईदोहा ॥ आवतजातनजानियैंःतजितेजहिसियरान ॥ घरहिजमाईलौघ
टैंःषसमासदिनमान ॥ उक्तसिसरितसमैदोउनकेहितकीअधिकाईहै
हुराषीहोआछीलागतिहैसोसषीदिनकीलघुताईकहतिहैविरहिहू
हितकीन ॥ कवित्त ॥ वाकनकोहिगहैविभावरीकहतिजैसोंहीतैसोंहीवियोगिन
कोछियाआकुलातहै ॥ दंपतिउममिअनुरागाउजिलतउरएकहैरहतमिलिउ
हनकोगातहै ॥ कहैकविहारसयहअतिहीअनंदरसकेलिकरतवहनेउनसें
कातहै ॥ एवसकोदिवसलघुमानभयोऐसेंजैसेंनातततनकोउकावआयोक
वजातहै ॥ टीका ॥ सषीकोवचनसषीप्रतीएसमहीनाकोदिनआवतजातमैंन
हीजानियतहैऔरतेजकौनतजिकैसियरोभयोएसकोदिनमानघरकेजमाई
केसमानघटोहै ॥ इसकोयहमतलबहैकिघरमेंजवजमाईआइरहतहैतवता
कोआदरघटिजातहैतैसेंएसमेंदिनकोप्रमानघटिगयो ॥ उपमाअर्थापत्तिअलं
कार ॥ ४१ ॥ कविकोउक्ति प्रस्ताविक दादाहेमंतरितुवर्ननउपमालंकार ॥

उपमाअरुउपमेयसाधारनवाचकहोय एचारोंपदएजिंहांहरतनउपमासेह ४१ १

अथसिसिररितुवर्ननं ॥ मूलदोहा ॥ तपनतेजतपतापतपनः अतलतुलाईमाह ॥
सिसिरसीनवेगाफुलमिटै: विनललपटेतियनाह ॥ इहसिसिररितुसखीकोवचनना
इकसोंनाइककोवचनसखीसोंहै — कविकीउक्ति ॥ सवैया ॥ मोलविसालओरदु
सालदिनेसकोतेजपतेपरहोउ ॥ राबहूनाउतुहालिनमैंतनुपावककपुंजअगीसमओ
उ ॥ माहकैसीतविहातनकेसंहुकोरिउपाइकरोकिनिकोउ ॥ जोललिगीउपियासं
चपाइरहैललपटाइकरोकिनिकोउ ॥ टीका ॥ सखीकोवचननाइकप्रतीकैनाइका
प्रतीतपनकहियेसूर्यतिसकोतेजओरतपनकहियेआगितापतपनाकहियेताप
नोओरमाहमहीनामेंअतूलकहियेभारीतुलाईकहियेरुईकोगलेफ ॥ इनतीनो
वातनिसोंनाहसंबोधनहैनाइकाकोविनालपटेसिसिररितुकोसीतकैसेंहूनहींमि
टतुहैअथवातियसंबोधनहैनाइकाकोविनामिलेइनवातनिसोंसीतनहींजा ।
तुहै ॥ परिसंख्याअलंकार ॥ ४२ ॥ उक्तिकविकीअथभामिनीनाइकाप्रति ।
सखीकीसिसिररितुवर्ननेपरसंख्याअलंकार अरथनिषधेएकथलहूजे
थलठहराइपरसंख्याअलंकार अरथनिषधेएकथलहूजेथलठहराइ
परसंख्यानामसोंकहतिसकललक्षकविसमुदाय ४२ ॥ ॥
मूलदोहा ॥ लगतिसुभगसीतलकिरनि: निसिदिनसुषअवगाहि ॥ माहससीभ्रम ।
सूरकोः रहतिचकोरीचाहि ॥ इहसिसिररितुकविकीउक्तिमुग्धजानीये ॥ कवित्त ॥
सीसिरमैससिनेकरीहै ओरेरीतिन्याईधामहूमैंयेअचांदनीकेवेनउमहतहै ॥ सर्पसरो
जगाहैंउमदविकासचैनमिलनसवननकोकविरहदहतहै ॥ सीभीसीरीसुभगावेकिर
निलगातगातरातिकेविलाससबद्योसहीलहतहै ॥ ससिकेउदेकोसुषमानिसवमा
कीओरचोसोचकोरचित्तचाहतहीरहतहै ॥ टीका ॥ सखीकोवचननाइकाप्रतीसूरज
कीसुभगकहियेसुंदरसीतलकिरनिलगतिहै निसिदिनकहियेरातिदिनसुषको
अवगाहिकहियेकरतिहै ॥ चकोरीकहियेचकोरकोइस्त्रीसोमाहमहीनामैंच
द्रमाकेभ्रमसोंसूरजकीओरदेषतिहै ॥ भ्रांतिअलंकार ॥ ४३ ॥ उक्तिकविकीसिसि
ररितुवर्ननभ्रांतिअलंकार भ्रमचितहोतआइस्वषनहूंभ्रांतिगाइ ४३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूलदोहा॥ रहिनसकोसवजगतमैं: सिसरसीतकेत्रास॥ गरमिभाजिगढ़ पैंईं: तिय
कुचअचलमवास॥ इहांसिसररितुकौसमयकविकीउक्ति॥ कवित्त॥ सिसरमैं
आयौजुरसीत कौप्रवलदलजांकेत्रासमवहोंकंपतथरराइकै॥ नाहिलषिह
रमहरमतेंनिकसतजीसरमचलीहियेतेवेहहरहराइकै॥ अवअववतिपोन
पावीनजितलनकोटीकिनसकनितांउसकीभगौभहराइकै॥ ऊंचेकठेवेअच
लउरोजनववनागरिकेविकटमवासजाइरहीठहराइकै॥ टीका॥ सषीकोवृ
चननाइकप्रतीसिसररितसीतकेभयसोगरमीसवसंसारमेरहीनाहीमको
नवगरमीतियकहियेनाइकाताकेकुचजेहैतेईभएअचलपरवत॥ तामैमवा
सजानिकेभाजिकेगढवईभई॥ अथप्रस्ताविकवर्नन॥ ४४ ॥ उक्तिकविकीसि
सिरवितुवर्ननंरूपअलंकार उपमानरुउपमेयमैंभेदपरैनलषाइ ता
सौंरूपककहतहैसकलसुकविसमुदाय ४४ ॥ ॥

मूलदोहा॥ गढरचनावरुनीअलक: चितवनिभौंहकमान॥ आघुवकापही
वढै: तरुनितुरंगमतान॥ इहांप्रस्ताविककविकीउक्ति॥ कवित्त॥ गढकौवना
उवाकौहाइजोवडाईपावै येघनिमैंवातयहवरनीप्रमानकी॥ अधिकाईदेषि
येनिकाईकीवकाईरहीतेअलकचितौनिभौंहवरनीकमानकी॥ कहेंकावि
कुलरीतिजानतप्रवीनतेयाहोनीकौतुककीतुरंगमकीतानकी॥ वांकौंही
नेपालकोकेवासकौवढतमोलवाकीरजपतीलहैवोरीतिआपानकी॥
टीका॥ कविकौवचनगढकोरचनाऔरवरुनीकहियेनेत्रनिकेविलोके
औरअलककहियेंजुलपै॥ औरचितवनिकहियेंदेषवौऔरभौंहऔर
कमानाऔरतीकहियेनाइकाऔरतुरंगमकहियेंघोराऔरतानइनस
वकौआघुकहियेंमोलसोवकाईसोवढतहै॥ दीपकाअलंकार॥ ४५ ॥
सीछामतिभावधतिप्रकारविक दीपका ४५

मूलदोहा॥ अनियारे दीरघ द्रगनि : किती न तरुनि समान ॥ वह चितवनि औरै क
छू : जिहिं वस होत सुजान ॥ इहां परस्त्रा विक अन्योक्ति हू लखनेक विकी उक्ति स ·
षी को वचन नाइका सों ॥ कवित्त ॥ जगत मैं सभ भेसों कारन सब प्रीति कै अयें प्रीति रीति
ना न न जे प्रीति के निधान है ॥ करत सिंगार रूप दिप विस वको ऊ पै सिंगार करि वे को भे
द भाउ मैं विनान है ॥ अनियारे कजरारे दीरघ द्रगन वारी केती न तरुनि मद मुकु ·
ल मैं आन है ॥ प्रेम भरी वह चितवनि कछू और रही है जाते न वस जाहि निरष मह ·
सुजान है ॥ टीका ॥ सषी को वचन सषी प्रती अपना क विको वचन अनियारे कहि
यें अनि दार और दीरघ च कहियें वडे नेत्र निसो कितनी नतरुनी कहियें नाइका ते समा
न न होहै ॥ इसका यह मतलव है कि पैने वडे नेत्र बहुतनि के है पै वह चितवनि
कहियें देषनो और है जिस देषने सो सुजान कहियें प्रवीन पुरुष वस होतन है ॥
भेदकातिसयोक्ति अलंकार ॥ ४९ ॥ प्रस्ता विक भेदकातिशयोक्ति ० और यह
पद दीजियें अधिकाई के कहन अतिशयोक्ति भेदक यह कहत सुकवि सिरनै
न ४९ ॥ ॥

मूलदोहा॥ पिय मन रुचि हवैवो कठिन : तन रुचि होइ सिंगार ॥ लाष करौ आंषि न व
हे : बढै वढायें वार ॥ इहां परस्त्रा चतुर नाइका को वचन सषी सों सौतिको सिंगार
दे षि याके गर्बु भयो है यासों कहत है ॥ और सषी याको चितको भ्रम निवारक हतो
सम बै ॥ कवित्त ॥ बैठो है जु अ सुंदर न विलोकत है नैंन वमगाते रोना मसो हन रहत न बार वा
रहो ॥ उठि वलि हिलि मान रंग रली मैं रोव क्यो मानि अगावनि कहा रहो ॥ पिय मन
वस करिवो ई है कठिन अहन तन तु नि सरस तिसाजे उ सिंगार हो ॥ कहै क विहाल लको
मैं लाष ऊ जतनन न उ लोचनन वाढ तन न वढाए वढे वार हो ॥ टीका ॥ सषी को वच
न सषी प्रती पिय के मन को रुचि हो नो कठिन है सिंगार सों तन न कहियें देह ता की रु
चि कहियें सो भा सो होति है को ई लाष जतन न करौ परि आंषि न होइ रहति है ॥ वा

विहा॰
२१

201

रवाहमानैवड़ेहोतहैं॥अर्थांतरन्यासअलंकार॥४७॥प्रस्ताविकअर्थांतरन्या
स कह्योअर्थजहपोषियेअर्थअर्थसोभिन्नसोअर्थांतरन्यासहै बुधजन
करतप्रनीत ४७ ॥ ॥

प्रस्तदोहा॥चितदैदेषिचकोरज्यों:मीजेभजैनभूष॥चितगीचुगैअंगारकी:चु
गैकिचंदमयूष॥यहनाइकाकीप्रीतिसषीकहैअथवाकविकीउक्ति॥सवैया॥
प्रीतकीरीतअनोषीलषीसषितैनगनीहितकीसरसाई॥हल्लकहैजगकीयह
रीतलषीजिनयेनहितेमनहसाई॥देषचकोरकीरीतसहीपुनिओरसोंभूषभजै
नसदाई॥आगचुगैचंदकेनिरषैविनवैनोसुधासरसैमनभाई॥टीका॥कविको
वचनचकोरकीओरतें चितदैकेदेषितीसरीवातसोचकोरकीभूषनहींजाति
है॥चकोरआगिकीचिनगारीचुगतुहै॥परिसंख्यारन्यासअर्थांअलंकार॥४८॥
प्रस्ताविकदोहासोहुमतिभावधुनिपरसंख्याअर्थातरन्यासअन्योक्ति
कोसंकरजहांडारिसिरऔरकेकहैऔरकीवाततासोंअन्योक्तिकहत
जेकविनासरसात ४८ ॥ ॥ ॥

मूलदोहा॥कालहूतहूतीविना:जुरैनऔरउपाइ॥फिरिनाकोटारैवनै:पावैप्रेम
लदाइ॥इहप्रस्ताविकनीतिप्रेमकेपरिपक्ककरिवेकोउपाउकविकोउक्तिस
षीयें॥कवित्त॥मंदिरलदाउकोबनायोचाहैकोऊसोतोविनकालहूतकैसैंगूं
वनतनवातिहैं॥त्योंहीप्रेममंदिरकोकालहूतहूतीविनाहियेंबीचदयेविन
काहूकैसैंठिकुठानिहै॥कहैकविहल्लपरिपक्कहोइदोउनवसकलप्रवीन
यहवानउरआनिहै॥कालहूतहूतीवीचराषियेनएकओकदारियेनओलोंस
वरूषदोकोहानिहै॥टीका॥सषीकोवचनसषीप्रतीअथवाकविकोवचन
हूतीजोहैसोईकालहूतभयोताविनाओरउपायसोनहींजुरतहैइसकोय
ह्मतलवहै॥कि:जैसेकलहूतसोलदाउताकेपरिपक्कभएतैकलहूतरूपीजो
हूतीताकोहूरिकरैवनतिहै॥रूपकाकाअलंकार॥४९॥प्रस्ताविकदोहा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सो छाम निरूपकालंकार उपमान रु उपमेय मैं भेद परैन लषाइ तासौं रू
पक कहत है सकल सुकवि समुदाय ४९ ॥ ॥

= दो २

मूल दोहा ॥ तनिक रूठ निसवादि ली कौन बात परि जाइ ॥ तिय सुषरति आरंभई
ना ही रूठि मिठाइ ॥

टीका ॥ सषी को वचन नाइका प्रती ये सषी कौन बात है जो थोरेई रूठसौं वे सवाद नही
होत तिहु पति तिय क हियें नाइका ताके सुष सौ रति क हियें मैथुन ॥ ताके आरंभमै रू
ठि जैसे नाही मीठी लागति है इसको यह मतलब है कि रूठ सब बुरी लगत है पर
रति समै रूठी नाही मीठी लगति है ॥ अर्थांतरन्यासालंकार ॥ ५० ॥ प्रस्ता
वित दोहा अर्थांतरन्यास कह्यो अर्थ जह पोषिये अर्थ अर्थ सो भिन्न सो अ
र्थांतरन्यास है बुध जन करत प्रतीत ५० ॥

मूल दोहा ॥ दछिन पिय है बाम बस विसराई तिय आंन ॥ एकै बासरि के विरह लाग
त बरष बिहान ॥ दछिन नाइका प्रौढा है सो नाइक को उराहनो देत है दछिन पिय
याय दने चतुर पिय सैं बाय जानीय दछिन नाइक नवने ॥ कवित्त ॥ रसरीति लं
गर हो चातुरी के सागर हो कोरि काम कलानिधि उपमन परसे ॥ सब ही पै दीन हो ति
का हुके निकेत नेह तुम्हैं रेषत हो प्रीति सब ही के उर परसे ॥ दछिन सनेह हो हरि ऐसे
भए बाम बस विसराई और तिय देषि बैकोंतरसे ॥ कहै कवि हलपक भौन बसिर
है ध्यान ध्यान लागो विरह विहान लागो बरसे ॥ टीका ॥ सषी को वचन सषी प्रती द
छिन जो नाइक सो नाइका के बस है के और जे नाइका ति बरष से बीतन लागे ॥ विसे
षभासालंकार ॥ ५१ ॥ होय यदपि गौरो भाव सति है मुष्य ता प्रस्ताव ही को

है शाहु विरोधाभास· जिहि घल शाहु विरोध है अर्थ मांझ न विरोध शाहु
विरोधाभास कहि जो है पे सबोध ५१

मूलदोहा ॥ आपु दयो मन फेरि लै: पलटै दीनी पीठि ॥ कौन चाल यह रावरी: लाल
लुकावति डीठि ॥ इहां नाइका सौं हाउ रा हनो दे ति है नाइका को वचन नाइक सों ॥
सवैया ॥ मेरे लाल भले उर फाइ हिये यों अबहे पिवे कौन रमावत हो ॥ अब तो हम
को यह जानी पर है हिला जइ तेन हिआवत हो ॥ तुम मोहि दयो अपनो मन आ
पु हि फेरि लैवो सिर नावत हो ॥ अवना पलटै इन पीठि दर्इ हरि काहे को डीठि लु
कावत हो ॥ टीका ॥ सखी को वचन नाइक प्रती तुम मने अपनो मन मो को दयो ताके पल
टे करि हियेव द लै पीठि दई अपनो फेरि लयो लाल सं बोधन है ॥ जहनु ल्यारी को
निसी चालि है जो तुम अवडी ठिका हियेन नरिना को लुकावत हिये छिपाउत है ॥
विस्मयाअलंकार ॥ ५२ ॥ नाइका की उक्ति नाइक सौं मरुझी का पाक विभक्ति
है अरु प्रस्ता विकहल है दोहा विस्मय अलंकार यह देके कछु लो जो ये य
ह विस्मय चित की जिये ५२ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ मोहि दयो मेरो भयो: रहो जु मिलि जिय साथ ॥ सो मन बांधि न सौंपि
ए: पिय सौतिन के हाथ ॥ इहां नाइका सौं हा परकिया को उरा हनो नाइका को
वचन नाइका सों ॥ सवैया ॥ जो मन मोहि मया को दियो तुम मो जिय सों मि
लि कै रस भीजै ॥ भेउ रह्यो न सरूप सुभाइ मैं प्रेम पियूष सुधा मिलि पीजै ॥ मै
अपनो करि जानो यहौ अब अन्तर हो तन छिनै छिन छीजै ॥ सो मन जो रावरी क
रि मोहन सौतिन के कर बांधि न दीजै ॥ टीका ॥ तुम ने अपनो मन मो को दयो सो मन
न मेरो भयो जो तुम्हारो मनु मेरे जिय के साथ मिलि रह्यो ॥ पिय संबोधन है सो मन
नु बांधि कै सौतिन के हाथ न दीजियें ॥ काव्यलिंगाअलंकार ॥ ५३ ॥ नाइका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कीउक्ति नाइका सों सषी की या प्रस्ताविक विभक्ति है। अरु प्रस्ताविक है काव्यलिंग अर्थ समर्थन कीजिये जहां युक्ति सों सिद्ध काव्यलिंग सब घनन तहां भाषत बुद्धि विचित्र ५३ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ तंत्रीनाद कवित्त रस सरस राग रति रंग ॥ अनबूडे बूडे तरे जे बूडे सब अंग ॥ इह प्रस्ताविक कवि की उक्ति जानीये ॥ कवित्त ॥ तंत्री की मधुर धुनि ताल के विविध भेद राग जामें स्वरन की उठन तन सोहै ॥ वचन विलास चतुराई के प्रकास चारु कवितान हूं दे सज हार रस की उमंग है ॥ बाग की बहार वन बागन की किल मिल विकिरत अति रति सुरत प्रसंग है ॥ जगत में बूडे जे न बूडे इन बातन में तेरे तेई इन बूडे अंग अंग में ॥ टीका ॥ रसिक को वचन सषा प्रती बीना को सबद और कवित्तन को रस और सरस राग और रति को रंग इन बातन विषे जे न बूडे हैं ते ई बूडे हैं ॥ और जे सब अंग सों इन बातन विषे बूडे हैं ते ई पुरुष तरे हैं अथवा साधु को वचन तंत्री कहिये नाद ब्रह्म की बीना ता को नाद कहिये अनाहत सबद ॥ और कहिये ब्रह्म ताता कवित्त कहिये वेद ता को रस कहिये परमातम मातारस सरस नो राग ति सबको प्रीति को जे ह रस ताला में जे पुरुष न डूबे ते पुरुष बूडे ॥ और जे परमातमा के रस में बूडे हैं ते ई तरे कहिये मुक्त भए ॥ विरोधाभास अलंकार ॥ ५४ ॥ प्रस्ताविक है ता विरोधाभास अलंकार जिहि थल प्राह विरोधाभास कहि जो हिये प्रबोध है अर्थ माहन विरोध प्राह विरोधाभास कहि जो हिये प्रबोध ५४

मूलदोहा ॥ गिरि तें ऊंचे रसिक मन बूडे जहां हजार ॥ वहै सदा पसु नरन कों प्रेम पयोधि पगार ॥ इह प्रस्ताविक प्रेम समुद्र की अधिकाई कवि की उक्ति ॥ सवैया ॥ जा को प्रमान कह्यो न परै कहुं आज लौं पारन का हू लह्यो है ॥ हूलक के हूय अगाधि हूं हाल लगा के मैं हूं को उन पाव तु ग्यो है ॥ मेरु तें ऊंचे रसायन के मन बूडे अचे भो अनेक महा है ॥ सो पसु पामर लोगन को वह प्रेम समुद्र पगार सदा है ॥ टीका ॥ सषी को वचन सषी प्रती पर्वतन तें ऊंचे रसिक जे पुरुष तिन के हृ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विरू॰
२०३

ज्ञारनमनजिसप्रेमसमुद्रमेंबूडिगए॥ वेहप्रेमसमीपसमुद्रसोपसुनरकहियेंगमारघु
रषतिनकैापगारकहियेंपाइनसोंउन्नरनेजोनाहै॥ रूपकपर्यायोक्तिअलंकार॥५५॥
अवरकाव्यरचनासोंवातमिसकरिकारजकीजियेजेसैं चित्रसुहात ५५॥

मूलदोहा॥ चटकनछोडतचटनहूं सज्जननेहगंभीर॥ फीकोपरैनवरचटैः रंगो
चोलरंगवीर॥ इहप्रस्तावविककविकीउक्तिजानीयें॥ सवैया॥ सज्जनजेजगहीसरचे
तिनकीइकवानिमहानिवहै॥ सीलसुभावगहैंसहजेअनुरागसमूहहियेंउपरे
नेहकरेसुषरागहरोउनहूंकेचटेसुनवैपेंचटे॥ चोलकेरंगनिचोलरंगोसुन
फीकोपरैपरतेंहूपटे॥ टीका॥ कविकोवचनसाधुजनकोंहूअपनीचटककोन
छोडतहैचोलरंगकहिपकोलालरंगतासोंरंगोजोचीरकहियेंकपरासोफाटि
जातहै॥ अर्थांतरन्यासअलंकार॥५६॥ अवरकाव्यप्रस्तावविकअर्थांतरन्या
स कथ्योअर्थजहपोषियेअर्थअरथसोमित्रसोअर्थांतरन्यासहैंबु
धजनकरतप्रतीत ५६ ॥ ॥ ॥

मूलदोहा॥ संपतिकेसमदेसनरः नमनउहितिइकवानि॥ विभोसुनरकुचनीचहेम
रनविभोकीहानि इहप्रस्तावविककविकीउक्तिजानीयें॥ कवित्त॥ केसरीओसुदेसनर
हेसदाएकरसकहेकविहिसगहेएकसीपवानीहै॥ ज्योंज्योंबढिवारिलहैत्योंत्योंत्यों
नवनदोउसकलप्रवीनयहबातउरआनिहै॥ औरदेषोकठिनउरोजअरुनीचनअ
केरगहतकरेकाहूकोनकानिहै॥ संपतलहततैसोंत्योंरहततनैनैफेरिआपुहोन
रमतहोतभयेंविभोहानिहै॥ टीका॥ कविकोवचनकेसरीओरसुदेसकहियेंभली
ठौरकेनरकहियेंपुरुषइनदोउकोएकसुभावहैकिसंपतिकहियेंवढतीतामेंचल
तहै॥ कुचअरुनीचपुरुषएविभोकहियेंवढतिसेसतरकहियेंकठोरहोतहै
औरविभोकीहानिकहियेंघटतीमेंनरमहोतहै॥ दीपकअलंकार॥५७॥ अवरे
काव्यप्रस्तावविकदीपकालंकार तासोंदीपककहतहैंसमतिसुककविम

मूलदोहा ॥ नए विससियें लषित ए: दुरजन दुसह सुभाइ ॥ आंटें लगि प्रान निपिद
रैं: को टेल्ल मिल्लगपाइ ॥ इहु प्रस्ताविक नाइका को वचन सषी सों एह नाइक अधी
रा नाइका राजनीति हू सभषे ॥ कवित्त ॥ ऊपर तौ देषियत अधिक भलाई भरे अंतर के दु
सह दुराई के निकेत हैं ॥ कहै कविकुल सव कुवान निवनाई का है दाउ पर जैसे सवनै तैसें
दुष देत हैं ॥ देषत हूं नए नऊ मानन विरोधी नए मूलतन कौ नाहूं जे विचार में सचेत हैं
कोटे को सों टीनि दुरजनन के सुभाइ न आंट पैरे पाइ न हूं लागि प्रान लेत हैं ॥ टीका ॥ क
वि को वचन जे पुरुष दुर्जन हैं और जिन के दुसह भाई हैं ते जद्यपि नए करि ऐं नम्र ।
भए हैं तऊ इन को बिस्वास न करियें ॥ लगपाइ करियें कूटिल पुरुष तें आटा सों लपि
टी जेसीं सीला के समान प्रान निकास करत है ॥ उपमालंकार ॥ ५८ ॥ सो लक्षण ग्रंथ भा
वधुनि उपमा० उपमा अरु उपमेय सौं साधारन वाचक होइ एक वा सो प
हय जिन्हा स्वन उपमा सोइ ५८ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ जेती संपति कृपन के तेती सूमति जोर ॥ वढत जात ज्यों ज्यों उरज त्यों त्यों
होत कठोर ॥ इहु प्रस्ताविक कृपन के जितनी संपति तितनी ऐं कृपनता को
दृष्टांत कवि की उक्ति ॥ सवैया ॥ कोन हू भाग प्रभाइ के दाइ सों सूम सनेह जु काहू सं
पति पाई ॥ त्यों वह होत षरोई कठोर विलोकीये सूमति को सरसाई ॥ ताहि निहारि
कह्यौ चहियै कछु वात यहै कवि के जिय आई ॥ ज्यों ज्यों उरोज वढे तिय के उर त्यों
हो गहे अति ही कठिनाई ॥ टीका ॥ कवि को वचन कृपन करियें लोभी ता के जित
नी संपति वढति जाति है तितनी सूम को जोर होत है इसको यह मतलब है ॥ कि
लोभी को मन दौलति वढे सूम होत है जैसें जैसें कुच वढत है तैसें तैसें कठोर होत
है अथवा जैसें कुच वाढत है तैसें तैसें देषने को ठौर होति है सो वोप न जानियें ॥ श्री

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

८०५

विहा॰
२०४

अर्थांतरन्यास ॥ ५९ ॥ अवरकाव्यप्रस्ताविकअर्थांतरन्यास ५९ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ नीच हिये हुलसे रहत गहे गेंद को पोत ॥ ज्यों ज्यों माथे मारिये त्यों त्यों
ऊंचे होत ॥ इहां प्रस्ताविक कवि की उक्ति ॥ कवित्त ॥ जनम तें न कबहूं भला तें न भे
र भई जगत में कोटि अधिकार धारियत हैं ॥ सहज सुभाइ परकाज लै बिगार डारे ॥
औगुन गहत गुन पुंज डारियत हैं ॥ नीच नर ए ते पै हिये में हुलसे ई रहै गेंदु के सु
भाइ गहे यों निहारियत हैं ॥ जिन्हें नीचाई देवैं तिन्हें हुलसि जाइ ऊंचो हो
त ज्यों ज्यों जैसें ज्यों ज्यों माथो मारियत हैं ॥ टीका ॥ कवि को वचन नीच पुरुष गेंद समा
न हिये हुलसे रहत हैं ॥ ये तें जैसें माथे मारियतु हैं तैसें तैसें ऊंचे होत हैं ॥ उपमा
लंकार ॥ ६० ॥ अवरकाव्यप्रस्ताविकउपमालंकार ६० ॥ ॥

मूलदोहा ॥ कोरि जतन कोऊ करौ परै न प्रकृतिहि बीच ॥ नल बल जल ऊंचो च
ढै अंत नीच को नीच ॥ इहां अर्थांतर जो कोऊ सुभाव नीच होइ ताकी बडवा
रिहू कोइ तो पै सुभाव नीच होइ ॥ सवैया ॥ और तें जैसो सुभाव परौ वह और
प्रकारन कैसें हु छूटै ॥ कोरिक यौन उपाइ करो कविहू लक है निरधार यहै है ॥
सो जग मैं लखिये परतच्छ कै सो जल जंत्र नितें निकचै है ॥ कैतो ऊंचो चढै न
ल के बल नीर न ऊहरि नीचो ई अवै है ॥ टीका ॥ कवि को वचन कोई करोरि उपा
य करो पकृति सुभाय मैं न फार उन न हो होत है जैसें नल के बल मैं पानी ऊंचो चल
त है ॥ अर्थांतरन्यासअलंकार ॥ ६१ ॥ अवरकाव्यअर्थांतरन्यास ६१
॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मल्लदोहा॥ ओछे वडेन हो सके लगि सतरोहैं वेन॥ दीरघ होइ न नेक हू फारि नि
हारै नैन॥ यह मल्ल विके कवि की उक्ति॥ सवैया॥ जे जगदीसर चे जिहि भाइ
वेनै सेई दीसे हू देह वहेला॥ धीरु कियें गति मंद गहे गति पै पगु हंस की सें द्वल
है ना॥ ओछे सो कैसें दे होन वडे नेव पाइउ चाइ गहे को किन गेना॥ फारि निहारे
कि तो क रिहारो पै दीरघ होत हि न नेकहू नैना॥ टीका॥ कवि को वचन ओछे
पुरुष मन तें गहे वचन क हिके वडे न हो हैं सकत हैं॥ जैसें नेत्र नि सो फारि
कै दे षियै परि नेत्र वडे न हो हो तहै॥ अर्थांतरन्यास॥ ८२॥ अवरका व्यस्त्र
र्थांतरन्यास ८२ ॥ ॥ ॥

मल्लदोहा॥ कैसें छोटे नरनि तें सरत वडि न के काम॥ मढो दमामो जात कैा क
हु चूहे के चाम॥ यह मल्ला वि के छोटे ने वडे को गरजन सरे क वि की उक्ति जा
नीयें॥ सवैया॥ जा कौ जि तें जगदीसर चौ वल ता के फके सिरने ताई भारे॥
ता न विचार यहै अपने जिय कोऊ वृथा मति सोच विचारे॥ छोटे ने काम वडे न
तें वहके नहि साहस के पचि हारे॥ कोरि करो पर चूहा के चांम सो वैया हू म
ढ्यो न दिना नगारे॥ टीका॥ कवि को वचन पुरुषन के काम छोटे आदि
मिन सें वैसें हो तु हैं चूहा क हियें सो ता कैं चाम ता सो न गारो कैसें मढो
जातु है॥ अर्थांतरन्यासालंकार॥ ८३॥ अवर का व्यस्त्र र्थांतरन्या
स ०॥ वस्तौ अरथ जहं पोषियै आर्थ अर्थ सो भिन्न सो अर्थांत
रन्यास हैं बुधजन करत प्रतीत ८२ ॥ ॥ ॥

विहा.
२०५

205

मूलदोहा॥ कहै सबै श्रुति स्मृति हू जे है पुराने लोग॥ तीनि दवावन तिरसही:
पातक राजा रोग॥ इहू प्रस्ताविक कवि की उक्ति जानीयें॥ कवित्त॥ कहै यहै।
श्रुति औ स्मृति सकल पुराने लोग सिम्रन पुरानन मैं सुने पर्ई है तहै॥ कहै कवि हि-
ल यह जगत विदत वात जानत सकल जे जे सुमति निकेत है॥ रिपु राजा रो-
ग अरु पातक रहत एते एक के वा निगहे पे बाधे नेम नेत है॥ जहां देषे बलन
हां करैं न अमल जहां देषे निवलाई एतहां हौ दुष देत है॥ टीका॥ कवि को
वचन श्रुति वेद औ सव स्मृतिन कहियें धर्मसास्त्र कोप धति औरु पुराने पुरुष
जाहि वात वैा कहत है॥ पातक कहियें पाप औ रोग एतीनो तिरस कहियें।
निवल ताको दवावत है॥ दीपकाअलंकार॥ ९४॥ अथ रवा अदीपकालंका
र उपमान व उपमेय सों इक पद लागे जाइ ना सौं दीपक कहत है स-
मति सकल कवि समुदाय ९४ ॥ ॥ ॥

मूलदोहा॥ वडे न हूजे गुननि विनु: विरद वडाई पाई॥ कहत धतूरे सौ कनक:
गहनो गढ़ो न जाइ॥ इहू प्रस्ताविक कवि की उक्ति जानीयें॥ कवित्त॥ वडे ज्यो-
वनायो जगदीस सो वडाई है पै नाहीं सवजगु चाहै आदर वडाई कै॥ कहै कवि
हि लव कहत सोई लसत मोल कंचन को देषो न वेयो न कै या वेर नाइ कै॥ छोटो।
जो पै वडे गुन विन यों वड़ो है न ता उ की वड़ाई महि मंडल में पाइ कै॥ तो पै वहु क-
नक धतूरो उ कहावत है वेपा न पहिरत को उ गहनो गढ़ाइ कै॥ टीका॥ कवि को
वचन विरद कहियें नाम औ वडाई कौ पाइ कै गुन विना वड़ो न ही होत है॥।
जैसें धतूरे कनक नाउ कहत है परि धतूरे सौ गहनो घडो न ही जात है॥ अर्थां।
तरन्यासअलंकार॥ ९५॥ अथ रवा अर्थांतरन्यास कहियें अरथ जहां याविषे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अर्थ अर्थ सों मिलत सो अर्थांतरन्यास है बुधजन करत प्रतीत ९५

मूलदोहा ॥ गुनी गुनी सब को कहै निगुनी गुनी न होतु ॥ सुन्यो कहूं तरु अरक
तें अरक समान उदोतु ॥ इहां प्रस्ताविक कहै कहूं नाहीं मुख सब को उवासों क
हनको उनहोंक हीयै कवि की उक्ति ॥ कवित्त ॥ दिनकर रहत फउपद वील होतो
वह नीको न लगत तिउ पहासु पेषियतु है ॥ गुनी गुनी सब कोऊ कहत पुका
रि कहूं निगुनी गुनी न भाउ लेखे लेषियतु है ॥ जगत विदित जासों मीठो कहि
यत सोई निपट विषम विष अवरे षियतु है ॥ जो पेड़ आक को कहावत अरक
तउ अरक समान कोऊ होत देषियतु है ॥ टीका ॥ कवि को वचन है गुन अरु
गुनी है ये सब काहू के कहे ते निगुनी जो है सो गुनी नहीं होत है ॥ अर्क नह क
हियें आक को वृक्ष ताको अर्क कहियें सूर्य ताके समान उदय होत न कहूं सुन्यो है ॥
अर्थांतरन्यासालंकार ॥ ९६ ॥ अवर काव्य अर्थांतरन्यास संगति सुमतिन
पाइये परे कुमति के धंध राषहु मेलि कपूर में हींग न होत सुगंध ९६ अवर
काव्य अर्थांतरन्यास ॥

मूलदोहा ॥ संगति सुमतिन पाइयें परे कुमति के धंध ॥ राषहु मेलि कपूर में
हींग न होइ सुगंध ॥ इहां प्रस्ताविक जो दुरबुद्धि के ड़ारम में परै सो ताको संगति तें
सबुद्धि नाहीं होति ताको दृष्टांत कवि की उक्ति ॥ कवित्त ॥ जो गुन गाहू कहूं ते गु
न गहे सो वाहि सों गुन सिषाइये तो अवगुन गहाकरे ॥ लोक लीक लोपि एक पा
प ही को पीक जाहि सो वा ज्ञानपके नाहिं चीक नेह ाकरे ॥ लाजन कहे कीने
कोन हीटे की तूटे की आवस नो वे वेग वादि यै मन हाकरे ॥ संगति सु संगते बुधो ऊ
भलो हूइ देवी वेसे वासव अ संगति कहाकरे ॥ टीका ॥ कवि को वचन जो कुमति
के धंध में परै है ते सुमति को भलो साधु है मैं नहीं लागति है जैसे हींग कपूर में डारिवे

राषियेंपरहौगसगंधनहीहोतिहै ॥ अर्थांतरन्यासाअलंकार ॥ ६७ ॥ अवर
काव्यअर्थांतरन्यास ६७ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ औरेपरेषोकोकरैः तुहीविलोकिविचारि ॥ किहिनरकिहिनर
साषियेंः षरेवहैपरवार ॥ इहप्रस्तावकसेसारव्यवहारमैंअनिवडेनेमर
जादहूटैकविकीउक्ति ॥ सवैया ॥ केतेभएनरकेतेभएसुरजातिकहूगन
तीनहिभाषीजेलोवडेअनुमानगहेमरजादरहेनवहीलगिपाषी ॥ कौ
नकेकौनपरेषोकरेपरमानकहेपरतछकोसाषी ॥ पैअतिकीवढवारि
भएअवनीपतिपारकहोकिनराषी ॥ टीका ॥ कविकोवचनअरेसंबोधनहै
परेषोकौतुकरैतं इसवातनकौदेषुओरतुहीविचारकहुनरकहियेंमनुष्य
ताकौबरोपरवारकहियेंकुटुंवताकेवढेतेकोनुवरोवरीकरतुहै ॥ औरस
रकहियेंतालताकेवारकहियेंजलताकेवढेपरतालकोवरोवरीकोनुकरि
सकै ॥ दीपकाअलंकार ॥ ६८ ॥ अवरकाव्यप्रस्ताविकदीपकालंकार ३
पमानवस्तुउपमेयमैंइकपदलागैजाइतासौंदीपककहतुहै ६८ ॥

मूलदोहा ॥ सवैहसतकरतारदैः नागरताकेनाम ॥ गयोगरवगुनको
सवैः वेसगमारेगाम ॥ इहप्रस्ताविककविकीउक्तिअन्योक्तिहूसंभवै ॥
सवैया ॥ कोसमझैरसरीतिकेभेदहिकौनसुनैरवनीतिउचारै ॥ ग्यानकौ
कोनकरैचरचाअरुकोमरहताकेहितसोमनधारे ॥ नागरताईकोताउरहै
सबदैकरतारहमैंधिकुकारै ॥ हरिगुमानगयोगुनहूपकोवासुभयेजब
गाउगवारै ॥ टीका ॥ कविकोवचनसबहाथकोतारीदैकैनागरकेनाइपेह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सतहै गुमार गाउ मैं वसिकै सबै गुनको गारखु गयो ॥ लेषालंकार ॥ ६९ ॥ अव
रकाव्यप्रस्ताविक लेषालंकार जहां दोषमें कोजीयें गुनकल्पिनासे विशेष
कोगुनमें ठहराइयै दोषसुजानोलेष ६९ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ नरकी अरुनलनीरकी: मतिएकै करिजोइ ॥ जेतौनीचौह्वैचलैं: तेतौ
उंचौहोइ ॥ इहप्रस्ताविककविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ रीतपुरानन में यों फिचलीसुवकोऊ
मनोयकहंठानतहै ॥ वेदपुरानसवैपढकै पुनिरीतप्रवीनवषानतहै ॥ देषोप्रतछसुभावव
डोनरकोनलनीरकोमानतहै ॥ जेतौईनीचौचलैजगमेंवहवैतोईऊंचोप्रमानतहै ॥ टी
का ॥ कविकोवचनमनुष्यकीअरुपुहारेकेपानीकी एकैगतिहै ताकोतुमदेषो जितनो
नीचोह्वैचलतहै तितनोंईऊंचोहोतहै ॥ दृष्टांतालंकार ॥ ७० ॥ अवरकाव्यप्र
स्ताविक दृष्टांतअलंकार उपमानरुउपमेयगुनवाचकधर्मसुजान दो
नविंवप्रतिबिंवहै दृष्टांतसुपरिमान ७० ॥ ॥

मूलदोहा ॥ वढतवढतसंपतिसलिल: मनसरोजवढिजाइ ॥ घटतघटतसुनिफि
रिघटै: वसमूलकुमिलाइ ॥ इहप्रस्ताविककविकी उक्ति जानीयें ॥ कवित ॥ स
ज्जनसरोवरमें सुषकी हिलोरतुसौं संपतिसलिलज्यौंही त्यौंहीसरसातहै ॥ यह
तेंप्रगटसवजगतवषानतहै मनहूसरोजत्यौंही त्यौंहीअधिकातहै ॥ जवआ
निपरैकोऊ आतपुष्यादिनतवजलकौप्रमानुफिरिनिघटतजातहै ॥ कहैकवि
हसवहकमलवडोसवढ्यो कौंहुपैनघटतसमूलकुमिलातहै ॥ टीका ॥ क
विकोवचनसलिलकहियें पानीसोई संपतिताकेताकेवाढतवाढतमनजोहै सो
भयोसरोज ॥ कहियेंकमलसोवढिजातहै संपतिहूपीपानिके घटेतैमनरूपीक
मलघटतनहींहै समूलकहियें जरसहितकुमिलातहै ॥ ७१ ॥ अवरकाव्यप्र
स्ताविकरूपकउपमानउपमेयमेंभेदपरैनलषाइ तामैंरूपककहतहै
सकलसुकविसमुदाय ७२ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

207

बिहा· २·१

मूलदोहा॥ जो चाहत चटक न घटै: मैलो होइ न मित्र॥ राज राजस न छुवाइयें: नेह
चीकनै चित्र॥ इहां प्रस्ताविक मित्रताई में जो गुन न लागै तो शुद्ध रहे मित्र को वच
न जानीयें॥ कवित्त॥ जगत में सब ही तें महा गीहै प्रीति एक सांच विन कोऊ ताको ले
सहूं न दरसै॥ यही है जतन कवि हूल याके पालिवे को मानो मतिदोष जो तें अखि नेह
रसै॥ जो पै नेह चीकने हिय को एक रस राषो चाहत तु चटक ऊ आराई अति सरसै॥ तो
पै काहू भांति या हि मैलो मति करो मीत ऐसें राखिजै सें रजराज सु न परसै॥ टीका॥ क
वि को वचन जो तुम चटक घटै न ही चाहत है मित्र संबोधन है औ रहै जो तुम मैलो
भयो नहीं चाहत हो तो नेह सो चीकने जो चित्र ताको राजस कहियें राजो गुनी व
चन सो ईं भई रज कहियें धरि सो न हीं छुवाइयें॥ अथवा रजस रजक हियें सरसु सो
न लगाइयें॥ अर्थाश्लेषालंकार॥ १२॥ सो ह्वा मति भाव ध्वनि ऊत्तम काव्य अर्थश्लेषाले
कार एक शब्द के अर्थ जहं भासत प्राइ अनेक शब्द श्लेष सो कहत हैं जिन
के बुद्धि विवेक १२ ॥ ॥

मूलदोहा॥ समै समै सुंदर सबै: रूप कुरूप न कोइ॥ मन की रुचि जेती जितै: तित तेती
सी चि होइ॥ इहां प्रस्ताविक कवि की उक्ति नाइका भेद में सखी को वचन नाइका
सें॥ सवैया॥ सुंदर रूप कहा किहि काम है जो अपने चित में नहिं आवै॥ जो वित
मांउ कुरूप चुभ्यो तो वहै उरको अति मोद बढावै॥ होत समै मैं ही सब में सब सुंदर रूप
कुरूप न कोऊ लखावै॥ जाकी जितो जिहि ठौर बढै रुचि सो तित ही ठौर तितो रुचि पावै
टीका॥ कवि को वचन समय समय में सबै नाइका सुंदर है रूपवंती औ कुरूपनी को
ई नहीं है॥ मन की रुचि जहा जितनी है तितनी तहा रुचि होती है॥ परिसंख्याअ
लंकार॥ १३॥ अवर काव्य परिसंख्यालंकार अर्थ निषेध एक थल हूं में ष

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लठहवाइ परसंष्यानामोंकहनसुकविसवलसमुदाय ७३ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ मीतनचोतिगलीनहै जोधरियेंधनजोरि ॥ षायेंघरचैंजोजुरैं तोजोरियेंकरोरि ॥ कृष्णपरलाविकजोहममेंहैंवेधनुजोरेंतोउचितनाहीयातेंपाइवोघरविवोमुष्य है ॥ सवैया ॥ जोपगलीनभयेहौजुरैधननोवहजोरिवोकाहूनभावै ॥ नाउहानेमवैबीतिहैभाजनवैरोनगमेंअतिहामकहावै ॥ मीतमतोजियमैंधरिकैयहजोरिकरोरिलोजोवनिआवै ॥ षायेंदियेंघरचैंजुजुरैंकछुसोअतिमोदुदियेंउमगावै ॥ टीका ॥ कविकोवचनमीतसेंवाधनहैजोगलीनकहियेंगलीजहैवैंजोधनजोरातोयहनीतिनहीहै ॥ धनषाइएऔरघरचीयेनापस्नोधनचौरतोकरोरूनजोरियें ॥ संभावनाअलंकार ॥ ७४ ॥ मीहामतिभावधनिसंभावनाअलंकार ज्योंद्योंयोंयोंहोतहैंयहकहुनावतआइनहाकहतिसंभावनाकविपंडितसमुदाय ७४ ॥॥

मूलदोहा ॥ कनककनकतेंसौगुनोमादकताअधिकाइ ॥ वाषायेंवोराइजगः वाषायेंवोराइ ॥ कृष्णपरलाविककविकोउक्तिजानीयें ॥ कवित्त ॥ कनकधतूरोसोनोदोऊएकहावतुहैसोनेकोधतूरेप्रभाउसरसातुहै ॥ कहेकविहूलयाहिचाहतनकोईयाहिनिरषिनिरषिजोईसोईतरसातुहै ॥ सोनेमांझसौगुनोधतूरेतेंसरसमदयहतौप्रतछिसवकोउदरसातुहै ॥ वाहिजवषाइतववौराईप्रकासैहोतुवावौरातुरनयाहिजोइपरसतुहै ॥ टीका ॥ कविकोवचनकनककहियेंसोनोसोकनककहियेंधतूरोतातेंसौगुनोमादकहै ॥ वहधतूरेकैषायेंतेंजगतुवाउरोहोतुहैइमसोनेकेपायेंतेंजगत वाउरोहोतुहै ॥ व्यतिरेकाअलंकार ॥ ७५ ॥ अवरकाव्यतिरेकालंकार जानिपरैंउपमानतेंजहांअधिकउपमेयतहभाषतेव्यतिरेककहेकविपंडितआधेय ७५ ॥ ॥

208

बिहा· २·८

मूलदोहा ॥ बुरौबुराईजौतजैः तौजियषरौसकात ॥ ज्यौनिकलंकमयंकलषिःगनैलो८
लोकउतपात ॥ यहप्रस्ताविकबुरोजीवजोबुराईत्यागैनरूडरियासवैया ॥
जोकरतारररच्योजगमेंसहसुभावगहैअपनेजियकौ ॥ हलकहैयहफूठनहीनिह
चैकैलष्योसबकेहियकौ ॥ दुष्टसुभावतजैजुबुरोनरतातैंसकोचउठैअतिकौ ॥ ८
जौनिकलंकमयंकलषैजगठानतहैउतपातनकौ ॥ टीका ॥ कविकौवचनबुरो
पुरुषजोबुराकौछोडतुहैतौजियषोडरतुहैजैसेंनिकलंककहियेकलंकर
हितमयंककहैंचंद्रमा ॥ ताकौदेषिकेलोककहियेंसंसारसोउतपातगनतुहै ॥
दृष्टांतालंकार ॥ ७८ ॥ अवरकाव्यप्रस्ताविकदृष्टांतअलंकार उपमा
नरुउपमेयगुनवाचकधर्मजुजानहोतबिंबप्रतिबिंबहैदृष्टांतसुपरिमा
न ७८ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ भांवरिअनभांवरिनरैः करौकोरिबकवाद ॥ अपनीअपनीप्रकृतिकोः
मिटैनसहजसवाद ॥ इहप्रस्ताविककविकीउक्तिहै ॥ सवैया ॥ काहूबुरौलगौ
काहूभलौलगौषोटौषरौजियमैंधरैसोऊ ॥ लाषनकौनकरौबकवादअलौकिऊ
लौकजुहौउसोहोऊ ॥ औरतेंजाकोपरयौहैसुभावनिवाहैवहैनिबहैजगजोऊ ॥
आपनीआपनीटेवकौसिद्धसवादछुटैनकितौकरौकोऊ ॥ टीका ॥ कविकौवच
नकैकाहूकौभावौकैकाहूकौमतिभावौअरकोईकरौरिबकौ ॥ अपनीअपनीजो
प्रकृतिकैहैसुभावताकौसहजसवादमिटतुहैनही ॥ विसेषोक्तिअलंकार ॥
७९ ॥ अवरकाव्यविशेषोक्तिअलंकार सबकारनकाजुनसरैउक्ति
विशेषकहीयेयरैं ७९ ॥ ॥

मूलदोहा ॥ वहकिवडाईआपनीः कतराचतमतिभूल ॥ विनमधुमधुकरकेहि
येंः गडैंनगुडहरफूल ॥ इकोऊगुनहीनहैअरुगर्वअधिककरतुहै ताकोसो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

इहांकेफलकौप्रसंगकरिअन्योक्तिसंभवै॥कवित्त॥ कहाभयोजोपैपायोसु
रुजअरुननरंगकुमगिललिलितछविरहीतनछाइहै॥ कहाकिवहकिचितआपनीवड़ा
ईमैंनकाहूकोरचितगरहवाईयोंनपाइहै॥ जाहिरसलेवेकोचसकोलग्योहैसोवेसो
हमनसूंरोधनजितोपैमंडराइहै॥ गुडहरफलइतरानवोतेंप्रफुलितफूलिविनकारंद
अलिभलिहूनआइहै॥टीका॥ कविकोवचनमतिभलककहियेंबुद्धिहीनपुरुषसे
संवाधनहैवहकीकेअपनीवडाईमेंवेपारचिरहौ॥ गुडहरकोजोफूलसोमधुक।
हियेंपुष्परसताविनामधुकरकहियेंभौंरातोकहियमेंगडतुनहीहै॥अर्थांतर
न्यासअलंकार॥ १८ ॥ प्रस्ताविकअर्थांतरसंक्रमितवाचकधुनि अ
र्थांतरन्यासकहोअर्थजहपोषियेअर्थसअर्थसोभिन्नसोअर्थांतरन्यास
हैबुधजनकरतप्रतीत १८ ॥

मूलदोहा॥ चरचरडोलतुदीनहैःजनजनजावतुजाई॥ दियेंलोभचसमाचष
निःलघुपुनिवडोदिषाई॥इहप्रस्ताविकलोभकीवडाईकविकीउक्ति॥सवैया॥
ठौरहिठौरचियातफिरेलघुताजितहीनितआपुमकासै॥ नाचतहैसवहीपरजाइ
वडाईहियेंवडभांतिडरासै॥ लोभकोअसाधरेचसमानहूनैननयेभटकेचहुंया।
मै॥ जद्यपिहैअतिसूछिमहूवहयाहितऊअतिदीरघभासै॥टीका॥ कविकोवच
नचरचरगलीवहकैफिरतुहैलोभकेचसमादएहै॥ तातेछोटोमनुष्यवडोदिषा
इदेतहै॥रूपकअलंकार॥ १४ ॥ अर्थरकाव्यप्रस्ताविकरूपकालंकार
उपमानरुउपमेयमेंभेदुपरेनलषाइतासौंरूपककहतुहैसकलसुकवि
समुदाय १९ ॥

मूलदोहा॥ तोअरेतेकअरोगुनभरीःचाहैजाइवलाइ॥ जोपतिसंपतिहूविनाःजदु।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पतिराषैजाइ ॥ इहप्रस्तावीकसंपतिविनापतिनाहींइहनिश्चयकथन ॥ सवैया ॥
श्रोगुनपुंजभरीअतिचंचलयाहिकहाजियकोअभिलाषै ॥ नंदकिसोरकृपाकरि
कैवहसंपतिहूविनजोपतिराषै ॥ याविनकाजकछूनसरैसबकोउयहैनिहचै ।
मतिभाषै ॥ जानियहैचितचाहितयाहिउपाइनकौंवहताकतपाषै ॥ टीका ॥
कविकोकोवचनजुपतिकहियेश्रीकृस्नसोसंपतिकहियेदौलततातिविनापतिक
हियेलाजताकोजोराषै ॥ तोअनेकश्रोगुननजोभरीजयदौलतिताकोवलाइचाहै ॥
संभावनाअलंकार ॥ ८० ॥ प्रस्ताविकसंभावनालंकार ८० ॥

मूलदोहा ॥ इकभीजैचहलेपरैःबूडैवहैहजार ॥ कितेनश्रोगुनजगकरैःनैवैचढ
तीवार ॥ इहप्रस्ताविककविकोउक्तिजानीयेअन्योक्तिसंभवे ॥ सवैया ॥ एकप
रेतेफसेचहलेइकभीजेरहेइकछूडिगएहैं ॥ एकवहैतिनकोनहिसाधिहैएक ।
तिथीरनछोडिदएहैं ॥ वोरिदईपहलीमरजादविलोकिकितेभयभीतभएहैं ॥
वैसनहींचढतीचरियाजगमेश्रोगुनकोनेकितेकनएहैं ॥ टीका ॥ कविकोवचनु ।
नैकहियेनदीश्रोरवैकहियेंज्वानीसोचढतीवारकहियेंअपनीवढतीमै ॥ नदी
पछुवानीकीवढतीमै ॥ जरातकोकैतेश्रोगुननहीकरतीहै एकभीजेहैएकचले
मेपरैहैएकबूडेहैहजारनवहेहै ॥ रूपकदीपकअश्लेषाअलंकार ॥ ८१ ॥
प्रस्ताविकरूपकाकोपोषकदीपकअरुअर्थश्लेषहै यातैंइहांसंक
रकहिये इतिप्रस्ताविकअथअन्योक्ति ८१ ॥

अथअन्योक्तिवर्नन ॥ मूलदोहा ॥ गोधनतूंहरष्योहियेंघरियकलेहुपुजाइ ॥ समु
झिपरैगीसीसपरपरतपसुनकेपाइ ॥ इहकोऊकहैदंभहीसोंअपनीएजाकराव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

न्हे बहुत धन धान है अरु याहै विपत्ति को आगम जानीयें तहां कहै जैसें अ
मिल्यौ ॥ सवैया ॥ स्रुनि कौं लमरवीक लगावति गीत जे कोकिलकंठ सुभाइन सों ॥
बहु भांतिन के पकवान बनाइ मनावैं सभै सतिभाइन सों ॥ अब गोधन तूं सुदमानि
हियें बहु भांति पुजाइ लै चाइन सों ॥ परिहै सुधि तोहि निसैन वहीप सुछंद हि गोजव
नाइ के ॥ टीका ॥ कवि को वचन गोधन सें संबोधन है गोवर के गाई वछरा गोपव
नाइके एत्रिय तहै ताको वरनन है ॥ तूं हियें मे पुंसी भयो है सो तूं पकच रीभ रिस्रप
नी एजा करा इ ले माथे पर पसुनके पाइन के परनते ताको समुझि परैगी ॥ अन्योक्ति
लंकार ॥ ८२ ॥ अप्रस्तुत प्रसंसालंकार याही सो अन्योक्ति कहत है
जहां डारि सिंर औरा कैं कहै और को बात ता सौं अन्योक्ति कहत जे कवि
ता सिरमान ८२ ॥

सलहैत ॥ याही सों अप्रस्तुत प्रसंसा कहत है ॥ मोर चंद्रिका स्याम सिर वढि कत क
रति गुमान ॥ लषिवी पाइन पर लुटतनि हनियत राधा मान ॥ छुक अन्योक्ति को ठ लघु
मान सवडीठौर वाइगर वुकरै ताको मान भंग होन जानियें तहां कहीयें ॥ सवै
या ॥ घनस्याम ने आपने सीस पै राषि वनाइ के चाइनु सों धरिहैं ॥ जिनिया कौ तू जोमें
गुमान करै अब तो सब जो मैं लषी परिहैं ॥ कहि का है को मोर की चंद्रिका अंदि हिठा
ई के डार रही ढरि हैं ॥ व्रषभान कुवांरि के मान समैं तर वानि ते रुलुटिवो करिहैं ॥ टी
का ॥ कवि को वचन मोरचंद्रिका प्रति मोरचंद्रिका संबोधन है तूं स्याम कहियें श्री
कृस्न ताके माथे पर चढि कै वेगी गुमान करति है राधिका मानु करति है यह सुनी है
तें राधिका के पाइन परलोटन देषिये गी इसको यह मतलब है कि श्री कृस्न राधा के
पाइन परेंगे तब तूं राधिका के पाइन परलोटैगी ॥ अन्योक्ति लंकार ॥ ८३ ॥ अन्योक्ति ०
॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२१०

बिहा॰
२९०

मूलदोहा॥ पाइलपाइलगीरहैलगेअमोलिकलाल॥ भोडरहूंकीभासिहैवेंदीभामनिभाल॥ इहअन्योक्तिमितुहेअरुथनिकुहैपैवनीवैंदीठावरहैगोअरुभलोमानहैअरुनिरधनहैतउऊचोईरहैगो॥ सवैया॥ जोजिहिठौरके लाइकहै तिहिकोवहवाहतिहिंठौरथलहैहैं॥ देखोनिहारसिंगारवेभेदमेंदेखियेवातप्रतछयहीहैं॥ जद्यपिलालअमोललगैतऊपाइलपाइनहीलगिरैहै॥ हैवहभौडुरकीविंदुलीतऊभामिनिभालहीपैछविपैहै॥ टीका॥ कविकोवचनअमोलककहियेवडेमोलकेलालजिसमैंलगैहैं एसीपाइलकहियेपायेंजेवस्त्रोपाइनमैपपरीरहतिहै॥ भौडुरकीवेंदीभामनिकहियेनाइकातावेभालकहियेलिलारतामेसोहतिहै॥ अन्योक्तिअलंकार॥ ८४॥ अन्योक्ति॰
८४ ॥

मूलदोहा॥ वेसरिमोतीधनितुहीकोपूछैकलजाति॥ पीबोकरितियअधरकोरसुनिधरकदिनराति॥ इहअन्योक्तिकोअर्थकैऊलतभयलहुमानंहअरवहीठौरजाइपहुचैतोहाइनहीकहिये॥ सवैया॥ कौनविवानुकरैकुलजातिकोजोवनअपनोईजगमैगाति॥ हैसवनैंवडभागीतुंहीअहआईहैवातप्रसिद्धभलीवनि॥ नैंहीलख्योकनटरवकोफलहैंतुंहीवेसरिकेमुकताधनि॥ द्योसनिसांतियकेअधरामृतनीकेनिसंकहैपीवोकरौकिनि॥ टीका॥ कविकोवचनवेसरकेमोतीप्रतिवेसरमोतीसंवोधनहै हंधन्यहैतेरीकुलजातिकोकोपुछैतेतियकहियेंनाइकातावेअधरकेरसडरछाडिकैदिनरातिपियाकर॥ ८५
अन्योक्ति॰ ८५ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूलदोहा॥ श्रौनौनरौं नाइं रह्यौ श्रुति सेवनइ कसंग॥ नाक वास वेसरि लियो बसि मु
कतनि के संग॥ इहां प्रस्ताविक भक्त को वचन श्रौनन तुं किहं कसंग श्रुति सेवनते रह्यौ
हन सो नाही अरु वेसरि जो काहू के सम नाही॥ तिन नाक वास पायो॥ काकभुसि
के हेतवहु दोष हू रिहात है श्रुति का नहू कहियै सो संभवै है॥ कवित्त॥ संगलगैपाए
रंग श्रुति हूं सो सेवत भेरा साध विभारी नियश्रेसो न सुनन्यो है॥ कहै कवि हूं सुनासो
सब को ऊकहत है स्थल हूं लौन लो नाहीं न सो नाहीं रह्यो है॥ प्रेम के प्रभाव कोई हूं
लौं अधिकाई जाके चित्त आई तिनहीं परमपद पायो है॥ विमल सुढार वहु मुक्तन के
संग बसि नाक को निवास देषो वेसरि लह्यो है॥ टीका॥ कवि को वचन श्रुति कहि
ये कानन तौ को एककसंग सो सेवतु है परि श्रवण नरो नाई वनो रह्यो वेसर के तिनके सं
ग वसि के नाक को वास लयो अथवा साधु को वचन॥ श्रुति कहिये वेद तिनको एक
संग नितें सेवतु है अवहू नौरान हौ तू रहो वेसरि काहिये जिन काहू की वरावरी नहीं
करी ति नाक हिये पुरुष तिन मुक्त जे पुरुष॥ तिनके संग सो कवास कहिये वैकुंठ
सो लयो अथवा वास कहिये इंद्रासमान नाक कहिये स्वरग ता को लयो॥ अ
न्योक्ति संघालंकार॥ ८५॥ अन्योक्ति ०

मूलदोहा॥ पाइन हनि कुच ऊच पद चिरमिठ पौ सब गाम॥ छुटै ठौर रहिहै न उहे वह
मोल छवि नाम॥ इहां अन्योक्ति लघुमान सबडे कहि का नप हु चाहो हूं न दाकहि
ये॥ सवैया॥ हूं छमै मोलघरौ लघुमान भई उन्नपत्नि सउन्नमठानो॥ कौनहू भा
गलह्यो घुघुची नववनाग रिके कुच ऊच ठिकानो॥ या हीतें मोह्यो सबै जग को मनु तो
हि गुमान घरो अधिकानो॥ तौ रहुहै न हिजै है वहौ मुख कालि मारंग गुवजार विका
नो॥ टीका॥ कवि को वचन चिरमीं कहिये घुघुचो सो संबोधन है न हु नीक हिये।
नाइका ना के कुच सो ऊंच भए ऊंचा पदु कहिये ऊ चो थान॥ ना को पाइ कै सिगरे गा

उठगयोहै ठौरकोछूटै वही मोलवकीछवि वैहै ताकोतेरे रैहैगो ॥ अन्योक्तिलंका
र ॥ ८७ ॥ अन्योक्ति ॥ जहांउपरि मिसिरओरकेकहैं औरकीवात तासों
अन्योक्तिकहत जैवकविनामिसरताज ८१ ॥

मूलदोहा ॥ नागरि विविधविलासतजिवसीगगेलीमाह ॥ मूठनिमैगनिवीकि
तूं हूजैयो दैइठिलाह ॥ यहकोऊ अथमीमराज्ञादखाइबुरीठिकानेंबैठेन
होकहिये ॥ सवैया ॥ साधकसिद्धसुभाववडोजिनकोनिसवासरध्यावतहै ॥
ध्यानहुमेंनहिभेवलहैमुनिकेश्रुतिकोमतगावतहै ॥ नागरहैसबसैंगुनआ
गरसागरख्यालकहावतहै ॥ तातजकैघ्रगरेमनतूंविषयामुखसैंरसपावत
है ॥ टीका ॥ सखीकोवचनसखीप्रतिनागरिकहियेंनाइकासोविविधिकहियेअ
नेकभांतिकेविलसततजिकेगमारिजेनाइकातिनमैबसीहै ॥ तूंहूदुपनादेकैद
ठिलातिहैतातेंमूठनिमैगनिजाइगी ॥ अन्योक्तिलंकार ॥ ८८ ॥ अन्योक्ति

मूलदोहा ॥ नहिपरागनहिमधुरमधुनहिविकासइहकाल ॥ अलीकलीसैंर
हीवध्योआगैकोंनहुवाल ॥ इहनाइकाके तनमैंजोवननहींआयोताकीवी
आसक्तिपहिलेहीअधिकदेखीसैसखीसखीसौंभ्रमरकोप्रसंगकरिकहतिहै
सवैया ॥ नाहिपरागनहींमकरंदअजोप्रगटीनसुवासविकासर ॥ आनेकोआ
गेधोहैहैकहांगतिऐसोपग्योअवहीइकआसर ॥ फूलीचमेलीफूलवारिरसाल
पैकाहूकोनेकुनमानततामर ॥ रीझरह्योमतिकंजकलीपैअलीमंडरातोरहै
निसवासर ॥ टीका ॥ कविकोवचनुइसकलीमेपरागकहियेपुष्परजसोनहीं
है मधुरकहियेमीठोमधुकहियेपुष्परससोनहींहै ॥ इससमयमैफूलनोंन

तौ है अलीक हिये भौंरा सो कली सौं वधो है फूले पर इस को कहा हाल होइगो ॥
अन्योक्तिलंकार ॥ ८९ ॥ अन्योक्ति ०

मूलदोहा ॥ प्यासे दुपहर जेठ के थके सबै जल सोधि ॥ मरुधर पाइ मतीरहूं मारू कह
त पयोधि ॥ इहां अन्योक्ति अपने कार्य में सें में सें सिद्धि भये पाछे सर्व संपन्न मिलन
हा कहीये ॥ कवित्त ॥ कौन काम जगत मैं नाम सकी बडाई जाने कछू वे गरज सरे न का
हू के पन मैं ॥ छोटे हू नै आपनो सफल होइ काज तौ पै वाकी पर नर तीर कैन त्रिभ
वन मैं ॥ जाके प्रान दारुन निदाघ की तृषा मैं वा मतीरा पाइ वचे सिहराई भई तन मैं ॥
ताके आगे कहा कोऊ सागर की बात और सलिल अपार वे मैं आवे वाके मन मैं ॥ टी
का ॥ कवि को वचन जेठ के दुपहर के प्यासे सवे पुरुष जल हूं हि के थके मरुधर क
हिये मारवार की जीमी ॥ तामैं मतीर कहिये तरबूज ना को पीइ के मारू कहिये मार
वार के लोग ते तरबूज कों पयोधि कहिये समुद्र कहते है ॥ अन्योक्तिलंकार ॥
९० ॥ अन्योक्ति ०

मूलदोहा ॥ जिन दिन देखे वे कुसुम गई सु बीति बहारि ॥ अब अलि रही गुलाब
मैं अपत कटीली डारि ॥ इहां अन्यो क्ति कोऊ धनवान निर्धन भयो होइ तहां धन को
लोभी जाचन को कहिवो भ्रमर को प्रसंग करि कै कहै जोबन हू को कहै ॥ कवित्त ॥
जब होउ दिन रितुराजु को प्रभाव तौ पै ताके देक विहूलस जाको विभ्रम अनिवार ॥ न
ई नवारिका निदेखे हैं सु पद मरु दुमरस जु समभरे अवल हूं गंध भार ॥ उह अमा
मला रैपाइ तन आवन चल्यौ तैं भो अलि वहतो वितीत भई और सर उह विहार ॥ गंधमध
मरु दु ता परा ग वै न लसत हैं या अब रही अपत गुलाब की कटीली डार ॥ टीका ॥
कवि को वचन जिन दिन नु मैं गुलाब मैं वे कुसुम कहिये फूल देखे ते सो वहार वी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निगई ॥ अब गुलाब मैं अली कहिये भौंरा ताको संबोधन है अपतिक हिये बिनुपात
निकटीली कहिये कोटन भरी डार रही है ॥ अन्योक्तिलंकार ॥ ५१ ॥ अन्योक्ति ०

मूलदोहा ॥ इहि आसा अटक्यो रह्यौ अलि गुलाब के मूल ॥ फिरि फिरि हौं हि बसंत
ऋतु इन डारनि वह फूल ॥ इह अन्योक कहूका है तें ज्यान्यो पायो है छनको वैसे
ई आसा लग्यो रहै अरु काकध्वनि तें इह होइ कि वाही भरोसे रहै ॥ सवैया ॥ वेइ इन डा
रनि फूल हुते जिनके रस तैं सब दुःख भुलानो ॥ बीति बहार गई तिन कौ कुसुमा
वलि चिन्ह न भेन हिंआनो ॥ ऐसे है बसें नव हारिन वैय है या न्हुव सों रहि कौन
ठिकानो ॥ आस यहै जिय मैं धरि भौंर गुलाब के फूल रहै मडरानो ॥ टीका ॥ ४
कवि कौ वचन अलि कहिये भौंरा सो गुलाब के मूल कहिये जर ता मैं इस आसा सो
अटको रहत है ॥ के फिर बसंत रितु आए इन डारनि मैं वे फूल होइंगे किन होइंगे
अन्योक्तिकालंकार ॥ ५२ ॥ अन्योक्ति ०

मूलदोहा ॥ सिरस कुसम मडरात अलि झुकि झपटी लपटात ॥ दरसत अति सु
कुमार तन परसत मन न पत्यात ॥ इह सखि कर नाविसेष है कोऊ सखी नाइक कौं अ
न भिग्य जानति है सो नाइक की सखी भ्रमर को प्रसंग अन्योक्ति कहि भ्रमु
निवारन करति है ॥ कवित्त ॥ सुष को अगार है उपवन को सिंगार है चारु सौरभ वि वि
ध उमगात जा ० को गात है ॥ सरस को सु मन सरस अति सोभा सान्यो निरषि भु
लानो अलि देषन अघात है ॥ कहै कवि कहल अति री ति परयो आसपास रहै मं
डरानो न झपटि लपटात है ॥ दरसन वाको तन अति सुकुमार तातें परसन वाको
मन वेधों है न पत्यात है ॥ टीका ॥ कवि को वचन अलि कहिये भौंरा सो सिरस को

जोफूलतापेमडरातनकहियेफूलकेआसपासफिरतुहैअथवासिरसकेफू
लमैडरतुहै॥ सोभोंराकुविकैकहतहैकेलपितातनहीहैअतिकोमलदेहदे
षिकैपरसकरतुहैमनयत्नाननही॥ अन्योक्तिअलंकार॥ ५३॥ अन्योक्ति ९

मूलदोहा॥ वेनइहांनागरवडेजिनिआदरतेआव॥ फूलोअनफूलोभयोगाम
ईगाउंगुलाव॥ इहअन्योक्ति॥ अप्रवीनलोगुनकोसमुझसमुदाइहांइगुनकोद्
रनकोऊकरैनहांकहीये॥ सवैया॥ चाइसोंआदरतेरोकरैअरुतेतोहीसोंरा
ष्योहियेअनकूल्यो॥ तोमरुदेसमेकोरसलेजिनकेमनमोदरहैअतिफूल्यो
किम्मतितेसीवडावेवचनीरिझवारनवेजिनकोनकिभूल्यो॥ ऐसेगवारनुकेव
सवासमेंसर्लिगुलावभयोअनफूल्यो॥ टीका॥ वेवडेनागरकहियेनग
रकेरैहनेवारेपुरुषइहांनहीहैजिनकेआदरसोंतूआयोहै॥ गुलावसंवोध
नहैतूगमईगामेफूलोअनफूलोभयोहै॥ अन्योक्तिअलंकार॥ ५४॥ अन्यो
क्ति ९

मूलदोहा॥ कोकहिसकैवडेनिसोंपरैवडीयेंभूल॥ दीनेदईगुलावकोइनडार
निवेफूल॥ इहअन्योक्ति॥ कोउप्रवीनमहाजनअनजानेअविवेककोकामक
रैतिहांकहिये॥ सवैया॥ कोयहुवातसकैकहिभूलिकैकामकुरैकरनारनर।
जैसें एनीकरीजगकीरचनायेविचारविनानकरैनहींनिसें॥ देषिहूकोऊ
उसासैनसासवडेनवरेकछुकामअनैसें॥ वेसीयेकंटकडारगुलावकोफू
लसुगंधरूपमृदुऐसें॥ टीका॥ कविकोवचनवडीभूलहुकेपरेवडेनिसोंको
ईकहीनहीसकतुहैदईकहियेपरमेस्वर॥ तिनगुलावकोइनडारनिमेवे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

फलदये ॥ अन्योक्तिलंकार ॥ ५५ ॥ अन्योक्ति०

मूलदोहा ॥ करलै सूंघि सराहियै सबै रहे गहि मौनु ॥ गंधी अंध गुलाब कौ गाम
ईगाहक कौनु ॥ इहां अन्योक्ति गुनको हू कन कौऊ कहैत हां कहियै ॥ कवित्त ॥ रा
ष्यो है उचारत तें अमोल जिअन रआगें जाकें मरु गंधसौं महकि रह्यो मौनु है ॥ आडि
वोडि हाय सबही ने लीनो देषिबे को सूंघि सूंघि सब निसराहि गह्यो मौनु है ॥ मो
लि सुने सबहीने हसि कै मचाई कक पंथ्य गहि अबे न करन कौनु गौनु है ॥ अरे
गंधी अंध रे हिये मैं पतो चेत करि गाहक गुलाब को गवेले गांव कौनु है ॥ टीका ॥
कवि को वचनु है या धमै लेकै सूंघि कै और सराहि कै कहियै नाटीप करि कै सबै गा
मारमौन गहि रहे ॥ अथ गंधी संबोधन है गामई गांउ मै गुलाब को गाहक कौनु है
अन्योक्तिअलंकार ॥ ५६ ॥ अन्योक्ति०

मूलदोहा ॥ करि फुलेल को आचमन मीठो कहत सराहि ॥ चुपि रहु रे गंधी चतुर
दिषावै काहि ॥ इहां अन्योक्ति कोऊ मरष के आसो चतुराई बतावेत हां कहियै ॥ क
वित्त ॥ नगर के बगर ते रीऊ चीर हनी चोपसौं बुलाइ लीनो काहि आगे आवु रे
बैठसौ निकाल अति सौंह काम कीनो मोधो बैसकि मनिको हम हि दिषाउ रे ॥ आ
चमन कै फुलेल को कहत मीठो ते न अज्यो जान्यो चतुराई को प्रभाउ रे ॥ काहे को
उचारत गुलाब को अतर रे अंध कहां गई तेरी सुचतुराई गंधी बाउरे ॥ टीका ॥ कवि
को वचनु फुलेल को आचमन करि कै मीठो कहत है और सराहत है ॥ गंधी चतु
र संबोधन है तूं मौन पकर अतर काकौ दिषावत है ॥ अन्योक्तिलंकार ॥ ५७ ॥
अन्योक्ति०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मूलदोहा॥सीतलताअरुसुवासकीमहिमामिटैनमूर॥पीनसवारेजोउपोसोराजा
निकपूर॥इहअन्योक्तिकोऊआछोगुनीहैभलोमानसहैअरुकाहूकरनेवाकौ
सन्मानकीयोनहींवाकहीये॥सवैया॥जोसभभातिरच्योगहवोविधिनाकोवहै।
जगतैमोईनोरा॥हंसकहैविनजानेअजानकैवहअघिलहैनहियोरा॥बीन
संयोगतेंकाहूवाउलतनेछोडोकपूरजोजानिकेमोरा॥सीतलताईअरुअंधचढैयह
कोऊकरीजियमेंजिनिभोरा॥टीका॥कविकोवचनुसीतलताईहकहियेअरुसु
वासकहियेसुगंधइनदोऊकीमहिमाकोनेमूलसोमिटतुनहींहै॥जोपीनस
रोगवारेपुरुषनेकपूरकोंमोराजानिकेतज्योतोसुगंधतासीतलताईकीमहि
माकपूरकीघटतिनहींहै॥अन्योक्तिअलंकार॥५८॥अन्योक्ति०

मूलदोहा॥कोछूट्योइहिजारपरिकतकुरंगअकुलाइ॥ज्योंज्योंसुरझिभज्यो
चहैत्योंत्योंउरझतजाइ॥इहअन्योक्तिसंसारजालअथवाप्रेमजालकेबंधन।
मेंकहीये॥कवित्त॥नवतेनजान्योलागिलालचभुलान्योचित्तअवपरवसप
रिकाहैपछितातहै॥कहैकविहलसयाकेबंधनकीयहैरीतिनेकअरुटकतअंग
अंगबंधिजातुहै॥देष्योतैंपषेरुकोऊछूट्योइहजालपरकाहेकोतूवावरेकुलंग
अकुलातहै॥ज्योंहीज्योंसुरझिभज्योचाहततस्यानकवित्योंहीत्योंबाबरोबरोउर
झतजातहै॥टीका॥कविकोवचनइसजारमेंपरिकैकोनछूटेहैकुलंगपंछी
कोसंबोधनहै॥तातेंतूवेगोअकुलातहैजैसेंजैसेंतूसुरझिकैभाजोचाहतहै॥
अन्योक्तिअलंकार॥५९॥अन्योक्ति०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विहा॰
२४

314

मूलदोहा॥ स्वारथ सुकृत न स्रम वृथा देषि विहंग विचारि॥ बाज पराए पानि प
रतूं पछीन न मार॥ इहां अन्योक्ति कोई पराई पुसामदी करि अपने को बुरी करै
कहीये॥ कवित्त॥ काहे को विरानेओरे करतु पराए काज ऐसो षोटो करम वि
चारत है काहे को॥ इतौ स्रम नाहक सरीर कौं तु देत अरु दोऊ लोकं अपने विगार
तु है काहे को॥ कहा भयो जो पै आनि बैठो तु ई पराये हाथ बाज निज पंछीन मार
तु है काहे को॥ यामें कछु सुकृत न स्वारथ समझि देषि पातकौ भार हसिर ध
रतु है काहे को॥ टीका॥ कवि को वचनु स्वारथु नहीं है और पुन्य नही है अथवा स्वा
रथ सुकृत कहिये पुन्य सो नाही है विहंग कहिये पछी तिनकौं देषि विचार॥ अथ
वा विहंग संबोधन है इस वात कौं विचारि कै तूं देषि वाज संबोधन है तूं पराए हाथ
पर पछिन कौं मति मार॥ अन्योक्ति अलंकार॥ १००॥ अन्योक्ति॥

मूलदोहा॥ दिन दस आदर पाइ कै करि लै आपु वषान॥ जौ लगि काग सराध प
षतौ लगि तो सनमान॥ इहां अन्योक्ति कोऊ थोरे दिननु कौ वहुत वारिनं ता कुंक
रै तहां यह कहीये॥ सवैया॥ धूसर कंठ कठोर महा सुर एक कही लोचन रंग
है वारौ॥ नीच कहावत पछिनु मैं अरु भछ कौ साज कुचीलनि हारौ॥ आद
र पाई दिना दस कौ अभिमान नि सांक यनाचित धारौ॥ वाइस जौ लौ सराध
कौ पाष है तौ लौ लगि है जगआधु निहारौ॥ टीका॥ कवि को वचनु है आद

रुपाइकै हिनदसलौ अपनें।वषां नु कहियेवडाईताकोंकरिलेहु॥ कागसेंवो धनहुं जो लौं सराधकोंपच्छहै तौलौं तेरोसनमानहै॥अन्योक्तिलंकार॥०-१॥ अन्योक्ति ०

मूलदोहा॥ मरनु प्यास पिंजरे परै सुवासमैकोफेर॥ आदरदैदैवोलियतु वायसवलिकीवेर॥इहअन्योक्तिभलेमानकौदुखहींजिअरुनीचकौआदरहोइतहां कहियै॥सवैया॥ देषौसमैकोप्रभावकौ भावभयोजगअगुनहीमैं रिझावा॥ हूरुगईगुनवृंदनकी अगरे अवढूरउरूपअमोवा॥ प्याससौमेरै पिंजरानिप सुवास कहैमरू दैवैननि कोउ कहावा॥ आदरुकै वलिदेवेकीवेरवुलैवतुवाइ कैचाहुसौं वैवा॥टीका॥कविकोवचनु ऐसोसमयकोफेरभयोहै जोपिंजरामै परोसुवाप्याससौंमरतुहै॥वायसकहियेकागसोवलिदानकेसमैं आदरकरिकरिवुलायतुहै॥अन्योक्तिलंकार॥०-२॥ अन्योक्ति ०

मूलदोहा॥ जासौं एकाएक है जगतवोसाहूनकोइ॥ सोनिदाघफूलै फलै आकु डहडहौ होइ॥यहअन्योक्ति जो कामकौ न होइ ताहि कहिये गर्व करैतौ॥सवैया॥ ग्रीषमभानुतपैअतितेजकैं घामतैं सधरेंहै नरतीको॥ तासमैं आक प्रफुलितहै कविहूलकहै फललागतनीको॥ भौरनकोसुषनाहिं कछूनसरैकछुपंछिनकोसुषजीको॥ मानसकौसुकहागनियेसुतायो हिजुभारभयोधरतीको॥टीका॥कविकोवचनुजिसआकसौंजगतमें एकौ कोईव्योसासौनाहीं सोआकु निदाघकहियेग्रीषमरितुतामैंफूलतुहै॥औरफलतुहै और डहडहौ कैंहैलहलहौ होतुहै॥अन्योक्तिलंकार॥३॥ अन्योक्ति

अन्योक्ति ०

मूलदोहा॥ नहि पावस ऋतुराज यह तजि तरवर चित भूल॥ अपत भए बिन पाइ
है क्यों नव दल फल फूल॥ उक्त अन्योक्ति॥ काहू दाता के धोखे सूम पै कछु चाहि
न्हा कहीये उमगा रेके प्रसंग मैं गाहक के प्रसंग हू मे संभवै॥ कवित्त॥ मघवा को
जल सों उमगि अधिकानो वह पाछिन को भाष्यो तें बसाई समदाई है॥ छोडि चि
त भूल वा भरोसो मति भूले अब वैसी तो वन कनी ठिनी ठिव निआई है॥ पावस
न जान रितुराज को समाज यह यों ही वे सेहरित भरित न छबि छाई है॥ हतिन ब
वर जो लो ढूढे न अपत भो लो नव दल फूल फल संपति न पाई है॥ टीका॥ कवि
को वचनु पावस कहिये वरषारितु सो न है जह रितुराज कहिये वसंत रितु है
तरवर वृक्ष को संवोधन है॥ तैं अपने चित्त की भूल को छोडि बिना आयन कहि
ये पतझार भए॥ नवीन पत्र और फल और फूल इन को वैसें पाइगो॥ अन्योक्ति
लंकार॥ ४ ॥ अन्योक्ति ०

मूलदोहा॥ लहै न नैको गुन गरब हसौ सकल संसार॥ कुच उच पद लालच
रहे गरे परे हू हार॥ मूलअन्योक्ति॥ ओछो गुनी अथवा भलो मानस अपनी गो आ
नि छोटी हू जागे अनादर सों रहै ता सों कहिवो संभवै॥ सवैया॥ छाड बडे कु
ल को पदवी गुन को गरवाइ न जी मैं धरै॥ कैंान सबै हसिवो ई करे जग पानि
पहानि हू लेन डरै॥ हार निहार विकै इहि आस विधायो हियें पन ते न टरै॥
उच्च उरोज निकौ सुख लाभ रही हम जानि गरे हूं परै॥ टीका॥ कवि को वच
नु अपने गुन के गरब कोन ने कहू न ही दे घन है सिगरो संसार जा को हसत है॥।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

औरकुचजोहैसोइभयोउचौस्याननाकेलालचसैमोरेपरेहुरह्यौहै॥अन्योक्ति
लंकार॥५॥अन्योक्ति

मूलदोहा॥जनमजलधिपानिपविमलभौजलम्राएपुअपार॥रहैगुनीह्वैग
रपरैभलैनमुक्ताहार॥इहअन्योक्तिकोउत्सपात्रहभलीठौररहिवेलाइक
अरुछोटीरहेनहांइहकहीये॥कवित्त॥जनमजलधिकुलपानिपविमल
अतितेरीसुभसोभाजगमगतिसुहाईहै॥सबकोउजगतमैंचोपकरिचाहै।
मोतीतेहीबेसकिमानिजवाहरमैंपाईहै॥तेरोसंगपाइछितिपालअरुबा
लनिकीकेसेंनीकीदेषियतरूपकीनिकाईहै॥ऐसोतूंगुनीहुहारपरिकेर
हतहुनिमुक्ताकेहारयामैंकहांथोभलाईहै॥टीका॥कविकोवचनुसमु
द्रमैतेरोजनमहैऔरनिर्मलजलहैऔरसंसारमैतेरोअपारकहियेवडोमा
लुभयोहै॥मुक्ताहारमैवांधनहैफेरितूंगुनीह्वैकेगरेपरेरहैहैतातेंतूंभलो
नहीहै॥अन्योक्तिलंकार॥६॥अन्योक्ति०

मूलदोहा॥मूंडचढाएहीरहैपरेपीठिककभार॥रहैगरेपरराषियेतऊहियें
परहार॥यहपरस्वारथिककविकीउक्तिमानीये॥सवैया॥काहूकेमूंडच
हेहियेरहैनयहेगहियेचितमैंचतुराई॥नीकोमनोरहीयेजोगरेपरितेलहो
येअधिकेगनवाई॥मनुचहेहूंपरेरहैपाछेकिरंधनुकीगनिकेसनुपाई॥देषो
मैसोजोगरेहूंपरेतोविकारकरैंछनियापेहराई॥टीका॥कविकोवचनुकच।
कहियेकेसतिनकोभारमूंडपरचढाएहैतऊपीठिपरपरेरहतहै॥औरह
हारगरेपरेरहतुहैतऊहियेंपरराषितुहै॥अन्योक्तिलंकार॥७॥अन्योक्ति॰

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

216

विहा०
२१६

मूलदोहा॥ जोसिर धरि महिमा मही लहियत राजा राइ॥ प्रगटत जडता अ
पनी मुकुट पहिरियेपाइ॥ इहां अन्योक्ति जो अज्ञो मानुस है भलै आदर ला
इक ताहि निरादर सौं राखैं न हां कह्यौ है॥ सवैया॥ जो बहु भांति जवाहिर
लै बहु भांतिन रच्यौ अति हीं छवि छाई॥ जाकी जगमगाहट तिप्रभामति जा
हिल पै सब कौ ललचाई॥ जाहि धरैं सिर भूपन की महि मंडल मैं प्रभुता
सरसाई॥ ता मुकटै पग मैं पहरै प्रगटै तब वाही को मूरखताई॥ टीका॥ क
वि को वचन राजा और राइ जिस मुकट कों सिर पर धरि कै महां कहिये प्रिथीता
मैं महिमा कहिये बडाई ताकों लेत है॥ सो मुकट पाइ मैं पहिरियें तो अपा
नी जडता कहिये मूरख को भाव सो प्रगट होत है॥ अन्योक्ति लंकार॥ ८ ॥
अन्योक्ति ०

मूलदोहा॥ चले जाहु ह्यां को करै हाथिन के ब्योपार॥ नहि जानत इहि पुर
बसै धोबी ओड कुम्हार॥ यहां प्रस्ता विकअनुतत्त कहं गवार सभा मैं जाइ
तहां कहिये॥ सवैया॥ जाहु चले इनवैपार कौ भरको मनरे बिइन्हिं पुरवा
सी॥ जान नहीं नहि को करिहै इह ग्राम मों और व्योपार प्रकासी॥ हाथिन को
ऊ गाहै इतमो लहू हालक है बुधतेरी विनासी॥ या पुर मैं धुविया वसि है पु
न और कुम्हार सु गार्दभ वासी॥ टीका॥ कवि को वचन तुम चले जाहु॥ इहां
हाथिन के व्योपार कों न करत है धोबी और ओड कहिये बेलदार और कुम्हा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रहस गांउ मैं वसत है यह नहीं जानी जाति है ॥ इस को यह मतलव है कि धोवी वे
लदार कुम्हार ए तीनों इहां गधा राषत है ॥ हाथिन को इहां संदेह है तो हाथी को
इहां लेनवारो कौन है ॥ अन्योक्तिअलंकार ॥ ९ ॥ अन्योक्ति०

मूलदोहा ॥ विषम रथारि तिनाकी त्रिषा जिये मतीर निसोधि ॥ अमित अगाध
अपार जल मारो मूड पयोधि ॥ यह अन्योक्ति अपनो प्रयोजन काहू छोटे तें सि
द्धि भयो अरु वडे वडे न समर्थ है अरु अपने काम नाहीं न तां कहिये ॥ कवित्त ॥
ग्रीषम कौ तरनि तिन्है विषम करनि सब सलिल सुकात तव ओडे ई रहत है ॥ ।
जीव जंत जल थल प्रबल अबल सब अकल पकल होत कलनल हत है ॥ ।
आन ऐके ता ए आतिप्यास के सताए जल सोधत फिरत प्रान राषिवो चहत है ॥ ।
ऐसे समै पायो काहू भागते मतीरा तासों माह लो गजल निधि न्याइ ही कहत
है ॥ टीका ॥ कवि को वचन विषम जो है रथारि तिन कहिये जेठ मास ता की त्रषा क
हिये प्यास मै मारवार के पुरुष मतीरा कहिये तरवूज तिन को सोधि कहिये ढूं
ढि कै जिये ॥ अमित कहिये जिस को प्रमान नहीं है अगाध कहिये गहिरो अ
रु जिस के जल को पार नहीं है ऐसो पयोधि कै है समुद्र सो मूड मारिये ॥ अन्यो
क्तिअलंकार ॥ १० ॥ अन्योक्ति०

मूलदोहा ॥ इहि दिहा ही मानी सुगाध मंत्र नथ गरवनि मांक ॥ जिहि वहि रे जग
रगा असलिल सति हसति सीनाक ॥ इहनायकाकी नथकी सोभा अन्योक्ति क
विता हू में वने ॥ कवित्त ॥ सुरन समेत ना कया ही ने कहन मुकतन जतन
कनपुरी सी हरमाति है ॥ कहै कवि हरमन मोहन के मोहिवे को मोहनी की

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बिहा॰
२२०

217

सिद्धि मानो सोभा सरसति है ॥ तोहि पहिरे तैं जग नयन ग्रसति ग्रति सोभा ।
सरसति मानो नासिका हसति है ॥ ग्रहे नन नथ उर मैं नि सांक तू गरब करि
हू ही मुक्ता के गथ सहन लसति है ॥ टीका ॥ कवि को वचन यह है मोती सुगन
थ कहिये बडे मोल के हैं नथ सें बोधन है ॥ तिन मोतिन मैं तूं निसंक गरब क
र ॥ जिस नथुनी कों पहिरे लसति कहिये सोभित होति है ॥ ओर कहसती ।
सी जो नाइका सो संसा के नेत्रनि कों ग्रसति है ॥ ग्रन्योक्ति अलंकार ॥ ७११ ॥
इति श्री बिहारी सतसैया दोहा रागादत्त कृत टीका कवि हरि कृत कवि
त्र समाप्त ॥ शुभः ॥ लिषतं लछीराम मिसर पहाडी शुक्ल के लिषतं बु
धवार फागुन कृष्ण पक्ष द्वितीया फतेसिंघ सु पाठ क्रयो शुभः ॥ ॥
संवत् १८ ६५ ॥ रामाय नमः ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ बाला बागु कौ फते
॥ हम पंछी तन मन कमल सरसदा ग्रघी भर रहत ॥ मनकों दयान छोडि या कबानेड कवा
दूर ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

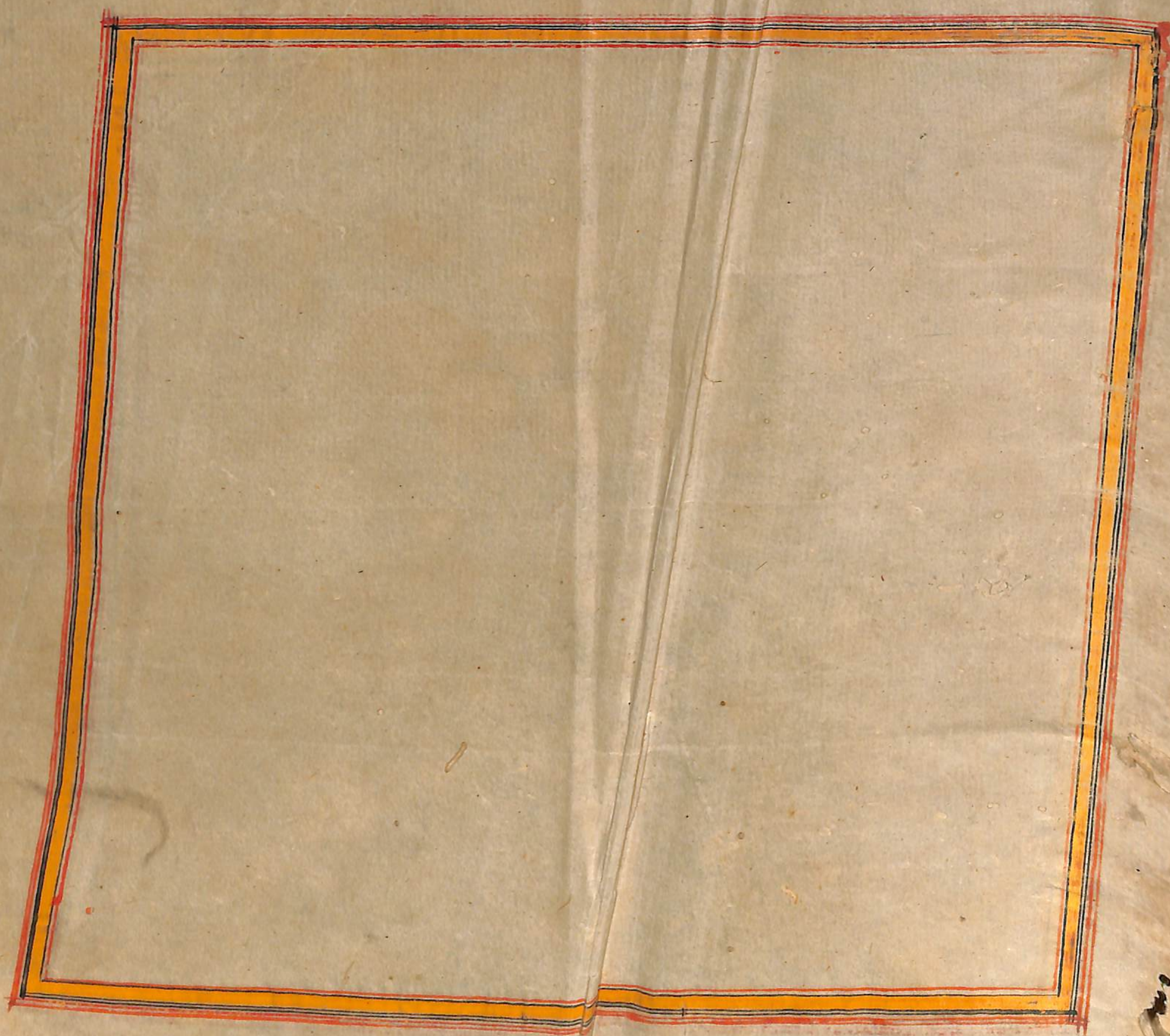


CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative



CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative



CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative



CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative



CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative